शौकत उस्मानी

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

गिरधारी लाल व्यास

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि

चमेलीवाला मार्केट, एम आई रोड, जयपुर-302001

स्वतंत्रतासंग्राम के क्रांतिचेता
अमर सेनानियों को

शौकत उस्मानी के जीवन की घटनाओ का सार, उनके व्यक्तित्व की रूपरेखा, रचनाकार का स्वरूप, उनकी उपलब्ध रचनाओ का परिचय और कुछ पत्रों के अश देकर महत्त्वपूर्ण किन्तु धुधलती ऐतिहासिक याद को ताजा करना दायित्व था, जिसे इस आकृति से रेखांकित किया गया है। उम्र का तकाज़ा था।

उस्मानी की समग्रता ही प्रेरकता रही है और आगे भी रहेगी।

* * * *

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और उसके केन्द्रीय कार्यालय, अजय भवन, नई दिल्ली, उस्मानी की स्वय की रचनाओ, बीकानेर मे उनके सुपुत्र उस्मान ग़नी, भतीजे इफ्तिखार अहमद व अन्य परिजनों एव राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिग हाउस [प्रा] लि , जयपुर के प्रबन्ध निदेशक का रामपाल को इस प्रस्तुतीकरण के सभव होने का समूचा श्रेय है जिनके सकारात्मक सहयोग के बिना जो कुछ बन सका, वह न हो पाता।

—गिरधारी लाल व्यास

रण...

मौलाबक्श उस्मानी

बीसवीं सदी के प्रथम दो दशक

20 दिसम्बर, 1901। बीकानेर नगर उस्तों का मौहल्ला। तग दरवाज़े वाले मकान में जेल की सैलनुमा कोठरी में जन्मा मौलाबक्श, भूरी माँ के गर्भ से पत्थर नक्काश बाउद्दीन का बेटा।

उछल पड़ी दादी नूरजहाँ। पुलकित थे चाचा गुलाम मौहम्मद, अहमद बक्श, उमरुद्दीन तथा चाचियाँ।

छ माह की उम्र में चल बसे पिता तो एक साल की उम्र मे माँ।

'गोरा, गुदगुदा, तगड़ा, गोल-मटोल कितना सुदर बच्चा!' कहा सबने।

एक साल का बे माँ-बाप का शिशु— दादी और चाचा-चाचियो का इकलौता प्यारा मौलाबक्श।

6 साल तक दादी नूरजहाँ 'माँ' रही और एक दिन भेद खुलते ही चोट लगी 'दोनो नही!' फिर भी उसके लिए उसकी दादी ही 'माँ' बनी रही जब तक वह रही वह रहा।

कुछ होश सभाला मालूम हुआ चाचा गुलाम मौहम्मद द्वारा सरक्षित वशवृक्ष से कि परिवार दो जातियो का या कहिये दो सप्रदायों का सम्मिश्रण है–'मुस्लिम राजपूत' या कि राजपूत मुस्लिम। लालसिह लाल मौहम्मद, 'लालानी' 'उमरानी' 'पत्वार साय्यल' आदि।

कलाकार बुजुर्ग को वाह! उस्ताद!' कहा और कालातर में उस्ताद' का द हट कर बोली में 'उस्ता रह गया और 'उस्ता' को सशोधित कर जब 'लालानी' की तर्ज पर 'उस्मानी' कहा जाने लगा तो एक नई सज्ञा पैदा हो गई। आज यह समुदाय कहलाता है 'उस्ता'। राजाशाही के ज़माने तक यह एक सम्मानित जाति रही अपनी कला-कुशलता की वजह से।

मौलाबक्श दादी से बेहद प्यार करता था और वह उससे। वह उसके कहे-कहे सब नाच नाचती थी–'कहानी सुना तभी सोऊगा' और वह सुनाने लगती सन् 'सत्तावन' की जगे आज़ादी का दास्तानें फिरगी' के खिलाफ़ बगावत की। ये वे घटनाएँ थीं जो दादी के जीवनकाल में घटी थीं।

बालहृदय के भावभवन की नीव भरी थी दादी के अदाज़-ए-बया ने।

*   *   *   *   *

मौलाबक्श को मक्तब भेजा गया, पास की मस्जिद में जहाँ मुल्लाजी कुर्आन रटा रहे थे, लेकिन उन्हें खुद को नहीं मालूम था उसके अरबी शब्दों का मतलब जिसे वह समझने को उत्सुक था। सिलसिला टूटना था–टूट गया। अधी आस्था

का प्रवेश हो गया 'निषेध'। दादी और चाचा उसकी पढ़ाई को लेकर चिंतित। दादी ने अपने बड़े भाई भूरजी से अपनी चिंता जताई और उन्होंन उसे पास के जैन उपासरे की पाठशाला मे भेजने की सलाह दी।

जैन उपासरे म गणित की मार्फत पढ़ाई चालू हो गई, लेकिन कुछ अरसे के बाद एक शाम को सबसे छोटे चाचा उमरुद्दीन के आग्रहपूर्ण आदेश से उमे अग्रेजी स्कूल में भर्ती करवा दिया गया बावजूद उसके इस विरोध के कि 'मै फिरगी काफिर के स्कूल में नहीं जाऊँगा' उसे जाना पड़ा। यदि वह दादी स फरियाद करता तो सभवत वह भी अग्रेजी स्कूल जाने से रोक देती क्योंकि वह थी 'फिरगी' की कट्टर विरोधिनी, लेकिन वह उमरुद्दीन के आग्रह का नहीं टालती क्योकि वह उसका सबसे छोटा बेटा था और सबका प्यारा भी इसलिए उसके आग्रह को कोई नहीं टालता था।

अग्रेजी स्कूल में पहली कक्षा से पढ़ना शुरू किया अग्रेजी और तब से लेकर छठी कक्षा तक मौलाबक्श उर्दू, अग्रेजी और गणित में अब्बल आने का इनाम जीतता गया। आगे चल कर इनके अतिरिक्त इतिहास और भूगोल भी उसके रुचिकर विषय हो गए।

किशोरावस्था की देहलीज़ पर पाँव रखा ही था कि मौलाबक्श की दादी उस छोड़ कर चल बसी। बहुत बड़ा आघात लगा उसे पहली बार महसूस हुआ मौत की निर्ममता का। खूब रोया, पर बेकार। लगते ही उसे बाप का सा प्यार देने वाले सबसे बड़े चाचा का साया भी न रहा। वह सूना और उदास हो गया।

डूगर मैमोरियल कॉलेज अथवा कॉलेजियट स्कूल की नई इमारत बनने पर उपर्युक्त अग्रेजी स्कूल को उसमें स्थानातरित कर दिया गया।

यह प्रथम विश्वयुद्ध का समय था। मौलाबक्श और उसके साथी स्कूल के समय के बाद युद्ध की उत्तेजक घटनाओं को पढ़ते और अपने तरीके से उन पर बहस करते। 'अपने दुश्मन का दुश्मन अपना दोस्त' इसलिए उनकी समझ बनती कि जमनी अपना दास्त यानी भारत को आज़ादी दिलाने में मददगार। शिक्षकों के शब्दों में इन लड़कों की 'चडाल चौकड़ी' अग्रेजी के पीरियड से भाग खड़ी होती और अखबार की सुर्खियों पर माथामारी करती थी। जर्मनी की आरभिक जीतों पर खुशी के मारे उछल पड़ती थी।

बीकानेर रियासत में इस समय महाराजा गगासिह का राज था, जो 'अग्रेजी हुकूमत' के सबसे बड़े चरणसेवी राजभक्त, भारत के स्वतत्रता सग्राम के नबर एक शत्रु और बीकानेर में देश की आजादी के नामलेवाओं को रातोंरात दमनचक्की में पीस कर आतक बनाए रखने वाले सवेदनशून्य व्यक्ति थे। वे युद्ध में अग्रेजी प्रशासन के आदेशानुसार उनकी मदद के लिए खुद अपनी फ़ौज को लेकर जाते थ और वफादारी की एवज में उपाधियाँ और तमगे हासिल करने का मकसद पूरा करते थे। अपने फौजियों को मरवाकर उन्होंने अग्रेजी वर्णमाला के अधिकाश वर्णों के पदक बटोर

लिए थे। अग्रजी गवर्नर, वायसराय, सम्राट्-सम्राज्ञी और औपनिवेशिक यत्र का प्रत्येक पुर्जा सबसे अधिक खुश था तो इस बात से कि गगासिह छ सौ रियासतों के राज्यों मे आज़ादी की आवाज़ के गल को दबाकर मार डालने वाले शासकों में सिरमौर नरेन्द्र शिरोमणि' या 'महाराजाधिराज' है। पुरातत्त्व का रिकार्ड और स्वतत्रता सग्राम म रियासती राजाओं की भूमिका के दस्तावेज़ इसके जीते-जागते प्रमाण हैं।

ऐसे माहौल में मौलाबक्श की दादी जैसी अल्पसख्यक मुस्लिम बुज़ुर्ग महिला का 'फिरगी विरोधी' रुख अपना कर प्रेरणास्रोत बन जाना निश्चय ही असाधारण बात थी और यह भी कम आश्चर्यजनक नहीं कि मौलाबक्श जैसे किशोर व्यक्तित्व में क्रातिकारी भावना का अकुर फूटने लगे। यह उल्लेखनीय है कि बीकानेर में मौलाबक्श की दादी ऐसी पहली महिला थी तो मौलाबक्श ऐसा पहला किशोर।

परिवार वालों ने मौलाबक्श का नाम बदल कर 'मौहम्मद शौकत' कर दिया और उसने खुद तत्काल 'मौहम्मद' को हटा कर शौकत के आगे अपने दादा के नाम 'उस्मान को 'उस्मानी' बना कर अब शौकत उस्मानी' कर दिया। अग्रेजी स्कूल से यही नाम चलता आ रहा है।

सन् 1917, मौलाबक्श या शौकत उस्मानी व कुछ सहपाठियों के लिए सर्वाधिक उत्प्रेरक। वे आसानी से 'बोम्बे क्रॉनिकल पढ़ते—अवगत होते रहते समाचारों से। काफी अरसे बाद मोतीलाल नेहरू द्वारा सचालित पत्र 'इडिपेंडट' मिलने लगा। खूब रुचिकर लगा उन्हें। यह आता था शहर के प्रमुख पुस्तकालय 'सज्जनालय' में। इस समय भारत में 'होम रूल' आन्दोलन चल रहा था। बालगगाधर तिलक और श्रीमती एनी बेसेट के नाम का बोलबाला था।

बीकानेर में चेम्सफोर्ड का दौरा हुआ। 9वीं कक्षा के उस्मानी और कुछ छात्रों को महाराजा के महल और किले पर नियुक्त किया गया टेलीफोन ड्यूटी पर। वह नहीं चाहता था इसे, किन्तु उसने रुक कर फिर से सोचा यदि इन्कार कर दूँगा तो जीवन से धाना पड़ेगा हाथ,परिवार के सारे सदस्यों को।' उसने स्वीकार किया बेजान मन से। बाद म उसे यह अनुभव भी हो गया कि व्यक्तिगत दुस्साहसिक कार्य निरर्थक हो जाता है यदि यह 'सामूहिक' न बन सके और बीकानेर म उस समय असभव था ऐसी स्थिति का पैदा होना।

इस शहर मे सम्प्रदायवाद का प्रवेश हुआ। रियासती सरकार के अनुदान से विकसित और प मदनमोहन मालवीय द्वारा उद्घाटित नागरी भडार के सुन्दर पुस्तकालय-वाचनालय मे गैर हिन्दुओं के लिए समाचार पत्रों और साप्ताहिक पत्रिकाओं का पढ़ना वर्जित कर दिया गया। मौलाबक्श उर्फ शौकत उस्मानी ने सस्था के सस्थापक और कॉलेज-स्कूल के प्रधानाचार्य तिवाडीजी से इसकी शिकायत की कि यदि मुसलमानों को मासाहारी होने की वजह से कॉलेज में पानी के बर्तनों को नहीं छूने दिया जाता और भडार में पढ़ने से वचित किया जाता है तो सिखों और राजपूतों पर भी इस प्रकार के प्रतिवध लागू किए जायें क्योंकि वे भी तो मासाहारी है। अत्यत सज्जन

और राष्ट्रवादी तिवाड़ीजी ने अपनी असमर्थता जाहिर की। बाद में अ भा राष्ट्रीय काग्रेस के अधिवेशन मे भाग लेने के कारण तिवाड़ीजी को रियासती प्रशासन की नाराजगी का सामना करना पड़ा और सभवत इसी सदमे से लगभग सन् 1918 में उनका हृदयाघात से निधन हो गया।

तिवाड़ीजी के बाद प्रधानाचार्य के पद पर आगमन हुआ डॉ सपूर्णानन्द का, जो बाद में उत्तरप्रदेश के मुख्यमत्री और राजस्थान क राज्यपाल बने। उनके आते ही उस्मानी को जल्दी ही समझ म आ गया कि वे पक्के राष्ट्रवादी हैं। वे हुए पहले राजनीतिज्ञ जो उसकी किशोरावस्था में उसके प्रेरणास्रोत बने।

यह समय था कि अनेक भारतीय राष्ट्रवादियों और छात्र क्रातिकारियों का आदर्श जर्मनी परास्त हो गया तो ब्रिटिश उपनिवेशवाद के नए दुश्मन की तलाश की जाने लगी। रूस की लाल फौज की कामयाबियों और अक्टूबर क्राति ने फिर से छात्रों को रोमाचित कर दिया। बीकानेर जैसे दूर-दराज और अलग-थलग पड़े इलाकों में भी अब उस्मानी और उसके कुछ साथी बोल्शेविकों के विषय में बहस करने लगे। बोल्शेविका को सज्ञा दी जाने लगी-'बालसेवक।' मजदूरों और किसानों के क्रातिकारी आश्चर्यों ने उन पर अभूतपूर्व प्रभाव डाला। अब यह धारणा पनपने लगी कि बिना विदेशी शस्त्र सहायता के नहीं जीता जा सकता हिन्दुस्तान की आजादी का जग।

इसके पश्चात् 'जालियाँवाला बाग' के निर्मम सामूहिक हत्याकाड की बेहद दर्दनाक खबर ने उस्मानी और उसके दोस्तो का दिल दहला दिया। व राए और साथ ही ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जूझने के लिए कटिबद्ध हो गए। एक ओर उनके दिमाग मे बीस हजार निहत्थे, निरपराध बच्चो, औरतों, जवानों और बूढ़ो की आखिरी चीत्कार की अनुगूज जोर मार रही थी तो इसके साथ ही खून में डूबी हुई लाशों के चित्र आह्वान कर रहे थे। इस नई पीढ़ी के लिए स्वतत्रता सग्राम में भाग लेने के लिए सकल्पबद्ध होने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचा था।

1919 का वर्ष था भारतीय इतिहास में अत्यत महत्त्वपूर्ण क्रातिकारी उभार का स्वयस्फूर्त जन-आन्दोलन का। एक ऐसा अभूतपूर्व था जनाक्रोश कि देखते ही देखते जला दिए गए डाकघर, रेल्वे स्टेशन और की जाने लगीं यूरोपियनों की हत्याएँ। अवरुद्ध किया जाने लगा सैनिक यातायात माध्यमों को। हड़तालें, आगजनी, प्रतिशोध और अनेक प्रकार के आवेगात्मक क्रियाकलाप फैलने लगे। ब्रिटिश साम्राज्य गोलियों और बमों से क्रूरतम दमन करके बड़ी मुश्किल से स्थिति काबू कर सका।

यही वह वातावरण था जिसने छात्रों में उत्तेजना पैदा की और वे येन केन प्रकारेण हथियार बटोरने में विश्वास करने लगे। बीकानेर में उच्चवर्गीय छात्रो को छोड़कर (क्योंकि वे उस समय प्रिंस ऑफ वेल्स के स्वागत में कविताए रच रहे थे) बाकी छात्र ब्रिटिश राज को मार भगाने के लिए उबल रहे थे।

इधर खिलाफत आन्दोलन जोरों से फैलने लगा था जो काग्रेस द्वारा सचालित

आन्दोलन के साथ जोड़ दिया गया था। इसने मुसलमानों, हिन्दुओं और अन्य जातियों को विदेशी शासन के विरुद्ध खड़ा कर दिया था। 'खिलाफत आन्दोलन' का मकसद जहाँ 'खलीफ़ा' को बचाने का था, वहाँ वह अंग्रेजी हुकूमत की 'खिलाफत' का अर्थ भी देने लगा।

जब मौलाबक्श या कहें शौकत उस्मानी और मैट्रिक के कुछ छात्रो ने पुस्तिकाएँ बाँटनी चालू कीं और पोस्टर चिपकाए तो रियासती पुलिस का ध्यान उस ओर गया। यद्यपि कोई खास दिक्कत तो नही हुई लेकिन मौलाबक्श के चाचा को यह निर्देश दिया गया कि वह अपने भतीजे को काबू करे। जब चाचा ने उसे मना किया तो वह परेशानी में पड़ गया–'क्या वह विदेशी राज के खिलाफ़ आन्दोलन में हिस्सा न ले?' उसने परिवार के भविष्य को सोचा और अपने कर्त्तव्य को भी। इस अन्तर्द्वन्द्व में उसने अपने आप को 'भूमिगत कार्यवाही' जारी रखने के निर्णय पर पहुँचा दिया।

साल के अत में 'प्रिपेरेशन लीव' शुरू हुई और फिर परीक्षा देने उसे अजमेर जाना पड़ा। सयोगवश उस समय अजमेर मे एक ओर उर्स का मेला चल रहा था और दूसरी ओर वहाँ राजस्थान के कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन। सम्मेलन में तिलक आए थे और साथ में वी पटेल और खापरडे। तिलक ने ईदगाह पर हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। इसी में राजस्थान की राजनीति के प्रेरणास्रोत अर्जुन लाल सेठी भी थे। मौलाबक्श ने पहली बार इस प्रकार के राजनैतिक सम्मेलन मे भाग लिया था और उसके दिल पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

परीक्षा देकर लौटते ही मौलाबक्श को हल्की चेचक ने आ घेरा। बाद में जब नतीज़ा निकला तो वह अच्छे अक लेकर उत्तीर्ण हुआ। उसकी शादी किशोरावस्था में ही भूरी के साथ कर दी गई और अठारह साल की उम्र में उसकी एकमात्र सतान उसके पुत्र उस्मान गनी का जन्म भी हो गया था, यद्यपि इसका उल्लेख और कहीं नहीं मिलता केवल इन पक्तियों के लेखक के एकाध आलेख में ही किया गया है, किन्तु यह तथ्य है क्योंकि वह उससे बीकानेर में बहुत बार मिलता रहा है और आज के इस क्षण तक जीवित है। उसकी एकमात्र सतान उसका पुत्र उसकी देखभाल करता है। यह परिवार निहायत मुफलिसी की जिन्दगी बसर कर रहा है। मौलाबक्श की माँ का नाम भी भूरी था और पत्नी का भी।

अहिंसक अहसयोग आन्दोलन आरभिक दौर में था और उसने चद मुस्लिम नेताओं को प्रेरित किया कि वे अपने अनुयायिओं को हिजरत के लिए तैयार करके अफगानिस्तान में प्रवासी के रूप मे प्रवेश कराएँ। आह्वान हुआ और मौलाबक्श जैसे सशक्त राष्ट्रीय क्राति की समझ रखनेवाले नौजवानों ने रूस से हथियार बटोरने तक के मकसद को मद्देनज़र रखते हुए इस मौके का फायदा उठाने का इरादा बना लिया।

यहाँ इस बात पर ज़ोर देना अनुपयुक्त नहीं होगा कि सन् 1857 के प्रथम सघर्ष के बाद पैदा हुई अन्यमनस्कता और हताशा को तोड़ने का असरदार माहौल

के गवर्नर ने स्वय उनकी परेड देखी और उन्हें अफ़गान सेना में अच्छे वेतन पर शामिल होन को कहा लेकिन काफिले न इन्कार कर दिया।

गर्वनर ने काफिल में दरार डालन की साजिश रची, नतीजा यह हुआ कि दूसरी अर्जी पर केवल 198 हस्ताक्षर ही हुए और प्रवासियों के आगे बढ़ने की अर्जी को दबा दिया गया। तीसरी बार 82 मुहाजिरों के हस्ताक्षर से एक अल्टीमेटमनुमा दरख्वास्त दी गई और तब गवर्नर की मार्फत इन लोगों को निष्कासन के आदेश द दिए गए। लेकिन साथ ही जो वहाँ पर रहकर नौकरी करना चाहते थे उन्हें लालच भी दिया गया। फिर दो और टूट गए। अब 80 में से 40 राष्ट्रवादी (उस्मानी सहित) और 40 शुद्ध खिलाफ़त वाले रह गए जो धर्म के लिए खून देने तक को तैयार थे।

चरित्र नायक के अनुसार 'खिलाफ़त' के रूप में भारतीय मुसलमानों की भावनाओं को कृत्रिमता के साथ उभारना अतत उपनिवेशवाद के विरुद्ध क्रातिकारी सघर्ष को धार्मिक अथवा साप्रदायिक जड़ों को मजबूत करने की दिशा में ही मोड़ देना था। इसी का परिणाम था कि ब्रिटिश कूटनीति ने इसका फ़ायदा उठा कर अपनी विभाजन की नीति को सफल बनाने में इसका उपयोग किया। भारतीय मुस्लिम नवयुवकों को इस रूप में भड़काना जग-ए-आज़ादी के विश्वव्यापी प्रगतिशील सिद्धात के मापदडों के बिल्कुल विपरीत था। यही वह विकृत नीति थी जिसे देश के टुकड़े करने के लिए जिम्मेवार ठहराया जाना चाहिए। मुस्लिम अभिजात्य वर्ग तो ब्रिटिश साम्राज्य से मिल ही चुका था, काग्रेस के नेतृत्व का एक हिस्सा भी इसके लिए उत्तरदायी था। इधर टटपूजिये हिन्दू और मुस्लिम राष्ट्रवादी भी गठजोड़ कर चुके थे।

अब होती है उस्मानी के कारवा की विषमतम यात्रा की शुरूआत। सबने उन सब चीजों को वहीं छोड़ दिया जिनको वे पीठ पर लाद कर नहीं चल सकते थ। यहाँ तक कि न चाहते हुए भी उनको किताबों का मोह छोड़ना पड़ा। उन्हें काबुल पुस्तकालय मे जमा करा दिया गया। फिर वे चार-चार की कतार में सैनिकों की तरह चल दिए। नकली राइफलें उनके कधों पर थीं।

यह डरावने पहाड़ा की तग घाटियों की सुदूर तक ऊँची चढ़ाई और फिसलनभरी एव मृत्युविभीषिका उत्पन्न करने वाली पगडडियों के आमत्रण को स्वीकार कर क्रूरतम परीक्षा से गुजरना था। कल्पना करिए अफगानिस्तान क मार्गों स पैदल पार पा सकने की भयकरता की—चट्टानी पहाड़ियाँ, नीचे की घाटियाँ, तेजी से बहती हुई ठडी नदियाँ, कहीं बीच में रेगिस्तान। अत सलिलायुक्त गहरे दर्रे और गुफाएँ मानो मुँह बाए दैत्य हों। इन्हें देख कर तो कुशलतम सर्वेक्षकों के हौसले भी पस्त हो जाएँ। कहीं-कहीं तो एक ही आदमी का गुजर सकना मुश्किल—इतनी सिकुड़न।

काफिले की यात्रा का सबसे मुश्किल पहलू शुरू होता है गुल बहार से। यदि प्रवासी कमेटी में कुशलता की कमी होती तो पता नहीं जिन्दगी किस मुसीबत में फस जाती। अकबर खाँ कुरेशी और अब्दुल मज़ीद के साहस और उनके खूबसूरत प्रबध की बदौलत किसी को न तो भूखा रहना पड़ा और न ही अन्य किसी बाधा

का सामना करना पड़ा। कॉमन फड से ही सारा काम निकाल लिया गया। यदि प्रबध सही न हो तो इतने थोड़े पैसों का कॉमन फड तो कभी का चुक गया होता।

यात्रा पैदल थी। पाँवों में फफोले पड़ गए थे, लेकिन मन के उच्च आदर्शों ने उन्हें आगे से आगे बढ़ाए रखा। शौकत उस्मानी सबसे अधिक दर्द झेल रहा था। ऊँची पहाड़ियों के मुकाबले उन्नत आशाएँ थी।

फिर आई काफिले को चुनौती देती हुई बर्फीली ठडी पजशीर नदी जो छाती से ऊपर तक बहती हुई मुख्य मार्ग को विभाजित कर रही थी। पजशीर के दोनों ओर के झुके हुए पहाड़ मानों दो दैत्य हाथ मिला रहे हों। दूसरी तरफ पहुँचना जिन्दगी से खेलना था, लेकिन काफिले ने वापिस लौटने की बजाय जिन्दगी को खतरे में डालना बेहतर समझा। उसे कायर कहलाना मजूर नहीं था। दूसरे अफगानिस्तान छोड़ना कभी सभव न होता, क्योंकि उसके अफगान गाइड ने भी यहाँ तक ला कर उसे छोड दिया था। मीटिंग हुई और नेपोलियन द्वारा आल्प्स पार करने का उदाहरण सामने रखा गया। अब पजशीर पार करने का उपाय सोचा गया। अपनी पगड़ियो को उतार कर उ.ह जोड़ा गया और वे सामने से आते हुए बहाव में एक दूसरे से जुड़ कर उतर गए। आखिर कठोर सघर्ष के बाद वे नदी को पार करने में सफल हुए। पाँवों का खून जम गया था, वे सुन्न हो रहे थे। सूखे पर पहुँच कर घास जलाया, कपड़े सुखाए और काफी देर बाद जी मे जी आया।

अगले सुबह सराय से रवाना होकर मीलों तक चलने के बाद गजू कारवा सराय पहुँचे। यह एक बढ़ि‍ जगह थी। पहाड़ियों में से झरना बह रहा था। सरायवाले ने वहाँ रात भर ठहरने से मना कर दिया। काफिला झरने के पास जा टिका जिसका कलकल मधुर स्वर सगीत का आनद दे रहा था।

रात को 9 बजे थकान से चूर काफिले के लोग सोए ही थे कि खतरे की सीटियाँ सुनाई दीं। सबको सावधान होना पड़ा और उन्होंने अपनी नकली राइफलें सभाल लीं ताकि हमलावर का मुकाबला किया जा सके। कुत्ते भौंकने लगे और घोड़ो की टापें सुनाई देने लगीं। इस मौके पर इन लोगों का फारसी भाषा का ज्ञान काम आया। वे समवेत स्वर में चिल्लाए कि वे भी हथियारबन्द है लेकिन पहल करके गोली नहीं चलाएँगे क्योंकि वे आतिथ्य को बदनाम नहीं करना चाहते। चाल चल गई और टापें जाती हुई सुनाई दीं।

काफिले ने सोचा कि सकट टल गया, किन्तु रात के तीन बजे फिर खतरे की सीटियाँ बजने लगी। फिर वही चाल चली गई और कामयाब रही।

सुबह जल्दी ही वे गजू से रवाना हुए। बीच में फिर नदी ने रास्ता रोका, लेकिन इस बार पानी की पारदर्शिता से पार करने में सुविधा हुई, नदी भी बहुत गहरी नहीं थी। अब की बार हिन्दूकुश की मुसीबत का सामना करना पड़ा। शिखर बर्फ से ढके हुए थे यद्यपि यह जुलाई की 21 तारीख थी। पहाड़ सीधे खड़े चुनौती दे रहे थे। रास्ता सकड़ा था। थकान से चूर और लहूलुहान काफिला बढ़ता रहा।

बर्फीली हवाएँ भी परीक्षा ले रही थीं।

विश्रामरहित रात, बेहद ठंडी हवाएँ और शिखर पर पहुँचने पर खान का पर्चा थीं सिर्फ 12 रोटियाँ जिन्हें बाँट कर काम चलाना था। शरीर को गरमाने के लिए गठीली जड़ें उखाड़ कर जलाई गई। जब आग की रोशनी हुई तो सारा माहौल सुन्दर दिखाई देने लगा जैसे दीवाली हो।

सुबह आशा का संदेश लेकर आई। थका, भूखा और ऊँघता हुआ काफिला नीचे उतरते-उतरते बारह मील से अधिक चलता आया। आखिर ये लोग बाबर के मकबरे को पहुँचे जो बहुत बड़ी इमारत थी। वहाँ दो निगरानीदार सरकारी कर्मचारी थे। वे भले थे जिन्होंने कुछ आटा मोल दे दिया। वहाँ उन्होंने चपातियाँ बनाईं और खाना खा कर गहरी नींद ले सके। इन लोगों की दिनचर्या थी–सुबह अगल पड़ाव के लिए रवाना होना, पहाड़ा, नदी और मैदान को पार करना और शाम होते-होते किसी सराय के नजदीक पहुँच जाना।

इस तरह उन्होंने डेह सालान, हैबक, घोर, बागलान और तश्करघान होते हुए अफ़गान तुर्किस्तान की राजधानी मजार-ए-शरीफ पहुँचे। यह शहर बहुत खूबसूरत था। वहाँ खाने को बहुत से फल मिले।

तीन सप्ताह की इस संकटपूर्ण यात्रा के कष्ट को उन्होंने आपसी हँसी-मजाक और मनोरंजन से भुला डाला। सोवियत वाणिज्य दूत की मदद से काफिले को सोवियत यूनियन की सीमा में प्रवेश करने की अनुमति मिल गई।

प्रतिभाशाली उस्मानी स्कॉलरशिप लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकता था। वह डॉक्टर, इंजीनियर या भारत की अंग्रेजी सरकार का प्रशासनिक अधिकारी बनने में कामयाब हो सकता था——सैनिक या पुलिस का अधिकारी भी यदि वह इस पुरख़तर *जंग-ए-आज़ादी में उतरने के लिए सदा के लिए घर-परिवार को छोड़ कर तलवार* की धार पर पाँव न रखता, दिल में कभी न बुझनेवाली आग लेकर न चल पड़ता और इसकी बजाय रियासती राजा की चाटुकारी करता तथा फिरंगी की हर हरकत के गुण गाता। उसके पास महकते फूलों के बगीचेवाला शानदार बंगला होता, नौकर-चाकर, सशस्त्र पुलिस के पहरेदार आदि होते। बेगम खुश होती, बच्चा आगे चल कर सुन्दर, उच्च शिक्षा प्राप्त नौजवान होता। देश-विदेश की यात्रा करता। मोटरें दौड़तीं हवाई जहाज उड़ते। पर उसने यह क्या किया, क्यों पाली यह बला? आज़ादी के दीवाना की कतार में खड़ा होकर क्यों कष्टों को गले लगाया, क्यों मौत का जोखम उठाता रहा? क्या दोहराने लगा लक्ष्योन्मुख इतिहास पुरुषों और क्रांतिकारियों के गृहत्याग की कहानी?

दौर-ए-गिरफ्तारी, गुलामी, जंग-ए-इन्कलाब

मज़ार-ए-शरीफ के सहृदय गवर्नर ने काफ़िले को सरलता और सहजभाव से सोवियत सीमा में प्रवेश पा सकने में सहयोग दिया। 'बाल्शेविक महाक्रूर कातिल

अश्लील और जगली होते है।' भारत में एंग्लो-इंडियन प्रेस लगातार प्रचार कर रहा था। उस्मानी का काफिला उत्सुक था किसी बोल्शेविक को देखने के लिए, लेकिन यह क्या, जब वे सामने आए खूबसूरत चिट्टे चेहरे काफ़िले के काले लोगों से गले मिलते है हर बात में 'कॉमरेड' कह कर उच्चस्तरीय मानवीय व्यवहार का परिचय देते है हर प्रकार की सहायता करते है।

तिरमिज़ में आशातीत स्वागत। गगनभेदी नारे गूंज रहे है–'हिन्दुस्तानी इन्कलाब जिन्दाबाद!' 'दुनिया भर में इन्कलाब जिन्दाबाद!' मानवता का फैलता हुआ समुद्र–रूसी तुर्कमानी सर्ड उज्बेक और ताजिक। यूरोप और एशिया के नर-नारियों ने एक साथ मुट्ठियाँ तान कर रास्तों को कतारबन्द कर दिया था।

शौकत और साथियों की थकान जाती रही इसकी बजाय वे अतिथि सत्कार से आह्लादित हो रहे थे।

इसके बावजूद जल्दी ही काफ़िले को उसके कट्टर खिलाफतियों ने विभाजित कर दिया–तुर्कों के सहयोगियों और भारत की स्वतत्रता के लिए समर्पित साथियों में। एक दल तुर्की जाने को आमादा हो गया।

दो नावों का प्रबध किया गया क्याकि सोवियत प्रशासन अपने ऊपर इस मिथ्या आरोप का लगना स्वीकार नहीं करना चाहता था कि उसने बोल्शेविक विरोधियों का कत्ल कर दिया और अपने पक्षधरों को जिन्दा रखा। कारण था–तुर्किस्तान के उस हिस्से में से यात्रा करने का जानलेवा खतरा मोल लेना जो प्रतिक्रातिकारियों के कब्जे में था। तिरमिज़ के साथियों ने खतरे की पूरी चेतावनी दे दी थी।

रात को नावें भवर में फस गई थीं लेकिन गनीमत यह थी कि सभी सोए हुए थे इसलिए अस्तव्यस्तता से बचाव हो गया अन्यथा नावें उलट सकती थीं। इधर उज्बेक मल्लाहो की सूझबूझ भी कामयाब हुई कि उन्होंने दोनों को एक साथ सलग्न कर दिया। इस तरह खतरा टल गया।

काफ़िला सुबह किलिफ़ पहुँचा जहाँ बोखारी मुल्लाओं से उसकी भेंट हुई। दापहर को वहाँ से फिर रवाना होना पड़ा। गाते-बतियाते चलते हुए शाम हो गई।

नदी के दक्षिणी किनारे पर राइफलें और भाले लिए प्रतिक्रातिकारी तुर्कमान दिखाई दिए। ख़तरा पैदा हो चुका था, मल्लाह आतकित से दिखाई दिए। नावें ज्योंही किनारे तक पहुँचीं, तुर्कमानी उनमें घुस आए। उन्होंने अनेक सवाल पूछे। काफ़िले को घेर लिया गया और उसे बधक बना लिया गया। आग जलाने से मना कर दिया गया। इसलिए सारी रात भय और भूख के साथ बितानी पड़ी। काफ़िले के भीतर ही के एक तुर्की दोस्त ने उसे आगाह कर दिया कि वह मौत के चगुल में है।

काफिले वालों को नावों से उतार कर कतार में खड़ा कर दिया गया। तलाशी ली गई और हरेक को कुदों और लात-घूसों से बड़ी बेरहमी से पीटा गया।

पिटाई के बाद जाहिलों ने हुक्म दिया–'तेजी से दौड़ो!' और तब उनको खच्चरों

और गधों पर सवार उन मुल्लाओं के पीछे-पीछे पैदल दौडना पड़ा। दौड़ते हुए खच्चरों के खुरों से उड़कर आँखों और नाक मे घुसती हुई रेत, कोड़ों की मार, भूख-प्यास और गर्मी से बेहाल और मार खाते-खाते पशुओ की दौड़ के बराबर तेज दौड़ना। इन निरपराधों की यह नियति।

इस बेहया दौड़ ने कइयों को बेहोश कर दिया। दो साथी अपने हाथ मिलाकर बेहोश को उठाते और तीसरा पीछे से सहारा देता और उसे लेकर दौड़ते।

धूल ने चेहरों की पहचान खो दी थी और सास को विकृत कर दिया था। कुछ पता नहीं इस हालात में उस्मानी और उसके साथियों को कितने मील दौड़ाया गया।

आखिर वे एक कारवासराय पर आकर रुक और इन लागा का पशुओं के बाडे में पटक दिया गया जिसकी दीवार पर चढ़ कर लड़को ने 'काफिर काफिर' कहते हुए पत्थर मारने चालू किए।

एक सप्ताह के बाद बोखारा जान क आदेश को दोहराया गया। पहले सबकी तलाशी ली गई। कुर्आन की प्रतियो को ठुकरा दिया गया क्योंकि तुर्कमानियों के अनुसार कुर्आन जैसा पवित्र ग्रथ छपा हुआ नहीं हो सकता, वह तो हस्तलिपि में ही हो सकता है।

ग्यारह बजे 'हैदा!' और हैको!' चिल्लाकर तुर्कमानी सवारियों पर और काफिले के लोग फिर उसी तरह पशुओं की तरह हाके गए। उसी हालत में उ ह बेहाल दौड़ाया गय। और कुछ वापिस घूम कर उ हे कस्टम हाउस' की तरफ मोड़ दिया गया।

कस्टम हाउस' कितना भयकर स्थान। एक छोटा कमरा जिसम से हवा के गुजरने का कोई रास्ता नहीं सबको बुरी तरह ठूस दिया गया। अगस्त का गर्म महीना न हवा, न पानी।

फिर अचानक दरवाज़ा खुला, पीने को कुछ पानी दिया गया और फिर डड मार कर उन्हे हाका गया। चलते-चलाते उ हें 'हत्या-स्थल' पर ले जाया गया जो हड्डियों से भरा हुआ था। काफिले के लोगों को एक ही सर्किल में मुस्लिम-प्रार्थना की मुद्रा में बैठने का हुकम दिया गया और उनके पीछे बदूकधारियों को और तलवार-भाले वालों को खड़ा कर दिया गया। अब किसी को कोई शक नहीं रह गया कि मौत सिर पर खड़ी है। सबके सपने चूर-चूर हो गए। मरण जबड़ा खोले जीवन को खाने को आमादा था।

बुजुर्ग तुर्कमानी एक ऊँचे स्थान पर बैठक कर रहे थे। बारी-बारी स किश्तवार तीन दफे मौत के हुकम दिए जायेंगे और तीसरी किश्त के हुकम पर सभी लोगों को मार दिया जायेगा।

पहला हुकम हुआ– मौत की सजा!' सिपाही सावधान हो गए और राइफलें तान लीं। थोड़ी भी हरकत की तो बिना तीसरे हुकम का इतजार किए गोली मार देंगे!' चारों ओर मौत का सन्नाटा।

कुछ मिनटों के बाद दूसरा आदेश हुआ जिसने पहले आदेश की पुष्टि कर दी। अब अंतिम आदेश आते ही क्षण भर में इतनी बेशकीमती जिन्दगियो का एक साथ खात्मा! दया की भीख बेकार भाग सकना नामुमकिन! होना सिर्फ गर्म रक्त धाराओ का सरे राह बह कर जम जाना! मौत, मौत मौत!

भवितव्य अचानक बदल गया। एक-डेढ फर्लांग की दूरी पर गाला दागन का धमाका हुआ। कुछ देर बाद एक और धमाका। किसने किया—अज्ञात रहा। सभवत सकट में फसे हुओ को बचाने के लिए बोल्शेविको ने किया हो। कुछ भी हो शौकत उस्मानी के काफिले की हत्या करने वालों म दहशत फैल गई और तीसरा और अतिम आदेश मौत का न हो कर काफिले को गुलाम बना उसके लोगों को जोड़ों के रूप में आपस में बाट लेने में बदल गया।

उस्मानी और ज़फर उमर मसद एक फारसीदा मुल्ला के हाथ सौंप दिए गए। गर्दन में मोटी साकल लगाकर उसे हथकड़ी के साथ जोड़ कर बाध दी गई थी। रात को उस्मानी के दाहिने पाँव की बेडी को ज़फर के बाएँ पैर की बेडी से जोड़ दिया जाता था ताकि रात को कोई भी करवट तक न बदल सके। रात को धूल से भरी दरी 'अल्ला हो अकबर!' कह कर मुँह पर डाल दी जाती थी। सास से धूल फेफड़ों तक पहुँचती रहती जो सुबह खाँसी के साथ उगलनी पडती थी।

दो सप्ताह तक चलती यह गुलामी की हालत। एक रात अचानक सर्चलाइट बम फटते दिखाई दिए। तोपगोले छूटने और मशीनगन से गालियाँ चलने के जोरदार धमाके और कान फाडनवाले शोर सुनाई देने लगे। लगातार दा रातो तक यही माहौल रहा। अब मुल्ले घबराए। उन्होने अपने बोरिए-बिस्तर समेट लिए और सुबह जल्दी ही घोड़ों पर सामान लाद कर रवाना हो गए। इससे पहले 'आज़ाद!' कह कर मुल्ला ने औरा की तरह शौकत उस्मानी और ज़फर को भी छोड़ दिया।

अब मैदान साफ था। काफिले के लोग आज़ादी से घूमन लगे और चाय, दूध, दही, पनीर और रोटी लकर अपनी भूख मिटाने में सफल हुए। बिखरे हुए सब साथी आ मिले। ऊँचाई पर सफेद झडा लगाया और उस रात 57 साथी आराम से सोए।

अगले सुब शौकत उस्मानी न केरकी जाने के रास्ते का नक्शा तैयार किया और काफिले के सबसे लबे साथी के हाथ में झडा देकर सब उत्तर की ओर रवाना हो गए।

तेजी से कदम रखते हुए, रास्ते में आगे की दिशा की पूछताछ करते हुए ये लोग किले की ओर बढते गए। सीमा तक पहुँचने पर लाल सेना के कुछ सैनिकों ने पूछताछ की और जब उन्हें तिरमिज़ से तुर्कमान तक गुलामी का हाल सुनाया तो उन्होंने भूमिगत द्वार से इन्हें तुरत प्रवेश करवा दिया।

जल्दी ही काफिले को रूसी क्रातिकारी मिल गए और उन्होंने इनको दो बडे बैरकों में ठहरा दिया। यहाँ अच्छा खाना भी मिला तो अच्छे दोस्त भी और अध्ययन

का मसाला भी।

तुर्कमानी प्रतिक्रियावादियो ने केरकी को घेर लिया था। किले में केवल 300 सोवियत और जादेही सैन्यबल था। भारतीय काफिले के इन क्रान्तिकारियों ने अपनी सेवाएँ अर्पित की। उन्हें नदी का मोर्चा सौंप दिया गया।

सितबर-अक्टूबर की बरसाती ठडक की कपकपी लाती मौसम में खाई-खदक की जिन्दगी कितनी असुविधाजनक होती है—भुक्तभोगी ही जान सकते है। फिर भी भारतीयों के लिए प्रेरक शक्ति थी क्राति की रक्षा में प्रभावकारी सक्रियता का परिचय देना।

केरकी का घेरा डालने वाले प्रतिक्रातिकारी तुर्कमानों की सख्या 5000 थी। इधर इन क्रातिरक्षक भारतीयों ने दो मुख्य चौकियों पर अपना मोर्चा लगाया था—एक पुराने किले के खडहर में और दूसरा एक पेड़ों से घिर ऊँचाई स्थित बगले में। दोनों के बीच खाइयाँ थीं।

दोनों ओर से गोलियाँ चलने लगीं। ये लोग रात-दिन चौकसी रखते हुए सुरक्षात्मक लड़ाई लड़ते रहे। जब इनकी तरफ खडी नावा का उनके गुप्तचरों न हथियाने की कोशिश की तो इन्होंने उन्ह दस्तावेजों सहित पकड़ लिया। इस समय क्रातिरक्षक भारतीयों की सख्या केवल 76 रह गई थी क्योंकि 4 तुर्कमानों द्वारा मार डाले गए थे। एक ओर य भारतीय लड़ रह थे कि दूसरी ओर स सोवियत क्रातिकारियों ने आक्रमण कर दिया। अब तो हमलावर बीच मे फस गए, उनकी ताकत टूट गई और आखिर उन भड़काए हुए भाड़े के किसान सैनिकों ने समर्पण कर दिया।

बोखारा की क्रातिकारी कमेटी ने तुर्कमानों के साथ ऊँचे दर्जे का शानदार व्यवहार किया और अमीर और जागीरदारों की जमीन किसानों मे बाट दी। अब अमीर और उसके कारिन्दा के द्वारा उल्टी पट्टी पढ़ाए हुए तुर्कमानों को क्राति का सही अर्थ समझ में आ गया। उन्होंने भारतीय प्रवासियों को पकड़ कर उनके साथ जो दुर्व्यवहार किया था—अब केरकी के बाजार में मिलकर बार-बार माफ़ी माँगने लगे। वही लोग इस समय मुस्कराते हुए दोस्ताना अदाज़ मे पेश आ रहे थे।

अक्टूबर के अत मे सैनिक दस्ते आ पहुँचे और उन्होंने चार्ज सभाल लिया। केरकी रक्षक भारतीय दस्ते के लोगों को ताशकद जाने को कहा गया।

शाम को काफिला चर्जुई (लेनिनिस्क) पहुँचा तो उसका 'भारतीय कॉमरेड्स जिन्दाबाद' 'केरकी के रक्षक जिन्दाबाद' के जोरदार नारा से स्वागत किया गया। रात को शानदार दावत दी गई।

उधर ताशकद के अधिकारियों ने जल्दी पहुँचने का तार भेज दिया, बीच में बोखारोवाले स्थानीय अधिकारियों ने ताशकद से पहले वहाँ भेजने पर जोर दिया। इस तरह अभिनदन-कार्यक्रमों की होड़ लग गई।

अपने जीवन के प्रथम दो दशका में ही इस नौजवान शौकत उस्मानी ने अपने साथियों के साथ मिलकर आगे कदम बढ़ाते हुए अपन व्यक्तित्व को अभूतपूर्व अतर्राष्ट्रीय

आयाम दे डाला। उम्र बीस को भी पार न कर पाई थी कि वह भारत और सोवियत सघ दोनों की क्रातिकारी सक्रियताओं के इतिहास की कड़ियों को जोड़नेवाले प्रथमोत्तम सार्थक समुदाय का अत्यत महत्त्वपूर्ण घटक साबित हुआ। यह गरिमा अन्यत्र दुर्लभ है। जान हथेली पर रखकर क्राति के उद्देश्य की रक्षा के लिए भूमिका निभाना एक उच्चतम मानवीय मूल्य की यथार्थ अभिव्यक्ति ही कही जा सकती है।

यहीं से उस्मानी साधारण से ऊपर उठ कर असाधारण क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है—एक ऐसी सीमा को पार कर जाता है जहाँ से पीछे हट सकना नामुमकिन-सा हो जाता है। इस बलिदान के मार्ग पर जो पाव रख देते है दूसरों के लिए ईर्ष्या के पात्र तो बन ही जाते है अपितु अपने लिए केवल यातनाएँ ही चुनते-बुनते रहते है। यहाँ तक कि ऐसों को जो श्रेय देय होता है वह भी अदेय ही रह जाता है।

शौकत उस्मानी

ताशक़द स्टेशन पहुँचने पर कुछ भारतीय अगवानी करने आए जिनमें ज्यादातर पजाब के साथी थे। ये दो दलों में विभाजित थे और अपने-अपने नेताओं के विषय में बात कर रहे थे। एक दल के नेता एम एन राय, अवनी मुखर्जी और मौहम्मद अली थे तो दूसरे के मौलाना अब्दुल रब, एम पी टी आचार्य और खलील थे।

उस्मानी और साथियों को 'इडिया हाउस' में ठहराया गया जहाँ दानों ग्रुपों के नेता अपना-अपना पक्ष प्रस्तुत करने आ पहुँचे। एम एन राय के मार्क्सवाद के ज्ञान से प्रभावित होकर काफिले के कुछ लोग उसके पक्षधर हो गए पर शौकत उस्मानी सहित कुछ साथी पक्षनिरपेक्ष रह कर स्थिति का अध्ययन करने लगे। आचार्य उस समय अन्दीजान में व्यस्त थे। राय-आचार्य विवाद ने प्रवासी भारतीय कम्युनिस्टों के विभाजन को इतना स्पष्ट रूप दे दिया था जिसका प्रभाव कॉमिन्टर्न तक की मीटिंगों पर भी पड़ा।

नवबर 1920 के प्रथम सप्ताह में जब एम पी टी आचार्य ताशक़द लौटे तो साथियों ने मिल कर 'भारत की कम्युनिस्ट पार्टी' की नींव डाली। मौहम्मद शफीक को इसका जनरल सैक्रेटरी चुना गया। उस्मानी लगभग छ माह तक उसमें शामिल नहीं हुए, लेकिन वे विविध विषयों की किताबों के गहन अध्ययन में डूब गए। मानव और सपत्ति के विकास के इतिहास, एतिहासिक भौतिकवाद और अन्य राजनीतिक और सामाजिक घटनाओं को अब वे इतनी गहराई से पकडते जा रहे थे कि मानो सार्थक कम्युनिस्ट होने की पूर्वशर्त की पूर्ति कर रहे हों। उस्मानी की विशेषता इस बात म थी कि वे सैद्धातिक ज्ञान को जितना महत्त्व देते थे, ताशक़द के आम आदमी से मिल कर व्यावहारिक पक्ष का भी उतनी ही गभीरता से लेते थे। कारखानों के श्रमिकों और खेतों के किसानों से भी उन्हाने जीवित सपर्क बना लिए थे।

परिस्थितियों ने एक ऐसा माड़ ले लिया था कि आपसी तनावों में भारत में सोवियत हथियारों की मदद से क्राति करने की आकाक्षाएँ डूबती दिखाई देने लगीं। इडिया हाउस रव-आचार्य ग्रुप का मुख्य अड्डा बन गया तो बोखारा-हाउस रॉय-अवनी ग्रुप का। दोनों में अपने-अपने तरीके से अनिश्चितकालीन, अनिर्णयकारी और अनिर्धारित बहस चलने लगीं।

दिसम्बर में एम एन राय की सलाह पर उस्मानी का आन्दीजन जाना पड़ा। वहाँ उनका सपर्क आचार्य से हुआ। कुछ समय बाद आचार्य ने उस्मानी को कुछ हथगोला और अन्य हथियारों की रखवाली की जिम्मेवारी सौंप दी। वहाँ इसके अलावा और कोई विशेष कार्य तो पूरा नहीं करना था, अलबत्ता उस्मानी यहाँ अनेक रूसी और सर्ड छात्रों के साथ घुलमिल गए।

जब उस्मानी को वापिस ताशकद बुला लिया गया तो उन्होंने लाल सेना की इकाई को हथियारों का चार्ज हवाले कर दिया जो पहले भी उसी क पास था। वहाँ पहुँचने पर उन्हें मालूम हुआ कि एक सैनिक स्कूल की स्थापना कर दी गई जहाँ लगभग सारे कम्युनिस्ट और तटस्थ उसमें भर्ती हो गए है और छात्रावास में रहने लगे है।

ताशकद में उस्मानी को सूचित किया गया कि उन्हें और दो अन्य साथियों को प्रशिक्षण के लिए मॉस्को भेजना तय किया गया है। इस पर उस्मानी सहमत हो गए।

जनवरी 1921 के आरभ में एम एन राय, एवलिन राय, अवनी मुखर्जी और मौहम्मद अली तथा शौकत उस्मानी और उनके तीन साथी मॉस्का पहुँचे। उस्मानी और तीनों प्रशिक्षार्थियों को डल्वाई हाटल में और कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं को डी-लक्स हाटल में रखा गया। यहाँ जापान क प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता सेन कतायामा, ब्रिटेन के टौम क्वलेल्क और फिनलैड के कूसिनेन मिले तो मिखाइल वोन्दिन, फाइन्वर्ग जैसे शिक्षक और रीन्स्टीन जैसे सोवियत ट्रेड यूनियन नेता भी उपलब्ध थे। जर्मनी के युवा कम्युनिस्ट नेता मुजेन्वर्ग भी थे। प्रशिक्षण का अधिकाश भाग व्यावहारिक ही था। सैद्धातिक पक्ष में अर्थशास्त्र, राजनीति और ट्रेड यूनियनवाद प्रमुख विषय थे।

ताशकद मे हो अथवा मॉस्को में और किसी भी हाल मे हो शौकत उस्मानी की चेतना के केन्द्र में भारत का स्वतत्रता सग्राम रहता था। व आतुर रहते थे स्वय का सवताभावेन समर्पित करने क लिए।

मॉस्को में अध्ययन और भ्रमण ही मुख्य कार्य थे। सात फरवरी 1921 को प्रिंस क्रोपाटकिन का निधन हुआ, यद्यपि वह अराजकतावादी था, किन्तु रूसी उसका बहुत सम्मान करते थे। उसके अतिम सस्कार के अवसर पर शोक श्रद्धाजलि देने सभी नेता उपस्थित हुए। वहाँ लेनिन भी आए और बोले। शौकत उस्मानी ने पहल पहल लनिन का बालते हुए देखा-सुना।

एक अन्य अवसर पर शौकत उस्मानी एक विदेशी प्रतिनिधिमडल में शामिल होकर क्रेमलिन में लेनिन से मिले थे। उन्हें लेनिन एक अत्यत सहज और सवेदनशील व्यक्ति लगे जिनकी आँखें तीव्रता से सामने वाले के भीतर के भेद-वेध लेती थीं। उनमें दूर तक देखने की अद्‌भुत चमक थी। उस्मानी ने लेनिन को किसी महत्त्वपूर्ण मौके पर नई आर्थिक नीति (NEP) पर बोलते भी सुना था।

एक तरफ यह वातावरण था तो उन्हीं दिनों भारत, ब्रिटेन आदि कई देशों के समाचार पत्रों में ऐसी ऊटपटाग और हास्यास्पद खबरें भी छपती रहती थीं कि मॉस्को जल गया, लेनिन मर गया, क्रेमलिन नेस्तनाबूद हो गया।

उस्मानी ने दोनों तरह के कम्युनिस्ट चरित्रो को भली प्रकार पहचान लिया था—एक ओर अवसरवादी, लफ्फाज, ऐयाश बुद्धिजीवी और गद्दार कम्युनिस्ट चरित्र तो दूसरी ओर लेनिन, स्टालिन आदि अनेक उच्चस्तरीय नेताओं के शीर्ष आदर्शों से समन्वित मानवता के उदाहरणस्वरूप कम्युनिस्ट चरित्र भी थे। अकाल के समय लेनिन द्वारा अपने भोजन में कटौती करना और किसानों से अतिरिक्त अनाज लेकर उसे मजदूरों तक स्वय पहुँचाना आदि। स्टालिन द्वारा सैन्य निरीक्षण के समय एक सैनिक के फटे जूते देख कर अपने जूते उसे पहना देना और उसके जूते स्वय पहन लेना और एक साधारण लाल गार्ड के द्वारा (EECI) की मीटिंग के लिए आए हुए बिना पार्टी कार्ड अन्दर घुसने की चेष्टा पर ट्रॉटस्की तक को रोक देना और उसे वापिस भेजकर कार्ड लाने पर ही अन्दर जाने देना—जैसे वाकयात ने उस्मानी के उन्नयन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

अप्रैल के मध्य में मॉस्को में अध्ययन सत्र समाप्त हो गया। दुर्योग से शौकत उस्मानी बीमार हो गए। डाक्टरों के आयोग ने अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करने के बाद पाया कि उस्मानी के हार्ट में बढ़ोतरी होने लगी है। आयोग ने यह तय किया कि उन्हें उचित चिकित्सा के लिए सेवेस्टोपोल भेज दिया जाय। इसके लिए जल्दी ही क्रीमिया को जानेवाली साप्ताहिक हॉस्पीटल ट्रेन में सीट सुरक्षित करवाई गई। इस ट्रेन में हर प्रकार की सुविधा थी—आधुनिक दवाइयाँ, दूध और सर्वाधिक स्वास्थ्यप्रद भोजन आदि।

यह कॉमिन्टर्न की तीसरी काग्रेस का समय था, जिसके लिए मॉस्को में दुनिया भर से प्रतिनिधि उमड़े चले आ रहे थे। इसमे भारत से आग्निस स्मैरले, वी चट्टोपाध्याय, पी डी गुप्ता और नलिनी गुप्ता, लुहानी, डॉ सी पिल्लई, भूपेन्द्रनाथ दत्त, पाडुरग खान्खोजी, तारकनाथदास, अब्दुल वहीद और एच गुप्ता आदि थे। इधर समारा से सेवेस्टोपोल सीधी गाड़ी न मिलने के कारण उस्मानी को वापिस मॉस्को आना पड़ा।

यद्यपि शौकत उस्मानी ताशकन्द म स्थापित भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए थे, लेकिन स्वास्थ्य की वजह स तीसरी काग्रेस में शामिल नहीं हुए। फिर भी इसकी गतिविधियों का परिचय प्राप्त करते रहे। भारत के कम्युनिस्टों के

आतरिक विवाद और गहरा गए थे इसलिए काग्रेस में भारतीय क्राति के कार्यक्रम पर कोई निर्णय नहीं हो सका था। उल्टे कार्यक्रम के लिए दी जाने वाली अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता को भी रद्द कर दिया गया।

उस्मानी यूक्रेन होते हुए क्रीमिया पहुँचे और वहाँ से सेवस्टोपोल। सेनेटोरियम में छ सप्ताह तक उनका इलाज चला और तब कहीं जाकर बढ़ोतरी वापिस सामान्य स्थिति में पहुँची। इसके बाद दो सप्ताह तक फिर स्वास्थ्य-परीक्षण चलता रहा और तब कहीं जाकर सकट से मुक्ति हुई।

स्वस्थ होकर वे वापस मॉस्को चले आए। लेकिन जब उन्हें सार्थक कार्यक्रम की कोई आशा नहीं रही तो उन्होंने वापस भारत लौटने का निर्णय किया ताकि यहाँ आ कर स्वतत्रता सग्राम में सक्रिय भूमिका अदा की जा सके। वे राय से मिले और अपना फैसला सुना दिया। राय न इसका विरोध किया। उस्मानी ने अपनी बात फिर दोहराई तो राय ने कॉमिन्टर्न के जनरल सैक्रेटरी रियाकोवस्की से मिलने की सलाह दी। जब उससे मुलाकात की गई तो उसने उस्मानी को राडेक के पास भेज दिया और राडेक ने उन्हे सीधे स्टालिन के पास चले जाने को कहा।

उस्मानी रूसी भाषा जानते थे इसलिए बिना किसी दुभाषिये के स्टालिन के कार्यालय पहुँच गए। जाते ही उन्होने कहा 'मै वापिस भारत जाना चाहता हूँ, कृपया इसकी व्यवस्था करें।'

स्टालिन अप्रभावित लगे। उन्होंन उस्मानी पर अपनी नजर गड़ाईं और पूछा— यदि अध्ययन को पूरा नहीं करके जाना चाहत हो तो फिर यहाँ आए किसलिए?' उस्मानी न उन्हें साफ तौर पर बता दिया कि वह और साथी सोवियत सघ से भारतीय क्राति के लिए हथियारा की मदद लने आए थे लेकिन कॉ राय से मालूम हुआ कि कॉमिन्टर्न इसके खिलाफ है। अत ठहरने का कोई अर्थ नहीं। स्टालिन ने इस बात का खडन करते हुए कहा—'नहीं, हम तो आपकी मदद करना चाहते है, लेकिन आप लोग ही आपस में झगड़ते रहते है।'

इस पर उस्मानी ने कहा— मै उन लोगों म नही हूँ।' स्टालिन ने कहा—'अच्छा है कि तुम उनम नही हो। लेकिन तुम्हारे जाने का तरीका क्या होगा?'

मै पर्शिया के रास्ते से चले जाने की सोचता हूँ। मुझे कॉमिन्टर्न से आर्थिक सहायता नहीं चाहिए।'

बिना पैस के तुम क्या करोगे?' स्टालिन ने पूछा।

'मै फकीर का वेष बनाकर अपने आपको छिपाता हुआ चला जाऊँगा।'

क्या जाने के बाद भी तुम हम से सपर्क बनाए रखने का वायदा करते हो?'

निश्चय ही, यदि आप हमें हथियार देने का वायदा करें।'

इस पर स्टालिन ने भारतीय काग्रस द्वारा चलाए जाने वाले स्वतत्रता सग्राम के अहिंसक स्वरूप की व्याख्या की और इसी सदर्भ में गाँधीजी द्वारा विदेशों से हथियारी मदद लेने की मनाही का हवाला दिया और ऐसी स्थिति में ऐसे दु साहसिक

कदम न उठाने की सलाह दी।

स्टालिन ने उस्मानी से हाथ मिलाया, जाने की सहमति व्यक्त की और साथ ही पूरी व्यवस्था भी करवा दी।

शौकत उस्मानी के नवयुवा व्यक्तित्व का प्रथम चरमोत्कर्ष केरकी रक्षक तक की छवि को उभारता है, जिसमें मातृपितृहीन बचपन की रिक्तता, एक किशोर के द्वारा अपनी ही रचना करनेवाले आवेग, आवेश, अवस्था आदि भीतरी उपकरणो को सजासवार कर मौत हथेली पर ले शूलों के रास्तों पर चलते रहने की यायावरता, गुलामी के जानलेवा उत्पीड़न को झेलते हुए बढ़ते जाने की अनवरतता और एक क्रातिकारी की अतर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रियता का सन्निवेश है।

इस पहले शिखर के ढलान पर एक ओर उस्मानी की चेतना का विकास होता है, सपर्कों की व्यापकता से ससार की लगभग सब जानी-मानी हस्तियाँ उसकी अपनी और वह उन सबका अपना—एक 'वसुधैव कुटुब' के 'कॉमरेड' सदस्य के रूप में घुल-मिल जाता है—एक फक्कड़! 'क्राति' के ठेकेदारा क आतरिक कलह और उसके दुष्परिणामा को भोग कर वह कटता-फटता रहता है, बार-बार अपने को सीने-पिरोने की कोशिश करता रहता है और जब जहाँ कही किसी प्रकार की सार्थकता की सभावना नहीं लगती तो वह सारे बधन तोड़ कर सारे आराम ठुकरा कर फिर से कांटों पर चलने के लिए फ़कीर बनकर रवाना हो जाता है।

शौकत उस्मानी जहाँ लेनिन द्वारा सदर्भित किया जाता है, वह स्टालिन के लिए अपना स्थान निर्धारित करता है, अनेक कम्युनिस्ट नेताओं के साथ जुड़ता जाता है तो सोवियत यूनियन के सामान्य नागरिका के सपर्कों की उपलब्धि बटोरने में भी कामयाब होता है। वह अब बीकानेर (राजस्थान) बल्कि भारत की सीमाओं से जुड़ा हुआ होते हुए भी अन्तर्राष्ट्रीय मानवता के शिखर का स्पर्श कर चुका है। अब वह उस स्थिति में प्रवेश कर गया है जहाँ से पीछे लौट कर पारिवारिक अथवा निजी सबधों का निर्वाह करना सभव नहीं दिखाई देता। जितना दम उसकी अनुभवजन्य वाणी में है उतना ही उसकी लेखनी में यद्यपि उपर्युक्त अवधि तक उसने अपेक्षाकृत कम ही बोला-लिखा है।

पेशावर षड्यत्र केस और ट्रायल

मॉस्को में सी पी आई के सचिव ने उस्मानी को विदाई दी और वे स्कूरी तेज़ गाड़ी से प्रथम श्रेणी के दर्जे में बैठ कर बाकू के लिए रवाना हुए।

बीच में रोस्तोव-ऑन-डॉन जैसे खूबसूरत शहरो से गुज़रते हुए बाकू (पूर्व) के पुराने शहर पहुँचे और वहाँ दो दिनों तक ईरान जाने वाले स्टीमर के इतज़ार मे रुकना पड़ा। बाकू से शुरू होने वाली यात्रा भी कष्टप्रद थी क्योंकि स्टीमर मे सो सकने की जगह उपलब्ध न हो सकी। यह वह समय था जब टर्की फ्रास-ब्रिटेन

आतरिक विवाद और गहरा गए थे इसलिए काग्रेस में भारतीय क्राति के कार्यक्रम पर कोई निर्णय नहीं हो सका था। उल्टे कार्यक्रम के लिए दी जाने वाली अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता को भी रद्द कर दिया गया।

उस्मानी यूक्रेन होते हुए क्रीमिया पहुँचे और वहाँ से सेवस्टोपोल। सेनेटोरियम में छ सप्ताह तक उनका इलाज चला और तब कहीं जाकर बढ़ोतरी वापिस सामान्य स्थिति में पहुँची। इसके बाद दो सप्ताह तक फिर स्वास्थ्य-परीक्षण चलता रहा और तब कहीं जाकर सकट से मुक्ति हुई।

स्वस्थ होकर वे वापस मॉस्को चले आए। लेकिन जब उन्हें सार्थक कार्यक्रम की कोई आशा नहीं रही तो उन्होंने वापस भारत लौटने का निर्णय किया ताकि यहाँ आ कर स्वतत्रता सग्राम मे सक्रिय भूमिका अदा की जा सके। वे राय से मिले और अपना फैसला सुना दिया। राय ने इसका विरोध किया। उस्मानी ने अपनी बात फिर दोहराई तो राय ने कॉमिन्टर्न के जनरल सैक्रेटरी रियाकोवस्की से मिलने की सलाह दी। जब उससे मुलाकात की गई तो उसने उस्मानी को राडेक के पास भेज दिया और राडेक ने उन्हें सीध स्टालिन के पास चले जाने को कहा।

उस्मानी रूसी भाषा जानते थे इसलिए बिना किसी दुभाषिये के स्टालिन के कार्यालय पहुँच गए। जाते ही उन्होंने कहा 'मै वापिस भारत जाना चाहता हूँ, कृपया इसकी व्यवस्था करें।'

स्टालिन अप्रभावित लगे। उन्होंने उस्मानी पर अपनी नजर गड़ाई और पूछा— यदि अध्ययन को पूरा नहीं करके जाना चाहते हो तो फिर यहाँ आए किसलिए ?' उस्मानी ने उन्ह साफ तौर पर बता दिया कि वह और साथी सोवियत सघ से भारतीय क्राति के लिए हथियारा की मदद लेने आए थे लेकिन कॉ राय से मालूम हुआ कि कॉमिन्टर्न इसके खिलाफ है। अत ठहरने का कोई अर्थ नहीं। स्टालिन ने इस बात का खडन करत हुए कहा— नही, हम ता आपकी मदद करना चाहते है, लेकिन आप लोग ही आपस में झगड़ते रहते है।'

इस पर उस्मानी ने कहा—'मै उन लोगों मे नही हूँ।' स्टालिन ने कहा—'अच्छा है कि तुम उनम नही हो। लेकिन तुम्हारे जाने का तरीका क्या होगा ?'

मै पर्शिया के रास्त से चले जाने की सोचता हूँ। मुझे कॉमिन्टर्न से आर्थिक सहायता नहीं चाहिए।'

'बिना पैसे क तुम क्या कराग ?' स्टालिन ने पूछा।

मै फ़कीर का वेप बनाकर अपने आपको छिपाता हुआ चला जाऊँगा।'

'क्या जाने क बाद भी तुम हम से सपर्क बनाए रखने का वायदा करते हो ?'

'निश्चय ही, यदि आप हमें हथियार देने का वायदा करें।'

इस पर स्टालिन ने भारतीय काग्रेस द्वारा चलाए जाने वाले स्वतत्रता सग्राम के अहिंसक स्वरूप की व्याख्या की और इसी सदर्भ में गाँधीजी द्वारा विदेशों से हथियारी मदद लेने की मनाही का हवाला दिया और ऐसी स्थिति में ऐसे दु साहसिक

कदम न उठाने की सलाह दी।

स्टालिन ने उस्मानी से हाथ मिलाया, जाने की सहमति व्यक्त की और साथ ही पूरी व्यवस्था भी करवा दी।

शौकत उस्मानी के नवयुवा व्यक्तित्व का प्रथम चरमोत्कर्ष केरकी रक्षक तक की छवि का उभारता है, जिसमें मातृपितृहीन बचपन की रिक्तता, एक किशोर के द्वारा अपनी ही रचना करनेवाले आवेग, आवेश, अवस्था आदि भीतरी उपकरणो को सजासवार कर मौत हथेली पर ले शूलों के रास्तों पर चलते रहने की यायावरता, गुलामी के जानलेवा उत्पीड़न को झेलते हुए बढ़ते जाने की अनवरतता और एक क्रातिकारी की अतर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रियता का सन्निवेश है।

इस पहले शिखर के ढलान पर एक ओर उस्मानी की चेतना का विकास होता है, सपर्कों की व्यापकता से ससार की लगभग सब जानी-मानी हस्तियाँ उसकी अपनी और वह उन सबका अपना—एक 'वसुधैव कुटुब' के 'कॉमरेड' सदस्य के रूप में घुल-मिल जाता है—एक फक्कड़! 'क्राति' के ठेकेदारों क आतरिक कलह और उसके दुष्परिणामों को भोग कर वह कटता-फटता रहता है, बार-बार अपने को सीने-पिरोन की कोशिश करता रहता है और जब जहाँ कही किसी प्रकार की सार्थकता की सभावना नहीं लगती तो वह सारे बधन तोड़ कर सारे आराम ठुकरा कर फिर से काटों पर चलने के लिए फ़कीर बनकर रवाना हो जाता है।

शौकत उस्मानी जहाँ लेनिन द्वारा सदर्भित किया जाता है, वह स्टालिन के लिए अपना स्थान निर्धारित करता है, अनेक कम्युनिस्ट नेताओं के साथ जुड़ता जाता है तो सोवियत यूनियन के सामान्य नागरिको के सपर्कों की उपलब्धि बटोरने मे भी कामयाब होता है। वह अब बीकानेर (राजस्थान) बल्कि भारत की सीमाओं से जुड़ा हुआ होते हुए भी अन्तर्राष्ट्रीय मानवता के शिखर का स्पर्श कर चुका है। अब वह उस स्थिति में प्रवेश कर गया है जहाँ से पीछे लौट कर पारिवारिक अथवा निजी सबधों का निर्वाह करना सभव नहीं दिखाई देता। जितना दम उसकी अनुभवजन्य वाणी में है उतना ही उसकी लेखनी म यद्यपि उपर्युक्त अवधि तक उसने अपेक्षाकृत कम ही बोला-लिखा है।

पेशावर षड्यत्र केस और ट्रायल

मॉस्को म सी पी आई के सचिव ने उस्मानी को विदाई दी और वे स्फूरी तेज गाड़ी से प्रथम श्रेणी के दर्जे में बैठ कर बाकू के लिए रवाना हुए।

बीच म रास्तोव-ऑन-डॉन जैसे खूबसूरत शहरा स गुज़रते हुए बाकू (पूर्व) के पुराने शहर पहुँचे और वहाँ दो दिनो तक ईरान जाने वाले स्टीमर के इतज़ार में रुकना पड़ा। बाकू से शुरू होने वाली यात्रा भी कष्टप्रद थी क्योकि स्टीमर में सो सकने की जगह उपलब्ध न हो सकी। यह वह समय था जब टर्की फ्रास-ब्रिटन

द्वारा उसके विरुद्ध थोपे गए युद्ध में जूझ रहा था, ग्रीस हमलावर था। टर्की के जिन सैनिकों ने सावियत सघ मे शरण ली थी उन्हें वह टर्की जाने की सब सहूलियतें दे रहे थे। इसलिए उस्मानी को मुसीबत में ही यात्रा करनी पड़ी। वैसे इसमें एक सैद्धातिक पक्ष भी निहित था कि उस समय सभी प्रगतिशील ताकतें टर्की का समर्थन कर रही थीं। टर्की की नीति में प्रतिक्रियावादी परिवर्तन तो अता तुर्क की मौत के बाद आया।

ईरान के दक्षिण की तरफ सोवियत सेना न प्रतिक्रियावादी डोनकिन की सेनाओं को ध्वस्त कर दिया तो पर्शियन कम्युनिस्टों ने घिलान प्रात पर अपना वर्चस्व कायम कर दिया जिसकी राजधानी रेश्त थी।

उस्मानी लेगोन पहुँचे और वहाँ से रेश्त। उस समय रेश्त कोचक खान ब्रिगेड से घिर गया था जो डाकुओं का गिरोह था और जो विदेशियों के साथ-साथ कम्युनिस्टों के खिलाफ भी गुरिल्ला लड़ाई लड़ रहा था।

परिस्थितिवश सोवियत साथियों और कॉमिन्टर्न द्वारा ज्यों ही घिलान गणतत्र का विलोपन स्वीकार कर लिया गया और रेश्त पर पुन रेजा खानी फौजों ने 'कम्युनिस्ट मुर्दाबाद' हमारे शाह जिन्दाबाद' के नारों क साथ घेरा डाल दिया तो कम्युनिस्टों के लिए वहाँ से जाने क सिवा कोई विकल्प नहीं बचा। उस्मानी इस समय एक होटल मे फसे हुए थे और उनको सलाह दी गई थी कि वे भी कम्युनिस्टों के साथ वहाँ से वापिस बाकू चले जायें। लेकिन इस पर उस्मानी सहमत नही हुए।

आखिर येन केन प्रकारेण यात्रा जारी रखते हुए पर्शियन पासपोर्ट के जरिए वे 22 जनवरी, 1922 को बबई आ पहुँचे। इस समय वे पारसी के रूप में थे और दो दिन के बाद भूमिगत हो गए। एक दिन मोची के रूप में तो कभी किसी पजाबी के यहाँ बातल साफ करनेवाले के रूप में। बबई म दो महीनों तक यही हाल रहा।

यू पी में एक शिक्षक की भूमिका अदा करते हुए उन्होंने भारत की स्थिति का अध्ययन किया और मॉस्को मे अपने दोस्तों को रिपोर्ट भेजते रहे जिसमें प्रमुखत उस समय के राष्ट्रीय आन्दोलन के विषय पर अपने ऊपर पड़ने वाले प्रभावों की अभिव्यक्ति होती थी।

उस्मानी को आश्चर्य था कि राय ने उनके द्वारा भेजी गई रिपोर्टों की सराहना की और 'मासेज़' एडवास गार्ड' तथा 'वैनगार्ड' आदि में उस्मानी के नाम का उल्लेख किए बिना उनकी रिपोर्टों को प्रकाशित भी कर दिया था। गया-काग्रेस-अधिवेशन को 'गया में श्राद्ध समारोह' की सज्ञा उस्मानी ने ही दी थी जो उन दिनो बड़ी चर्चित हो गई थी।

राष्ट्रीय आन्दोलन का अध्ययन करने पर शौकत उस्मानी इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि इस समय विधिवत् और लिपिबद्ध किसी क्रातिकारी सगठन का निर्माण करना आत्मघाती सिद्ध होगा, अत सबसे सही रास्ता यह होगा कि वे एक मिशन को आत्मसात कर कार्य करत रहें। इस मद्देनज़र रखते हुए उन्होंने कम्युनिस्ट साहित्य

को घर-घर पहुँचाने का अथक परिश्रम किया। पर्शिया और यूरोप से प्राप्त सामग्री के वितरण को उन्होंने मुख्य काम बना लिया। सभवत यही मिशनरी कार्य था जिसकी वजह से उन्होंने पद की महत्त्वाकाक्षा को पैदा ही नहीं होने दिया।

कानपुर जाकर उन्होंने बनारस विश्वविद्यालय और मजदूर वर्ग को कार्यक्षेत्र बनाया। उनके पूर्व अध्यापक डॉ सपूर्णानद ने उनका सपर्क गणश शकर विद्यार्थी से करा दिया जो उत्तरी भारत में सब प्रकार के क्रातिकारियो के सपर्कों के केन्द्र-बिन्दु थे। विद्यार्थीजी उस्मानी के बहुत बड़े समर्थक सिद्ध हुए।

चार माह बाद वे एक बार फिर पर्शिया चले गए लेकिन फिर जल्दी ही वापिस बबई आ गए। उस्मानी और राय के मतभेद सगठन निर्माण को लेकर गहराने लगे। बबई से फिर से बनारस पहुँच कर छात्रो में काम करने लगे।

इस तरह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए बगाल, यू पी , पजाब और राजस्थान में जगरा जगाते घूमते रहे, लेकिन मुख्य कार्यक्षेत्र कानपुर, बनारस और राहतक रहा। उस्मानी के काम के बारे में डॉ सपूर्णानद ने अपनी पुस्तक Memories and Reflections में लिखा है—'हम में से अनेक मार्क्सवाद का अध्ययन करने के उत्सुक थे किन्तु मुश्किल यह थी कि शुरू कैसे किया जाय फिर सन् 1922 के पतझड़ में एक अवसर आया। कुछ मुहाजिरो ने खिलाफत' की नीति छोड़ दी थी। उनमें से कुछ रूस चले गए थे उनमें एक शौकत उस्मानी था जो बीकानेर मे मेरा शिष्य रह चुका था। उस्मानी बनारस आया उसने बीकानेर के अपने सहपाठी के जरिए सपर्क किया। मुझे बहुत-सी अद्यतन गतिविधियों की सूचना मिली और सबसे जरूरी बात यह थी कि तब से लेकर रूस में प्रकाशित किताबें, पत्रिकाएँ और अन्य साहित्य आदि लगातार बिना व्यवधान के मिलते रहे। हम में से बहुत से पक्के काग्रेसी थे फिर भी ऐसा प्रतिबधित साहित्य दूसरों तक पहुँचाने में नहीं झिझकते थे। उस्मानी कुछ समय तक बनारस रहा, फिर मैंने उसे कानपुर में श्री गणेश शकर विद्यार्थी क पास भेज दिया।'

उस्मानी के अनुसार ऐसे प्रतिबधित साहित्य को सरकारी तत्र से बचाकर रूस से लाने और वितरण करने की एक पूरी व्यवस्था-एजेन्सी थी जो विदेशों स लेकर बबई तक काम कर रही थी। उस्मानी यू पी के केन्द्र और अजमेर के उपकेन्द्र म प्रमुख व्यवस्थापक थे। विद्यार्थीजी ने उस्मानी को कानपुर के एक राष्ट्रीय मुस्लिम हाई स्कूल में सैकिण्ड मास्टर के तौर पर नियुक्त करवा दिया था। वहाँ वे रात को किसी सुदूर गुप्त स्थान पर मजदूरों की क्लास लेत थे और दिन में छात्रों को शिक्षित करने और साहित्य वितरण करने का काम किया करते थे। लेकिन जब खुफिया पुलिस के पीछे लगने की सूचना विद्यार्थीजी के द्वारा दी गई ता उस्मानी को कानपुर के ठहराव को तोड़ना पड़ा। वे कानपुर से कलकत्ता चले गए। फिर कलकत्ता से अलीगढ़, क्रमश अलीगढ़ से रोहतक जिले मे पहुँचे जहाँ सहायक प्रधानाध्यापक के रूप में काम सभाला।

रोहतक जिले में उन्होंने फौज के सिपाहियों से सपर्क किया जिनमें हवालदार मेजर और कर्नल भी शामिल थे। इनमें कुछ को वे कम्युनिस्ट साहित्य पढ़ाते थे। छुट्टियों पर आए सैनिकों की छुट्टियाँ बढ़ाने की अथवा उनके प्रमोशन की अर्जियाँ लिख देते। कुछ उस्मानी से भीतर ही भीतर इतने प्रभावित हुए कि अगर देश के नेता आदेश दें तो व बगावत पर उतर आएँ।

मई में गर्मी की छुट्टियाँ हुईं और उस्मानी को कुछ पत्र मिले कि कानपुर में कुछ साहित्य सामग्री वितरण के लिए उनकी प्रतीक्षा कर रही है। वे कानपुर में उसी स्कूल म 8 मई, 1923 को पहुँच। वहाँ स उनका इरादा कलकत्ता जाने का था।

9 मई, 1923 को सुबह घड़ी के खराब होने की वजह से अलार्म नहीं बजा और ट्रेन चूक गइ। अब शाम को जाने का तय किया। गोवाल टोली मजदूर सभा कार्यालय से सारा आवश्यक साहित्य पहले ही ले लिया था। तीसरे पहर इसी स्कूल को सेना और पुलिसवालों ने घेर लिया और शौकत उस्मानी को गिरफ्तार करके बद गाड़ी मे ले गए।

कटूनेमेंट पुलिस थाने में ले जाकर उन्हें एक कोठरी में डाल दो दिनों तक तालाबदी की हालत में रखा गया। एक बार पुलिस अफसर निरीक्षण करने आया और उसस पूछा गया तो उन्हें जवाब मिला— तुम्हें जल्दी ही उस स्थान से बाहर ले जाया जायगा।'

उस कोठरी मे वह समय अत्यत कष्टप्रद रहा। तीसरे दिन सब-इस्पैक्टर आया और उन्हें तालाबदी से बाहर निकाल कर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट के बगले पर ले गया जहाँ यू पी पुलिस का इस्पैक्टर जनरल और उसके कुछ सहायकों ने उस्मानी से पूछताछ चालू की। 'तुम्हारा नाम ?'

उत्तर में बार-बार नकली नाम बताया गया।

तुम्हें कुछ कहना है ?'

साफ इन्कार करते हुए उस्मानी ने कहा—'मुझे मालूम है कि अधिक से अधिक तुम मुझे फासी पर लटका दोगे जिसकी मुझे पर्वाह नहीं।'

यदि तुम खुद कुछ भी न बताओ तो भी तुम्हे जल्दी ही मालूम हो जायगा कि तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया गया है।'

उस समय तो उस्मानी को अदाज नहीं लगा, लेकिन बाद में 12 मई को पेशावर ले जाने पर पता चला कि उनके खिलाफ मॉस्को षड्यत्र केस' में जिसे 'पेशावर षड्यत्र केस के रूप में जाना-पहचाना जाता है—दो मुखबिर थे।

जब कानपुर से गाड़ी मे रवाना हुए तो 40 की सीटों वाले उस बद इटरक्लास डिब्बे में एक उस्मानी और पुलिस सब-इस्पेक्टर तथा सात सशस्त्र कास्टेबल अर्थात् कुल 9 व्यक्ति थे। हर स्टेशन पर भारी भीड़ के नारों का शोर था। उस्मानी ने पूछा— यह काहे की आवाज़ है ?' सब-इस्पेक्टर ने जवाब दिया—'ये आपको देखने आए हैं।' उस्मानी को अचभा हुआ लेकिन उन्हें बाद में पता चला कि उनको बोल्शेविक

एजेन्ट' के रूप में अखबार वालों ने कई तरह से जोर-शोर से प्रचारित कर दिया था। जैसे

'द टाइम्स' (लदन)—12 मई, 1923—'भारत में बोल्शेविक गतिविधि'—एक आरोपित एजेन्ट की गिरफ्तारी (निजी सवाददाता द्वारा)

इलाहाबाद, मई 11—'एक बोलशेविक एजेन्ट शौकत उस्मानी को क्रिमिनल प्रोसिज़र कोड की धारा 121ए के तहत कानपुर में गिरफ्तार कर लिया गया। उसके पास से प्रतिबधित साहित्य और पत्राचार बरामद किए जाने की खबर मिली है।'

इसी अखबार के 14 मई, 1923 के सस्करण का अश देखिए

इलाहाबाद, 13 मई—'भारत में रैड (कम्युनिस्ट) एजेन्ट को ट्रायल के लिए भेजा'

—'उम्मीद है कि शौकत उस्मानी की गिरफ्तारी से भारत में सोवियत प्रचार के सबध में कई राज खुलेंगे। यह बताया जाता है कि उस्मानी उस देश की यात्रा करता रहा था, बोल्शेविक विचारों के फैलाव के लिए दलों को सगठित कर रहा था। वह कानपुर की नेशनल मुस्लिम स्कूल में पेशावर में जारी किए गए वारट पर गिरफ्तार किया गया। 'उस्मानी को षड्यत्र के आरोप पर ट्रायल के लिए पेशावर ले जाया जायगा।'

उस्मानी ने अपनी आत्मकथा में समाचार पत्र की इस भूल की ओर भी सकेत किया है जिसमें 'दलों को सगठित करने' का उरलेख है।

कानपुर से प्रकाशित 'वर्तमान' ने उस्मानी की गिरफ्तारी पर टिप्पणी करते हुए लिखा—'यह बात ज्ञात थी कि बोलशेविक दूत भारत के बड़े नगरों में काम कर रहे हैं, परन्तु सरकार जनता को डराने के लिए जो तरीके अपना रही है उससे वस्तुत भारत में कम्युनिज्म मजबूत ही हो रहा है।'

लाहौर के नेशन' ने 20 मई, 1923 को लिखा कि 'एक ग़रीब व्यक्ति को बोल्शेविक साहित्य रखने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया। क्या बोल्शेविक साहित्य रखना अपराध है? और वास्तव में बोल्शेविक साहित्य क्या है? ये मूर्ख लोग, यदि इनका बस चले तो कार्ल मार्क्स की 'डास कैपिटल' के साथ बाइबिल को भी अभिनिषिद्ध कर देंगे। क्या एक व्यक्ति को गिरफ्तार करके पश्चिमी सीमात को निर्वासित कर देना कानून व व्यवस्था है? जनता को यह जानने का हक है कि हमारे घबड़ाये हुए एलो-इडियन, बोल्शेविकों का पीछा करके क्या प्राप्त करना चाहते है? वस्तुत अनभिज्ञ लोग जिसे बोल्शेविज़्म कहते है वह गाँधी के आन्दोलन के साथ (दोनों अपने ढग से) ईसाइयत के उदय के बाद मानव जाति के लिए सबसे बड़ा वरदान है। ये एलो-इडियन, जिनके हाथ निर्दोष व्यक्तियों के खून से रगे है, और निर्दयतापूर्वक लालच से बड़े नगरों को गुलामों के बाज़ारों और वेश्यालयों में परिवर्तित कर रहे है, बोल्शेविकों के विरुद्ध तथ्यों को पेश करें और हम मार्क्सवाद की ईमानदारी और सच्चाई के साथ पूजीवाद के घृणित पाखड पर निर्णय करें। हम झूठ के ऐसे पुलिंदे

बहुत देख चुके हैं।'

इसी प्रकार 'प्रणवीर' (नागपुर), 'अकाली ते परदेशी' (अमृतसर), 'बोम्बे क्रॉनिकल', राष्ट्रीय पत्र 'प्रताप', 'महाराष्ट्र', 'प्रजापक्ष' (अकोला), 'इडियन वर्ड', 'आज' (बनारस), 'सूर्य' (बनारस) और 'हिन्द केसरी' (बनारस) आदि सभी पत्र-पत्रिकाओ ने 'बोल्शेविक षड्यत्र केस' के अभियुक्तों का पुरजोर समर्थन और अग्रेजी सरकार की न्याय प्रणाली और प्रशासनिक दुर्व्यवहार का जम कर पर्दाफाश किया। सारे भारतवासियों में से एक भी स्वर ऐसा नहीं था जो अभियुक्तों का विरोधी और अग्रेजी प्रशासनिक कार्यवाही का समर्थक हो। काग्रेस के लगभग सभी नेताओं ने अभियुक्तो का समर्थन किया था। मुखर होकर मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू और डॉ असारी बचाव पक्ष की कमेटी के रूप में काम कर रहे थे तथा दूसरे वाम रुझानी काग्रेसी भी सक्रिय थे। गाँधीजी भी जेल मे अभियुक्तों से मिलने गए थे।

ट्रायल के लिए पेशावर पहुँचने पर पुलिस की गाड़ी उस्मानी को सीधे कैंट पुलिस स्टेशन ले गई जिसे सदर थाना कहा जाता है। वहाँ उन्हें स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया जिसने कुछ आवश्यक बात दर्ज करके लॉक-अप में भेज दिया। कई दिनों तक लॉक-अप के स्थान बदलते गए ताकि बच कर निकलने की कोशिश कामयाब न हो सके।

एक सप्ताह तक उस्मानी से बयान हासिल करन की हर प्रकार की कोशिश की गई, लेकिन पुलिस को कुछ भी हासिल नही हुआ। तब उन्ह हथकड़ी-बेड़ी लगा कर बुर्ज हरिसिह पुलिस थाने मे भेज दिया गया। भयकर बदबू मारती हुई कबल को गीले फर्श पर बिछाने और ऐसी ही दूसरी घिनौनी कबल को ओढ़ने के लिए दिया गया। हर रोज पूछताछ के लिए दो सशस्त्र पुलिसवालों के साथ सदर थाने जाना, उस्मानी द्वारा किसी प्रकार के जवाब का न दिया जाना और मार-पीट आदि विविध प्रकार के उत्पीड़न के बढ़ते जाने का जारी रहना—एक सामान्य दिनचर्या हो गई।

पेशावर हवालात म ट्रायल की अवधि में नींद कहाँ नसीब थी। कबलों की जुए शरीर पर रेंगती रहती थी। हर सुबह ताडना के साथ पूछताछ का सिलसिला था और हर रात लॉक-अप की जगह बदल दी जाती थी। बेड़ियों के कारण नगी टागों के निचले हिस्से से खून रिसता रहता था क्याकि उन्हें दूर तक धकेला जाता था। पट्टी बाध कर प्राथमिक चिकित्सा का नाम तक नहीं था। न्यायाधीश एक ही हुक्म दोहराता रहता 'कस्टडी में रिमाड दिया।' पुलिस का इरादा था पेशावर षड्यत्र केस' (मॉस्को षड्यत्र केस भी कहा जाने लगा) में अन्य अभियुक्तों के साथ उन्हें शामिल करना, लेकिन वकील की राय अलग थी। उसकी दलील थी कि दूसरों की गतिविधियों का भारत की राजनीति से कोई सबध नहीं है और उस्मानी की गिरफ्तारी का देश के भीतर सरकार विरोधी कार्यवाही के सदर्भ में व्यापक तौर पर प्रचारित प्रसारित किया जा चुका है, इसलिए दोनों को एकरूपता में नहीं देखा जा सकता।

उस्मानी को भयकर उत्पीड़न का साम्"ना करना पड़ा। उन्हें मुखबिर बनाने के लिए खूब प्रयास किए गए, पर सब नि॰ साबित हुए। एक प्रयास यह भी था कि अखबार वालों की पहुँच से दूर-दरा , इलाके मे ले जाकर और अनेक प्रकार की तकलीफें देकर कुछ रहस्य उगलवान की चेष्टा की गई, लेकिन वह भी व्यर्थ गई। 'तुम कितने ठोस हा, वरना इतनी पीडा और कोई नही सह सकता था'—एक अधिकारी कह उठा।

हथकडियों के कारण बेड़ियो से जकड़ी खून रिसती हुई टागें, जिन्हें उस्मानी छू भी नहीं सकते थे, बेहद पीड़ा दे रही थीं। इसी हालत में उन्हे अब्बोत्ताबाद लाया गया। यदि कोई सहानुभूति का रुख दिखाता तो खुफिया सब-इस्पेक्टर शेख अब्दुल अजीज़ झिड़क देता—'यह बोल्शेविक षड्यन्त्रकारी है, इस पर इसानी बर्ताव की जरूरत नहीं।'

उस्मानी को जल्दी ही अब्बोत्ताबाद के जिले की केन्द्रीय जेल म पटक दिया गया। हर रोज उन्हें अग्रज अधिकारी के बगले के लॉन में ला कर घसीटा जाकर पशुवत् पीटा जाता और अग्रेजी अधिकारी इस क्रूरता को देख-देख कर मजा लेता।

जेल में उन्ह उन तीन आदतन सामाजिक अपराधिया क साथ रखा गया जो हिस्ट्री-शीटर थे। उस्मानी ने शिकायत की। इस पर उन्ह पशावर जेल मे बदल दिया गया। अग्रेजी राज्य के अधीन कैदियों पर कहर ढाने वाले दो मुख्य कारखाने थे—पेशावर जेल और दूसरी बरेली जेल। बाद में जाते समय अग्रेजा ने देश के टुकड़े करके एक जेल पाकिस्तान को सौप दी और दूसरी भारत को।

पेशावर जेल की 8 पौड भारी साकला वाली बेड़ियों ने उस्मानी के पावों को जिन्दगी भर के लिए घावो के निशान दे दिए ये जिन्हें देख कर उनकी दर्दभरी स्मृतियाँ उभर आती थीं। पेशावर की पीड़ा उनकी जीवनसगिनी बन चुकी थी। वे कभी-कभी अकबर खाँ कुरेशी को 10 साल तक की दी गई कठोर सजा के तहत प्रदत्त पेशावर हवालात की पीड़ा को महसूस कर सिहर उठते थे।

वैसे ट्रायल के दौरान कोई भी जबरिया मशक्कत जायज नहीं होती, लेकिन उस समय सीमात प्रदेश को भारत में 'अराजक क्षेत्र' कहा जाता था। यद्यपि उस्मानी जबरन अटशट काम करने के खिलाफ विद्रोही बन रहे थे लकिन वे अकेले थे और उन्हें यह आशका भी थी कि इन्कार करने का अधिक भुगतान दूसरे कैदियों को अधिक उत्पीड़न झेलकर करना होगा।

ढाई महीने की ट्रायल के बाद उन्हें मुख्य जेल भेज दिया गया, जहाँ कुछ राहत-सी महसूस हुई। यहाँ उन्हें स्टेट प्रिजनर के रूप में रखा गया। यहीं पर वे दो साल के सजायाफ्ता अभियुक्तों के सपर्क में भी आए जो खिलाफ़त-काग्रेस आदालन के नेता थे। बाद में उस्मानी को सबसे अलग एकाकी रूप में कर दिया गया।

10 मार्च, 1924 को सुबह 6 बजे अचानक आदेश हुआ कि 'अपना सामान उठाआ और चलो।' यड़ी-हथकड़ी लगाए हुए उन्हें तागे पर बिठा दिया गया और

वहाँ से रेल्वे स्टेशन ले जाया गया। सशस्त्र पुलिसिये साथ में थे।

शाम को जब कानपुर की जिला जेल पहुँचे तो जेलवालों ने अदर लेने से इन्कार कर दिया, लेकिन ऊपर के अधिकारियों के हस्तक्षेप करने से अदर दाखिला कर दिया गया।

जेलर ने कुछ औपचारिकताएँ पूरी की और फिर उन्हें सिविल वार्ड में ले जाया गया जहाँ एस ए डागे पहले से कैद भोग रहे थे। डिप्टी जेलर ने कहा— मिस्टर उस्मानी, ये मिस्टर डागे है और मिस्टर डागे, य है सीमात प्रदेश से लाए गए मिस्टर उस्मानी।' उस्मानी को अचभा हुआ डागे की तरफ़ देख कर—इतना छोटा कद और इतनी ऊँची प्रतिभा। दोनों की यह पहली मुलाकात थी और वह भी इस रूप मे। डागे ने अपनी पुस्तक Hell Found में इस मुलाकात का वर्णन किया है।

दो दिनों के बाद बगाल से मुजफ्फर अहमद और नलिनी दास गुप्ता को भी वहाँ ले आया गया। अब वे चार हो गए थे। यहाँ इन आज़ादी के दीवानों में गहरी दोस्ती स्थापित हो गई थी।

कानपुर—'बोल्शेविक षड्यत्र केस'

16 मार्च, 1924 को कानपुर के सयुक्त न्यायाधीश क्रिस्टी की अदालत में ऐतिहासिक बोल्शेविक षड्यत्र केस' की शुरूआत हुई। अभियुक्तों को आई पी सी (IPC) की धारा 121ए के तहत आरोपित किया गया।

उपस्थित अभियुक्त—1 एस ए डागे
2 शौकत उस्मानी
3 मुजफ्फर अहमद
4 नलिनी दास गुप्ता

अनुपस्थित अभियुक्त—1 रामचरण लाल शर्मा (पोंडीचेरी में शरणार्थी)
2 एम एन राय (यूरोप में)
3 सिगरेवलु चेट्टियार (बीमारी के कारण जमानत पर)
4 प्रो गुलाम हुसैन (मुखबिर होने के कारण क्षमा दान)

प्रमुख आरोप—'मॉस्को में प्रस्थापित कम्युनिस्ट इटरनेशनल के साथ इन अभियुक्तों ने यह षड्यत्र रचा कि भारत से ब्रिटिश सम्राट् की सत्ता को सशस्त्र क्राति से उखाड़ फेंका जाय।'

अगले दिन केन्द्रीय सरकार के इटैलिजेंस के डाइरेक्टर जनरल कर्नल काये ने केस की फाइल अदालत में पेश की। इसमें ज्यादातर सेंसर किए हुए पत्रों की प्रतिलिपियाँ और समाचार पत्रों की कतरनें इकट्ठी की हुई थीं। इन्हीं के आधार पर

अनेक झूठी बातें जोड़ कर कहानी गढ़ दी गई थी। इनमे से एक पत्र कॉमिन्टर्न के कार्यालय, मॉस्को का भी था जिसमे 'भारत की मजदूर-किसान पार्टी के प्रथम सम्मेलन' का अभिनन्दन किया गया था और साथ ही भावी कार्यक्रम में इन मूलभूत बिन्दुओं को शामिल करने की बात कही गई थी —

1 साम्राज्यवादी सबधा से पूरी तरह अलगाव
2 भारत में लोक गणतत्र की स्थापना
3 जमीदारी प्रथा को समाप्त कर भूमि का पुनर्वितरण
4 यातायात के साधनों का राष्ट्रीयकरण
5 आठ घंटे का दिन
7 न्यूनतम वेतन का निर्धारण और मेहनतकशों के हितों की रक्षा के लिए यूनियनों का निर्माण आदि।

22 अप्रैल, 1924 को एच ई होल्मे (आई सी एस) की अदालत मे सेशन-ट्रायल के अतर्गत निम्न आरोप लगाया गया

'9 मई, 1923 को अथवा इससे पहले या बाद में सम्राट् के विरूद्ध युद्ध छेड़ने का षड्यत्र रचा गया ताकि वे भारत से ब्रिटिश सम्राट् की सत्ता को हिंसक क्राति के द्वारा नेस्तनाबूद कर दें।'

सत्ता की पैरवी प्रसिद्ध वकील रौस एल्टन करने आया और उसके साथ उसका सहायक कानपुर का इस्पेक्टर दुर्गाप्रसाद था। अभियुक्तों के बचाव पक्ष में गया डॉ मनीलाल, फिजी के एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और इलाहबाद के श्री पी कपिलदेव मालवीय।

विशेष रूप से कानपुर और सामान्यतया यू पी के राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं और नेताओं ने अपना कर्त्तव्य मान कर एक बचाव कमेटी का गठन किया जिसका नेतृत्व गणेश शकर विद्यार्थी को सौपा गया। उनके साथ श्री बालकृष्ण शर्मा, श्री जे जी जोग और श्री नारायण प्रसाद अरोड़ा थे। इसे प मोतीलाल नेहरू का सरक्षण प्राप्त था जिन्होंने श्री कपिलदेव मालवीय को पैरवी के लिए भेजा था। अब श्री मालवीय डागे और नलिनी के बचाव की पैरवी पर थे तो मनीलाल मुजफ्फर अहमद और शौकत उस्मानी के बचाव के लिए।

ट्रायल के समय शौकत उस्मानी को सबसे ज्यादा खतरनाक करार दिया गया यद्यपि डागे ने भी पूरी अवधि तक सजा काटी। मुजफ्फर अहमद और नलिनी को बीच में ही छोड़ दिया गया था।

शौकत उस्मानी द्वारा 15 फरवरी, 1923 को एम एन राय को लिखे गए पत्र को बार-बार सबूत के रूप में पेश किया गया जिसके कुछ अश इस प्रकार थे

' जनता को कम्युनिज्म की सुगन्ध का भान हो चुका है। फिर भी यदि कॉमिन्टर्न सहयोग करे तो मजदूर और किसान सगठन अपने प्रत्येक सदस्य से उसकी आमदनी का दो पैसा प्रति रुपया इकट्ठा करके काफी फड जमा कर लेंगे। कानून-सम्मत

कार्यक्रम के लिए यह पर्याप्त होगा। हमारे सगठन में दौलत के गुलामों की घुसपैठ करवायी जा रही है। हमे निर्मम होकर उनका सफाया कर देना होगा। उनसे कोई समझौता नही, उन पर किसी प्रकार का रहम नहीं।'

उस्मानी के दूसरे पत्र का महत्त्व यह था कि रौस आल्स्टन उसक निम्नाकित अश पर बार-बार जार दकर दोहरा रहा था—' सशस्त्र हस्तक्षेप ही वह आखिरी इलाज है जो भारत के सर्वहारा को मौत के मुँह से बचा सकता है।' रौस का स्पष्टीकरण यह था कि भारत में सर्वहारा क्राति करने के लिए उस्मानी सोवियत सघ को सशस्त्र हस्तक्षेप हेतु आमत्रित कर रहा है।

इसके साथ ही रौस गुस्सा दिखाते हुए दलील दे रहा था कि 'उस्मानी षड्यत्रकारी तो है ही, अपितु वह अपनी इस हरकत पर गर्व भी महसूस करता है। यदि उस्मानी को सजा नही दी जाती है तो हिन्दुस्तान में किसको सजा दी जायगी।'

साथ ही सरकार पक्ष के वकील ने अनेक फर्जी गवाह भी पेश किए।

सारी औपचारिकता के बाद न्यायाधीश ने अपने निर्णय में यह घोषित किया कि इन अभियुक्तों के खिलाफ लगाए गए पूर्वोक्त आरोप सही साबित हो गए हैं कि उन्होंने षड्यत्र किया है और वे कॉमिन्टर्न से प्राप्त सहायता से सम्राट् की सत्ता को सशस्त्र क्राति करके समाप्त करने की योजना को क्रियान्वित करने में लगे हुए थे। इसलिए प्रत्यक को चार साल की सख्त कैद की सज़ा दी जाती है।

न्यायाधीश ने बचाव पक्ष की किसी दलील का स्वीकार नहीं किया। उसने पाया कि देश में ऐसे पाच ग्रुपो का आपस में सबध है—(1) बबई में डागे ग्रुप, (2) लाहौर में इन्कलाब ग्रुप, (3) यू पी म उस्मानी ग्रुप, (4) कलकत्ता में एम ए एड का और (5) मद्रास म सिगरवेलु ग्रुप।

अभियुक्तों में से उस्मानी का छाड़ कर लगभग सभी ने छाट-बड़ लिखित या मौखिक वक्तव्य दिए जो अखबारों की खबरा म तो आशिक रूप स आ गए, लेकिन न्यायाधीश ने उन पर विशष ध्यान नहीं दिया। उस्मानी के 99 पृष्ठीय लिखित वक्तव्य को बचाव पक्ष के वकील के आग्रह पर प्रस्तुत नहीं करने दिया गया जिसकी कसक उन्हें सदा कचाटती रहती थी।

ट्रायल के दौरान कानपुर जेल में उस्मानी क चाचा उमरदीन उनसे मिलने आए। यह एक हृदयद्रावक मिलन था, क्योकि चाचा न उन्हे बताया कि ज्यों ही 9 मई, 1923 का उनकी गिरफ्तारी हुई तो उनके और उनकी दादी के दा भाइयों के—अर्थात् तीनो क परिवारा पर क्या बीती। सब पुरुष, महिलाओ और बच्चों का हिरासत में ले लिया गया। यू पी की और बीकानेर की स्थानीय पुलिस के दरिंदों न औरतों के गहनों और नक़दी रुपयों को छीन-झपट कर ल लिया। बाद में काई भी किसी प्रकार का लूटा हुआ सामान वापिस नहीं आया। उन दिनों बैंक में खाते खालन का सिलसिला आम नहीं हुआ था, अत हजारों रुपए चल गए। परिवार का सात दिना तक हिरासत में रखन क बाद महाराजा ने हस्तक्षेप करके

छुड़ाया।

यह सब कहते समय उमरुद्दीन की आँखें आँसुओं से भर गई थी। आखिर वह रवाना हुआ तो उस्मानी को राहत महसूस हुई।

जेल में अस्थायी तौर पर 'ए' श्रेणी दी गई थी, लेकिन आई सी एस (ICS) अधिकारी 'बोल्शेविका' के लिए इसे कब सहन करने वाले थे, अत जुलाई के प्रथम सप्ताह से दमन की कार्यवाही चालू हो गई। भौडे किस्म का बड़ा कुर्ता, ऊँचा पायजामा, गले में लकड़ी की तख्ती, हाथ में हथकडी और पाव में बेडी। सबने इस बर्ताव के खिलाफ भूख हड़ताल का निर्णय लिया, लेकिन उस्मानी के अलावा सभी ने चार-पाच दिन के बाद भूख हड़ताल ताड़ दी क्योंकि उन्हें अलग-अलग जेलों में स्थानातरित कर दिया गया था। उस्मानी ने बरेली जेल मे बदल दिए जाने के बाद भी अपनी भूख हड़ताल जारी रखी।

भूख हड़ताली कैदी को जेल में डॉक्टर की देखरेख में रखा जाता है, इसलिए उस्मानी की निगरानी के लिए एक डॉक्टर को नियुक्त किया गया। डॉक्टर एक पक्का राष्ट्रवादी था। उसने बोत्शेविक षड्यत्र केस के बार में सब कुछ पढ़ रखा था। उसने उस्मानी के लिए एक चारपाई लाने का आदेश दिया। उन्हे दूसरे दरवाजे के ठीक अन्दर की तरफ़ रखा गया ताकि जेल सुपरिन्टेन्डन्ट की नज़र के सामने रहें। कर्नल हाप्पर बड़े सख्त मिज़ाज का था। ज्यों ही उसने उस्मानी को दखा, उसने डॉक्टर से कहा—'यदि मर जाय तो जेल बाग में ही गाड देगा।' उस्मानी ने तत्काल जवाब दिया—'यदि तुमन यह कर दिया तो सारी ब्रिटिश पार्लियामन्ट थर्रा उठगी।'

उस्मानी न दिनाक 3 7 24 से 30 7 24 तक 27 दिन भूख हडताल रखी। 30 जुलाई को डॉक्टर की हिदायत पर उन्हें जबरदस्ती पकड़ कर एक नलकी से छोटे छेद की मार्फत बावजूद उनके विरोध के मजबूरन उनके गले में अडा मिलाकर दूध डालने की कोशिश की गई। फिर भी भूख हडताल खतम की एवज म उन्होंने शर्त रखी कि गर्दन और पाव से जजीर हमशा के लिए हटा दी जाय और सरकार यह मानले कि उन्हें झुका पाने की सरकारी कोशिश सफल नही हुई। आखिर गर्दन और पाव की जजीर से छुटकारा हुआ और वह भी सबके लिए। तब भूख हडताल समाप्त हुई। उस्मानी जब तक जेल में रहे तब तक यथासभव कैदियों की मदद करते रहे।

उस्मानी को उन कैदिया के साथ रखा गया था जिन्हें सामाजिक अपराधा के कारण सजाएँ दी गई थी। एक रात को जब उस्मानी की कमर और सिर में भारी दर्द था, गर्मी भी भयकर थी और मच्छर काटते जा रहे थे—उह नीद नसीब नहीं थी। इतने मे एक कैदी के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी जिसको किसी दूसरे कैदी की कोई चीज चुराने क एवज म बुरी तरह पीटा जा रहा था। उस्मानी ने जोर से चिल्ला कर कहा—'बद करो पीटना, वर्ना मै फिर भूख हडताल कर दूगा। मै यह दमन बर्दाश्त नही कर सकता चाहे मुझ अपनी जान ही क्यों न दनी पड।' इस पर उसका पीटा जाना रुक गया। पीटने का असली उद्देश्य था कैदी से पैसे ऐंठना जो

दिन म उसक किसी रिश्तदार ने दिए थे। चोरी का इलज़ाम बनावटी था।

इसी दौरान वे रोगग्रस्त हो गए। इसका मुख्य कारण तो था नलकी के ज़रिए भूख हड़ताल तुड़वाने की वह उठापटक वाली कोशिश जो नाकाम रही थी। इससे आँत सबधी विकार पैदा हो गए। जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट द्वारा किए गए निदान के अनुसार यह बड़ी आत की टी बी थी। उन्हें जोड़ों में दर्द और बुखार ने घेर लिया।

इस बीमारी की चिकित्सा के बाद उन्हें वापिस उन्ही सामाजिक अपराधियों के घेरे में डाल दिया गया। हैड वार्डर ने उस्मानी को टॉर्चर करने की एक घिनौनी चाल का उपयोग किया। उसने एक हिन्दू वार्डर को वहाँ का जिम्मा दे दिया। उस्मानी ने इस साम्प्रदायिक साजिश के खिलाफ़ फिर से भूख हड़ताल शुरू कर दी। हिन्दू वार्डर रामप्रसाद ने तो उस्मानी से माफी माग ली और दमनात्मक बर्ताव करने स मना कर दिया, लेकिन हड़ताल तो हैड वार्डर के खिलाफ थी जो कैदियों के साथ दुर्व्यवहार करने के लिए ऐसी नीच हरकत कर रहा था।

उस्मानी का भूख हड़ताल क दौरान जल हॉस्पीटल भेज दिया गया। वहाँ पद्रह दिनों तक भूख हड़ताल चली। नतीजतन उन्हें मार्च के अन्त या अप्रैल 1925 के आरभ में देहरादून जेल में स्थानातरित कर दिया गया।

कर्नल बार्बर जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट था। वह भद्र व्यक्ति था। उस्मानी को मूज बटने का काम दिया गया। जल्दी ही अगूठ लाल हो गए क्योंकि यह एक कलमची के लिए निहायत सख्त काम था। दूसरे दिन कर्नल ने देखा कि उस्मानी की हथेलियों, अगुलिया और अगूठों से खून रिसने लगा है तो उसने इस काम को रुकवा दिया और चर्खा कातने का काम दिलवा दिया। उसने उन्हें लदन से प्रकाशित 'टाइम्स' अखबार भी भिजवाना चालू कर दिया और डाक्टर की सलाह पर बेझड की बजाय गहूँ की रोटी देना शुरू कर दिया।

लेकिन जब आई जी को शिकायत पहुँची तो बार्बर द्वारा दी गई उपर्युक्त सुविधा वापिस ले ली गई और फिर से मूज बटने का काम दे दिया गया। वही आटा-बेसन मिश्रित बेझड़ की रोटी। टाइम्स' बद करक बाइबिल और अन्य ईसाई धर्म का साहित्य पढ़ने का दिया जाने लगा।

उस्मानी को न कभी कोई मारपीट झुका सकी, न कभी कोई मशक्कत और न ही कोई प्रलोभन। उत्पीड़न और भूख हड़तालों से बार-बार अस्वस्थताओं से जकड़े जाने पर भी वे चट्टान की तरह अडिग रहे। परिवार के विविध प्रकार के सकट और परिवार जनों के आसू भी उन्ह नहीं पिघला सके। कितने ही अखबारों ने उनके इस वाक्य को शीर्षक देकर छापा--- सरकार के सामने झुकने की बजाय मै जेल के एक कोने में खुद की खोदी हुई कब्र में अपने आप का दफन कर दूँगा।'

प्रचारतत्र स परशान होकर सरकार ने जालिम ज़ाकिर हुसैन को देहरादून जेल स ट्रासफर कर दिया। उससे कुछ पहले उस्मानी को मूज बटने के काम से हटाकर लिखने का काम सौप दिया गया था क्योंकि उनके अलावा और कोई लिखना पढ़ना

जानता ही नहीं था। अब कैदी उन्हें 'खिलाफ़तवाला उस्मानी' या 'मौलवी' कहने लगे। तब से देहरादून जेल में वे मौलवी ही रहे।

जब सज़ा की अवधि समाप्त होने को आई तो देहरादून के लोगों ने उस्मानी का जारदार स्वागत करने का कार्यक्रम बनाया, लेकिन सरकारी तत्र को यह कब गवारा था। इसलिए उसने तत्काल उन्हें वहाँ से हटाकर झासी जेल में भिजवा दिया और एकात में सबसे अलग रखा गया। वहाँ उनसे मिलने की इज़ाजत किसी को नही दी गई। इस तरह एक सप्ताह तक वहाँ रखने के बाद दिनाक 26 अगस्त, 1927 की सुबह 10 बजे जेल से छुट्टी दे दी गई।

फाटक से बाहर निकलते ही का अब्दुल मज़ीद और रफीक अहमद तथा स्थानीय काग्रेसियों ने उनकी आगवानी की। यह वह माहौल था जब हिंसा-अहिंसावादी दोनों प्रकार के काग्रेसी भाईचारे की डोर से बधे हुए थे। झासी वाले दो दिन के अभिनदन समारोह का कार्यक्रम बना रहे थे लेकिन इसी बीच गणेश शकर विद्यार्थी और कानपुर के अन्य साथियों के तात्कालिक आग्रह से उस्मानी को तुरत कानपुर के लिए जानेवाली गाडी से रवाना कर दिया गया।

कानपुर पहुँचने पर एक भव्य समाराह का आयोजन किया गया जिसमे अनेक क्रातिकारियों ने भी हिस्सा लिया। उस्मानी के लिए यह एक हृदयस्पर्शी दृश्य था। दो दिन बाद कॉ मज़ीद ने लाहौर चलने का अनुरोध किया और सबकी सलाह पर वे उन्हें लाहौर ले गए। वहाँ वे एक सप्ताह तक रहे और वापस कानपुर आ गए।

कानपुर म उस्मानी का सपर्क 'काकोरी पड्यत्र केस' के क्रातिकारियों के साथ हुआ। आगे चल कर इसी प्रकार के क्रातिकारी केस में भगतसिह, सुखदेव और राजगुरु को फासी की सज़ा दी गई थी। उनकी मुलाक़ात विजयकुमार सिन्हा से भी हुई।

जब गणेश शकर विद्यार्थी ने उस्मानी से उनकी रूस यात्रा के अनुभव सुन तो उन्होंने उन्हें लिपिबद्ध करने की सलाह दी ताकि वे 'प्रताप' में उन्हें प्रकाशित कर दें। उस्मानी ने इस सलाह को मान कर अग्रेजी म लिख दिया। यह विवरण ज्यों का त्यों प्रकाशित हो गया और पुस्तकाकार रूप म Peshawar to Moscow शीर्षक से सबके हाथों तक पहुँचा।

अजमेर के साथिया के आग्रह पर उन्हें वहाँ जाना पड़ा और प्रसिद्ध क्रातिकारी और लोकप्रिय नेता अर्जुनलाल सेठी के साथ मिल कर सगठनात्मक कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की। इधर बबई के कम्युनिस्ट ग्रुप ने उन्हें तत्काल बबई बुला लिया। वहाँ एक जोरदार मीटिग में उस्मानी ने कहा—'मै कम्युनिस्ट हूँ और कम्युनिज्म के लिए ही सारा जीवन व्यतीत करूँगा—चाहे किसी भी प्रकार का बलिदान क्यों न देना पड़े।'

इस मीटिग मे एस ए डागे तो थे ही, साथ ही कॉ जोगलेकर, निमकर

और एस वी घाटे भी थे। बबई के साथियों ने उस्मानी को वहाँ रह कर ट्रेड यूनियन मार्चे पर काम करन की सलाह दी, लेकिन वे कानपुर में रहकर काम करने का वायदा कर गए थे। अत बबई से वापस कानपुर आ पहुँचे।

नवम्बर 1927 में कानपुर में ट्रेड यूनियन काग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसकी स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री गणेश शकर विद्यार्थी थे और उपाध्यक्ष शौकत उस्मानी। सारे प्रचार-प्रसार का उत्तरदायित्व उस्मानी को सौंपा गया। यह अधिवेशन काफी सफल रहा।

26 दिसम्बर, 1927 को मद्रास में A I C C का अधिवेशन हुआ जिसे बहुदलीय मच की सज्ञा दी जा सकती है। इसमें कम्युनिस्टों ने भी भाग लिया। राजस्थान के काग्रेसिया की ओर से उस्मानी को भी प्रतिनिधि चुना गया। इस अधिवेशन में कम्युनिस्टों की ओर से विषय निर्धारण समिति' में पूर्ण स्वतत्रता' का प्रस्ताव तैयार किया गया और उसे जवाहरलाल नेहरू द्वारा अधिवेशन में रखे जाने का अनुरोध किया गया। उस्मानी को इस अधिवेशन में अनेक स्वतन्त्रता सेनानियो से मिलने का सुअवसर मिला। जवाहर लाल नेहरू तो स्वय मच से उतरकर उनसे मिले।

बाद में चेट्टियार के निवास स्थान पर कम्युनिस्ट पार्टी की मीटिग हुई जिसमें उस्मानी ने भी भाग लिया। इसमें पार्टी के सगठनात्मक कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। उस्मानी को अध्यक्ष मडल में शामिल किया गया था। यह सब बाद में सरकारी रेकार्ड में दर्ज हुआ और इसे उनके विरुद्ध लगाए गए अभियाग में सबूत के रूप म पेश किया गया।

उस्मानी का सपर्क सभी क्रातिकारिया के साथ हो चुका था जिनमें भगतसिह सर्वोपरि थे। भगतसिह से मुलाकात करवाने का काम भी श्री गणेश शकर विद्यार्थी की ही मार्फत सम्पन्न हुआ, लकिन उस समय सारी बातें गुप्त रूप से ही होती थीं।

सन् 1928 के आरभ में जब उस्मानी को मालूम हुआ कि कॉ अकबर खाँ कुरेशी, जिन्हें दस साल की सख्त कैद की सजा हुई थी और जो उस समय अमरावती जेल में सजा काट रहे थे—उन्होन उनकी रिहाई के लिए कोशिश करन की योजना बनाई। वे विट्ठलभाई पटेल के निवास पर उनसे मिले और वहीं पर श्रीमती सरोजिनी नायडू से उनकी पहली मुलाकात हुई। इसी प्रकार सभी विधायको से सपर्क किया और सभी ने कॉ अकबर खाँ कुरेशी के मामले में सहायता करने का आश्वासन दिया। जब वे श्रीनिवास आयगर स मिल, जा उस समय अस्वस्थ चल रह थे ने उनकी सहायता करने की बात तो मानी ही साथ ही पेशावर से मॉस्को' पुस्तक का प्रसग छेड़ कर औरों की तरह उस्मानी के सामने इस बात पर विशेष जोर दिया कि वे मॉस्को जाएँ और भारत की स्वतत्रता के लिए सोवियत सघ से मदद लेने की कोशिश करें।

मॉस्को जाने के सबध में आयगर ने उस्मानी को मदनमोहन मालवीय से मिलने का सुझाव दिया। वे मालवीयजी से अकेले में मिले। मालवीयजी ने भी भारत की

स्वतत्रता के लिए सोवियत मदद के प्रति उत्साह दिखाया। उस्मानी को प्रसन्नतापूर्ण आश्चर्य हुआ और पूर्व में बीकानेर की सस्था नागरी भडार के उद्घाटन के अवसर पर सस्था के साम्प्रदायिकीकरण का जो पूर्वाग्रह पैदा हो गया था उसे उन्होंने पूरी तरह हृदय से निकाल दिया।

उस्मानी ने बाहर जाने का इरादा कर लिया था और शफ़ीक ने पासपोर्ट की उपलब्धि के विषय में उन्हें पूरी तरह आश्वस्त कर दिया था। यात्रा व्यय का प्रबध गणेश शकर विद्यार्थी और यू पी के साथियों ने कर दिया था। जून 1928 में वे सोवियत सघ के लिए फिर से रवाना हो गए।

यह विश्व इतिहास का वह महत्त्वपूर्ण समय था जब कॉमिन्टर्न का छठा अधिवेशन होने को था। उस्मानी, शफ़ीक और हबीब को विशेष रूप से प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर लिया गया था। उस्मानी को इसके अध्यक्ष मडल मे शामिल कर लिया गया। वे स्टालिन से तीसरे स्थान पर आसीन किए गए। इस अधिवेशन का विवरण उस्मानी द्वारा लिखित पुस्तिका I Met Stalin Twice ('मै स्टालिन से दो बार मिला') में अकित किया गया है।

उस्मानी के लिए यह एक गौरव की बात थी कि उन्हें 27 वर्ष की इतनी छोटी उम्र में अतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट मच के अध्यक्ष मडल में सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह सारे भारत के लिए गर्व का विषय माना जायगा।

पृष्ठभूमि और मेरठ षड्यन्त्र केस

कॉमिन्टर्न के अधिवेशन मे भारत को सहायता के प्रश्न पर सर्वसम्मत राय कायम नहीं हो सकी यद्यपि उस्मानी की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण थी। उन्हें कॉमिन्टर्न की कार्यकारिणी में शामिल करने का प्रस्ताव था, किन्तु उन्होंने अपना नाम स्वय वापिस ले लिया क्योंकि वे भारत के स्वतत्रता सग्राम में जूझने को प्राथमिकता देते थे और इसके लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने की तत्परता के साथ आतुर थे।

कुछ दिनों तक रुकने के बाद उन्हाने अक्टूबर के अत में वापस भारत आने का इरादा कर लिया और 17 नवम्बर, 1928 को मॉस्को से रवाना हो गए। वे यूरोप के कई देशों से होते हुए अपनी निर्धारित योजना के अनुसार अपना मार्ग तय करने लगे। उन्हें स्विट्ज़रलैड अधिक पसद आया।

कई जगह उनको अपना नाम, अपनी राष्ट्रीयता और भाषा की ध्वनिविविधता आदि को बदलना पड़ा ताकि गुप्तचरो से बचा जा सके। कई जगह उनकी तलाशी भी ली गई। किसी ने उनको अग्रेजी नस्ल का समझा तो किसी ने फ्रासीसी। इस प्रकार अनेक नज़रों से बचते हुए वे बबई पहुँचे। यह दिसम्बर का अतिम सप्ताह था।

मैजेस्टिक होटल पहुँच कर उन्होंने स्नान किया और चाय पी। फिर सीधे पार्टी ऑफिस की तरफ चल दिए। कार्यालय बद मिला। फिर वे बबई के सोशलिस्ट कॉ लातवाला से मिले और दूसरे कॉमरेड्स के विषय में पूछताछ की। लोतवाला कम सुनते थे और उनको यह भी नहीं मालूम था कि उस्मानी पिछले 6 माह से बाहर थे। उन्हें उस्मानी की नाजानकारी से आश्चर्य हुआ। उस्मानी को बताया गया कि सारे साथी अखिल भारतीय मजदूर और किसान सम्मेलन में भाग लेने कलकत्ता जा चुके है।

होटल वापिस आकर उन्होंने तत्काल कलकत्ता रवाना होने का निर्णय लिया। इस समय रात के 9 30 बजे थे। उसके बाद कलकत्ता जाने के लिए कोई ट्रेन उपलब्ध नही थी, इसलिए होटल में ही रुकना पड़ा। लेकिन फिर वे नागपुर चले गए और पारसी का वेष छोड़ कर डॉ जॉनसन बन गए।

जब वे कलकत्ता पहुँचे तो अधिवेशन समाप्ति पर था। सम्मेलन परिसर में सुभाषचन्द्र बोस अपनी सैनिक पोशाक में घूम रहे थे, क्योकि वही कांग्रेस सेवादल के उच्चतम प्रभारी थे। मोतीलाल नेहरू ने अधिवेशन की अध्यक्षता की थी। उस्मानी ने अपना पासपोर्ट मुजफ्फर अहमद के हवाले कर दिया।

कलकत्ता में उस्मानी ने सी पी आई की मीटिंग म भाग लिया। इस मीटिंग में उन्हें पजाब भेजकर वहाँ उत्तर-पश्चिम रेल मजदूरो को सगठित करने का काम सौंपा गया। वे पजाब गए। लेकिन पजाब के साथियो ने आगाह किया कि उनके पीछे सी आई डी लग चुकी है और धरपकड होने वाली है। उनकी सलाह पर जनवरी 1929 में बबई आ गए। लेनिन दिवस पर आयोजित मीटिंग में अपने भाषण म उन्होंने कहा—'लेनिन चल बसे, लेकिन लेनिनवाद अमर है।' 3 फरवरी, 1929 को एक और मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा—'क्रातिकारी शक्तियाँ सशस्त्र सघर्ष की ओर आगे बढ़ रही है।' उन्होंने 'पयाम-ए-मजदूर' (उर्दू साप्ताहिक) के तीन अकों का सपादन भी किया। 17 से 19 मार्च, 1929 को सगठनात्मक मुद्दों पर आयोजित सी पी आई की मीटिंग में उन्होने फिर स भाग लिया। वहाँ से वे फिर कानपुर आए और उन्होंने उत्तर-प्रदेश के क्रातिकारियों और गणेश शकर विद्यार्थी से मुलाकातें कीं और रूस यात्रा का विवरण दिया। क्रातिकारियों में वे भी थे जो भूमिगत कार्य कर रहे थे।

यह वह पृष्ठभूमि थी जिसने उस्मानी की पुन गिरफ्तारी को निकट ला खड़ा किया। इस प्रकार की परिस्थिति पैदा होने का राजनैतिक कारण यह था कि एक ओर तो हड़तालों और सत्याग्रहों का दौर चल रहा था, वामपथी दबाव लगातार बढ़ता चला जा रहा था और दूसरी ओर प्रशासनतत्र दमन की कार्यवाहियों को तेज कर रहा था। पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल ने सघर्षों की आग को और भड़का दिया। साथ ही दमन की तलवार को भी धार दी जाने लगी। पब्लिक सेफ्टी बिल का लक्ष्य था भारत से विदेशी कम्युनिस्टों को निर्वासित करना और

ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल का मकसद था मजदूरों की एकता को ताड़कर उनके सघर्षों को रौंद डालना ताकि आसानी से उनके हितों का गला घोट दिया जाय।

केन्द्रीय एसेंबली में सरकारी प्रतिनिधि हड़तालों को 'राजनीति से प्रेरित' करार दे रहे थे और स्वराजी पार्टी के प्रतिनिधि इन बिला का जम कर विरोध कर रहे थे। सरकारी प्रतिनिधियों ने सब प्रकार की समस्याओं को खड़ा करने के लिए कम्युनिस्टों को दोषी ठहराया और माग की कि जन-जीवन की सुरक्षा के लिए उनको दडित करना ही एकमात्र उपाय है जबकि स्वराजी पार्टी के प्रतिनिधि इसके लिए सरकार को चुनौती दे रहे थे।

मार्च 1929 के दूसरे सप्ताह में 'बोम्बे क्रॉनिकल', 'सेंटिनल' और साप्ताहिक 'स्पार्क' में समाचार प्रकाशित हुए कि अनेक वामपक्षीय नेताओं को जल्दी ही गिरफ्तार किया जायगा। इस पर गभीरता से विचार विमर्श किया गया। देश की आजादी के आन्दोलन में सभी अहम भूमिका अदा कर रहे थे। एस ए डागे गिरणी कामगार यूनियन के जनरल सैक्रेटरी थे और 'क्राति' में लिखते थे जी अधिकारी उनके सहायक थे, आर एस निम्बकर बबई काग्रेस कमेटी के जनरल सैक्रेटरी थे, के एन जोगलेकर जी आई पी रेलवेमैन्स यूनियन के जनरल सैक्रेटरी थे, एस वी घाटे सी पी आई के जनरल सैक्रेटरी थे और शौकत उस्मानी 'पयाम-ए-मज़दूर' के सपादक और मदनपुरा मजदूरों के नेता। सबने तय किया कि न तो वे अपने काम को रोकेंगे और न ही भूमिगत होंगे—चाहे कोई भी सकट क्यों न सामने आए।

जगह-जगह सम्मेलन होने लगे और साथ ही घाटे, अधिकारी और उस्मानी पार्टी को पुनर्गठित करने के काम में भी जी-जान से जुट रहे थे।

20 मार्च, 1929 को जैकब सर्किल एरिया में आगाखा बिल्डिग के एक छोटे से कमरे में शौकत उस्मानी सो रहे थे कि सुबह होने से पहले ही किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। उस्मानी ने सोचा कि कोई साथी सहयोगी होगा और उन्हें मीटिग में ले जाने के लिए जल्दी मचा रहा होगा। वे झल्लाए और दरवाजा खोला— कहाँ यह तो सादी वर्दी मे पुलिस का सब-इस्पेक्टर ए के चौधरी।'

'क्या बात है?' उस्मानी ने पूछा।

'यह है आपके नाम का वारट, हमें तलाशी लेनी है।'

इतना कहते ही तलाशी का काम चालू हो गया। तब तक उस्मानी ने कपड़े पहन लिए क्योंकि वे समझ गए थे कि गिरफ्तारी के क्षण आ गए है। इतन मे सशस्त्र सिपाहियों सहित पुलिस कमिश्नर विल्सन आ धमका। 'क्या यही वह आदमी है?' उसने तलाशी लेनेवाले सिपाही की ओर इशारा करते हुए पूछा।

नहीं महोदय,' सब-इस्पेक्टर ने उस्मानी की तरफ सकेत करते हुए कहा— यह है मिस्टर शौकत उस्मानी।'

'मैने कभी नहीं सोचा था कि तुम इतने फुर्तीले हो,' कमिश्नर ने कहा—'तुम यहाँ के तो हो नही, फिर यहाँ क्या कर रहे थे?'

'मै हिन्दुस्तानी हूँ, इसलिए मै यहाँ हूँ। आप अपना काम करिए।'

'तुम गिरफ्तार किए जाते हो।'

'ठीक है, मै तैयार हूँ।'

'आज दूसरों की भी गिरफ्तारी होगी।'

इस पर उस्मानी ने कोई जवाब नहीं दिया। वे उन्हें पकड़ कर बाहर ले गए। वहाँ सशस्त्र पुलिसवालो का बड़ा काफिला तैनात था। क्या उस्मानी इतने खतरनाक व्यक्ति थे? लेकिन यह नाटकीय दृश्य सारी बम्बई की मजदूर बस्ती में दिखाया जा रहा था।

वहाँ से उन्हे विक्टोरिया टर्मिनस के पास पल्टन बाज़ार थाने में ले आया गया। जिस कोठरी मे उनको रखा गया वह बदबू मार रही थी और उसमें मच्छर भिनभिना रहे थे। लकड़ी का तख्ता ही सोने बैठने की जगह थी। शाम को जब उन्हे विक्टोरिया टर्मिनस लाया गया तो वहाँ अधिकारी, डागे, घाटे और अन्य नेता पहुँचाए जा चुके थ। गाडी में बैठने पर उन सबको पता चल गया कि उन्हें मेरठ ले जाया जा रहा है।

बबई के सायकालीन अखबारों में इन गिरफ्तारियों की खबरें छपीं और यह भी कि बबई के 25000 मज़दूरो ने इसके विरोध में हड़ताल कर दी है। इससे फिनले, क्राउन, टाटा, मोरारजी, गोकुलदास, जैकब सैशन और कस्तूरचन्द मिलो का काम ठप्प हो गया। किसी प्रकार की हिंसक घटना का कोई समाचार नहीं था। हड़ताल शान्तिपूर्ण थी।

मरठ की जेल के फाटक पर पहुँचते ही सब अभियुक्तों की पूरी तलाशी ली गई और फिर बैरक न 2 में भेज दिया गया जहाँ आर एम निम्बकर, अब्दुल मज़ीद और कदारनाथ पहले से लाये जा चुके थे। सब साथी आपस में मिलजुल कर पारस्परिक परिचय प्राप्त करते जा रहे थे कि घटे भर बाद सबको अलग-अलग कर दिया गया।

अभियुक्तों की सूची इस प्रकार है—

	वर्णक्रमानुसार नाम	गिरफ्तारी का स्थान या प्रदेश
1	अब्दुल मजीद	पजाब
2	अयोध्या प्रसाद	कलकत्ता (बगाल)
3	अमीर हैदरखा	भूमिगत होते हुए
4	ए ए आल्वे	बबई
5	डॉ बी एन मुकर्जी	यू पी
6	बी एफ ब्रैडले	बबई सूची में
7	धर्मवीर सिह (एम एल सी)	यू पी
8	डी आर ठेंगड़ी	पूना
9	धरणी गोस्वामी	कलकत्ता
10	गोपन चक्रवर्ती	कलकत्ता

11	जी अधिकारी	बबई
12	गौरीशकर	यू पी
13	गोपाल चन्द्र बासक	कलकत्ता
14	जी आर कास्ले	बबई
15	एच एल हचिन्सन	बबई
16	के एन जोगलेकर	बबई
17	के एन सहगल	पजाब
18	किशोरी लाल घोष	कलकत्ता
19	एम जी देसाई	बबई
20	लक्ष्मण राव कदम	झासी
21	मुज़फ्फर अहमद	कलकत्ता
22	फिलिप स्प्रैट	कलकत्ता
23	पी सी जोशी	इलाहाबाद
24	आर आर मित्रा	कलकत्ता
25	आर एस निम्बकर	अजमेर
26	एस एच झाबवाला	बबई
27	शमसुल हुदा	कलकत्ता
28	सोहनसिह जाश	अमृतसर
29	एस एस मिराजकर	बबई
30	एस वी घाटे	बबई
31	शिवनाथ बनर्जी	कलकत्ता
32	एस ए डागे	बबई
33	शौकत उस्मानी	बबई

मेरठ षड्यत्र केस की तैयारी के लिए अनेक स्थानों पर छापे मारे गए थे। इनमें 'आनद बाज़ार पत्रिका' (कलकत्ता और औरगाबाद प्रेस कार्यालय), सरस्वती प्रेस और प्रेस कर्मचारी कार्यालय, मजदूर और किसान पार्टी कार्यालय, कम्युनिस्ट पार्टी कार्यालय, बबई यूथ लीग, अनेक ट्रेड यूनियनों के कार्यालय, फ्री प्रेस ऑफ इडिया तथा जी आई पी रेलवेमैन्स यूनियन ऑफिस आदि। यहाँ तक कि रेमजे मैकडोनाल्ड और जार्ज बनार्ड शा की पुस्तकों को भी जब्त कर लिया गया।

बैरक न 5 की कोठरियों में अन्य अभियुक्तों से अलग करके शौकत उस्मानी, सहगल, अधिकारी, गौरीशकर, शिवनाथ बनर्जी, शमसुल हुदा और अयोध्याप्रसाद को बद किया गया और उनके साथ नाजायज सख्ती का बर्ताव किया गया तो उन्होंने इसका विरोध करने के लिए भूख हड़ताल कर दी।

इससे मजबूर होकर उ हें अन्य साथियों के साथ बैरक न 10 में भेज दिया गया।

उधर दुनिया भर में इस केस की दमनात्मक कार्यवाही का विरोध होने लगा। ब्रिटन में सारी वामपथी ट्रेड यूनियना न इसके खिलाफ आवाज़ बुलन्द की। 21 अप्रैल, 1929 को 'साम्राज्यवाद विरोधी लीग' न ग्लासगा में विशेष सम्मेलन रखा जिसमें इसके अध्यक्ष जेम्स मैक्सटन और अन्य नताओं ने अपन वक्तव्यों में इस कार्यवाही की तीव्र निन्दा की। इससे पहले बर्मिंघम में एसा ही सम्मेलन किया गया और लदन और अन्य जगहों पर ऐसे ही आयाजनों में भारत में श्वेत आतक की भर्त्सना की गइ। ससद क दोनों सदनों में दीर्घाओं से पर्चे फेंक गए। बार-बार 'साइमन कमीशन मुर्दाबाद' के नार लगने लगे। एक महिला ने चिल्लाते हुए सदन में काला झडा फेंका। उसे जबरदस्ती धकेल कर बाहर खदेड़ा गया।

इसी मरठ केस का इतना व्यापक असर हुआ कि शौकत उस्मानी को ब्रिटिश पार्लियामेंट के आम चुनाव म ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा जौन साइमन क खिलाफ मजदूर वर्ग का उम्मीदवार चुना गया।

ब्रिटेन म चुनाव लड़ने के लिए उस्मानी के वकील ने जमानत की अर्जी दी। उसने बहुत बढ़िया तर्क दिए किन्तु जमानत की अर्जी खारिज कर दी गई। आखिर चुनाव में उस्मानी के विरोधी विजयी रहे। यद्यपि इस चुनाव में लबर पार्टी की जीत हुई लेकिन इससे मेरठ षड्यत्र केस पर कोई प्रभाव नही पडा। इतना जरूर हुआ कि स्पशल क्लास का व्यवहार जाच अवधि में ही प्राप्त हो गया जो पहले केवल यूरोपवासी अभियुक्तों को ही प्राप्त हुआ करता था।

देश मे भगतसिह और बटुकेश्वरदत्त ने एसबली हाल में बम फेंक कर जहाँ पब्लिक सेफ्टी और ट्रेड डिस्प्यूट बिला का विरोध किया था इसके साथ 'मेरठ गिरफ्तारियों का विरोध भी शामिल था।

बबई स प्रकाशित एक समाचार पत्र के 14 अगस्त 1929 के अक के समाचार के अनुसार 'ए फ्री प्रेस बीम' की मार्फत भेजे गए सदेश द्वारा महान वैज्ञानिक आइन्स्टीन और सुप्रसिद्ध उपन्यासकार हेनरी हेरौस ने प्रधानमत्री मैकडोनाल्ड को मेरठ ट्रायल' को समाप्त करन को कहा।

अनेक हस्तिया ने केबलग्राम देकर लबर पार्टी सरकार से अनुरोध किया कि मेरठ कम ट्रेड डिस्प्यूट और पब्लिक सफ्टी जैस बिलों पर पुनर्विचार करक उन्हें समाप्त किया जाय क्योंकि वे भारत के मजदूर सगठनों क लिए घातक है। श्री जवाहरलाल नहरू ने भी काग्रेस की ओर से केबलग्राम भेजा। किन्तु ब्रिटेन की लेबर सरकार ने इस पर नकारात्मक रवैया ही अपनाया।

एक माह और बाईस दिन तक रिमाड दर रिमाड चलते रहने के पश्चात् दिनाक 12 जून, 1929 को मुकदमा शुरू हुआ। वकील अपनी लहराती पोशाकों म, न्यायाधीश गभीर मुद्रा दिखाते हुए और अभियुक्त साम्राज्यवाद मुर्दाबाद ' इन्कलाब जिन्दाबाद' दुनिया भर क मजदूरो एक हो' और इसी प्रकार के अन्य नारे लगाते हुए तथा कुछ दर्शक उत्सुकता के साथ केस के आरभ का इतजार कर रहे थे। यह वही 'मेरठ

षड्यत्र केस' था जिसकी गूज विश्वव्यापी स्तर पर हो रही थी और जिसके समाचार हर देश की भाषा मे प्रचारित हो रहे थे। साहनसिह जोश के अनुसार 31 अभियुक्तो की इस सूची मे अग्रेजो, हिन्दुओं, मुसलमानों तथा अन्य समुदायो के प्रमुख जननेताओं का एक अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय था।

अभियुक्तो के बचावपक्ष के परामर्शको में सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता नरीमन, एम सी छागला, फरीदुल हक असारी, क्षितीश चक्रवर्ती और देविका प्रसाद सिन्हा आदि थे जिन्हें इस बात के लिए जद्दोजहद करनी पडी कि उनके ऊपर यह प्रतिबध कैसे लगाया गया कि वे बिना टिकट इस केस के समय उपस्थित नही हो सकते। फिर मेरठ की बार एसोसिएशन ने इसके खिलाफ एक प्रस्ताव पास किया।

यद्यपि बचाव पक्ष में अनेक समितियाँ काम कर रही थीं जिनमे सबसे महत्त्वपूर्ण कमेटी का गठन भारतीय राष्ट्रीय काग्रस के द्वारा किया गया था जिसके चेयरमैन डॉ असारी थे। इसमें मोतीलाल नेहरू और श्रीनिवास आयगर भी थे। बबई में भी 'बोम्बे वर्कर्स कमेटी' थी और लदन में वामपथिया ने भी एक कमेटी का गठन किया था जिसमें लेबर पार्टी के एम पी भी थे।

देहरादून की जेल में उन्हें अधिक समय तक नहीं रहना पड़ा।

मेरठ केस के अभियुक्तो से जेल में मिलने वाले नेताओं मे श्रीमती सरोजनी नायडू, सुभाषचन्द्र बोस, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गाँधी, आचार्य कृपलानी तथा अन्य शामिल थे।

वैसे तो अभियुक्तों पर अनेक आरोप थे, जैसे प्रतिबधित और मार्क्सवादी साहित्य रखना, पढना और दूसरों में बाटना, मीटिंगों का आयोजन करना और उनमें बोलना, लेख लिखना, पत्र निकालना और राजनैतिक पत्र व्यवहार करना, सगठन बनाना और हड़तालें करवा कर तोड-फोड करवाना आदि ढर सारे। किन्तु मुख्य आरोप था—'मॉस्को में कम्युनिस्ट इटरनेशनल नाम का एक खतरनाक अतर्राष्ट्रीय सगठन है जिसका लक्ष्य है भारत म ब्रिटिश सम्राट् की सत्ता को सशस्त्र क्राति के ज़रिए उखाड़ फेंकना और यहाँ सोवियत समाजवादी शासन प्रणाली को लागू करना।' 'इस प्रकार के उद्देश्यो को मद्देनज़र रखते हुए कोई भी काम करना I P C की धारा 121ए के अनुसार अपराधिक मामला बनता है। अत गिरफ्तार किए हुए ये 31 व्यक्ति दोषी है जिन्हें कठोर सजाएँ दी जानी चाहिए।'

हरेक अभियुक्त के खिलाफ किताबों, दस्तावेजों, पत्रों, अखबारी कतरनों मीटिंगों, उठने-बैठने और मिलने-जुलन से लेकर खुफिया रिपोर्टों में दर्ज झूठी मनगढ़न्त कहानियों आदि के सबूतों के पुलदे के पुलदे पेश किए गए। मुकदमों को तैयार करते-करते बेचारे एक टी बी के रोगी अधिकारी की तो बीच में ही मौत हो गई।

आरोप स 4 में डागे, शौकत उस्मानी और मुजफ्फर अहमद को विशेष रूप से जिम्मेवार ठहराया गया था कि ये भारत म कॉमिन्टर्न की शाखा का गठन करने का षड्यत्र करने म लगे हुए थे।

अदालत मे आराप लगाने वाल सरकारी वकील का नाटकीय अतिरेक देखने-सुनने लायक था।

मेरठ केस की उल्लेखनीय घटनाआ म यह भी है कि अभियुक्तों ने लाहौर षड्यत्र केस के कैदिया की सहानुभूति म सामूहिक भूख हडताल रखी और 14 सितम्बर, 1929 को जब उन्हें यह समाचार मिला कि लाहौर केस के क्रातिकारी अभियुक्त जतीनदास ने भारत क राजनैतिक कैदियों क लिए अनिश्चितकालीन भूख हडताल रखी और आत्मबलिदान देकर सारे देश को आन्दालित कर दिया, तो उस दिन अदालत की राजनैतिक ट्रायल के काम को अभियुक्ता ने अपनी ओर से स्थगित कर दिया। 'जतीनदास की जय' के नारे लगाए गए और साथ ही उन्हें श्रद्धाजलि दी गई। फिर अदालत म 'लाल झडा गीत' गूजन लगा।

16 सितम्बर, 1929 का द पायानियर' ने 'मरठ अभियुक्तों द्वारा जतीनदास को श्रद्धाजलि'—'अदालत म लाल झडा गीत' शीर्षक देकर लिखा

'षड्यत्र केस के अधिकाश अभियुक्त अदालत कक्ष मे 'गारादमन मुर्दाबाद' 'ब्रिटिश सरकार मुर्दाबाद' के नारे लगाते हुए पविष्ट हुए।'

ज्यों ही वे कटघर म आए शौकत उस्मानी न सबाधित करत हुए कहा— *कॉमरेड्स, जतीनदास चल बसे। उन्होंन देश क लिए खुद को कुर्बान कर* दिया। हमें उस शहीद को श्रद्धाजलि देनी है और खडे होकर लाल झडा गीत' गाना है।'

इसके साथ सबने जार से नारा लगाया— जतीनदास की जय' 'सारे राजनैतिक बदी जिन्दाबाद।

तब शौकत उस्मानी ने कहा—'आज हमें दास की यादगार के रूप में अदालत की कार्यवाही को स्थगित कराना होगा।'

ज्यों ही स्पेशल मजिस्ट्रट मि मिलनर व्हाइट अपनी कुर्सी पर बैठा उस्मानी ने जतीनदास की स्मृति मे उस दिन कार्यवाही को स्थगित रखने का अनुरोध किया।'

इस पर काफी गरमागरम बहस हुई। अभियुक्तों ने उस्मानी का पुरजार समर्थन करत हुए दलीलें दी और सरकारी पक्ष न इसका विराध किया। जब अभियुक्ता में से सभी ने उस दिन की बहस का बहिष्कार किया ता अदालती कार्यवाही अगल दिन तक क लिए स्थगित कर दी गई।

इसके बाद मरठ केस क अभियुक्ता ने पहले अनुराध किया कि लाहौर केस क बदियों की माग पर कार्यवाही की जाय और उस जल के हालात को सुधारा जाय, क्योंकि जतीनदास क आत्मबलिदान क बाद अब भगतसिह और दत्त की भी जान भयकर खतर में है। यदि हालात का एक सप्ताह क भीतर दुरुस्त नहीं किया गया ता मरठ कस क बदी भी भूख हड़ताल शुरू कर देंगे। यह एक अल्टीमेटम था जिस पर 25 क हस्ताक्षर थ सिर्फ दमाई, झाबवाला, धर्मवीरसिंह और मुखर्जी ने हस्ताक्षर नहीं किए। आल्ट और कास्न ने समर्थन किया और शमसुल हुदा बीमार

थे। मागपत्र वायसराय को भेजा गया था।

25 सितबर को मेरठ केस के बदियों ग्ग्र हड़ताल चालू कर दी। इससे सारे देश में एक तहलका मच गया। जगह- र्शनों का ताता लग गया।

अन्य जेलों के राजनैतिक कैदियों ने मरठ ग्रल के साथियों का अनुसरण किया जैसे रावलपिंडी और अमृतसर से समाचार आया कि मास्टर मोटासिह और दूसरों ने भी भूख हड़ताल शुरू कर दी।

सारा देश 'इन्कलाब जिन्दाबाद' और 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद' के नारों से गूजने लगा। छात्र कालेजों से बाहर निकल आए और मजदूर सड़कों पर आ गए। मेरठ जेल के बाहर झडों और तख्तियों को लिए हुए हजारों लोगों का बहुत बड़ा हुजूम जमा होकर नार लगाने लगा।

यहाँ तक कि लदन में भी प्रदर्शन होने लगे। शीघ्र ही काग्रेस ने इस मुद्दे को अपना बना लिया और भूख हड़ताल समाप्त करनी पड़ी।

11 जनवरी, 1930 को स्पेशल मजिस्ट्रेट मि आर मिलनर व्हाइट ने चौ धर्मवीर सिह (यू पी के एम एल सी) को छोड़ दिया और 31 बदियों की प्राथमिक जाच पूरी करके उन्हें दोषी ठहरा दिया गया।

आरोपितों ने 'साम्राज्यवादी न्यायाधीश मुर्दाबाद' का नारा लगाया और न्यायालय का आदेश प्राप्त किया इस आदेश का सार था—'यूरोप में स्थित कम्युनिस्ट इटरनेशनल ही भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करने वाले इस मेरठ षड्यत्र केस का मूल स्रोत है। इन षड्यत्रकारिया न इस कॉमिन्टर्न से मिल कर भारत में ब्रिटिश सम्राट् की सत्ता को सशस्त्र क्राति द्वारा उखाड़ फेंकने की साजिश रची थी। इसके अनेक प्रमाण मौजूद है जा सिद्ध करते हैं कि ये अपराधी है।'

यह एक बहुत विस्तृत न्यायालय निर्णय था जिसमें यह दर्शाया गया था कि षड्यत्रकारी न केवल कॉमिन्टर्न के निर्देशा का पालन करत हुए बाहरी हथियारा की मदद से सत्ता पर कब्जा करने की काशिश कर रहे थ, अपितु इसके पश्चात् इस देश में सर्वहारा तानाशाही लाकर समाजवाद की स्थापना के लक्ष्य को भी प्राप्त करना चाहते थे। इस साजिश में विशेष भूमिका तो एस ए डागे, मुजफ्फर अहमद और शौकत उस्मानी की ही थी, किन्तु अन्य यहाँ के अभियुक्त कम्युनिस्ट और ब्रिटेन से आए कम्युनिस्टों का भी पूरा-पूरा सहभागित्व था।

जेल म सभी साथिया में पारिवारिक सबध-सा कायम था। उन्हाने एक समिति गठित की थी जिसकी मार्फत मीटिग होती रहती थीं। अनेक समस्याओं पर बहस हाती थी। सास्कृतिक कार्यक्रम भी चलत रहते थे। व्यवस्था सबधी निर्णय भी लिए जाते थे। वॉलीबाल और इन्डोर गेम्स भी चलते थे। साथ ही अध्ययन कक्ष भी। आपसी हँसी-मजाक से सजीवता बनी रहती थी। इन कार्यक्रमा म दूसरे बदी, रसोइये, सफाई कर्मचारी और धोबी भी भाग लेते थे।

लेकिन इस हकीकत को क्षणभर के लिए भी नहीं भुलाया जा सकता और

न ही दृष्टि ओझल किया जाना चाहिए कि मेरठ षड्यत्र केस के समय में देश तीव्रतर राजनैतिक तूफान से विक्षुब्ध था। यह राष्ट्रीय सघर्ष का दूसरा दौर चल रहा था। जन-मानस उद्वलित-उत्तेजित हो चुका था।

चारों ओर क्रातिकारी सशस्त्र विद्रोह की आग लगा रहे थे जिससे प्रशासन तत्र थर्राने और बौखलाने लगा था। मजदूरो की हड़तालों का हल्ला बोल गूज रहा था। कलकत्ते की गाड़ीवालों की हड़ताल में हड़तालिया ने सेना और पुलिस से अविस्मरणीय जग छेड दी थी और चटगाँव में शस्त्रागार पर हमले की उस घटना ने लोगों में विशेष तौर पर युवा वर्ग में विद्युत लहर प्रवाहित कर दी थी जिसमें नौजवान लड़कियो ने अहम भूमिका निभाई थी। सबसे सवदनशील आवेग था लाहौर षड्यत्र केस का जिसके अभियुक्तों के लिए फासी के तख्ता की मरम्मत की जा रही थी और रस्सो का बार-बार परीक्षण किया जा रहा था। उबाल चरम बिन्दु तक पहुँच रहा था। मेरठ केस आग मे घी का काम कर रहा था। किन्तु काग्रेसी नेतृत्व ठडे छींटे देकर समझौतापरस्ती की छायातल भुलावा देन में लगा हुआ था—क्योंकि उन्हे लाल ख़तरा दिखाई देने लगा था।

इसी दौरान मोतीलाल नहरू का निधन हो गया।

23 मार्च, 1931 को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फासी पर लटकाया गया जब यह समाचार मेरठ केस के बदिया को मिला तो अदालत मे घुसते ही उन्होंने जोर से नारे लगाए—'भगतसिह अमर रहे, सुखदेव अमर रहे', राजगुरु अमर रह', 'गारादमन मुर्दाबाद', और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' आदि। जब सशन जज कुर्सी पर बैठा—उस समय सारे अभियुक्त मौन श्रद्धाजलि द रह थे। मौन के बाद उस्मानी ने श्वेत आतक की इस मर्मवेधी घटना को अतुलनीय दमनकारी कहा और सबने उनका पुरजोर समर्थन किया।

इसके पश्चात् बदी अभियुक्तों ने बारी-बारी से क्रातिकारी वक्तव्य दिए जिनका सिलसिला कई दिना तक चलता रहा। शौकत उस्मानी ने कहा

मार्क्सवाद-लेनिनवाद से लैस मै कम्युनिस्ट हूँ। मै मार्च 1921 में सोवियत सघ मे कम्युनिस्ट कतार म शामिल हो गया था। घटनाओ की तार्किक परिणिति ने मुझे यह मार्ग सुझाया। मेरी समझ म सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक समस्याओं का तथा असमानता, मनुष्य द्वारा मनुष्य के निर्मम शोषण का, और औपनिवेशिक गुलामी का समाधान बिना कम्युनिज्म के सभव नही हो सकता।'

'मैं हिजरत आन्दोलन के बहाने रूस गया था। वहाँ मैने समाज के क्रानिकारी परिवर्तनों को स्वय देखा और तभी स यह आदर्श मेरे भीतर समा गया। मैने वहाँ की प्रत्येक वस्तु की जाच-पड़ताल की अध्ययन किया, सोचा और आखिर मै कम्युनिस्ट बन गया।'

इसके बाद उस्मानी न पूजीवाद के अन्तर्विरोधो की विस्तार से व्याख्या प्रस्तुत की और उसके पतन के सुनिश्चित भविष्य की ओर सकेत किया।

उस्मानी ने 1923 मे भारत आने, कानपुर षड्यत्र केस में गिरफ्तार किए जाने का विवरण प्रस्तुत किया। उक्त केस के बाद की स्थितियों, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का समग्र चित्र शब्दाकित कर दिया। अपने राष्ट्रीय और अतर्राष्ट्रीय दायित्वों की घोषणा करते हुए उस्मानी ने यह स्वीकार किया कि भारत से उपनिवेशी शासन को उखाड फकना उनका प्राथमिक लक्ष्य और कर्त्तव्य है। इसी परिप्रेक्ष्य म उन्होंने अपनी गतिविधियों का औचित्य सिद्ध किया।

अपने विस्तृत बयान का समाहार करते हुए उन्होने कहा—'हमने न तो किसी प्रकार का षड्यत्र किया है और न ही हम इस सत्ता को उखाडने क लिए किसी प्रकार के षड्यत्र करने की आवश्यकता थी। साम्राज्यवाद ने स्वय अपने विनाश की पूर्वशर्तों का निर्माण कर लिया है। जिसे षड्यत्र कहा जाता है वह तो खुद ब्रिटिश उपनिवेशवाद औपनिवेशिक विश्व की क्रातिकारी शक्तियों, सोवियत सघ और कॉमिन्टर्न के विरुद्ध करता चला जा रहा है। हम तो उसने अपनी रक्तपिपासा को शात करने के लिए कटघरे मे ला खड़ा किया है। लेकिन मै इन पूजीवादी दरिन्दो को चतावनी दे रहा हूँ कि यह जनाक्रोश का ज्वार रुकने वाला नहीं है, वह निरतर बढ़ता ही चला जायगा जब तक कि कम्युनिस्ट व्यवस्था की स्थापना न हो जाय।'

न्यायाधीश ने इस आरोप को भी सही मान लिया कि उस्मानी कॉमिन्टर्न की छठी काग्रस में भाग लेने के लिए मॉस्को में 'सिकन्दर सूर' नाम से प्रकट हुए थे। लेकिन हकीकत यह थी कि उस्मानी उस समय उस्मानी ही थे—वे 'सिकन्दर सूर' दिसबर 1928 तक ही बने रह थे।

मेरठ केस के चलते दौर में ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी ने शौकत उस्मानी को यू.क. के आम चुनाव क लिए दुबारा 'मेरठ बदी उम्मीदवार' के रूप म प्रस्तावित कर दिया। अपने साथी बदियों के सहमतिपूर्ण अनुरोध को मान कर उस्मानी ने हैरी पॉलिट द्वारा प्रेषित प्रस्ताव की स्वीकृति का तार इस रूप मे भेजा—'राष्ट्रीयतावादी फासिस्ट तानाशाही, श्रमिक सुधारवादी धूर्तता, साम्राज्यवादी गालमेज साजिशा के खिलाफ सघर्षशील कम्युनिस्ट पार्टी क लिए मेरे द्वारा उम्मीदवार होने की स्वीकृति' इसके साथ ही उस्मानी न चुनाव अभियान क लिए जमानत की अर्जी भेज दी। इस अर्जी को जज ने यह दलील देकर खारिज कर दिया कि जिस प्रकार क आरोपों के आधार पर उस्मानी पर केस चल रहा है—उस चुनाव क बहाने ब्रिटिश सत्ता क खिलाफ प्रचार अभियान चलाने का अवसर नहीं दिया जा सकता।

उपर्युक्त चुनाव में निम्नाकित उम्मीदवार खड थे—'(1) सर अल्फ्रेड वैट (कजर्वेटिव) (2) एच जी रोमरिल (लेबर) और (3) शौकत उस्मानी (कम्युनिस्ट)।' ('स्टेटसमैन' दिनाक 30 10 31 म प्रकाशित समाचार क अनुसार)

मेरठ कस के अभियुक्तों के पक्ष में मार्च 1932 में बचाव पक्ष की ओर से गवाह में सुप्रसिद्ध श्री सी एफ एड्रयूज एन एम जोशी और सदानद उपस्थित हुए। इस प्रकार इस केस का अगला दौर चालू हुआ। इसमें कानूनी स्तर पर अभियुक्तों

ने अपने स्पष्टीकरण प्रस्तुत किए जो दिनाक 18 मार्च, 1932 से 16 जून, 1932 तक चलते रहे। सबन सारी बातें निर्भय साफगोई के साथ सामने रखीं।

इसके पश्चात् सरकारी प्रवक्ता न सारे आरोपों, बयानों, गवाहियों, सफाइयों आदि को समेकित करके निचोड़ निकाला और 16 अगस्त, 1932 तक उसका उपसहार किया।

अब एडिशनल सशन्स जज का फैसला तैयार करके उसको सुनाना बाकी रह गया था। इसके लिए उसने साढे तीन महीनों की अवधि तय की। अभियुक्तों के सामने इस अवधि के लिए अल्माड़ा जल में स्थानातरित करने का प्रस्ताव रखा गया ताकि वे अपने क्षतिग्रस्त स्वास्थ्य की भरपाई कर सक। उस्मानी और कुछ साथी सरकारी सुविधा का उपभोग करना ठीक नहीं मानते थे। इसलिए उन्होंने इसका विरोध किया। लेकिन अन्य बहुत से अभियुक्तों ने इस प्रस्ताव पर सहमति व्यक्त कर दी। आखिर बावजूद विरोध के बहुमत की बात मानकर बदियों को अल्माड़ा जेल भेज दिया गया। उन्होंने (उस्मानी न) भूख हडताल कर दी जो अल्माडा जल में भी जारी रही, इससे व फिर आँत की भयानक खराबी के शिकार हो गए।

अल्माडा जेल स आँत की बीमारी के डाक्टर क पास उस्मानी को मुजफ्फर नगर क जेल अस्पताल म लाया गया। सर्जन ने चिकित्सा म रुचि ली और इलाज कामयाब हो गया। फिर व मेरठ जल भेज दिए गए।

16 जनवरी, 1933 को अर्थात् साढ़ तीन महीने की निर्धारित अवधि की बजाय ठीक 5 माह बाद जब सेशन जज फैसला तैयार करके अदालत में आया तो अभियुक्त भी उस फैसल को सुनने क लिए उपस्थित थ जिसका उन्हें पहले स ही अनुमान हो चुका था। फैसला इस प्रकार था—

32 में से धर्मवीर सिह को केस के शुरू म ही छोड दिया गया था। बाकी 31 म स्पेंगडी का निधन हो गया और जिन तीन को दोषमुक्त कर दिया गया, व थे—क घोष, बी मुकर्जी और एस बनर्जी। बाकी सजाएँ इस प्रकार थीं—

मुजफ्फर अहमद—उम्रभर काला पानी

डागे, घाटे, स्प्रैट, जोगलेकर और निम्बकर—12 साल काला पानी

ब्रैडले मिराजकर और शौकत उस्मानी—10 साल काला पानी

सोहन सिह जाश अब्दुल मजीद और गास्वामी—7 साल काला पानी

अयाध्याप्रसाद अधिकारी, पी सी जोशी और एम जी देसाई—5 साल काला पानी

चक्रवर्ती बासक, हचिन्सन मित्रा, झाबवाला और सहगल—4 साल काला पानी

शमसुल हुदा, आल्वे कास्ले, गौरी शकर और कदम—3 साल सख्त कैद

इस केस क तैयार करने में 16 लाख रुपए खर्च हुए।

फैसले के मजमून म उसी भाषा और विषयवस्तु की पुनरावृत्ति थी जा आरोपण

के प्रारूप में अंकित की जा चुकी थी। 'रूस मे कॉमिन्टर्न,' 'षड्यत्र', 'सशस्त्र क्राति' आदि शब्दों का बार-बार प्रयोग किया गया था।

3 अगस्त, 1933 को शौकत उस्मानी को आगरा जेल भेज दिया गया। एक रोज जोगेश बाबू ने आकर समाचार दिया कि उनकी 10 साल की सजा घटा कर 3 साल कर दी गई है और उन्होने छिपाकर लाए हुए अखबार को सामने रख दिया।

आगरा जेल की विशेषता यह थी कि वहाँ सभी कर्मचारी राजनैतिक बदियों के प्रति सहानुभूति रखते थे। वहाँ न तो साप्रदायिकता का भाव था और न ही पराएपन की मनोवृत्ति। भाईचारे का व्यवहार सबके लिए सुखद प्रतीत होता था।

दिनाक 3 8 33 को फैसला इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सुपुर्द कर दिया गया। उच्च न्यायालय ने अभियुक्तों की ओर से दायर अपीलों (हचिन्सन और शौकत उस्मानी ने अपील नहीं की थी फिर भी उनका केस सभी क साथ मिलाकर वापिस परखा गया) और अभियुक्तो के सद्व्यवहार पर पुनरीक्षण किया और अपना फैसला इस प्रकार दिया—

	अग्रेजी वर्णक्रमानुसार सूची	सजा का विवरण
1	अब्दुल मजीद	एक साल सख्त कैद
2	आत्वे	दोषमुक्त
3	अयोध्याप्रसाद	फिलहाल नजरबन्द
4	ब्रैडले	एक साल सख्त कैद
5	डी गोस्वामी	एक साल सख्त कैद
6	जी चक्रवर्ती	छ माह
7	जी अधिकारी	फिलहाल नजरबन्द
8	गौरीशकर	दोषमुक्त
9	गोपालचन्द्र बासक	फिलहाल नजरबन्द
10	जी आर कास्ले	दोषमुक्त
11	के एन जोगलेकर	एक साल सख्त कैद
12	के एन सहगल	दोषमुक्त
13	एच एल हचिन्सन	दोषमुक्त
14	एल आर कदम	दोषमुक्त
15	एम जी देसाई	दोषमुक्त
16	मुजफ्फर अहमद	तीन साल सख्त कैद
17	फिलिप स्प्रैट	दो साल सख्त कैद
18	पी सी जोशी	फिलहाल नजरबन्द
19	आर एस निम्बकर	एक साल सख्त कैद
20	आर आर मित्रा	दोषमुक्त
21	शौकत उस्मानी	तीन साल सख्त कैद

22	एस ए डागे	तीन साल सख्त कैद
23	एस वी घाटे	एक साल सख्त कैद
24	एस एस मिराजकर	एक साल सख्त कैद
25	सोहनसिंह जोश	एक साल सख्त कैद
26	एस एच झाबवाला	दोषमुक्त
27	शमसुल हुदा	फिलहाल नजरबन्द

शौकत उस्मानी और एस ए. डागे ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें मेरठ केस में बिना एक दिन की भी जमानत लिए सबसे लबी सजाएँ भुगतनी पड़ीं। मार्च 1929 में कारावास शुरू हुआ और डागे को मई 1935 और उस्मानी को 1 जुलाई, 1935 को रिहा किया गया।

जेल से छूटने से कुछ दिन पहले उस्मानी का चचेरा भाई मिलने आया था और उसने घर-परिवार के हाल बताए। लेकिन रिहाई के बाद भी उस्मानी अपने घर नही जा सकते थे क्योंकि सन् 1927 से उन पर बीकानेर प्रवेश पर लगा प्रतिबन्ध तब तक जारी था। उस्मानी के पास पैसा नहीं था और यह भी समस्या थी कि कहाँ जाएँ। आगरा में साथियों के विशेष अनुराध पर दो दिना तक रहे। वहाँ उनका अभिनदन समारोह भी हुआ। इसके पश्चात् वे कुछ समय तक अपने किसी रिश्तेदार के आग्रह पर अजमेर रहे। यहाँ इस समय उन्हें विश्राम की आवश्यकता महसूस हुई।
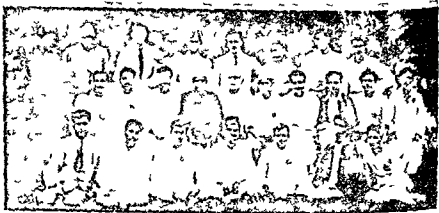
मेरठ षड्यत्र केस के कैदियों में से 25 का जेल के बाहर लिया गया चित्र। पीछे की पक्ति (बायें से दायें) के एन सहगल एस एस जोश एच एल हचिसन शौकत उस्मानी बी एफ ब्राडले ए. प्रसाद पी स्प्रैट जी अधिकारी। (मध्यम पक्ति) आर आर मित्रा गोपेन चक्रवर्ती, किशोरी लाल घोष एल आर कदम डी आर थगली गौरी शकर एस बनर्जी के एन जोगलेकर पी सी जोशी मुजफ्फर अहमद। (अगली पक्ति) एम जी देसाई डी गोस्वामी आर एस निम्बकर एस एस मिराजकर एस ए. डागे, एस वी घाटे गोपाल बसाक।

भारतीय सुरक्षा कानून (डी आई आर)

अजमेर में एक मीटिंग के सिलसिले में जवाहरलाल नेहरू वहाँ आए। हरिभाऊ उपाध्याय ने उस्मानी को नेहरूजी से अलग से मिलाया। दूसरे दिन जब मजदूर नेता डॉ मुकर्जी अपने प्रतिनिधिमडल के साथ नेहरूजी से मिले और अजमेर में ट्रेड यूनियन आन्दोलन शुरू करने की बात की तो नेहरूजी ने तत्काल कहा— तुम उस्मानी से क्यों नहीं कहते, वह सब कर लेगा।'

इसी दौर में सन् 1937 के अत में अजमेर में रेलवे वर्कशॉप के एक टेक्नीशियन को किसी गोरे अधिकारी ने ठोकरें मार कर पीटा। इससे चारों तरफ उत्तेजना का वातावरण पैदा हो गया। शौकत उस्मानी को मालूम हुआ तो वे भी उद्वेलित हो गए। वे गोरे अफसरों द्वारा फैलाए गए आतक के माहौल को चीर कर मैदान में उतर आए। तत्काल यूनियन को पुनर्गठित किया गया और रेलवे वर्कर्स ने उस्मानी को बी बी एड सी आई रेलवेमैन्स यूनियन का अध्यक्ष घोषित कर दिया। उस्मानी के नेतृत्व में सब प्रकार की दमनात्मक कार्यवाही का दृढ़ता के साथ और सफलतापूर्वक मुकाबला किया गया। उस्मानी को जल्दी ही इस यूनियन का जनरल सैक्रेटरी बनाकर बबई के मुख्य कार्यालय में भेज दिया गया। कॉ झाबवाला अध्यक्ष के रूप में काम कर रहे थे।

जो बात विशेष रूप से ध्यान दने योग्य है वह यह कि शौकत उस्मानी जहाँ कहीं जिस किसी रूप म रहते, आते-जाते या काम करते, खुफिया पुलिस छाया की तरह उनका पीछा करती रहती थी।

सन् 1938 में उस्मानी की सृजनात्मक कृतियाँ 'अनमाल कहानियाँ , (कहानी सग्रह) और 'चार मुसाफिर' (उपन्यास) आगरा से क्रमश हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित हुईं जिन्हें उनके द्वारा मेरठ जेल में रचा गया था। 'जनरल स्ट्राइक' शीर्षक उपन्यास की पाडुलिपि कानपुर में चुरा ली गई। प्रकाशकों ने उस्मानी का कभी कोई पैसा नहीं दिया।

21 अगस्त, 1939 को सोवियत-जर्मन अनाक्रमण सधि पर हस्ताक्षर हुए और उसके तुरत बाद राजनैतिक क्षेत्र में बहस का बाजार गरमा गया। शौकत उस्मानी ने मरठ षडयत्र केस के बयान में विश्व युद्ध के खतरे की ओर सकेत किया था और वह अखबारों में भी छपा था। इसलिए अब उसे लेकर बहुत सार राजनीतिज्ञों और ट्रेड यूनियन नेताओ ने उस्मानी को बहस का केन्द्र बना दिया। उस्मानी ने दृढ़ता के साथ अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि क्योंकि अग्रेजों न सावियत सघ के शाति प्रस्ताव को ठुकराकर एक भयकर गलती की है अत युद्ध की सभावनाएँ तीव्रता के साथ बढ़ गई है। उस्मानी के विचार ता कइयों क गल नहीं उतरे, लेकिन उनकी प्रतिक्रियाएँ इतनी तेज हुईं कि भारत की अग्रजी सरकार की एजेंसियों न इनको ऊपर के तत्र तक पहुँचा दिया।

यूराप म युद्ध का खतरा आए दिन बढ़ रहा था। नाजियों न चैकास्लोवाकिया पर कब्जा कर लिया। पहली सितम्बर, 1939 को उन्होंन पालेंड की तरफ रुख कर लिया। तीन दिनों में ब्रिटेन और फ्रास ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घाषणा कर दी और युद्ध फैलने लगा। नाजियो ने पालेड को धर दबाया। फिर हिटलर न नार्वे, डेन्मार्क, हॉलैड, बेलजियम आदि को भी जीत लिया।

भारत की ब्रिटिश सरकार ने 'डिफेस ऑफ इडिया रूल्स' (D I.R) का अध्यादेश निकाल कर क्रातिकारियो और कम्युनिस्टों को पकडना चालू कर दिया। इससे आम ट्रेड यूनियन कार्यकर्त्ता पर दहशत का साया मडराने लगा। आगरा में उस्मानी के प्रयत्न करने पर भी यूनियन का काम आगे नही बढ़ पा रहा था। वे ज्यादा से ज्यादा यही कर सकते थे कि स्टडी सर्किल चलाना जारी रखा जाय जो वे कर रहे थे। इसम अनेक छात्र भी भाग ल रहे थे जिनम कुछ तो आगे चलकर अच्छे नेता बन गए। स्टडी सर्किल के साथ ही उस्मानी ने इन्हीं दिनो कुछ कहानियाँ लिखीं जा 'एशिया' और 'सैनिक' पत्रों में छपीं। फिर उन्होन उस 'राष्ट्रीय सप्ताह' की मीटिंगों म भी भाग लिया जिसम लाला लाजपतराय की आग उगलने वाली बेटी उत्तेजनापूर्ण भाषण देती थी। उस्मानी भी अपनी उद्वेलित भावनाओ का इजहार करते थे।

इस प्रकार की स्थितियो ने मिलकर एक ऐसी भूमिका पैदा कर दी थी कि 14 जुलाई, 1940 को सुबह आगरा में शौकत उस्मानी को गिरफ्तार कर लिया गया। जो सदूक पीछे छूट गया, उसे बाद मे किसी ने नहीं लौटाया।

जेल म कुछ पुराने वार्डर थे जो चारी-छिपे उर्दू के अखबार भेज देते थे। वैसे वे एकाकी अपनी कोठरी म घुटन महसूस करते रहते थे।

एक माह बाद उनके मित्र रमण शास्त्री को लाया गया और उसके बाद दूसर कई इसी अभियोग में गिरफ्तार बन्दी लाए जाते रहे। अब सबको बैरक न 26 में रख दिया गया। इस समय राजनैतिक कैदिया क लिए आगरा एक कसंट्रेशन कैप बन गया था। सन् 1940 क नवम्बर तक यू पी के सभी बदी आ गए थे। बाद में सबको राजस्थान क सबसे गर्म स्थान देवली में बदल दिया गया। अब करीब 25 राजनैतिक बदी हा गए थे।

जेल में इस दौरान उन्हें दो बार भूख हड़ताल करनी पड़ी। पहली बार तो अस्पताल में चिकित्साधीन एक बदी के साथ मारपीट के विराध में और दूसरी बार गांधीजी की 21 दिन की भूख हड़ताल के समर्थन और सहानुभूति में। देवली में क्रांतिकारियों और राष्ट्रवादियों का एक ग्रुप था तो दूसरा कम्युनिस्टों और उनके सहानुभूतों का।

जब जर्मनी ने सावियत यूनियन पर हमला किया तो जेल के बदियों में फिर दो ग्रुप हो गए। एक सावियत सघ के पक्ष में और दूसरा सोवियत सघ क विराध और जर्मनी के पक्ष में। उस्मानी और कम्युनिस्ट सोवियत पक्षधर थे। व पीपुल्स वार ग्रुप' के थे। लेकिन उस्मानी और कम्युनिस्टों में यह अतर था कि उस्मानी सोवियत सघ में जा कर नाजियों के खिलाफ मोर्चे में लड़ने के हामी थे।

इधर देश की तनावपूर्ण स्थिति को मद्देनज़र रखते हुए बंदियो को देवली से पजाब, यू पी और बिहार आदि की जेलो में अदला-बदली करके भेजा जा रहा था। सारा वातावरण राजनैतिक सरगर्मियों से उबलने लगा था। सन् 1942 का तो माहौल ही कुछ और था। देश की धडकनें बढ चली थी जिसे न तो काग्रेस पूरी तरह समझ पा रही थी और नहीं कोई अन्य दल। गाँधीजी भी असमजस मे थे। दूसरी आर जनाक्रोश को दबाने के लिए साम्राज्यवादी दमनचक्र तेजी से चलने लगा था, लेकिन प्रशासकीय ढाचा चरमरान लगा था। गाँधीजी ने दो साल पहले जिस सामूहिक सत्याग्रह की जगह व्यक्तिगत सत्याग्रह करने का निर्देश दिया था—अब वह उन्हें स्वय ही अप्रभावकारी दिखाई दे रहा था।

बेरेली जेल अपने आप म एक अभिशाप थी। वहाँ प्राय कुख्यात अपराधियों को दड देने के लिए भेजा जाता था। 19 मार्च, 1942 को न्यायाधीशों का एक ट्रिब्यूनल बदियो के मामला में जाच करने के लिए बेरेली भजा गया। सबसे पहले उस्मानी के बारे मे जाच शुरू हुई। ट्रिब्यूनल का रुख उनके बार म पूर्वाग्रहपूर्ण और प्रतिकूल था। ट्रिब्यूनल का एक न्यायाधीश बबई का था और दूसरा एक आई ए एस व्यक्ति। पहला प्रश्न था—'क्या तुम्हे कानपुर बोल्शेविक षड्यत्र कस और मरठ कम्युनिस्ट केस में सज़ा दी गई थी?'

'उन मामलों का इससे सबध?' रूखेपन से उस्मानी ने प्रतिप्रश्न किया। इस पर दोनों क्रुद्ध हो गए। अगला प्रश्न था—'अगर तुम्हें रिहा कर दिया जाय तो तुम आगे क्या करोगे?'

'मै सोवियत सघ के समर्थन में लेख लिखूँगा और देश की आज़ादी के लिए लडूँगा। मै दूसर दशक स ही फासिज्म और साम्राज्यवाद का कट्टर विरोधी रहा हूँ।' और इसके साथ ही पूछताछ समाप्त हो गई। इसका परिणाम यही होना था कि उस्मानी की रिहाई की सिफारिश नहीं की जायगी और वह नहीं की गई।

24 जून, 1942 को उस्मानी और कुछ अन्य साथी बदियो को बेरेली जेल से बदल कर फतहगढ़ जेल में भेज दिया गया। सरकारी पक्ष की नज़र में शौकत उस्मानी एक हिंसक क्रातिकारी थे जिन्हें 'आतकवादी वर्ग' में गिना जाता था, यद्यपि उस्मानी ने कभी किसी पर हाथ नहीं उठाया—अलबत्ता आग उगलते भाषण अवश्य दिए थे अथवा प्रतिक्रातिकारियों से केरकी का बचाव भी किया था। 'ईंट का जवाब पत्थर से दें' की बात वे अक्सर कहते थे।

फतहगढ़ जेल में उस्मानी को एच एस आर ए (हिन्दुस्तानी सोश रि. एसो), आर एस पी आई (रिवोल्यू सोश पा ई), सी एस पी (काग्रेस सो पा) और आर सी पी आई (रिवोल्यू क पा इडिया) के कतिपय साथी फिर से मिल गए। इस बार यहाँ भारतीय क्रातिकारी आन्दोलन से जुड़े प्रमुखतम नेता फिर से एक जगह पहुँचा दिए गए थे। इनमें फार्वर्ड ब्लॉक के जनरल सैक्रेटरी श्री विश्वभर दयाल त्रिपाठी, सी एस पी के महान नेता मनमथनाथ गुप्त, आर एस पी के

केशवप्रसाद शर्मा और सुशीलचन्द्र भट्टाचार्य, काकोरी और लाहौर केस के राजकुमार सिन्हा, विजयकुमार सिन्हा और सी एस पी के ठाकुर मलखान सिह और सोमेन्द्रनाथ टैगोर आदि सम्मिलित थे।

9 अगस्त, 1942 का 'भारत छाड़ो' आन्दोलन सारे देश की जनता का आन्दोलन बन चुका था। इसमे सभी जातिया और सप्रदायों के लोग शामिल हो चुके थे। जगह-जगह जुलूसों पर दमनचक्र चलाया जा रहा था। महिला सत्याग्रहियों के दल के दल इस सघर्ष में कूद पड़े थे। जल म उस्मानी और अन्य बदी भी अपने तरीके से आन्दोलन की भूमिका अदा कर रहे थे। इस पर जेल के अधिकारियो ने बदियों के साथ और भी अधिक सख्ती का बर्ताव चालू कर दिया। सन् 1943 की उस घटना का जिक्र कर दिया गया है जब गाँधीजी के 21 दिन की हड़ताल की सहानुभूति में जल के 35 बदियो ने 16 दिन तक सामूहिक भूख हडताल रखी। उनमें उस्मानी भी थे। इन्हें अस्पताल भेजकर भूख हड़ताल खत्म करने के लिए उनके साथ जोर-जबरदस्ती की गई लेकिन अधिकारियों को सफलता नहीं मिली।

इन उपर्युक्त जेल के नियमों का, भूख हडताल द्वारा उल्लघन करने की वजह से पैदा की गई अनुशासनहीनता पर अग्राकित को 6 माह की सख्त कैद की सजा सुनाई गई –

1 बाल गगाधर त्रिपाठी 2 बृजनदन ब्रह्मचारी 3 (कमाडर) रिशालसिह 4 गगासहाय चौबे 5 श्रीकान्त 6 कृष्णशकर श्रीवास्तव 7 मनमोहन गुप्ता 8 रामशरण विद्यार्थी 9 रामदुलारे उपाध्याय 10 शौकत उस्मानी 11 शिवचरण राय 12 ठाकुर चरणभान सिह 13 विश्वम्भरदयाल त्रिपाठी।

4 माह की सख्त कैद की सजा

1 बसत कुमार बनर्जी 2 ठाकुर हरचनसिह 3 केशवप्रसाद शर्मा 4 केदारनाथ मालवीय 5 किशोरचन्द आज़ाद 6 मनमथनाथ गुप्त 7 मोहित कुमार बनर्जी 8 नित्यानन्द तिवाड़ी 9 रामेन्द्र नाथ तिवाड़ी 10 रमेशचन्द्र अस्थाना 11 रूपनारायण पाड 12 राजकुमार सिन्हा 13 सत्यनारायण 14 सत्येन्द्रनाथ बनर्जी 15 श्यामकृष्ण दुबे 16 सुशीलचन्द्र भट्टाचार्य 17 वीरेन्द्रनाथ पाडे 18 वीरेन्द्रनाथ वर्मा 19 विजयकुमार सिन्हा 20 रामगापाल गुप्ता 21 महेश केदारनाथ आर्य 22 चन्द्रमौली अवस्थी–दोषमुक्त किया।

इन सब अभियुक्तों को 'सी' क्लास क कपड़ दिए गए जिनमें बिना बटन क आधी बाहों वाले कमीज थे। जूते नहीं दिए गए। गदा बिछावन था और मूज बटने का काम करवाया गया। 6 माह बाद 21 अगस्त, 1943 को उस्मानी को वापिस बैरक में भज दिया गया। वहाँ उन्हें बागवानी का काम दिया गया। 28 अप्रैल 1944 को उन्हें चार्जशीट दी गई जिसका जवाब दना था।

चार्जशीट में लिखा था–'शौकत उस्मानी, तुम्हें सूचित किया जाता है कि तुम्हारी गिरफ्तारी का आधार तुम्हारे द्वारा कानूनसम्मत सरकारी व्यवस्था को छिन्न-भिन

करके अराजकता पैदा करना है जिससे सुरक्षा प्रभावित होती है।'

उस्मानी ने अपने जवाब में जो लिखा उसका साराश इस प्रकार है—'ब्रिटन के श्रमिक वर्ग द्वारा मेरे में अपना विश्वास व्यक्त करना इस बात को प्रमाणित करता है कि मै हमेशा पक्का फासिस्ट विरोधी हूँ और लोकतात्रिक सिद्धातो में मरा दृढ़ विश्वास रहा है। मै सन् 1929 और 1931 म यू के के ससदीय आम चुनावो में ब्रिटेन के श्रमिका की ओर से उम्मीदवार बनाया गया हूँ।'

'मैंने सोवियत सघ की सेनाओं के साथ मिलकर जर्मनी के खिलाफ़ लडने का अनुरोध किया था जिसे दुर्भाग्यवश अस्वीकार कर दिया गया।'

इस पर 30 जून, 1944 को यू पी के हाम सैक्रेटरी ने जवाब दिया कि सरकार ने तुम्हारे जवाब पर विचार करके निर्णय लिया है कि जिस आदेश के तहत तुम्हें गिरफ्तार किया गया है उसे बरकरार रखा जाय।

उस्मानी को 24 अगस्त, 1944 को दुबारा बरेली सेंट्रल जेल म बदल दिया गया। यहाँ आन पर उन्हें जेल म अनेक काग्रेसी बदी साथी मिल जिनमें कानपुर के प्रसिद्ध कवि और पत्रकार बालकृष्ण शर्मा, आगरा के कृष्णदत्त पालीवाल जो हिन्दी के पत्र 'सैनिक' क सपादक भी थे, शत्रुघ्न कुमार, बी एन राय तथा मुबारक मजदूर आदि प्रमुख थे।

भारत छोडा' आन्दोलन 1944 के अत तक़ चला। काग्रेस ने मुस्लिम लीग का मुसलमानों का प्रमुख प्रवक्ता स्वीकार कर लिया था। एक प्रकार से यह विभाजन को स्वीकार करने की ही भूमिका थी।

8 जनवरी, 1945 को शौकत उस्मानी को रिहा कर दिया गया जिन्ह 14 जुलाई, 1940 को गिरफ्तार किया गया था।

इस समय काग्रेस पर प्रतिबध था और वह 'काग्रस कौंसिल' नाम से विरोधी पार्टी की भूमिका अदा कर रही थी। दूसरी पार्टियों पर भी प्रतिबध था। उस्मानी ने 'काग्रेस कौसिल' म मजदूर विभाग के प्रभारी के रूप म काम करना स्वीकार कर लिया। आगरा में पहले वे शिरोमणि भाइयों के निवास स्थान पर रहे और बाद में 'मोतीलाल स्मारक भवन' म।

उन्होंने नगर की श्रमिक समस्याओं का अध्ययन करना शुरू किया ही था कि यू पी के गवर्नर हैल्लेट द्वारा हस्ताक्षरित नोटिस दिया गया कि उन्हें अगले 48 घटों में यू पी से निष्कासित होकर कहीं अन्यत्र जाना हागा।

खाली जेब। कही कोई काम मिलने के आसार नहीं। कोई हैरो या ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज की ऊँची योग्यता का प्रमाण पत्र नहीं कि कहीं नियुक्ति मिल जाय। वे तो पत्रकार और सर्वहारा लेखक थे जिनकी माग करनेवाला कोई राज्य नही था।

उदासी के माहौल में वे पुनर्वास के बारे में सोचने लग। बीकानर, जहाँ जन्म हुआ, जहाँ घर-परिवार है? नहीं, वहाँ तो उनके प्रवेश पर प्रतिबध है। आखिर उन्होंने अजमेर में गौरीशकर भार्गव की पत्नी माता गोमती देवी को तार दिया और बिना

उत्तर की प्रतीक्षा किए वहाँ के लिए रवाना हो गए।

माताजी क पुत्र रमशचन्द्र भार्गव ने उनके लिए उसी परिवार द्वारा प्रदत्त सार्वजनिक आवास में उनके रहन की व्यवस्था कर दी। लेकिन वे वहाँ से जल्दी ही बम्बई चले गए।

शोध, सवेद, सवाद एव इति

फरवरी 1946 के तीसर सप्ताह में इतिहास प्रसिद्ध 'नौसैनिक विद्रोह' की घटना घटित हुई। विद्रोह सार बदरगाहों म फैल गया। बबई के लिए यह बहुत रोमाचकारी कालखड था। विशप बात यह थी कि सशस्त्र पुलिस के आदमी दीवारों के ऊपर से अपनी खाद्य वस्तुए नौसैनिक विद्रोहियों' को पहुँचा रह थे। इस अभूतपूर्व यथार्थ न सबका ध्यान अपनी ओर खीच लिया था। उधर भिडी बाजार और दूसरे क्षत्रों से इतने सधे हुए पत्थरों की बौछार आ रही थीं कि ब्रिटिश सिपाहियों का टिक पाना असभव हा रहा था। इससे उस्मानी का भारत में अग्रेजी राज्य के अवसान का आभास होने लगा।

इसी साल सितबर में नेशनल सीफेयरर्स यूनियन, बबई , के वे जनरल सैक्रेटरी निर्वाचित हुए और आर एस पी म शामिल होने की स्वीकृति दे दी लेकिन पार्टी के सोवियत विरोधी रुख के कारण उनकी नहीं निभ सकी।

एक तरफ कन्द्र म काग्रेस के नेतृत्व में अतरिम सरकार बनी और दूसरी तरफ 'मुस्लिम लीग' ने सीधी कार्यवाही' की घोषणा कर दी। फिर साम्प्रदायिक दगों की आग भड़क उठी जिसने इतिहास को भयकरतम हिंसा, बलात्कार और लूटपाट की घटनाओं के काले पृष्ठ देकर कलकित कर डाला।

उस्मानी बगाल चले आए और विभाजन के विरोध में मीटिंगे लेने लगे। उन्होंने विभाजन के पीछे दोनों सप्रदाया क शोषक वर्ग का हाथ बताया। उनके बयान 'अमृत बाज़ार पत्रिका' म छपे और कइया ने उनका समर्थन भी किया। लेकिन आखिर जब काग्रेस ने भी विभाजन को मजूर कर लिया तो 14 अगस्त, 1947 को देश का विभाजन हो गया। इससे उस्मानी की सभी आशाआ पर पानी फिर गया।

आर एस पी के कॉमरेड मूसा मत्ल के प्रस्ताव की स्वीकृति के तहत उस्मानी पहले कराची गए और वहाँ से मूर्रा और फिर जम्मू और लाडीखाना चले गए। वे हिन्दुओं, सिखों, सिधियों और पठानो से मिले। उन्ह अनुभव हुआ कि आम आदमी की भावनाओं को देश के विभाजन से भारी ठेस लगी है लेकिन साम्प्रदायिक नेताओं ने ऐसा वातावरण पैदा कर दिया था कि देश के पुनरेकीकरण की उस्मानी द्वारा की गई अपील स्थायित्व ग्रहण नहीं कर सकी। पाकिस्तान में गुलाम मौहम्मद ने उनसे उपमत्री बन कर वहीं की नागरिकता ग्रहण करने का अनुरोध किया, किन्तु

उस्मानी ने भारत की नागरिकता छोड़ने की बात स्वीकार नही की।

उस्मानी ने वापिस भारत आने की अनुमति चाही जो उन्हे नहीं मिली तो वे कराची से लदन रवाना हो गए और 7 सितबर, 1952 को लदन पहुँच गए।

वैसे तो लदन दखते ही आकर्षक लगता है, लेकिन उस्मानी का विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया ब्रिटिश म्यूजियम सैन्ट्रल लाइब्रेरी ने। यदि उनक पास अधिक पैसा होता या कोई स्थायी काम मिल जाता तो वे वहाँ लबे अर्से तक रहना चाहते थे। लेकिन पास में ओछी रकम होने के कारण 78 दिन के बाद ही वापिस बबई लौटन की आवश्यकता महसूस हुई।

14 दिसम्बर, 1952 को बबइ पहुँच कर उन्हाने अपनी लदन की उपर्युक्त सक्षिप्त यात्रा का विवरण लिखा जो बबई से प्रकाशित 'भारत ज्योति' म छपा।

शौकत उस्मानी ने महसूस किया कि इन्कलाब या सामाजिक क्राति के लक्ष्य को पूजीवादी रास्ते ने दूर फेंक दिया है। भीतर के उद्वेलन का मार्गांतीकरण ही एकमात्र विकल्प है। एक रद्दी कागज पर अचानक जो नजर पड़ी जिसम 'खाद्यवस्तुओं द्वारा चिकित्सा' जैसा शीर्षक था। जिज्ञासा जाग उठी, किन्तु पुस्तक नहीं मिली। अनुसधानवृत्ति न भावभूमि को आच्छादित कर दिया और उस्मानी क जीवन में एक अभूतपूर्व मोड आ गया।

ढाई साल तक बबई की एक फर्म में मैनजर का काम मिला जिसे उन्होंने मार्च 1955 तक किया। उनका उद्देश्य था कि इससे जो कमाई हो उसके जरिए वापिस लदन जाकर ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी म शोध कार्य किया जाय। कडी मेहनत करके उस्मानी अपने लक्ष्य की प्राप्ति म सफल हुए और वापिस लदन जाने की तैयारी में लग गए।

12 अप्रैल, 1955 को उस्मानी लदन पहुँच गए। उन्ह वहाँ सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता प्रवासी भारतीय डॉ के डी कुमिरा ने एलिफेन्ट एड कैसल एरिया में स्थित अपनी इमारत मे से एक कमरा नाम मात्र के किराए पर दे दिया।

ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी के पाठकीय टिकट का नवीनीकरण करवारकर उस्मानी शोधकार्य में लग गए। इस अथक सलग्नता ने उन्हे बहुत अच्छे परिणाम दिए और खास तौर से भोजन के माध्यम से वजन कम करने की प्रक्रिया के विषय म।

किन्तु ज्यों ही जेब हल्की होने लगी और अभाव नजदीक आता दिखाई देने लगा उस्मानी फिर निराशा से घिरने लगे। चारों तरफ नजर दौड़ाने के बाद भी कामयाबी नही मिली तो मजबूर होकर उन्होंने कुछ क्लर्की का काम किया और यहाँ तक कि अशकालीन डाक छाटने तक की मजदूरी की।

जब कोई ताना कसते हुए कहता कि 'तुमने आज़ादी के लिए मर-पच कर क्या पा लिया?' तो उस्मानी का उत्तर होता था—'सैनिक कभी कुछ पाने के लिए कुर्बानी नहीं देता है, वह कुर्बानी देता है देश की आज़ादी के लिए।' जब कोई कहता—'तुम्हारा फला जेल का साथी मत्री बन गया है और तुम?' वे कहते—'मत्री

बननेवालों म कोई भी क्रातिकारी नहीं रहा। देखते नहीं मौकापरस्तों ने हरेक क्रातिकारी को धकेल कर आजादी के फल को हड़प लिया!'

उस्मानी कभी किसी मत्री स नहीं मिले चाहे वह उनका कितना ही निकट का परिचित क्यों न रहा हो।

लदन में बराजगार प्रतिभा को दी जानेवाली मामूली आर्थिक रोजी पर गुजारा करत हुए उस्मानी अपने काम की साधना में लग रहे।

फिर जब ब्रिटन में आम चुनाव का मौका आया तो उन्होंने अपन इलाके की लेबर पार्टी के पक्ष में सपर्क स्थापित किए और पार्टी के आग्रह पर लेबर पार्टी की सदस्यता भी स्वीकार कर ली यद्यपि उन्हें उसकी कई दकियानूसी बातों से परहेज था। वे इसकी प्रबधकारिणी के सदस्य भी चुन लिए गए। लेबर पार्टी के मच को उन्होंने गोवा मुक्ति आन्दोलन के लिए प्रचार करन के उपयोग में भी लिया। इस विषय म उन्हाने डिस्पैच भेजे और लेख भी, जा लदन और भारत दोनों के तत्कालीन पत्रों म प्रकाशित हुए। इनम विशष रूप से गावा की स्थिति का विश्लेषण, गोवा आन्दोलन के बदियों को रिहा करने और गोवा को मुक्त करने क सबध में थे। गोवा कमटी और अनेक नताओ ने इसके लिए उस्मानी के प्रति आभार प्रकट करते हुए उन्हें पत्र भेजे। इनमें फैनर ब्राकवे, जे एलेन स्किनर और एथोनी वैजवुड बेन प्रमुख थे।

लदन म रहते हुए उस्मानी छटपटा रहे थ कि काश वे गोवा आदोलन के बदियों के साथ जेल भोग रहे होते। लदन म उस्मानी नितात नीरस जीवन जी रहे थे। इसका मूल कारण था पैसों की भयकर तगी। न सिनेमा देख सकना और न ही अन्य किसी प्रकार के मनोरजन के कार्यक्रम में भाग ले सकना। सुबह खुद खाना बनाना और फिर 9 30 बजे पैदल ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी पहुँच जाना।

अप्रैल 1955 से लकर फरवरी 1961 तक उस्मानी के जीवन का यही क्रम रहा। इस अर्से म उन्हें अपने द्वारा निर्धारित शोधकार्य को पूरा करने म सफलता प्राप्त हुई जिसके फलस्वरूप उन्हाने न्यूट्रिटिव वैल्यूज ऑफ फ्रूट्स, वेजीटेबल्स, नट्स एड फूड क्योर्स (Nutritive Values of Fruits Vegetables Nuts & Food Cures) की रचना की।

शौकत उस्मानी को जैसे पाकिस्तान के साथियो और दोस्तों ने पाकिस्तान की नागरिकता ग्रहण करने का आग्रह किया था और उन्हाने उसे अस्वीकार कर दिया था वैसे ही लदन के साथिया और मित्रा ने उन्ह ब्रिटेन की नागरिकता ग्रहण करने का अनुरोध किया, लेकिन उन्होंने उससे भी यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि जिस देश की स्वतत्रता के लिए उन्हान इतन कष्ट झलकर सघर्ष कि[illegible] नागरिकता को छोड़ देना अपन स्वाभिमान की [illegible] देना होगा।

स्वतत्र भारत की सरकार ने स्वत[illegible] अनेक सच्चे को सुविधाएँ दीं–उस्मानी को नहीं, उ[illegible] और [illegible]

दीं—उस्मानी को नही, सरकार ने शोधकर्त्ताओं को अनुदान दिए, डिग्रियाँ हासिल करवाईं—उस्मानी को नही। उनके सारे आवेदनों को चाहे वे आवासीय सुविधा के लिए हों अथवा वज़ीफे के रूप मे—नौकरशाही द्वारा नकार दिया गया, रद्दी की टोकरी में डाल दिया गया। सरकारी पुस्तकालयों में उस्मानी की किताबों को घुसने नहीं दिया गया। स्वतत्रता के लिए लगातार 16 साल तक जेल यातनाएँ भोगने वाले क्रातिकारी सेनानी शौकत उस्मानी का इतना बडा सम्मान किया आजाद हिन्दुस्तान ने। जिन्हें ब्रिटिश हुकूमत अपने सारे हथकडों से नहीं झुका सकी, उन्हे स्वतत्र भारत की नौकरशाही कैसे झुका सकती थी। यह तो हुआ ही कि उसने उनके व्यक्तित्व की हत्या करने में कोई कस्र नही छोड़ी। सच्चाई की जानबूझ कर उपेक्षा करने से बड़ा हत्या का अपराध और कोई नहीं हो सकता। भारत सरकार के भीतरी तत्र ने साज़िशाना हरकत करके उन्हें बाहर धकल दिया। सभवत इसी स्थिति को भोगने को विवश होकर महाकवि निराला ने लिखा था—

बाहर मै कर दिया गया हूँ
भीतर पर भर दिया गया हूँ।'

इसका दूसरा पहलू यह भी है कि कोई भी गरिमामय व्यक्ति सुख भोगने' का भागीदार होता भी नही। काई ज़हर पीकर मरना मजूर कर लगा, क्रॉस पर चढ़ाया जायगा, फासी का झूलना अपना लेगा, गोली खाने का तैयार होगा या और किसी तरह मारा जायगा तो कोई जिन्दगी को ज़हर पी-पी कर जीता रहगा—पर न रुकेगा, न झुकेगा। यही उनकी नियति है, यही उनका व्यक्तित्व। उस्मानी क ही जन्मस्थान वीकानेर के एक कवि गगाराम पथिक' ने कहा था—

'कशमकश है जिन्दगी में तो सभी कुछ है,
गर कहीं आराम मिल जाता, बुरा होता।'

इसीलिए उस्मानी ने किसी का काई एहसान सिर पर नही ढाया। वे जिन्दगी भर अजेय रह।

उस्मानी ने अपन मार्क्सवाद के ज्ञान की अभिव्यक्ति के लिए लदन में लेबर पार्टी के मच का उपयाग किया और वे उसक सदस्य भी रहे जैसा कि उन्होंन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी क लिए अपनी क्षमता का उपयोग किया। कुछ साथियों स अपने मतभेदों की वजह स यहाँ वे सी पी आई की सदस्यता का कानपुर केस क बाद कई वर्षों तक जारी नहीं रख सके, फिर भी व सिद्धान्तत उसस सलग्न रह।

उस्मानी की अनेक रचनाओं की हस्तलिपियाँ विना प्रकाश में लाए ही नष्ट कर दी गईं। 'जगदीश' उपन्यास जला दिया गया। 'मजदूर का लड़का' जो उनका पहला उपन्यास था उसे यू पी की पुलिस उठा ले गई। 'जनरल स्ट्राइक' को प्रताप प्रेस, कानपुर से गायब कर दिया गया और कहानी सग्रह 'रतना की शादी' का भी यही हाल हुआ। 'ईरान' की हस्तलिपि को बबई में ब्रेलवी के दफ्तर से उड़ा लिया गया।

वे आजन्म आशावादी रहे बावजूद कदम-दर-कदम के अवरोधों के।

उस्मानी इग्लैड से वापिस आए। सन् 1962 में चीन द्वारा भारत की सीमा पर किए गए आक्रमण ने एक बार सारे देश को झकझोर दिया। वैसे चीन और सोवियत सघ का विवाद भी बाद में स्पष्टतया सामने आ गया था। 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' का नारा व्यग्य में डूब गया था और साथ ही भारत में वामपथ पर हमला भी तेज होने लगा था। कम्युनिस्ट पार्टी में आतरिक मतभेद इतना तीव्र हो गया था जिसका परिणाम आगे चल कर पार्टी के विभाजन के रूप में सामने आया।

शौकत उस्मानी के लिए उपर्युक्त वातावरण असह्य था अत वे काहिरा के अनुरोध पर वहाँ पहुँच गए। वे वहाँ 1964 से 1974 तक पत्रकारिता के काम में लग गये। उन्होंने अग्रेजी पत्र 'अलफतह' में अपनी कुशलता का परिचय दिया। वहीं पर 'इजिपशियन गजट' के सपादक मडल में एक सपादक के रूप में सक्रिय रहे और बबई के 'फ्री प्रेस जर्नल', दिल्ली के 'रेडियन्स' तथा कलकत्ता के 'कपास' के सवाद प्रतिनिधि के रूप में और इसके साथ ही अपने सामाजिक-राजनैतिक मूल्याकन को लेखन की शक्ल में अभिव्यक्त करते रहे।

इस अर्से में वे भारत की गतिविधियों पर भी पूरी तरह नज़र रख रहे थे और यहाँ के पत्रों में जो कुछ प्रकाशित होता था उसके विषय में अपनी प्रतिक्रियाएँ अपने साथियों, दोस्तों, सपादकों आदि का पत्र व्यवहार के जरिए बताते रहते थे। पारिवारिक सदस्यों से भी उनका पत्र व्यवहार चल रहा था।

काहिरा में एक बार तो वे दुर्घटनाग्रस्त भी हुए और उन्हें अस्पताल में इलाज करवाना पडा, क्योंकि चोट लगने से काफी मात्रा में खून निकलता रहा।

बीकानेर में ही फरवरी सन् 1975 में शौकत उस्मानी की पत्नी मरियम का 71 साल की उम्र में देहावसान हो गया।

इसी साल सन् 1974 के अप्रैल माह के तीसरे या चौथे सप्ताह में उस्मानी काहिरा से भारत लौट आए थे। यहाँ वे पुन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में सक्रियता के साथ सम्मिलित हो गए तथा पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय 'अजय भवन' में मेरठ केस के अपने बदी साथी कॉ जी अधिकारी के साथ काम में लग गए।

बीकानेर के नागरिकों जिले की भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी शाखा तथा अन्य सस्थाओं एव सगठनो के विशेष आग्रह पर उनके पचहत्तर वर्ष की आयु के प्रारभिक उपलक्ष में दिनाक 26 9 76 को पहली बार बीकानेर आए जिसे उन्होंने सन् 1920 में छोड़ा था। यहाँ उनका क्रातिकारी अभिनदन किया गया। यहाँ उन्होंने अपने बचपन की अनेक स्मृतियाँ दोहराई और फिर यहाँ से किस तरह निकल भागे इसका भी जिक्र किया। विशाल जनसभा में भारतीय क्रातिकारियों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उसके अलावा एक बार वे पार्टी के चुनाव प्रचार के लिए फिर आए लेकिन वे बीकानेर में दोनों बार एक दिन से ज्यादा नहीं रुके।

26 फरवरी सन् 1978 की रात को स्वतत्रता सग्राम के इस सुदृढ सेनानी,

चरण

सर्वहारा को शोषणमुक्त करने के लिए अनवरत सघर्षशील, अतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व, अनुसधानकर्त्ता और लेखनी के धनी शौकत उस्मानी ने दिल्ली में अतिम सास लेकर विदा ली। शायर की पक्ति को क्रातिकारी के जीवन के साथ सदर्भित करके पढ़ा जाय तो यह कहना उपयुक्त होगा—

यह सो रहा है वो, जिसे उम्र भर नींद नहीं आई।'

शौकत उस्मानी ने न कोई जायदाद बनाई, न कोई वसीयत छोड गए अपने पुस्तक भडार की पुस्तकों को तथा अपनी कुछ रचनाओं को उन्होने अजय भवन स्थित कम्युनिस्ट पार्टी कार्यालय, दिल्ली, गाधी निधि आश्रम, दिल्ली और गुणाकर मुले, पाडव नगर, दिल्ली (उस्मानी पुस्तक प्रकोष्ठ) को भेंट कर दिया।

उस ज़माने में पदलिप्सा किसी क्रातिकारी मे नहीं होती थी, महत्त्वपूर्ण था क्रातिकारिता के लिए आत्मोत्सर्ग हेतु पहले-पहल अपने आपको प्रस्तुत करना। इसीलिए वे किसी पार्टी के शीर्षस्थ पदों पर रहने के अनुरोधों का निषेध करते रहे, किन्तु शीर्षस्थ क्रातिकारी अभियुक्तों में रहे—कष्ट झेलनेवालों की अग्रिम पक्ति मे। दुविधा की स्थिति में वे तत्काल निर्णय लेकर पक्का कदम उठाने मे तत्पर रहते थे, जैसे जब मुहाजिरीन काबुल पहुँचे और उनकी समझ में आ गया कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ दृढ़ सघर्ष करने का काबुल का इरादा नहीं है तो तत्काल निर्णय करके उस्मानी ने अपने काफिले को 'रूस की तरफ कूच' करने की ओर प्रेरित कर स्वय उस अभियान की अगुवाई की। ताशकद में भारतीय वामपथियों के दो गुट थे—भारतीय क्रातिकारी सघ तथा एम एन राय का कम्युनिस्ट गुट। अत में तय करके उस्मानी ने अपने साथियों को उस कम्युनिस्ट गुट के साथ सहयोगी बनाया जो क्रातिकारी वामपथी रुझान का था।

अपन ध्येय के प्रति वे अनन्य भाव से समर्पित थे। अपने परिवार को त्याग कर उन्होंने मुड़कर भी कभी इस ओर नहीं देखा, यही वजह हो सकती है कि क्रातिकारी इतिहास का यह समुज्ज्वल व्यक्ति अपनी जन्मस्थली बीकानेर के लिए इतना अजनबी हो गया कि उसके विषय में और अधिक खोज करने की आवश्यकता है। जिन्दगी के आखरी दौर में जब उन्हें यहाँ बुलाया गया तो अपने विषय में उन्होंने अधिक कुछ नही कहा, राष्ट्रीय-अतर्राष्ट्रीय बातें करके बिना विश्राम किए वापिस चले गए।

वे स्वभावत आत्मनिरपेक्ष रहे, न प्रशसा की अपेक्षा और न सम्मान प्राप्ति की आकाक्षा। आज़ादी और बदलाव के लिए हर प्रकार की यातना झेलना उनका प्रिय था। श्रेय की बात करना उन्हे अखरता था। उनका अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रचार-प्रसार तत्र के तामझाम से दूर, बहुत दूर रहने म अपनी कामयाबी समझता था।

इस समय उनका एकमात्र पुत्र उस्मान गनी 75 साल की उम्र में भुखमरी की ज़िन्दगी बसर कर रहा है। यह सरासर गलत है कि 'उनका एक पुत्र राजस्थान सरकार की राजकीय सेवा में बीकानेर में ही है' जैसा कि श्री सुमनेश जोशी द्वारा लिखित 'राजस्थान में स्वतत्रता सग्राम के सेनानी' नामक पुस्तक के पृष्ठ सख्या 217 पर उल्लिखित

है। उस्मानी के दूसरा कोई पुत्र था ही नहीं। उनका एकमात्र पोता मुहम्मद सलीम 33 वर्ष की आयु में बेरोजगार है तथा एकमात्र प्रपौत्र हुसैन अहमद सात साल का होते हुए भी शिक्षा प्राप्ति के लिए आवश्यक सुविधा से वंचित है।

* * * *

मुहम्मद सलीम [पौत्र] हुसैन अहमद [प्रपौत्र] रज़िया खानम [पौत्रवधु]

भूरी [पत्नी]

उस्मान ग़नी [पुत्र]

व्यक्तित्व—एक रूपरेखा

यूरेशियन रंग का बच्चा, अंग-प्रत्यंग सुडौल, हृष्ट-पुष्ट। आज भर सौंदर्य स सबको प्रफुल्लित करने लगा। आत्मलीन बेपर्वाह। माँ-बाप खुश इस रचना पर। निहाल-निढाल परिवार सारा। चाद किसी का, किसी का सूरज। घर में उतर आई नई जिन्दगी। हुए कई उपचार, आए सभी आस-पास दूर के। 'वाह, क्या खूब!' उमस हटी, ठंडा झोंका और प्रकृति के प्रेम के आंसू। मौला की बख्शिश—मौलाबख्श।

तब तक वह तो पहचान लेने-देने की राह का टटोल ही रहा था। पता नहीं कौन से दरवाजे से कब उठा जनाजा पहले बाप का, और छ माह बाद उसकी माँ का। अभी तो वह एक साल का ही था। बेखबर रखा गया उसे, पर लगा कुछ दिन कि वह गोद कहाँ गई, बाकी सब कुछ तो वही है। वैसे घर में गोदियों की कमी नहीं थी—दादी की और चाचियों की थी, और भी पर।

समय ने डाल दिया सब अवचेतन में। दादी 'माँ' हुई, चाचा 'बाप'। इसी भ्रम में पलता रहा, हँसता खेलता रहा बेखबर वह। उसकी पालिकाओं में मामी भी थी और एक हिन्दू 'माँ' भी। इतनी माओं का, चाचाओं का लाडला! सिर्फ़ अम्मा-अब्बा वे दो ही तो नहीं थे जिन्हें होना था।

'पांच साल बीत गए, आज इसी दिन करीब यही समय होगा जब मौला की माँ हमेशा हमेशा के लिए हमसे जुदा हो चली!' दादी माँ चाचियों को याद दिला रही थीं। किसी का खयाल नहीं था कि मौला कमरे में बैठा पढ़ रहा है। सुनते ही वह आंगन में आया क्या तुम मेरी माँ क्या आज के ही दिन ' और वह तुरन्त घर से बाहर निकल गया। सब सन्न रह गए गोली छूट चुकी थी।

मोह भंग, विषाद, आघात, पहला एहसास कि संभावित विकास का अंकुरण! भीतर के प्रकोष्ठ में बैठ गई उदासीनता अथवा एकाकीपन की स्वायत्तता। उसके अन्तस में गहनता का स्रोत!

उसके भीतर और बाहर की सरचना चल दी बढ़ने के लिए।

नूरजहाँ (दादी अम्मा) ने सुना-सुना कर सन् 1857 के जंग-ए-आजादी के किस्से दिया एक और आयाम—फिरंगी के खिलाफ़ नफरत! पराधीनता के विरुद्ध घृणा! उमस और घुटन।

बालक बढ़ने की प्रक्रिया में साधारण धरातल से हटता हुआ-सा। एक दिन दिखाई दी शोभायात्रा महाराजा की—'यह क्या, कैसा काफिला है यह! एक बड़ा है बाकी सब छोटे! ऊँच-नीच भेद। नहीं चलेगा ऐसा।

उसे मक्तब भेजा गया। मौलवी ने पाठ रटाया। बालक ने पूछा न मुल्ला खुद नहीं जानता था। अपने को छिपाने के को ...

दिन वहीं शरारतों मे बीते। फिर छूट गया मकतब कि चोट पडी धार्मिक अधता पर। अब वह भेजा गया 'जैन उपासरे' मे लगने वाली स्कूल मे। वहाँ वह कुशल छात्र साबित हुआ। फिर आई अग्रेजी स्कूल और फिर दरबार स्कूल आदि। पढ़ाई और अनेक जातियों के साथियो ने उसे कट्टरता के कुए मे गिरने से बचा दिया। वह इसानियत के मार्ग को पहचानने में पूरी तरह सफल हा गया। मूल में थी उसकी अपनी ग्रहणक्षमता।

चाचा द्वारा दिखाए वशवृक्ष ने उस उभरते मस्तिष्क मे जिज्ञासा जगा दी–'चाचा, यह तो हिन्दू नाम है?' चाचा ने समझाया–'हॉ, ऐसा ही है, सब जातियों और सप्रदायों में सकरण या मिलावट की प्रक्रिया चलती रही है और चलती रहेगी। ऊपर का तो लेबल ही लेबल है। लालचद से लालखाँ और रामबक्श से रामचन्द चलता ही रहता है। रामसिह भी अपने को 'रामसिह भाटी' कहता है और अजीज़ भी अपने आप को 'अजीज भाटी'। बालक के सामने जाति या रक्त शुद्धता की सारी पोल खुल गई। दिल और दिमाग में नए झोके का प्रवेश हुआ—धर्म-पथ-निरपेक्षता का।

गौण ही नही अपितु नगण्य से हो गए जब जाति, सप्रदाय और मजहब विशेष के खयालात, तो उसमें प्रवेश करने लगी व्यापक राष्ट्रीयता की भावना। सातवी कक्षा पार करन तक तो वह पढ़न लगा था हिन्दी उर्दू और बाजदफे अग्रेजी अखबार भी। उसके प्रधानाध्यापक तिवाड़ीजी उदार राष्ट्रवादी थे और सामती सीमाओं का ध्यान रखते हुए भी छात्रो को दिशानिर्देश करते रहते थे, किन्तु उनके पश्चात् जब सपूर्णानद डूगर स्मृति कॉलेज के प्राचार्य के रूप म आए तो उस जैसों को एक और सशक्त प्रेरणा स्रोत प्राप्त हो गया। अब तक वह 'मौलाबक्श' से 'मोहम्मद शौकत' बन कर फिर अतिम रूप से खुद अपने ही द्वारा निर्धारित नाम शौकत उस्मानी' धारण कर चुका था।

आठवीं पास करने पर तो देश-विदेश की खबरों का नशा गहरा हा चुका था। देश की पराधीनता उसे सालने लगी थी। ये छात्र, कुछेक के शब्दों में छात्रों की यह 'चडाल चौकडी' राजनीतिक बहसो में उलझी दिखाई देती थी। सपूर्णानद उस्मानी जैसो पर विश्वास भी करते थे, स्नेह भी रखते थे और साथ ही पथ-प्रदर्शन का उत्तरदायित्व भी निभाते चलते थे।

इधर परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति भी उस छात्र के सामने स्पष्ट हो कर सामने आ रही थी। छोटा-सा घर था, पढ़ने के लिए न अलग कमरा था, न मेज, न कुर्सी और रात को हरीकेन की गैसमय रोशनी थी। खाने-पीने की सामग्री भी निहायत मामूली थी। उसे गरीबी का एहसास हाने लगा था।

शौकत की वेदना भीतर ही भीतर सार्वजनिक सवेदना के रूप में घुलमिल रही थी। एकाकीपन आत्मविश्वास में बदल रहा था। जाति, सप्रदाय और मजहब से निरपेक्षता कट्टरता को पिघला कर सार्वभौमिकता अथवा औदार्य को पनपा रही थी। फिरगी के प्रति घृणा देश की आज़ादी के सघर्ष में हिस्सा लेने की प्रेरणा बन

रही थी, जिस दूसर शब्दों में राष्ट्रवादिता भी कहा जा सकता है। उसकी अध्ययनशील प्रतिभा उसे ज्ञानोन्मुख करती जा रही थी। स्वतत्रता सग्राम की हर ख़बर को वह ध्यान से पढने लगा था। कई बातें प्रधानाचार्य से समझने की कोशिश करने लगा था।

वह दिन भी आया जब कि उस किशोर को रूस म 'अक्टूबर क्रांति' के घटित होने का समाचार पढ़ने को मिला। 'मजदूरों की विजय!' वह उल्लास से भर गया। यह एक ऐसी अभूतपूर्व प्रेरणा थी कि उसकी दृष्टि मानो एक साथ अनेक सीमाओं को लाघती हुई देख रही हो। यही से एक नए भाव का अकुरण हुआ-गरीबों के राज की सभावना के साथ अतर्राष्ट्रीयता का आयाम खुल गया।

शौकत अपने आपको आए दिन बदलता हुआ नज़र आ रहा था। परिवार वाल भी उसकी बढती हुई गभीरता को देखकर चितित थे, पडौसी भी। उसकी उदास मुद्रा सबके लिए रहस्य बनती जा रही थी।

और जब उसने 'जलियावाला बाग' के निर्मम नरसहार की घटना का पढ़ा तो तीव्र वदना के साथ आक्रोश से भर गया। उसके जी म आया कि डायर को गोली मार दे। 'हिंसा का मुकाबला हथियार से ही हो सकेगा' उसने सोचा। आजादी के लिए जग में उतरन का सकल्प तीव्रतर होन लगा।

फिर जब खिलाफत आन्दोलन ने एक मौका दे दिया तो वह पत्नी, नवजात शिशु, परिवार, पडौस, नगर सबका नाता ताड कर सामती खुफियागिरी को चकमा देता हुआ वेष बदल कर भाग निकला। इस समय तक वह राजस्थानी, उर्दू, हिन्दी और अग्रजी अच्छी तरह लिख-बाल सकता था। एक साधनरहित नौजवान अपने महान् लक्ष्य की ओर अग्रसर हो गया।

शौकत उस्मानी क गृहत्याग और बीकानेर छोड़ जाने की पृष्ठभूमि म न तो किसी प्रकार का सन्यासी त्यागवाद है और न ही कुठाग्रस्त हताशा। उसका विवाह एक सुन्दर और सुशील लड़की से हो चुका था और उसके एक खूबसूरत बच्चा भी जन्म ले चुका था। उस उन्नीस की उम्र म किसी रोमासजनक टूटन का तो सवाल ही पैदा नहीं हो सकता। वैसे साधारणतया परिवार से नाता तोड़ना किसी के लिए भी अत्यत दुष्कर कार्य होता है, किन्तु स्वतत्रता प्राप्ति की तपन के उस युग में जिस किसी नौजवान में गुलामी के खिलाफ विद्राह का उद्वेलन जोर मार रहा था उसने प्राथमिकता दी उस सग्राम में तत्परता के साथ सक्रिय हा कर भाग लेन को और इस आतुरता ने उस हर प्रकार के मोहजन्य साधन और आकर्षण से अपने आप को विच्छिन्न करने की ओर प्रेरित किया।

इस मन स्थिति में किसी भी बात से समझौता करके बैठ जाना उस्मानी के लिए असभव हो गया था। उस्मानी यदि अन्यथा चाहता या समझौतापरस्ती को प्रमुखता देता ता निस्सदेह सुख-सुविधा की जिन्दगी हासिल कर सकता था। उसका चाचा महाराजा के राज्य में एक सम्मानित आर्टिस्ट था। मैट्रिक पास उस्मानी को

उस समय सरकारी नौकरी आसानी से मिल सकती थी। वह ऐसा जमाना था कि मैट्रिक को पेशकार या थानेदार बना कर उसे आगे तरक्की करते जाने के अवसर दे दिए जाया करते थे। इसके साथ ही यह सभावना भी थी कि वह मैट्रिक से आगे की सारी परीक्षाएँ पास कर लेता क्योंकि पढ़ाई में वह काफी तेज़ था और बहुत ऊँची नौकरी हासिल कर लेता। हाँ, शर्त थी तो सामती व्यवस्था की खुशामद करते रहने की और देश की आज़ादी के आन्दोलन से निहायत परहेज रखने की। किन्तु उस्मानी की नींव ही सामती-साम्राज्यवादी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करने की भावना से भरी जा चुकी थी। छात्र जीवन की हरकतों ने तभी से उसके पीछे सी आई डी लगा दी थी।

परिवार रूढ़िग्रस्त था, पड़ौस भी—साथ ही राजभक्ति का हामी भी। बीकानेर रियासत का महाराजा शासक अपने क्षेत्र में स्वतत्रता आन्दोलन की हवा तक नहीं आने देता था। जनता दमनचक्र में पिसती हुई घुटती रहती थी। उस्मानी उस पारिवारिक परिवेश और प्रशासनिक व्यवस्था के प्रतिकूल हाकर उबल रहा था। न उसे मजहबी कर्मकाडों में रुचि थी और न वह उनकी सार्थकता को ही स्वीकारता था। इस तरह उसकी चेतना और भावना दोनो ने मिलकर उसे जाने का विवश कर दिया।

किशोरावस्था म ही उस्मानी की शिक्षा सस्था को उसमें अन्तर्निहित रचनाकार की प्रतिभा का परिचय मिल चुका था। वह राजस्थानी, उर्दू, हिन्दी और अग्रेजी में कविता, कहानी और निबन्ध लिखने लगा था। यदि बीकानेर के तत्कालीन महाराजा गगासिह की महिमा मे कोई पुस्तक लिखता या प्रशस्ति काव्य समर्पित करता अथवा उस शासन के विकास कार्यों के विवरण तैयार करता या भारत की अग्रेजी सरकार का दी गई महाराजा की सेवाएँ और उनकी एवज म महाराजा को दिए गए दलाली तमगों की ही तारीफों के पुल बाध देता तो उसे काफी अच्छा पैसा और ओहदा हासिल हो सकता था।

इसके अलावा वह एसी ग़ज़ले, नज़में या कि कव्वालियाँ पेश करता जिनमे शायराना रूमानियत हो और साथ रूहानी ज़हनियत हो तो भी सामती महफिलों में शौहरत और माल हासिल किए जा सकते थे। ऐसी सस्थाएँ और सेठ भी उसे पुरस्कृत करक अपने आप को प्रचारित-विज्ञापित करते। मजहबी हिदायतो या करिश्मों को सकलित करके भी किसी न किसी क्षेत्र में घुसा जा सकता था और किसी अच्छे खासे इश्किया कथानक को खडा करके या फड़कता गीत लिख कर फिल्मी दुनिया में भी प्रवेश पाया जा सकता था।

पैसा आता, बगला बनता, नौकर-चाकर होते और आज़ादी मिलने पर अल्पसख्यका मे से छाट कर उस सचिवालय का सचिव या किसी आयोग का आयुक्त अथवा राज्य का राज्यपाल, मत्री आदि इत्यादि कुछ भी बना दिया जाता। खुद को जिन्दगी का लुत्फ़ मिलता, परिवार को भी और इसी जनम में उस्मानी की सातों पीढ़ियाँ भवबाधा के सागर से बिना किसी ख़ुदाई जहाज के ठेठ उस पार जाकर

स्वर्ग म प्रवेश कर जातीं, जिसम न कोई गर्मी की तपन हाती और न सर्दी की ठिठुरन-सिकुड़न।

लेकिन उस्मानी की रचनाप्रक्रिया और उसके तत्वों के सम्मिश्रण तथा उसक युग विशेष को भली प्रकार समझ लने पर काई भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचेगा कि उस्मानी के लिए यह सब कुछ निरर्थक था। उस जैसे क्रातिकारियों के लिए कांटे भरे रास्तो का ही विकल्प बचा रहता है। उनका गम तो यह होता है कि फासी पर लटकने का मौका उनको क्यों न मिल सका। एक रास्ता शीशोंजड़े हवामहल के परिसर तक जाता है तो दूसरा मौत के तलघर में जा कर रुकता है। उस्मानियों ने दूसरे रास्ते पर पाव रखा था जो शुरू से ही शूला से भरा था।

अपन परिवार के सभी प्रिय रिश्तेदारों और दोस्तों से विसबधन सबधी निर्णय को कतिपय पश्चिमी मनोवैज्ञानिकों की विसबधन सबधी अवधारणा से नहीं समझा जा सकता, वैसे उस अवधारणा के पीछे भी सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव भी हुआ ही करता है, वह नितान्त निरपेक्ष प्रवृत्ति मात्र नहीं होता। उस्मानी के विसबधन क पीछ तत्कालीन लक्ष्य और सकल्प का भारी दबाव रहा है कि 'स्वतत्रता बाकी सब बातों से ज्यादा प्रमुख है और जब तक देश आजाद न होगा तब तक वापिस नहीं लौटूँगा।'

वय सधि की भयावह सीमा के किनारे पर अवस्थित युवा विशप में साहसातिरेक अथवा दु साहसिकता का हाना स्वाभाविक समझा जाता है और शौकत उस्मानी के विषय म भी कही-कहीं से दबी जबान म यही कहा जाता रहा है जा सही नहीं है। क्याकि दु साहसिकता के पीछे काइ महान् और दीर्घकालीन सकल्प नहीं होता और साथ ही उसकी अपनी आयु अवधि होती है, जो यौवन के आने के बाद साथ छाड देती है। इसक अलावा उसमे आकस्मिकता का समावेश भी होता है और तात्कालिकता का भी। वह सिद्धान्तरहित भी होती है। उस्मानी के विसबधन क निर्णय क पीछे इन सब बातों का अभाव था। उसके आगे की सारी गतिविधियों को सही परिप्रेक्ष्य म आकने पर आईने में चेहरे की तरह सभी कारण सुस्पष्ट दिखाई देंगे। निश्चय ही वह साहसी था—दु साहसी नहीं। वह एक महान् दीर्घकालिक तथा सोद्देश्य दृढ़-धारणा को लेकर चला था और जेल जीवन के बाद के समय म सवहारा के सगठन का या प्रचारकार्य का सपादन किया करता था जिसे कम से कम 'साहसातिरेकता' अथवा 'दु साहसवाद' ता नहीं ही कहा जा सकता।

तो क्या शौकत उस्मानी के मन म कोई 'महान् नेता' 'महान् युगपुरुष या अमर इतिहास पुरुष , 'महान् क्रातिकारी', महा सनानायक', 'आजादी के बाद प्रधानमत्री या राष्ट्रपति और इसी प्रकार की कोई 'महानता' की पदवी प्राप्त करने की 'महत्त्वाकाक्षा' पल रही थी जिसका दबाव था ऐसी धारणा बनाए जाने के पीछ।

कतई नहीं। यदि उस्मानी म महत्त्वाकाक्षा घर किए हुए हाती तो वह कहीं न कहीं किसी नाटकीयता के हथियार को अपनाता कहीं अवसरवादी होकर आगे-

पीछे/पीछे-आगे चलता फिरता, उछलता कूदता या लुक-छिप कर दडवत् करता और जनता के सामने 'वीर हुकार' स गर्जन करता हुआ दिखाई देता, चापलूसा, प्रशसकों और प्रचारकों-प्रसारको का ताना-बाना बुन चुका होता जिसके माध्यम से उसके करिश्मों-चमत्कारों के असाधारण क़िस्स घर-घर, गली-गली गूजते सुनाई देते।

हकीकत यह है कि वह न किसी महत्त्वाकाक्षा या पदलिप्सा स ग्रस्त था और न ही उसने उस दिशा मे झाका ही। बल्कि बात इससे बिल्कुल उल्टी थी। उस्मानी अपन आपको छिपाने में माहिर था, श्रेय लेने के समय भूमिगत होता था, तमगे बटने के समय गायब रहता था—किन्तु उसका काम ही ऐसा था कि गिरफ्तार किए जाने वालों की सूची म उसका नबर सबसे ऊपर रहता था और छूटने वालो की सूची में सबसे नीचे। हकीकत यह भी है कि आजादी मिलने के बाद भी उसने कुछ भी हासिल नहीं किया जबकि नकली सेनानियों की बाढ आ गई। उस्मानी का घर कहीं नही बना। वह जिन्दगी भर खानाबदोश ही रहा।

शौकत उस्मानी घटनाक्रम को स्वतत्र एव आलोचनात्मक तरीके से समझने, उसका विश्लेषण करने, उस पर निर्णय लेने और अपने विवेक के अनुसार कार्य करने में सक्षम था। वह जिस सामाजिक, ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया मे स उभर रहा था, उसी का नतीजा था कि वह अपने आपका सीमित दायरे में सिकुड़ा हुआ नहीं रख सका। उस कालखड की विशिष्ट वस्तुपरक परिस्थितियो के जबरदस्त आह्वान की उपेक्षा नहीं कर सका। युगबोध से पैदा हुई प्रेरणा या उत्प्रेरणा ने उसमे जिस आवेग को जगा दिया था वह स्वाधीनता आन्दोलन की तडपन लिए हुए था जिसके साथ उसकी अनुभूतियाँ और सवेदनाएँ एकाकार हा चुकी थीं। एकमात्र यही वजह थी कि वह उस काफिले मे जा मिलने को आतुर हो गया जो 'इन्कलाब जिन्दाबाद' कहता हुआ और साथ ही 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल म है, देखना है ज़ोर कितना बाजुए क़ातिल में है।' गाता हुआ आगे बढ़ रहा था।

* * * *

शौकत ने गृहपिंजर को छोड़ा तो उसकी क्रियाशीलता को आगे से आग का मच मिलता गया। रेलयात्रा से शुरू करके मैदानों, नदी-नालों, घाटियो, पहाड़ी चढ़ावों-उतारों की असह्य कठिनाइयों और भयकरताओं को पार करते हुए भूख-प्यास साथ लिए, डाकुओं का सामना करते हुए, गुलाम बनाकर घसीटे जाते हुए और मौत के आखिरी हुकम का इतज़ार करते हुए उस्मानी अपने काफिले के साथ अनुशासनबद्ध सैनिक के रूप में चलता गया और जहाँ यात्रियों के बीच में मजहबी कट्टरता की सीमा खिच गई वहाँ वह भारत की आज़ादी के लिए हथियारी मदद लेने के लिए सोवियत भूमि में प्रवेश करने के लक्ष्य रखने वालों के समूह का अग्रणी बन गया। यह उसकी अग्रगामिता का प्रथम चरण था—उसके आत्मविश्वास का प्रतीक।

राष्ट्र की बेड़ियों को काटने के लिए वह उन्नीस-बीस साल का दीवाना देश की भौगोलिक सीमाओं को लाघ कर अन्तर्राष्ट्रीयता के द्वार खोल कर उसमें प्रवेश

कर गया और केरकी की रक्षा में लाल फौजी सितार के रूप में चमक उठा। इस होनहार नवयुवा क राजनैतिक जीवन की शुरूआत का इतर 'मजदूर राज' के लिए लड़न से हाना उसके व्यक्तित्व को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कर देता है।

बीकानेर से बाहर निकलने के बाद वह लाहौर, पशावर तथा अफगानिस्तान क अनक स्थल, टर्की, ताशकद, समरकद, बाखारा और मॉस्को में सपर्कों और कार्यक्षेत्र का विस्तार करता चला गया। वह एक विश्वव्यापी मच का पात्र बन चुका था। सोवियत सघ के इतिहास में अपना नाम दर्ज करा चुका था। वहाँ वह मार्क्सवाद का अध्ययन करके तथा अनेक अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट नेताओं और भारतीय कम्युनिस्टों के साथ विचार विमर्श में भाग लकर अपने वैज्ञानिक एव सैद्धातिक दृष्टिकोण को परिपक्व कर चुका था। लेनिन और स्टालिन के सपर्क में आ चुका था।

भारत में आकर पेशावर केस के वारट पर कानपुर बोल्शविक षड्यत्र केस में सबसे पहले गिरफ्तार होकर स्वतत्रता सग्राम के बोल्शेविक हीरो के रूप में प्रचारित हुआ तो जेल में बद होते हुए इग्लैड के चुनाव में साइमन के खिलाफ उम्मीदवार बनाया जाकर ब्रिटन क श्रमिक का अपना बन गया। मेरठ षड्यत्र केस से पहले मॉस्को में कॉमिन्टर्न के अधिवेशन में अध्यक्ष मडल में शामिल किया जाकर वह पुन अतर्राष्ट्रीय मच पर उभरा, सुशोभित हुआ।

मेरठ षड्यत्र केस में फिर गिरफ्तार हाकर राष्ट्रीय आन्दोलन के सुदृढ़ सेनानी के रूप म मामन आया और उसी दौर में इग्लैंड के चुनाव में दुबारा श्रमिकों का उम्मीदवार बनाया जाकर अपनी अतर्राष्ट्रीय छवि को प्रमाणित करने की अभिव्यक्ति द गया। बीच में अनेक ट्रेड यूनियनो का सगठनकर्त्ता, श्रमिकों के लिए जूझनेवाला, छात्रों और मजदूर किसाना को शिक्षित करनेवाला नेता और शिक्षक साबित हो गया।

डी आई आर. में फिर गिरफ्तार हाकर उसन अपनी सघर्षशीलता को एक और उन्नत शिखर पर पहुँचा दिया।

सोलह साल की जेल-यातनाएँ भी उसे न झुका सकी, न तोड़ सकी। छ साल तक उसने लदन मे काम किया और दस साल तक मिस्र में। कहीं वह शोधकर्त्ता के रूप मे प्रसिद्ध हुआ तो कही पत्रकार के रूप म। हर जगह वह एक सम्मानित व्यक्ति रहा।

उसके समय का कोइ भी भारतीय कम्युनिस्ट, कोई भी क्रातिकारी, कोई भी काग्रमी, आर एस पी , एच आर एस ए नेता नहीं था जो उस्मानी के सपर्क में न आया हा। गाँधी, दोनों नेहरू, विद्यार्थी, काकोरी केस के अभियुक्तों आदि स ले कर सब प्रकार के सुप्रसिद्ध स्वतत्रता सेनानी थे। यह सूची कई सैकडों की बन सकती है। इसी प्रकार सोवियत यूनियन, ब्रिटेन, फ्रास जर्मनी, अमेरिका आदि कितन ही देशों के वामपथी नेताआ से उस्मानी का दोस्ताना था और यह सूची भी उतनी ही लबी होगी। ब्रैडले और स्प्रैट तो मेरठ केस में सह-अभियुक्त थे ही। डागे, मुजफ्फर अहमद, अधिकारी, जोश भी सह-अभियुक्त थ।

वह सारे देश का आदमी था। राजस्थान, यू पी , बगाल, पजाब, दिल्ली, मध्यप्रदेश, गुजरात या कि महाराष्ट्र आदि सब राज्य उसके अपने थे और वह सबका। हर कहीं उसका राजनीतिक परिवार था। इसके साथ ही वह सारी दुनिया का अपना था और सारी दुनिया उसका परिवार। एक ऐसा व्यापक व्यक्तित्व था उसका कि जिसकी तुलना म बहुत कम नेता ठहर पाते है। वह कही रहता, कुछ भी कही मिला तो खा लिया और नहीं तो वैसे ही काम करते-करते दिन गुज़ार दिया। वह इस देश का इतिहास पुरुष बन चुका था तो दुनिया के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अश भी। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सोवियत सघ के पद्रहों गणराज्या, ब्रिटेन और मिस्र के दस्तावेजों में वह मिलेगा तो यहाँ के गुप्तचर विभाग और पुरातत्त्व के पुराने विवरणो में भी।

किन्तु यह उद्देश्यपरक यायावर इतना उपेक्षित कैसे रहा? उसका अपना मकान क्यों नही बना जहाँ वह टिक कर रह सकता। बीकानेर मे उसका पुश्तैनी मकान था, किन्तु कानपुर केस के बाद बीकानेर में प्रवेश करने पर उस पर प्रतिबध लग चुका था। और किसी अन्य जगह उसक पास न कोई मकान था और न ही ज़मीन। यहाँ तक कि आजादी के बाद भी उसके लिए आवासीय सुविधा नहीं थी। उसके पास आजीविका का भी कोई स्थायी प्रबध नहीं था। पाकिस्तान की नागरिकता ग्रहण करने की शर्त पर उस मत्री पद दिए जाने का ऑफर दिया गया था, लेकिन उसने भारत की नागरिकता छोडने की उस शर्त को ठुकरा दिया था। लदन में भी नागरिकता देने का ऑफर था, उसे भी उसन नही माना। ता फिर जिस भारत की आजादी के लिए उसने इतने कष्ट सहे और नेहरूजी तक स जिसके सपर्क थे, उनके प्रधानमत्री होते हुए भी वह उपक्षा का शिकार क्यों बना रहा? उसकी रचनाओं के प्रकाशन तक की सुविधा उसे क्यों न मिल पाई? उसका परिवार आज भी कर्ज़ स क्यों पिसता चला जा रहा है, अभावग्रस्त क्यों है? शिक्षा सुविधाओ के उपलब्ध न हो सकने के कारण उसका परिवार उच्च शिक्षा प्राप्त करने स आज भी वचित क्यों है?

शौकत उस्मानी का यह कहना बिल्कुल सही है कि आज़ादी विभाजन की शर्त मान लेने पर मिली थी जिसका स्वाभाविक परिणाम था सत्ता का काग्रेस और लीग के बीच बटवारा होना। इन दोना दलो में देश के जमीदार-सामती और पूजीपति वर्ग का सयुक्त वर्चस्व था जिनका साप्रदायिकता क साथ घनिष्ठ सबध था। सत्ता हड़पन का या सौपे जान का मौका इसी वर्ग का मिला या या कहें कि साम्राज्यवादी तत्र ने अपन हितो की सुरक्षा क लिए अपने इस छुटभैया को सत्ता की ख़ैरात बाट दी। सत्ता पाने वाला तबका भारतीय हो अथवा पाकिस्तानी, वह सदैव वामपथी क्रातिकारियों का सत्ता प्राप्ति के मामले म नबर एक के दुश्मन मानता था और मौका आते ही उन्होंने शौकत उस्मानी जैसे सभी क्रातिकारिया को जानबूझ कर पीछे धकेलने की तत्परता दिखाई, क्योंकि उन्हें आशका थी कि वामपथी क्रातिकारियों का सत्ता में प्रवेश करने देने का अर्थ होगा अर्थव्यवस्था को शोषक वर्ग के विनाश की दिशा

में माड़ दना तथा समाज से कट्टरपथ के हथियार को कुद करते जाना।

क्रातिकारिया को उपेक्षित करने के मामले में सात सौ रियासतों के राजा महाराजा, जागीरदार-जमींदार, बिड़ला-टाटा, महत-मठाधीश, पडित-मुल्ले और उनक द्वारा खड़े किए अर्द्धसैनिक पकृति के सगठन, जाति-सप्रदाय विशष के सगठन आदि सब एकजुट थे, सतर्क थे, साजिशमद थे और दूसरी ओर वामपथी क्रातिकारियों की सगठनात्मक शक्तियाँ इतनी प्रबल नही बन सकी थीं कि देश के इस प्रकार के विभाजन को रोक कर खुद सत्ता पर कब्जा करने मे सफल हो सके अथवा उनके पास ऐसी कोई रणनीति नहीं थी जो शोपक शक्तियों का धकेल कर अपनी और समाज की सुरक्षा सुनिश्चित कर सके। ऐसे हालात में जो नतीजे निकले, उनक अलावा और कोई नतीजे निकल ही नही सकते थे। अत जितने भी वामपथी क्रातिकारी थे उनका उपेक्षित किया जाना या धकेला जाना अथवा उनके लिए जीते जी मरते जाने की हालत बना देना सत्ता का और सत्ता के पर्दे क पीछे से उसे सचालित करने वाली शक्तियों का योजनाबद्ध प्रयास था। शौकत उस्मानी वामपथी क्रातिकारियों की सूची स अपने का हटाए जाने की किसी शर्त को स्वीकार नही कर पाया। अत उसको जानबूझ कर 'उपक्षा' की प्रताड़ना दी गई थी और होना भी यही था। उसके परिवार को रक्तबीज समझा जाकर कष्ट भोगने को विवश हाना पड़ रहा है।

उस्मानी काग्रेस में रहा, उसमें रहकर काम भी किया था। जवाहरलाल नेहरू आदि सभी नेता उसे अच्छी तरह जानते थे। उस समय बहुत से कम्युनिस्ट और क्रातिकारी काग्रेस स जुड़े हुए थे और उन्होंने आज़ादी के आन्दोलन में कारगर भूमिका निभाई तथा जेल यातनाएँ सहीं, लेकिन जब सत्ता काग्रेस के हाथ में आई तो वामपथियों को पचा पाना काग्रेस की नीति के विपरीत समझा गया चाह उसके नेता जवाहरलाल नेहरू ही क्यों न थे। काग्रस के भीतर के दक्षिणपथियों का दबाव ही इतना प्रबल था कि उसके 'समाजवादी' या 'लाकतान्त्रिक समाजवादी' अथवा 'सामाजिक लोकतत्रवादी' खेमे क बड़े-बड़े नेता अशक्त प्राय थे। वामपथिया से उन्ह अर्थव्यवस्था म और सामाजिक स्थितियों म भी बुनियादी परिवर्तना के लिए दबाव बनाए रखने की आशका थी। अत उस्मानी जैसे सभी लाग उपेक्षा और अलगाव के गर्त में ठेल दिए गए।

फिर उस्मानी स्वाभिमानी भी था। अपने साथ काम कर चुके व्यक्ति के मत्री पद पर पहुँचने की खबर पाते ही उस्मानी ने स्वय उसस सम्पर्क ताड़ लिए थे। वह किसी मत्री या सरकारी अधिकारी से मिलना अपने व्यक्तित्व की गरिमा के प्रतिकूल समझता था। यदि कोई कहता कि उससे मिलो तो उसका जवाब होता था–'तुमने भी यदि किसी से मेरे बारे में कुछ कहा तो मै साफ इन्कार कर दूँगा, बल्कि किसी भी एहसान को ठुकरा दूँगा। मुझे अपने और अपने परिवार के लिए मेहरबानी की भीख गवारा नहीं।' हाँ शाध के लिए जो आवेदन किया था वह नियम के अन्तर्गत था लेकिन भारत की अफसरशाही ने उसे निरस्त करके रद्दी की टोकरी में डाल दिया।

इस तरह उसने न केवल अपने ही द्वारा बनाए गए नियमों की अवहेलना की, अपितु अपनी घिनौनी हरकत का भी परिचय दे दिया। उस्मानी प्रधानमत्री तक शिकायत कर सकता था, किन्तु वह सरकारी तत्र की हकीकत से परिचित था।

उस्मानी ने न अपने लिए कुछ लिया और परिवार को भी कभी कुछ नहीं भेजा। उसने अपने रोज़मर्रा के खर्चे को कभी अशकालीन मास्टरी करके, कभी किसी प्राइवेट फर्म में मैनेजरी करके, कुछ लेख, कहानियाँ लिखकर या पत्रकारिता करके या किसी घनिष्ठ दोस्त के यहाँ भूमिगत रहकर अथवा मिल गया तो कर्ज लेकर चलाया। उसकी रचनाआ के प्रकाशकों ने बाजदफे देय का आधा-चौथाई ही चुकाया, बाकी सब हडप गए। और कुछ नहीं बन पड़ा तो अजमेर आ गया जहाँ काई रिश्तेदार रहता था, लेकिन वहाँ भी कुछ दिन ही निकाल पाता, क्योकि उस्मानी के पीछे हर स्टेट और केन्द्र की गुप्तचरी लगी रहती थी जो किसी भी रिश्तेदार या दोस्त को परेशान कर सकती थी। इसके अलावा हर क्षेत्र से उस्मानी की माग बनी ही रहती थी जिसका एक कारण यह भी था कि वह एकमात्र एसा माध्यम था जो समाजवादी विचारधारा से सबधित पुस्तकें और पत्रिकाए बडे-बडे सगठनों और पार्टिया के नेताओं और कार्यकर्त्ताओं तक पहुँचाने की व्यवस्था किया करता था। उन दिनो ऐसी अनेक प्रतिबधित रचनाएँ भी थीं जिन्ह उस्मानी ही मुहैया करवा सकता था।

कहाँ रहता था उस्मानी जब उसका अपना कोई घर था ही नहीं? वह आवारा तो था नहीं—आवारापन के आस-पास भी नही। यह भी सही है कि उसके लिए रहने का स्थायी ठिकाना नहीं था जो उसके लिए उपयुक्त भी कहा जा सकता हो।

उस्मानी का एक घर तो जेल की बदबूदार अधरी कोठरियाँ थीं ही जिनमे उसने सोलह साल काटे तो कम से कम दस साल उसे भूमिगत रहकर इधर से उधर भागते रहने में लग गए। इसके अलावा कभी मुसाफिरखाने में, कभी किसी स्कूल के कमरे म, कभी किसी यूनियन या पार्टी के दफ्तर में, किसी प्रेस के कार्यालय में, किसी दोस्त के यहाँ, किसी होटल में, स्टेशन के विश्रामगृह या प्लेटफार्म पर या कच्ची बस्ती में किसी झोंपड़ी में। कभी वह होटल से पकडा जाता है तो कभी किसी सराय से, किसी कार्यालय से अथवा किसी यूनियन के कमरे से। उसे रात के एक बजे से चार बजे के बीच में गिरफ्तार किया जाता रहा है—उसकी हर वस्तु की तलाशी और उसकी बरबादी के साथ। पुलिस वालों ने उसके सामान को लूटा-खसोटा और जो चीज़ ले सकते थे उसे लेने के बाद फिर कभी वापिस नही लौटाया। उस्मानी की आवासीय व्यवस्था पर शायर की यह पक्ति अकित की जा सकती है—

चीन औ अरब हमारा, हिन्दोस्ता हमारा,
रहने को घर नहीं है, सारा जहा हमारा!

उस्मानी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के प्रति उदासीन नहीं था। यह हकीकत है कि वह किसी के लिए कोई वसीयत न कर सका, क्योंकि उसने जायदाद बनाई ही नहीं, न ही उसने आर्थिक मदद की, बल्कि उसक कामों की वजह से

हुआ करती थी। दर्शन, राजनीतिक अर्थशास्त्र और इतिहास में उनकी विशेष रुचि थी। अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को केन्द्र में रख कर वे अनेक बार सही पूर्वानुमान लगा लिया करते थे। तत्कालीन विश्व के वैचारिक सघर्ष का सटीक विश्लेषण करना उस्मानी की अपनी विशेषता थी। लेकिन वे यह बात भली प्रकार जानते थे कि वैचारिक सघर्ष का आधार अतत वर्गसघर्ष म ही अन्तर्निहित है।

उनके सारे क्रियाकलापो की पृष्ठभूमि म उनके वैश्विक दृष्टिकोण की झलक देखी जा सकती है और खास-तौर पर अभियुक्त के तौर पर दिए गए बयान से। एक जगह उन्होंने कहा है कि 'मै मार्क्सवाद-लेनिनवाद के वास्तविक अर्थ मे कम्युनिस्ट हूँ।' और इसी तरह एक और प्रसग में उन्होन आत्म-स्वीकृति के रूप म ज़ोर दे कर कहा कि 'मै कम्युनिस्ट हूँ और जिन्दगी भर कम्युनिस्ट रहूँगा।'

वे पूरी तरह नास्तिक थे, अत न उनका किसी धर्मविशेष म विश्वास था और न किसी धर्मतत्र म। वे न नमाज़ अदा करते थे और न ही रोज़े रखते थे। यद्यपि आज़ादी के आन्दोलन को बल देने क लिए जेलों में एक बार नहीं, बल्कि कई बार लबी भूख हड़तालें रखी थीं। लेकिन वे सब धर्मों का और उनक मूल उद्देश्यों का आदर करते थे। उनका विरोध धर्मतात्रिक कर्मकाडी पद्धतिया, सस्थाओं, उनके अधानुकरण करने और उनका उपयोग अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए करने वाले पडितों-पुरोहितों, मुल्ला-मौलवियों और गुरुओं-पादरियो के विविध क्रियाकलापों को लेकर था। नाजीवाद-फासीवाद से उन्ह सख्त नफरत थी।

राजनैतिक जीवन के प्रथम दौर में व सशस्त्र क्राति को ही एकमात्र विकल्प मानते थे और खास तौर से आजादी हासिल करने क मामले मे। इसीलिए वे सोवियत सघ गए थे। उन्होंने शस्त्र उठाकर ही करकी की रक्षार्थ प्रतिक्रातिकारी श्वेतगार्डो के विरुद्ध मार्चा लिया था और भारत की आजादी क लिए भी सोवियत सघ से हथियार देने की माग की थी। उनके अनुसार आज़ादी की लडाई अहिंसा से नही जीती जा सकती।' स्टालिन से मिलने पर भी उन्होने कहा था कि यदि हथियारों की मदद नहीं की जाती है तो उनका स्वदेश जाना ही बहतर है। लेकिन भारत क आन्दालन की विशेष परिस्थितियों और वामपथी दला की सगठनात्मक स्थिति ने आगे चलकर उनमें हथियार लेने के आग्रह को शिथिल करने की विवशता पैदा कर दी थी।

उस्मानी ने सोवियत सघ की बदलती हुई तस्वीर को अत्यत निकट से दखा था। वे उससे बहुत प्रभावित थे। यहाँ तक कि कोई व्यक्ति या राजनीतिक दल सोवियत सघ के विरोध म कुछ कहता तो वे तुरत उसका तर्कसहित खडन करते थे। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नताओ के व्यक्तिगत चरित्र से भी बहुत प्रभावित थे और खास तौर से लेनिन और स्टालिन के आचार-व्यवहार स। इस विषय म उनके अनुभव पढ़े-पढ़ाए आधार पर न होकर व्यक्तिगत सपर्कों के कारण थे।

* * * *

शौकत उस्मानी सबसे पहले ताशकद म स्थापित भारतीय कम्युनिस्ट के सदस्य

परिवार को सकट भी झेलने पड़। इसके बावजूद वह अपनी दादी से बहुत प्रेम करता था। उसके प्रति हमेशा उसके हृदय में अपरिमित सम्मान था। वह अपने चाचाओं को बहुत चाहता था तथा सभी चाचियों, चचेरे भाई, भतीजों और भतीजियों का भी। वह अपनी पत्नी और पुत्र से भी प्यार और स्नेह करता था। वह अपनी ओर से इस बात का सदा ख़याल रखता था कि उसके कारण परिवार कहीं और अधिक सकट म न फस जाय, इसीलिए उसने जेलो से छूटने पर भी बीकानेर आने का जोखिम नही उठाया। उसके व्यक्तिगत पत्रों स यह साफ जाहिर होता है कि परिवार स दूर होते हुए भी उसके प्रति कितना सहृदय था।

इसके अलावा यह भी उल्लेखनीय है कि अपन इतने सपर्कों म स किसी का उपयोग उसने अपने परिवार के किसी भी सदस्य को किसी भी तरह का लाभ पहुँचाने के लिए नही किया। आज भी उसके परिवार की खस्ता हालत इसका प्रमाण दे रही है। वास्तव मे वह इसे अपने स्तर के अनुकूल नही समझ रहा था। अपने बच्चे की शिक्षा-दीक्षा या आजीविका की व्यवस्था के लिए भी उसने किसी से कुछ कहने का प्रयास नहीं किया। उसके पुत्र उस्मान गनी ने अपने ही बलबूते पर जो हो सकता था वह किया।

शौकत उस्मानी जानबूझकर इश्कबाजी से दूर रहा क्योकि उस जैसे लोगों से महत्वपूर्ण दस्तावेज हड़पने के लिए साम्राज्यवाद ने अपने अनेक एजेंटा को छोड़ रखा था। जब कोई अपन साथ डास करने का इशारा करती तो वह बहाना बना कर टाल देता था।

उस्मानी ने बुरा माना उन कम्युनिस्ट नेताआ को जो सोवियत सघ में या और कहीं ऐशोआराम की जिन्दगी बसर कर रह थ। एम एन राय और उनकी पत्नी एवलिन ऐसे ही लोगों मे थे। उसके दिल पर चोट लगती थी जब कोई कम्युनिस्ट बीमारी या और कोई बहाना बनाकर जमानत पर छूटने की कोशिश करता था। सबसे ज्यादा नफरत उस अभियुक्त से होती थी जो किसी कारण से सरकार के लिए मुखबिर बन जाता था। और उसे उस स्थिति से भी सख्त घृणा थी जब किसी ईर्ष्या-द्वेष और गुटबाजी से पार्टी को नुकसान पहुँचाता था और पार्टी फिर भी उसे ऊँचे पद पर बनाए रखती थी। इसी प्रकार की परिस्थिति ने उस पार्टी छोडन तक को विवश कर दिया। उसक और मुजफ्फर अहमद क बीच का तीव्र मतभेद भी इसी का उदाहरण है।

* * * *

शौकत उस्मानी मार्क्सवादी थे। वैज्ञानिक और ऐतिहासिक भौतिकवाद का उन्होंने गहन अध्ययन किया था। वे राष्ट्रीय और अतर्राष्ट्रीय आर्थिक-राजनीतिक परिस्थितियों का आकलन उनक वस्तुगत आधार को दृष्टिगत रख कर किया करते थे। वे समस्याओं की गहराई में पैठ कर उनका विश्लेषण किया करत थे। लेनिन की कृतियों को उन्होंने बड़े ध्यान से पढ़ा था और वे उनके लिए प्रेरणा के स्रोत

हुआ करती थीं। दर्शन, राजनीतिक अर्थशास्त्र और इतिहास में उनकी विशेष रुचि थी। अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को केन्द्र में रख कर वे अनेक बार सही पूर्वानुमान लगा लिया करते थे। तत्कालीन विश्व के वैचारिक संघर्ष का सटीक विश्लेषण करना उस्मानी की अपनी विशेषता थी। लेकिन वे यह बात भली प्रकार जानते थे कि वैचारिक संघर्ष का आधार अंततः वर्गसंघर्ष में ही अन्तर्निहित है।

उनके सारे क्रियाकलापों की पृष्ठभूमि में उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण की झलक देखी जा सकती है और खास-तौर पर अभियुक्त के तौर पर दिए गए बयान से। एक जगह उन्होंने कहा है कि 'मैं मार्क्सवाद-लेनिनवाद के वास्तविक अर्थ में कम्युनिस्ट हूं।' और इसी तरह एक और प्रसंग में उन्होंने आत्म-स्वीकृति के रूप में जोर दे कर कहा कि 'मैं कम्युनिस्ट हूं और जिन्दगी भर कम्युनिस्ट रहूंगा।'

वे पूरी तरह नास्तिक थे अतः न उनका किसी धर्मविशेष में विश्वास था और न किसी धर्मसत्ता में। वे न नमाज अदा करते थे और न ही रोजा रखते थे। यद्यपि आजादी के आन्दोलन को बल देने के लिए जेलों में एक बार नहीं, बल्कि कई बार लंबी भूख हड़तालें रखी थीं। लेकिन वे सब धर्मों का और उनके मूल उद्देश्यों का आदर करते थे। उनका विरोध धर्मतांत्रिक कर्मकांडी पद्धतियों, संस्थाओं, उनके अंधानुसरण करने और उनका उपयोग अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए करने वाले पंडितों-पुरोहितों, मुल्ला-मौलवियों और गुरुओं-पादरियों के विविध क्रियाकलापों को लेकर था। नाजीवाद-फासीवाद से उन्हें सख्त नफरत थी।

राजनीतिक जीवन के प्रथम दौर में वे सशस्त्र क्रांति को ही एकमात्र विकल्प मानते थे और खास तौर से आजादी हासिल करने के मामले में। इसीलिए वे सोवियत संघ गए थे। उन्होंने शस्त्र उठाकर ही रूस की रक्षार्थ प्रतिक्रांतिकारी श्वेतगार्डों के विरुद्ध मोर्चा लिया था और भारत की आजादी के लिए भी सोवियत संघ से हथियार देने की मांग की थी। उनके अनुसार 'आजादी की लड़ाई अहिंसा से नहीं जीती जा सकती।' स्तालिन से मिलने पर भी उन्होंने कहा था कि यदि हथियारों की मदद नहीं की जाती है तो उनका स्वदेश जाना ही बेहतर है। लेकिन भारत के आन्दोलन की विशेष परिस्थितियों और वामपंथी दलों की संगठनात्मक स्थिति ने आगे चलकर उनमें हथियार लेने के आग्रह को शिथिल करने की विवशता पैदा कर दी थी।

उस्मानी ने सोवियत संघ की बदलती हुई तस्वीर को अत्यंत निकट से देखा था। वे उससे बहुत प्रभावित थे। यहाँ तक कि कोई व्यक्ति या राजनीतिक दल सोवियत संघ के विरोध में कुछ कहता तो वे तुरंत उसका तर्कसहित खंडन करते थे। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के व्यक्तिगत चरित्र से भी बहुत प्रभावित थे और खास तौर से लेनिन और स्तालिन के आचार-व्यवहार से। इस विषय में उनके अनुभव पढ़े-पढ़ाए आधार पर न होकर व्यक्तिगत संपर्कों के कारण थे।

* * * *

शौकत उस्मानी सबसे पहले ताशकंद में स्थापित भारतीय कम्युनिस्ट के सदस्य

बने जिसमें एम एन राय और एम पी टी आचार्य भी सस्थापकों के रूप में सम्मिलित थे। राय-आचार्य के मतभेदों के बावजूद कॉमिन्टर्न में इसका प्रतिनिधित्व था। तब तक भारत में विधिवत् राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना नहीं हुई थी अलबत्ता कम्युनिस्ट विभिन्न राज्यों में ग्रुपों के रूप में कार्य कर रहे थे और काग्रेस के अधिवेशनों में भी वामपथ के प्रतिनिधि क रूप में उनको आमत्रित किया जाता था और अनेक कम्युनिस्ट काग्रेस के सदस्य भी थे क्योंकि प्राय ट्रेड यूनियनों के वे ही सचालक थे। काग्रेस में वामपथियों की असरदार भूमिका थी।

भारत आने पर उस्मानी ने वामपथी काग्रेसी के रूप में कार्य किया था, किन्तु उनका मुख्य कार्य किसी न किसी ट्रेड यूनियन में काम करना था। उस्मानी ही वह माध्यम या व्यक्तिकेन्द्र थे जो सारे ख़तरों को माल लेकर दूसरे दशों से गुप्त रूप से पहुँचाए गए प्रतिबधित कम्युनिस्ट साहित्य, पत्र-पत्रिकाए आदि ट्रेड यूनियनों के मजदूरों, नेताओं, बुद्धिजीवियों और छात्रों तक पहुँचाया करते थ। ऐस साहित्य को न केवल कम्युनिस्ट और दूसरे वामपथी दलो के नेता प्राप्त करने का इतज़ार करते रहते थे, अपितु काग्रेस के अनेक नेता और कार्यकर्त्ता भी उतनी ही उत्सुकता दिखाते हुए उस्मानी से घनिष्ठ सपर्क रखते थे। उस्मानी के गुरु डॉ सपूर्णानद ने तो इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख अपनी सस्मरणात्मक पुस्तक तक में कर दिया है।

कानपुर केस में उन्हें पहला 'बोल्शेविक' करार देकर गिरफ्तार किया गया था, और उस केस में जब वे डागे के साथ जेल भोग रहे थे, तो उसी दौर में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई थी। स्वाभाविक ही था कि जेल में रहते हुए वे डागे आदि के साथ कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए। वे अनौपचारिक सस्थापक सदस्यो में से थ।

कानपुर केस से बरी होने के बाद दो साल तक पार्टी का काम करते हुए उस्मानी फिर मेरठ षड्यत्र केस म खतरनाक 'बोल्शेविक कम्युनिस्ट' के रूप में पकड़ लिए गए और जेल-यातानाए भोगते रहे। इसी दौर में एक-दो कम्युनिस्ट साथियों के व्यक्तिगत आचरण के ओछेपन का देखकर उस्मानी पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ा क्याकि पार्टी ने बजाय उनको दडित करने के उल्टे प्रोत्सा[illegible] कर दिया। इस पर तैश में आकर उन्होंने अपनी सदस्यता का सालाना नवीनीकरण नही करवाया। इस तरह सन् 1935 में यद्यपि औपचारिक रूप से सी पी आई से उनका सबध विच्छेद हो गया था किन्तु अग्रजी हुकूमत के लिए वे सदैव षड्यत्र करने वाले 'क्रातिकारी बोल्शेविक कम्युनिस्ट' बने रह और वस्तुत उनक काम हमेशा कम्युनिस्ट सिद्धान्तों और आदर्शों पर ही दृढ़ता क साथ पोषित-पल्लवित थे।

शौकत उस्मानी काग्रस में रहे ता कम्युनिस्ट सावित होते रहे और इतन जाने माने कम्युनिस्ट कि काग्रेस की खिचड़ी कल्चर में अपने आपको फिट नहीं कर पाए। काग्रेसियों ने भीतर ही भीतर पार्टी के शीर्षस्थ पद पर न पहुँचने देने की तिकड़में चालू कीं और वे स्वय तो पार्टी के पदाभिलाषी रहे ही नहीं, उन्होंने कई बार 'ऑफर'

रा भी दिए थे। वे सही मायने मे क्राति के लिए जो भी करणीय हो उसे करने जी-जान से तत्पर रहते थे। उनके प्रकट और गुप्त सब प्रकार के कामों का नतीजा कि उनकी प्रत्येक दिन की गतिविधि की खुफिया डायरी तैयार होती थी और फ्तारी के समय कम्युनिस्ट या काग्रेस या अन्य किसी पार्टी के बडे से बड़े पदाधिकारी पहले शौकत उस्मानी का नबर आता था अथवा वे पहले नबर की छापामारी मकड़े जाते थे और वह भी हिंसावादी कम्युनिस्ट के रूप में। यद्यपि उस्मानी ने ी किसी को रत्तीभर तकलीफ नही पहुँचाई, अलबत्ता जेल मे चीखते हुए कैदी आवाज़ सुनकर पुरज़ोर आवाज़ में उस 'मारपीट' को तत्काल रुकवा दिया। वास्तव वे बहुत सहृदय और सवेदनशील व्यक्ति थे।

वे आर एस पी (रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी) के सदस्य भी रहे। किन्तु उ हें लगा कि पार्टी में 'सोवियत विरोध' का व्यापक रुझान है तो उन्होंने थाडी-सी धि के बाद ही अपने आपको अलग कर लिया, क्योंकि उ हें पार्टी के इस रुझान पीछे किसी प्रकार का तार्किक आधार नहीं दिखाई दिया। वे जब आपसी बहस सोवियत सघ का पक्ष लेते तो पार्टी के अनेक नेताओं के गल नही उतरता था। ा जा सकता है कि उस पार्टी में भी वे 'कम्युनिस्ट' माने जाकर उसक लिए ग्राह्य हो गए थे। भगतसिह की पार्टी के नेताओं के साथ उनके घनिष्ठ सबध ।

लदन में छ साल की अवधि में वे वहाँ की लेबर पार्टी स इसलिए जुडे उसके मच पर अपने आप का खुल कर प्रकट करने का खुलापन अन्य दलो अपक्षा सबसे अधिक मात्रा में उपलब्ध था। उन्होंने भारत क गोवा मुक्ति आन्दालन वहाँ स प्रबल समर्थन देने के लिए अधिकाधिक उपयोग किया। यद्यपि ब्रिटेन कम्युनिस्ट पार्टी के नेता उनके साथ सहअभियुक्त रह चुके थे और इसी पार्टी उनको चुनाव में अपना उम्मीदवार भी बनाया था, किन्तु उसका ट्रेड यूनियनवाद जरूरत से ज्यादा दारोमदार था और उस्मानी क्रातिकारी परिवर्तन के लिए एकमात्र यूनियनवाद को ही उपकरण के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। भारतीय म्युनिस्टों द्वारा भी सर्वाधिक जोर ट्रेड यूनियनवाद पर दिया जाता था और उस्मानी विषय पर अपने मतभेद साफतौर पर जाहिर किया करते थे। लेबर पार्टी में भी कम्युनिस्ट के रूप में मशहूर हो गए थे। ब्रिटेन की नागरिकता लेने क अनुरोध भी उन्होंने नकार दिया था और फिर उस पार्टी का साथ भी छूट गया।

काहिरा म दस साल तक रहते हुए वे बिना किसी पार्टी से सपर्क किए हर वर्ग के प्रगतिशील लोगों से जुडे रहे और भारत क वामपथियों के साथ सबध नाए रखा।

जब काहिरा से सन् 1974 म वापिस भारत आए तो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी जुड़ गए और अत तक उसी के सदस्य बने रह। अजय भवन, कार्यालय में ही ार्यरत रहे जहाँ मेरठ केस क जेल के सहयात्री डॉ अधिकारी पार्टी दस्तावजों पर

इतिहास लेखन का कार्य सपादित कर रहे थे।

उन दिनों एक उक्ति हरेक पढ़े-लिखे राजनीतिज्ञ की जबान पर रहती थी कि 'एक बार जो कम्युनिस्ट बन गया वह सदैव कम्युनिस्ट ही रहता है' और यह उक्ति और किसी पर पूरी तरह लागू हो या न हो, शौकत उस्मानी पर ता पूरी तरह चरितार्थ होती ही है। वे हिजरत के बहाने से हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए हथियारों की मदद लन सोवियत यूनियन गए और वहाँ स कम्युनिज्म की शिक्षा लेकर वापिस लौटे तो उनके पास हथियार तो नहीं थे लकिन एक उपाधि अवश्य थी और वह थी 'बोल्शेविक कम्युनिस्ट।' इस पद (बोल्शेविक कम्युनिस्ट) से उन्हें अत तक मुक्ति प्राप्त नहीं हुई चाहे वे काग्रेस में रह हों, चाहे आर एस पी में या ब्रिटेन की लबर पार्टी की सदस्यता स्वीकार कर ली हो और एक बार सी पी आई से अलग ही क्यों न हो गए हों—न तो किसी पार्टी ने, न विदेशी या देशी सरकार ने, न किसी नेता या आम आदमी ने और न ही उन्होंने खुद ने ही इस 'शौकत उस्मानी' नाम के व्यक्ति को इस सम्मानित पदक—'बाल्शेविक कम्युनिस्ट' से अलग करके जाना और पहचाना।

वास्तव म वे जीवन भर ल्यू शाओ ची के मापदड पर एक 'अच्छे और उच्च कोटि' के कम्युनिस्ट रहे।

शौकत उस्मानी के बहुआयामी व्यक्तित्व के विषय में अभी तक बहुत कम कहा गया है। कई पुस्तको में चलते प्रसगों में उनका उल्लेख भर किया जा सका है। तात्कालिक प्रचार तो अनेक दैनिक समाचार पत्रों और समकालीन पत्रिकाओं मे उपलब्ध है लेकिन समग्रता के साथ दखा जाय तो वह नितान्त अपर्याप्त ही प्रतीत होता है और नजरअदाज किया हुआ भी।

उस्मानी की भूमिगत गतिविधियाँ बाहरी क्रिया-कलापा से किसी भी तरह कम महत्त्वपूर्ण नहीं थीं। उन्होंने विशेष विकट परिस्थितिया के अनुसार अनेक प्रकार की वेशभूषा धारण की। कभी मोची का वश धारण किया, कभी दरवेश, कभी पारसी बन ता कभी यूरोपियन। कहीं उनका नाम सिकन्दर सूर है तो कही जॉनसन या जैक्सन अथवा यहाँ एक फ्रासीसी नाम है ता वहाँ टर्की आदि। कहीं व पर्शियन लहजे मे बोले है तो कहीं रूसी, कही अग्रेजी स्वरयत्र काम म लिया है ता कहीं पजाबी, उर्दू या हिन्दी आदि। वे छात्रो म छात्र या शिक्षक बन कर काम करत रह ता मजदूरों में मजदूर अथवा सैनिकों मे उन जैसे और बुद्धिजीविया म बुद्धिजीवी। वे पत्रकार भी थे, सवाददाता और सपादक भी तथा मजे हुए स्वतत्र लखक भी। नेता भी थे तो चिकित्सक भी। व प्रचारक भी थे तो वितरण एजेट भी। किसी जगह मैनजरी की, तो किसी जगह मास्टरी या बाबूगीरी। जेला म मूज बटाई और बागवानी तो की ही। उन्हें गुप्तचरा को चकमा देने का अच्छा खासा अनुभव प्राप्त हो गया था और इसके लिए उनका चतुराइयाँ भी हासिल थी। लेकिन बचते-बचाते हुए भी केन्द्रीय ब्यूरो की आँख उन्हें किसी न किसी तरह पकड़ने में पहल कर ही लेती

थीं। इस 'आँखमिचौनी' या 'तू डाल-डाल मै पात-पात' के खेल का भागीदार होना ही उनकी एकमात्र नियति थी।

अनेक मुद्दों पर अपने दोस्तो और साथियों के साथ उस्मानी के गहरे मतभेद होते थे, लेकिन वे जिससे मतभेद रखते थे, उसके गुणा की सदा कद्र करते थ। एम एन राय के साथ मतभेद होते हुए भी वे सदा उनके गहन अध्ययन, उनकी प्रतिभा और अभिव्यक्ति के सबसे बडे प्रशसक रहे। यह गुण एम एन राय में भी था। राय उस्मानी का बहुत अधिक सम्मान करते थे और अपने पत्र और साप्ताहिका में उस्मानी को उपयुक्त टिप्पणी के साथ उद्धृत और प्रकाशित करते थे। मुजफ्फर अहमद उस्मानी से ईर्ष्या रखते थे और उनके खिलाफ अनर्गल टिप्पणियाँ भी प्रकाशित करते थे। अहमद की जलन या उनके पूर्वाग्रह का प्रमाण उनकी पुस्तक The Communist Party of India and its Formation Abroad या और कहीं यत्र तत्र देखा जा सकता है जिसमें उस्मानी को 'कट्टर सप्रदायवादी', 'अवसरवादी', ट्रॉटस्कीवादी' आदि फतवे दे कर कुमडित किया गया है, जिनका सप्रमाण मुहतोड जवाब उस्मानी के द्वारा ही अपनी 'आत्मकथा' और अन्य रचनाओं के माध्यम से दिया जा चुका है जिसे दोहराने की आवश्यकता नही। लेकिन उस्मानी ने मुजफ्फर अहमद की विशेषताआ को नकारा नहीं—अलबत्ता मतभेदों की ओर सकेत तो किया ही। उस्मानी के चरित्र की यह शालीनता उनका स्वभाव बन चुकी थी।

उस्मानी की लगभग सारी कृतियों का सृजन या तो जल के सीखचों क भीतर हुआ अथवा आजादी के आन्दोलन के दौर मे विविध प्रकार से जूझते हुए क्रियाकलापों की व्यस्तता के प्रवाह में। लेकिन लदन की ब्रिटिश म्यूजियम सेन्ट्रल लाइब्रेरी में गहन अध्ययन के बाद रचित 'न्यूट्रिटिव वैल्यूज ऑफ फ्रूट्स, वेजिटबल्स, नट्स एण्ड फूड क्योर्स' और अप्रकाशित रचना 'आत्मकथा' जैसी पुस्तकें इसके अपवाद कहे जा सकते है। इन दोनों मे शौकत उस्मानी की मौन साधना को देखा जा सकता है। 'आत्मकथा' तो फिर भी उनके जीवन सघर्षों की घटनाओं से सबधित है किन्तु 'फूड क्योर्स जैसी पुस्तक तो उनके गहन अध्ययन और शोध का ही प्रतिफल है। इसकी विषयवस्तु ही उस्मानी को एक अन्य शीर्ष स्तर पर अवस्थित कर देती है। कोई कैस सोच सकता है कि उस्मानी जैसा हलचल प्रकृतिवाला व्यक्ति लगातार छ साल तक शात और सुस्थिर होकर एक आश्चर्यजनक अन्तर्वस्तु का वाछित और अपेक्षित स्वरूप प्रदान कर सकेगा। अनक विपरीत परिस्थितिया में किए हुए उनके इस अथक प्रयास को एक अन्य प्रकार के सघर्ष की सज्ञा दी जा सकती है।

शौकत उस्मानी निरतर सघर्षों मे चलते रहे। उनका जीवन सघर्ष का पर्याय बन गया अथवा उन्होंन सघर्ष को ही जिया, सघर्ष को ही भोगा। यह देश की आज़ादी का सघर्ष था। यह सर्वहारा वर्ग के साथ मिलकर लडा गया सघर्ष था। यह साम्राज्यवादी शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ सघर्ष था। यह विश्वयुद्ध के खिलाफ विश्वशाति के लिए सघर्ष था। *यह क्रातिकारियों का प्रतिक्राति के विरुद्ध सघर्ष था। यह साम्प्रदायिक*

कट्टरता के विपरीत मोर्चेबन्दी का प्रयास था।

यह उस्मानी का हथियारबन्द सघर्ष था, यह उसकी जल-यातनाओं को लगातार झेल कर किया जाने वाला सघर्ष था, यह उसके द्वारा निरतर लबी भूखहड़तालें करके अपने खून को सुखाते जाने का सघर्ष था, यह उसके भूमिगत रहते हुए भागदौड़ कर जागरण का बिगुल बजाते जाने का सघर्ष था। यह उसका मुखर सघर्ष भी था तो मूक सघर्ष भी। सारत यह दानवी ताकतों को परास्त करने के लिए समूची मानवता का सघर्ष था। कोई उनसे पूछता कि अब हमें क्या करना चाहिए तो उस्मानी का उत्तर होता था–सघर्ष, सघर्ष और सघर्ष।

रचनाकार

शौकत उस्मानी ने अपने जीवनकाल में लगातार साठ साल से अधिक साहित्य साधना की। उनकी इस साधना में जेल-यातनाओं और विविध राजनीतिक संघर्षों में व्यस्त रहने के कारण अनेक व्यवधान भी उपस्थित होते रहे, किन्तु इसके बावजूद उनकी लेखनी चलती रही। दरअसल उनका लेखन भी साहित्यिक संघर्ष ही बन गया था। एक ओर प्रकाशकीय समस्याए थीं तो दूसरी ओर आए दिन पुलिस के द्वारा आकस्मिक छापे मारने से उत्पन्न परेशानियाँ। उनकी अनेक मूल्यवान रचनाए तो छापामारी, प्रकाशकीय बदनीयती और इसी प्रकार के अन्यान्य कारणों से जन्मते ही मौत के मुँह में पहुँचा दी गईं।

उनकी रचनाओं के शीर्ष नाम इस प्रकार है

	रचनाएँ	भाषा	
1	पेशावर टू मॉस्को	अग्रेजी	अनुवाद–उर्दू, हिन्दी
2	अनमोल कहानियाँ	हिन्दी	
3	फ़ोर ट्रवलर्स	अग्रेजी	अनुवाद–उर्दू, हिन्दी
4	फौजी सितारा	उर्दू	
5	ऐनिमल कान्फ्रेंस	अग्रेजी	
6	जगल कान्फ्रेंस	अग्रेजी	
7	आइ मैट स्टालिन ट्वाइस	अग्रेजी	
8	जनरल स्ट्राइक	अग्रेजी	
9	मज़दूर का लड़का	उर्दू	
10	इडस्ट्रियल सर्वे ऑफ पर्शिया	अग्रेजी	
11	ए पेज फ्रॉम रशियन रिवोल्यूशन	अग्रेजी	
12	ग्लिप्सज़ ऑफ द हिस्ट्री ऑफ द पैलेस्टाइन पास्ट एड प्रेजन्ट	अग्रेजी	
13	न्यूट्रिटिव वैल्यूज़ ऑफ फ्रूट्स, वैजीटेबल्स, नट्स एड फूड क्यार्स	अग्रजी	
14	हिस्टोरिक ट्रिप्स ऑफ ए रिवोल्यूशनरी	अग्रेजी	
15	ऑटोबायोग्राफी	अग्रजी	
16	रूस यात्रा	उर्दू	
17	जगदीश	हिन्दी	
18	नाइट ऑफ एकिलप्स	अग्रेजी	

इसके अलावा उन्होने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काफी महत्वपूर्ण कार्य किया। 'अलफतह', 'इजिपशियन गजट', फ्री प्रस जर्नल', 'रेडियन्स', 'कपास' आदि पत्र-पत्रिकाओं म सपादन, सहसपादन, राजनीतिक विश्लेषण, टिप्पणीकरण, स्वतत्र लेखन, सवाद प्रेषण जैसी अनेक विधाओं में उन्होंने अपने नाम से या छद्म नाम से इतना गहरा और इतना अधिक मात्रा में लिखा कि उसका सकलन करना और उसका अध्ययन प्रस्तुत करना अपने आप में एक बहुत बड़ी समस्या है।

यह सभव है कि उनकी रचनाओं की सूची अपूर्ण हो और उसमें और कोई शीर्षनाम और जोड़ना पड़े। फिर यदि इसको ही पर्याप्त मान लिया जाय तो सबसे बड़ी अड़चन यह है कि उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों की सख्या में आधी से अधिक तो उपलब्ध ही नही है। जो उपलब्ध हुई है उनका सक्षिप्त परिचय इसी रचना में अन्यत्र दिया जा चुका है। यहाँ तक कि इनके अलावा न तो उनके परिवार के किसी सदस्य के पास कोई प्रति है, न ही किसी पुस्तकालय में और न ही किसी प्रकाशक के पास।

प्रकाशित (उपलब्ध)—

1 Historic Trips of a Revolutionary
2 अनमोल कहानियाँ
3 रूस यात्रा
4 Four Travellers
5 I Met Stalin Twice
6 Animal Conference
7 Jungle Conference
8 Nutritive Values of Fruits Vegetables Nuts and Food Cures

अप्रकाशित (उपलब्ध)—1 Autobiography

बाकी सब रचनाए अनुपलब्ध है।

उस्मानी साहित्य का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है—

यात्रा विवरण—1 Peshawar to Moscow
2 Historic Trips of a Revolutionary
3 रूस यात्रा

कहानी—1 अनमोल कहानियाँ
2 Night of the Eclipse

उपन्यास—1 Four Travellers
2 फ़ौजी सितारा
3 General Strike
4 मजदूर का लड़का

5 जगदीश

साक्षात्कार—1 I Met Stalin Twice

व्यग्य—1 Animal Conference

2 Jungle Conference

विश्लेषण—1 Industrial Survey of Persia

2 A Page from Russian Revolution

ऐतिहासिक विश्लेषण—1 Glimpses of the Histroy of the Palestine Past and Present

आत्मकथा—1 Autobiography

शोध—1 Nutritive Values of Fruits Vegetables Nuts & Food Cures

शौकत उस्मानी ने सन् 1916 से अर्थात् पन्द्रह साल की किशोरावस्था से ही लिखना आरभ कर दिया था और सन् 1978 के आरभ तक अर्थात् जिन्दगी के आखिरी किनारे तक निरतर लिखते रहे। इन छ दशकों से भी अधिक समय में लिखा गया आधे से अधिक साहित्य अकाल मौत का शिकार कर दिया गया—पुलिस, किसी प्रकाशक या अन्य किसी के द्वारा।

उनके द्वारा लिखी गई बचपन की कविता की कुछ पक्तिया इस प्रकार है

ओ, मेरी आँखों के सितारे, ओ, मेरे स्वर्गोद्यान,
ओ, मेरी पवित्र जन्मभूमि, ओ, मेरे भारत!
एक समय था जब सारी दुनिया ईर्ष्या से निहारती थी
तुम्हारी सपदाओं औ तुम्हारे खूबसूरत बगीचों को
यूरोप के युवाओं के सपनों में भी तुम्हारे द्वार की धूल मिल गई
तो वे गहरी नींद से जग कर उल्लसित, चकित हो जाया करते थे
किन्तु अब
बाग उजड़ गया है
बुलबुल और फूलो को नष्ट कर दिया गया है
कौन है वह शैतान
जिसने लूट लिया है इस उद्यान को!

('आत्मकथा'—मूल अग्रेजी से अनुवादित)

उपर्युक्त रचनावधि मे अनेक प्रकार की राष्ट्रीय और अतर्राष्ट्रीय घटनाएँ घटित हुईं जिनका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। दादी अम्मा से सुनी 1857 के महाविद्रोह की कहानियों को वे बार-बार याद करते है। तिवाड़ीजी और सपूर्णानदजी जैसे गुरुओं की राष्ट्रीय धारा की प्रणास्पद पहचान उनके मस्तिष्क म उथल-पुथल मचा रही है। स्वतत्रता सघर्ष के विविध आयाम, जैसे गाँधीजी के सत्याग्रह कार्यक्रम सविनय अवज्ञा, जगह-जगह मजदूरों की हडतालें, किसानों के विद्रोह, जलियावाला बाग

का निर्मम हत्याकाड, वामपथी हलचल, भूमिगत क्रातिकारियों के सगठनों की कार्यवाहियाँ आदि—उस रचनाकार की विषयवस्तु बन रहे है तो अतर्राष्ट्रीय स्तर पर 'रूस की महान् अक्टूबर क्राति' उद्वेलित किए जा रही है।

घर से निकल कर पेशावर और पशावर से मॉस्को तक पहुँचने की घटनाओं ने तो जिस पहले प्रकाशन— पशावर से मॉस्को तक' को जन्म दिया उसने उस्मानी को अत्यत व्यापक प्रचार प्रदान किया, तो उनके लिए आगे की गिरफ्तारियों की भूमिका भी भलीभाति तैयार कर दी।

कानपुर और मेरठ षड्यत्र कसा में और फिर डी आई आर में प्राप्त बदी जीवन के अनुभवों की तीक्ष्णता-तीव्रता उनकी सारी रचनाआ में अनक तरीकों से उभर कर आच्छादित हो रही है।

उस्मानी की कहानियों मे नारी उत्पीडन की टीस है तो गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने की सघर्षात्मक प्रक्रिया भी। रुक्मिणी, राधा और शैला के चरित्राकन का उस्मानी जैसा कुशल कलाकार ही सफलता की मजिल तक पहुँचा सकता है। रुक्मिणी तोड़े गए प्रेम की त्रासदी म मरने की नियति की शिकार हाती है। उसे सगतराश की लड़की बताया गया है जा लेखक की या पड़ौसी की किसी निकट की घटना क आधार की ओर सकेत करता है। 'डाह' में हसन और कमर नामों को हटा दिया जाय और क्रमश शौकत उस्मानी और मुजफ्फर अहमद पढा जाय और हसन की आत्महत्या को कहानी से निकाल दिया जाय ता तत्वत वह दो कम्युनिस्टों के सबधों की दास्तान के रूप में प्रकट हो जायगी। कम्युनिस्ट शैला रूमानियत की तरग में बहकर इश्कबाजी मे फस जाती है किन्तु जब उसे एहसास होता है कि वह जिसे चाहती है वह ऐयाश क अलावा और कुछ भी नहीं अर्थात् वह किसी भी सामाजिक सराकार का व्यक्ति नहीं हो सकता तो वह उससे किनारा कर लेती है।

आज़ाद ख़याली की शिकार है राधा। वह सामाजिक परिवर्तन के लिए सगठनात्मक कार्य करन की प्रेरणा लेकर कार्यक्षेत्र में उतरती है जिसके अच्छे परिणाम सामने आते है। लेकिन रूढिग्रस्त ससुराल में जब वह बिना घूघट रहना चाहती है तो सास उसे घर में बद करके पीट-पीट कर मार दती है। राधा के प्रगतिशील व्यक्तित्व को उभारते समय उस्मानी के मस्तिष्क में प्रतिबिबित किसी रूसी नारी की छवि प्रतिष्ठित रही है।

'अनमोल कहानियों' की प्रत्येक कल्पनाकृति के आवरण को सरका कर देखने पर कहीं न कहीं कहानीकार स्वय या उसका कोई भोगा हुआ यथार्थ मिल जाएगा। उस्मानी की रचनाओं को पढ़ने से पहले उस्मानी को खुद को अच्छी तरह पढ़, समझ लिया जाना उपयोगी होगा।

छात्र, नवयुवक श्रमिक, बुद्धिजीवी तथा किसान की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के यथार्थ और उनके द्वारा अपनी परेशानियों का सामान्यीकरण करके उनसे छुटकारा पाने के जद्दोजहद को उन्होंने अपनी औपन्यासिक सरचना के माध्यम से

मुखरित किया। हर रचना उस्मानी के भीतर को प्रतिबिंबित करती चली जाती है।

'फोर ट्रेवलर्स' का हिन्दी अनुवाद 'चार यात्री' और उर्दू तर्जुमा 'चार मुसाफिर' के रूप में सामने आया। इस लघु उपन्यास के चार किशोर यात्री कहीं पुलिस थाने में आग लगा कर भाग जाते है और उस्मानी के ही रास्ते अर्थात् पेशावर और फिर काबुल के रास्ते से सोवियत सघ में प्रवेश कर जाते है।

मनोवैज्ञानिक आधार को लेकर उस्मानी ने अपने आप को एक नये रूप म अभिव्यक्त किया है। कला की पृष्ठभूमि पर कथानक को खड़ा करके उसमें शौर्य, साहस, उल्लास, करुणा, शिष्ट शृगार, रौद्र, वीभत्स और कुशलता के रगों का ऐसा समायोजन किया है कि उसे बार-बार पढ़ने की रुचि बनी रहती है। स्वय लेखक का अपनापन उसे एक जीवत रचना बना देता है। एक ओर परतत्र राष्ट्र की तड़पन है तो दूसरी ओर एक समाजवादी देश का बदलता हुआ स्वरूप।

उस्मानी अपने चार यात्रिया को उस मजिल तक पहुँचाने म सफल होते है जहाँ किशोरावस्था में अनेक सभावनाओ का उद्घाटन होता है। प्राकृतिक और मानवीय सौंदर्य के प्रति आकर्षण और जिज्ञासा जगाने तथा रहस्यों के भीतर झाकने की सहज प्रवृत्ति के साथ ही शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध विद्रोह करने की आकाक्षा का एक ऐसा लोकमच है 'चार यात्री' कि जिसका जोड़ अन्यत्र मिलना दुष्कर प्राय है।

'फ़ौजी सितारा' एक और उपन्यास है जिसम एक नौजवान के साहसातिरेक के साथ सोफनियत की रगीनी, जासूसियत की जिज्ञासा और एशिया और यूरोप के मचों पर प्रदर्शित विविध भूमिकाओ का सजीव चित्रण है। शातिर शमीम म रचनाकार ने स्वय को ढाल कर एक नये प्रकार का व्यक्तित्व खड़ा कर दिया है। दुर्भाग्य से यह रचना भी अब उपलब्धि से परे है। प्रस्तुत टिप्पणी का आधार एक विज्ञप्ति है जो फोर ट्रेवलर्स' के पीछे के कवर पेज पर अकित की गई है।

जनरल स्ट्राइक', मजदूर का लड़का' और जगदीश' एसे उपन्यास थे जिन्हें पुलिस ने नष्ट कर दिया, अत अधिकृत रूप से इनके विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इनके विषय में न तो कोई टिप्पणी उपलब्ध है और न कोई विज्ञप्ति ही। इनका नामोल्लेख इनके रचनाकार उस्मानी ने एक नहीं, अपितु अनेक स्थानों पर किया है। फिर भी इन शीर्षकों और लेखक की अन्य रचनाओं और उसे क्रियाकलापों से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इनमें श्रमिक वर्ग के शोषण, दमन और उत्पीड़न का यथार्थ चित्रण होगा और साथ ही सघर्ष की प्रक्रिया या उसकी तीव्रता की ओर अभिमुखता का आभास होगा। हो सकता है कि लेखक ने इनकी रचना में अपनी किशोरावस्था या जवानी को कल्पना का रग दिया हो।

I Met Stalin Twice (मैं स्टालिन से दो बार मिला) पुस्तिका एक विशेष प्रकार की मिलन विवरणिका कही जा सकती है। इसमें उस स्टालिन की सहृदयता की झलक दी गई है जिसे दुनिया 'लौह पुरुष' और 'क्रूर तानाशाह' कह कर उसकी

हृदयहीनता की कहानियाँ गढ़ती रही है। दूसरी ओर इसमें कॉमिन्टर्न की बैठक का, जिसमें उस्मानी अध्यक्ष मडल म शामिल थ–वह हवाला दिया गया है जिसमें विश्व के प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेताओ ने 'ट्रॉट्स्की' को लेकर स्टालिन पर जम कर प्रहार किए और स्टालिन भावावेगरहित मुद्रा में सुनते रहे, सहत रह और अत में जब उन्होंने सहज आर सतुलित स्वभाव म सप्रमाण तर्क प्रस्तुत किए तो सारा वातावरण एकदम बदल कर उनके पक्ष में हो गया। उस्मानी यह सिद्ध करने मे सफल रहे है कि स्टालिन बिना दस्तावेज, सबूत अथवा तार्किक कारण के किसी भी नतीजे पर नहीं पहुँचते थे, जबकि अनेक साम्राज्यवादी दलाल लेखक स्टालिन को नितान्त अतार्किक, सत्तान्ध या मतान्ध, आत्मकेन्द्रित और अमानुषिक तथा अपन राजनैतिक समकक्षों की नृशस हत्या करवाने वाले सत्तालोलुप व्यक्ति के रूप में काले रग से कलकित करने में कसरत करते चल जा रहे थे।

'हिस्टोरिक ट्रिप्स ऑफ ए रिवोल्यूशनरी' (Historic Trips of a Revolutionary) में 'पेशावर से मॉस्को', 'कराची से मॉस्को' और 'दिल्ली से मॉस्को' तक की तीन यात्राओं का समकित विवरण है। यह उनकी अतिम प्रकाशित रचना है। वैसे 'पेशावर से मॉस्को' तक की यात्रा का विवरण सन् 1927 में अलग पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुआ था और उसका इतना अधिक प्रचार हुआ था और इस पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ में इतनी व्यापक प्रतिक्रिया हुई कि उस्मानी प्रत्येक राजनीतिज्ञ और स्वतत्रता सेनानी में सुविख्यात हा गए। सन् 1920, 1928 और 1975 में की गई इन तीनों यात्राओं का परिचय आगे के पृष्ठों में देखने को मिलेगा। उस्मानी की अनेक रचनाओं में इनका उल्लेख मिलता है। रूस यात्रा' शीर्षक से एक अलग रचना भी है।

इसके अलावा A Page from Russian Revolution में महान् अक्टूबर क्राति के विश्वव्यापी प्रभाव का तथा लेखक के स्वय के लिए उसके प्रेरणास्रोत होने का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

Industrial Survey of Persia और Glimpses of the History of Palestine Past and Present दोनों अनुपलब्ध है किन्तु शीर्षक ही उनकी विषयवस्तु की ओर सकेत देने में पर्याप्त हैं। इन दोनो रचनाओं को ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक कृतियों की श्रेणी में रखा जा सकता है।

शौकत उस्मानी के साहित्यिक प्रवाह में एक अप्रत्याशित मोड़ भी रहा है और उसे पहचाना जा सकता है उनकी अपवादस्वरूप रचना 'न्यूट्रिटिव वैल्यूज़ ऑफ फ्रूट्स, वेजिटबल्स, नट्स एड फूड क्योर्स, (फलों, सब्जियों, मेवों के पोषक मूल्य और भोज्य पदार्थीय चिकित्सा से) इस प्रकार के धारा घुमाव और अप्रत्याशित परिवर्तन की पृष्ठभूमि में उस्मानी की राजनीतिक उदासीनता या हताशा की झलक स्पष्टतया देखी जा सकती है। वे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सत्ताओं के प्रतिगामी चरित्र की बारीकियों का गहराई स परख चुके थे। श्रमिक-कृषक विरोधी कानून जीवित,

किन्तु उपेक्षित क्रातिकारियों में घुटन पैदा कर रहे थे और वामपथी और जनवादी पार्टियों के अन्तर्कलह जनसघर्षों की भावधारा को मद करते जा रहे थे तथा साथ ही सरकारी मत्री सत्ताधिकारियों के माध्यम से उस्मानी जैसे वास्तविक स्वतत्रता सेनानियों को जानबूझ कर पीछे धकेलते चले जा रहे थे। आशा निराशा में डूबती जा रही थी। उत्साह हताशा में विलुप्त होने लगा था।

किन्तु जीवन भर गतिशील रहनेवाला व्यक्ति निष्क्रिय और सन्यासी बन कर तो नहीं रह सकता—वह किसी न किसी स्वस्थ सक्रियता के परिक्षेत्र में पाव रख कर ही आगे बढ़ेगा। इसी मानसिकता में उस्मानी अपना मार्ग तलाशने में कामयाब हुए। उन्होंने कुछ महीनों के लिए किसी प्राइवट फर्म में मामूली-सी नौकरी करके अलग प्रकार की कैद की विवशता को झेला ताकि कुछ राशि इकट्ठी करके अपने विषय के शोधकार्य को ब्रिटिश म्यूज़ियम सेन्ट्रल पुस्तकालय, लदन म अध्ययनरत रह कर पूरा कर सकें। छ साल की अथक साधना के फलस्वरूप उन्होन अपने मकसद को पूरा किया और उपर्युक्त ग्रथ की रचना की।

इस बहुमूल्य शोध रचना पर डॉ सपूर्णानन्द, जोगेश चद्र चटर्जी, श्री प्रकाश, प्रो ओ पी मालेहानोवा आदि पारखियों ने जो अभिनदनीय सम्मतियाँ प्रस्तुत की है, दर्शनीय है। इनमें मोलेहानोवा तो इस्टीटयूट ऑफ़ न्यूट्रिशन, द एकेडमी ऑफ मेडिकल साइस, मॉस्को, की इस विषय की विशेषज्ञा रही है।

पोषण और चिकित्सा दोनो का समन्वय मनुष्य के शरीरिक और मानसिक स्वास्थ्य और सौदर्य के लिए अत्यत आवश्यक है। यह समन्वय तभी सभव होता है जब हम प्रकृति की सपदाओं का भली-भाति ज्ञान प्राप्त करें और उनके समुचित और सतुलित उपयोग को अपनी ही प्रकृति का अग बना लें। फलो, मेवा तथा जड़ी-बूटियों के रूप में हमें इस पृथ्वी ने जो कुछ दिया है उनसे अनेक कायिक और मानसिक विकृतियों से बचा जा सकता है। इन प्राकृतिक वस्तुओ के परीक्षण और विश्लेषण का विषय इतना व्यापक और जटिल है कि इन पर भारत और दुनिया के अन्य सभी देशों में विशेषज्ञों ने बड़ी-बड़ी शोध पुस्तकें लिख डाली है। शौकत उस्मानी की विशेषता यह है कि उन्होंने सरल से सरल भाषा का प्रयोग करके सर्वसाधारण पाठक को इसकी गभीरता को समझाने का सफल प्रयास किया है।

आज जहाँ विकसित देश ही पर्यावरण को प्रदूषित करने के लिए सबसे ज्यादा अमानवीय भूमिका अदा कर रहे है और पृथ्वी की समग्र मानवता का विनाश के कगार पर पहुँचाने में लगे हुए है। औद्योगीकरण की अधी होड़, परमाणु बमों के परीक्षणों, अनुपयोगी वस्तुआ और कचरों तथा बिना बिके मालों के द्वारा महामृत्यु को निमत्रण दे रहे है। ऐसे वातावरण मे उस्मानी का यह शोध हम जीवन को सुख, तन्दुरुस्ती और खूबसूरती की दिशा दिखाने का प्रयास कर रहा है। वह याद दिला रहा है कि 'स्वास्थ्य ही सच्चा धन है', 'तन्दुरुस्ती हज़ार नियामत' और 'स्वस्थ तन में स्वस्थ मन' आदि।

उस्मानी ने इसके माध्यम से जो देन दी है वह चिरकाल तक प्रासंगिक रहेगी। इसस आग आने वाली न केवल इस देश की, अपितु विश्व के प्रत्येक देश की वर्तमान और भावी पीढ़ियाँ उपकृत होंगी। इस अर्थ में 'न्यूट्रिटिव वैल्यूज़ ऑफ फ्रूट्स, वेजिटेबल्स, नट्स एंड फूड क्योर्स' को सास्कृतिक भाषा में कालजयी कहा जा सकता है और इसके लिए लेखक के इस श्रम के लिए उसके प्रति आभार भी प्रकट किया जा सकता है।

उस्मानी की साहित्य शृखला में भारी-भरकम कड़ी है उनकी अप्रकाशित रचना 'औटोबायोग्राफी (आत्मकथा) 'यही मेरी ज़िन्दगी है।' आत्मकथा में लेखक अपनी कहानी को बारीक से बारीक और गुप्त से गुप्त बात को खोल कर रख सकता है और इसके साथ ही अपने पक्ष में अनेक प्रकार के स्पष्टीकरण भी प्रस्तुत करता है, अत उसका भारी-भरकम होना स्वाभाविक ही होता है। वह अपनी स्वीकृतियों और अस्वीकृतियों को भी उसमें दर्ज कर ही देता है। सबसे अहम बात यह होती है कि लेखक द्वारा स्वय का आत्मीकरण करने, अपनी टीसों का पुन नवीनीकरण, अपने कटु-मधु सस्मरणों का फिर से साक्षीकरण करन और पूरे फैले हुए जीवन-पटल पर उतरी अपनी-परायी रेखाओं का ताजगी के साथ अवेक्षण आदि करने के आखिरी मौके का उपयोग किया जाना होता है। ये सब बातें इस कथा पर भी लागू होती है।

हरेक की आत्मकथा अधूरी होती है जैसे कि किसी रचना के अतिम छोर तक पहुँचने से पहले ही रचनाकार का निधन हो जाय और वह अपूर्ण रह जाय। कमबख्त निधन इतना सवेदन-शून्य होता है। उस्मानी की आत्मकथा भी अपूर्ण है। इसमें उनके जीवन के एक दर्जन वर्षों की घटनाओं का उल्लेख नहीं मिलता। इसके अलावा उस्मानी ने अपनी और अपने परिवार की अनेक अलग बातों को जानबूझ कर छिपा लिया है जैसे कही पर भी अपनी पत्नी और पुत्र के विषय में एक शब्द तक भी खर्च करने का कष्ट नहीं उठाया। जबकि कई घटनाओं को बार-बार दोहरा कर पुनरुक्ति का आरोप सिर पर मढ़ लिया है। इसमें उस्मानी के इकसठ या बासठ वर्षों का लेखा-जोखा ही आ सका है जबकि इसके बाद भी वे और पद्रह-सोलह साल तक जीवित रहे थे। इस सभावना से भी इकार नही किया जा सकता कि उन्होंने उन चार सौ चौसठ टाइपशुदा पूरे पृष्ठों के बाद उसम पूरक पृष्ठ जोड़ दिए हों क्योंकि किसी एक जगह पर उन्होने इसकी पृष्ठ सख्या के पाच सौ से ऊपर होने का उल्लेख किया है जो देखने को उपलब्ध नही हुए। ऊपर कही गई सख्या के पृष्ठ तरतीबवार एक ही जिल्द में बधे मिले है और चार सौ चौसठवें पेज के अत मे लिखा है– बस यही है मेरी ज़िन्दगी।' इससे यह अनुमान भी लगाया जा सकता है कि चलत में बताई गई पृष्ठो की सख्या वृद्धावस्था की विस्मृति का कारण ही रही हो।

बहरहाल इसमें बचपन से लेकर लदन में शोध करने तक की

विस्तृत वर्णन पढ़कर ही सतोष किया जा सकता है।

आत्मकथा के सोलह भागों के अनेक अध्यायों म उनके द्वारा अपने आप को खतर उठाने में पहल करने, कष्ट पर कष्ट झेलने, आजादी के लिए अनेक प्रकार के सघर्षों में अनवरत सक्रिय रहने, जेल के सीखचों के कटुतम अनुभव हासिल करने, केरकी की रक्षा करने, गहन अध्ययन करने, शारीरिक-मानसिक वेदनाआ और सवेदनाओं में से गुज़रने, राष्ट्रीय-अतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का वस्तुगत एव आलाचनात्मक विवेचन करने, आत्मालोचन प्रस्तुत करने, दूसरों के प्रति अपनी और अपन प्रति दूसरों की प्रतिक्रियाएँ दशनि और देश के विभाजन के कारणों से लेकर आज़ादी के बाद की दोनों देशों की वस्तुस्थितियों का यथार्थपरक विश्लेषण करने के लेखक नायक के स्वरूप को रेखाकित किया है।

इस रचना में पुरातत्त्व और न्यायालय के दस्तावेजों, पत्र-पत्रिकाओं के उद्धरणों और अनेक साक्षियों को हूबहू सम्मिलित करके इसको पूरी तरह प्रामाणिक बना दिया गया है। लेकिन इसके सवादों, सुदर और भयानक प्राकृतिक दृश्यों, मानवीय भव्यताओं, भावमय पद्याशों और लोकगीतों की कडियों, रोमाचक वाक्यों और व्यग्यात्मक चुटकियों ने इसे एक उच्चस्तरीय कलाकृति के रूप में भी प्रतिष्ठित कर दिया है। इस अर्थ में इसे आत्मकथा शैली का उपन्यास भी कहा जा सकता है। राजस्थानी, उर्दू, फ़ारसी, हिन्दी और अग्रेजी की कहावतों और मुहावरों के जड़ाव ने उस्मानी की कथा को अभूतपूर्व सज्जा से अलकृत कर उसमे नई सजीवता का प्रादुर्भाव कर दिया है।

शौकत उस्मानी घर-परिवार से रहित होकर स्वतत्रता सग्राम में जूझने वाला इतिहास पुरुष है और वह भी भारत के साथ-साथ सोवियत सघ, ब्रिटेन और मिस्र जैसे देशों के इतिहासों का पात्र और उनकी आत्मकथा भी उसी तरह राष्ट्रीय और अतर्राष्ट्रीय घटनाओं के विश्लेषण का एक प्रामाणिक इतिहास है। इसकी खासियत यह है कि इसमें घटनाओं का उतना उभार नहीं है और न ही उनको आकर्षण का केन्द्रबिन्दु बनाया गया है, बल्कि उनके आकलन को प्रमुखता प्रदान की गई है।

इस 'आत्मकथा' की त्रासदी यह है कि देश की आज़ादी के लिए अपना सब कुछ छोड़-छाड़ कर अपनी जिन्दगी की आहुति दे दी उसका यह स्वजीवनालेख पिछले बीस साल से किसी अलमारी की कैद से आजाद होकर प्रकाश का दर्शन नहीं कर सका। इसके पीछे क्या कारण रहा है—इसके औचित्य को सिद्ध करते जाने से काई लाभ नहीं। वह तो कोई भी कर सकता है क्योंकि हर बात की वकालत करने वाले तो सब जगह मिल ही जाते है। प्रश्न यहीं आकर अटक जाता है कि इसे और कितने अर्से तक इस जेलयातना को भुगतना पड़ेगा या कि उसे उम्र भर के लिए कैद की सज़ा मिली हुई है जो दीमक द्वारा पूरी तरह चट कर दिए जाने के बाद ही पूरी होगी। इसका जवाब राजधानी में स्थित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय के अलावा और किसके पास होगा—इन पक्तियों के लेखक को इसका पता नहीं है।

उस्मानी ने अपन जीवन भर के अनुभवों को इसमे अंग्रेजी के माध्यम से पिराया है। इसको किसी सस्थान स सपादित भी करवाया जा सकता है ताकि अनावश्यक पुनरोक्तियो से इसे मुक्त किया जा सके और इसकी प्रकाशन व्यवस्था हो। फिर उस सपादित सस्करण के हिन्दी और उर्दू भाषाओ म अच्छे अनुवाद तैयार करवाए जाएँ और उनकी भी सुचारु प्रकाशन व्यवस्था की जाय। यह सारा काम एक साल के भीतर कर दिया जाना चाहिए ताकि आलोचक इसकी समीक्षा करके इसका समीचीन आकलन प्रस्तुत कर सकें।

या तो शौकत उस्मानी की प्रत्येक रचना का स्तर काफी ऊँचा है और वह अपने आप मे बहुत महत्त्वपूर्ण है, लेकिन जो सबसे अधिक चर्चित रहीं वह है पेशावर से मॉस्को' और ऐनिमल कान्फ्रेंस'। ऐनिमल कान्फ्रस' एक अत्यत भव्य रचना है—विषयवस्तु और कला-सौंदर्य दोना ही की दृष्टि म। इसकी अतर्वस्तु समस्त मानवता को स्पर्श करती चलती है। विश्व की भयकरतम घटना—हिरोशिमा और नागासाकी पर अमरीका द्वारा परमाणु बम फेंके जान के फलस्वरूप हुए उन नगरों के सर्वनाश की विभीषिका पर दुनिया भर के साहित्य में पहली प्रतिक्रिया व्यक्त की शौकत उस्मानी ने तीखे से भी तीखे व्यग्य भर तवर के साथ अपनी ऐनिमल कान्फ्रेंस' मे। उस्मानी अपने जीवन म केवल 'ऐनिमल कान्फ्रेंस की ही रचना करते तो इसी से साहित्य जगत म अपनी पहचान बनाने में सफल हो सकते थे।

ऐनिमल कान्फ्रेंस' का पूरक भाग 'जगल कान्फ्रेंस' है यद्यपि ये दोना अलग-अलग पुस्तकाकार मे प्रकाशित हुई है, जिसकी वजह जगल कान्फ्रेंस' का बाद में लेखन और प्रकाशन होना है।

'ऐनिमल कान्फ्रेंस' के विषय मे सडे स्टैडर्ड (बबई) ने लिखा कि यह अब तक की सर्वश्रेष्ठ रचना है।' 'बाम्बे क्रॉनिकल' (साप्ताहिक) के अनुसार जगल के समस्त जीवधारी एक साथ एकत्रित होकर वर्तमान विश्वस्थिति का परीक्षण करते है और उनके परिवेश में हस्तक्षेप करने वाले मानव प्राणी की नियति का विश्लेषण करते है।' 'द टाइम्स ऑफ सीलान' (कालबो) का कहना है— लेखक एक ऐसी स्थिति पैदा कर देता है कि जानवर हिमालय की तराई में इसलिए सम्मलन में इकट्ठे हाते है कि वे यह तय कर कि मानव के पृथ्वी पर न बचे रहने की हालत में कितनी कुशलता के साथ इस धरती पर अपना शासन चला सकेंगे। शौकत उस्मानी का विश्वास है कि अमरीका और ब्रिटेन परमाणु बमों के आक्रमण करके इस मानव जाति का विनाश कर देगा।'

बबई क 'जम्हूरियत' के मतानुसार एनिमल कान्फ्रेंस जगखारी ताकतों के मुँह पर एक सधा हुआ तमाचा है।' काका डी आर हरकर इस रचना को 'पूर्व का शाति सदेश' कहकर अभिनदित कर रहे है ता लदन मे चौधरी अकबर खाँ की टिप्पणी है कि लेखक ने बहुत ही सुदर भाषा में आज की सघर्षशील राजनीति को अभिव्यक्ति प्रदान की है।' इटली से ए रब न शौकत उस्मानी को इस चमत्कृत

कृति पर हार्दिक बधाई देते हुए 'ऐनिमल कान्फ्रेस' को 'वास्तव में एक बहुत बढिया रचना' बताकर अपनी प्रसन्नता प्रकट की। इग्लैड के रेवेरेंड फ़ादर डब्लू जे रिंजर ने पुस्तक को 'सर्वाधिक सुरुचिपूर्ण' रूप में दर्शाया।

एलेक हैरिसन (लदन)—'ऐनिमल कान्फ्रेंस' निश्चय ही उच्च स्तर की रचना है जिसे अभिव्यक्ति का आदर्श उदाहरण कहा जा सकता है। 'नेशनल हेराल्ड' लखनऊ की मान्यता है कि 'परमाणु हथियारो पर व्यग्य करने वाली यह कृति लेखक द्वारा *जगखोरों के विरुद्ध की गई तीव्र प्रतिक्रिया को प्रतिबिबित करती है।'* बबई के 'इन्कलाब' पत्र ने कहा—'यह उन जगखोर ताकतों की साजिशो पर मुक्तकठ से किया गया व्यग्य है जिन्होने नैतिक मूल्यों को तिलाजलि दे दी है, जो दूसरों की जिन्दगी से खेल रही है और मानवता का विनाश करने पर आमादा है।'

बबई से 'इडियन एक्सप्रेस' ने लिखा—'व्यग्य रचना म रुचि रखने वाले पाठकों में इस पुस्तक की लोकप्रियता का सबूत इस बात से ही मिल जाता है कि चार साल के थोड़े से अर्से में ही तीसरा सस्करण निकालना पड़ा है। आम जनता ने इसे 'शाति सदेश' कह कर इसकी सराहना की है। वास्तव में यह आनन्दप्रद पठन सामग्री है। और बबई के 'भारत ज्योति' ने परमाणु हथियारो क खिलाफ़ इस मार्मिक लघु रचना के प्रति आभार व्यक्त किया।

सन् 1945 ई की 6 और 9 अगस्त की सुबह अमरीका ने क्रमश हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम छोड़ कर सपूर्ण मानवजाति की आत्मघाती सभावनाओं का सकेत दे दिया था और शौकत उस्मानी ही विश्व साहित्य का वह पहला व्यग्यकार था जिसकी तीक्ष्णतम प्रतिक्रिया 'एनिमल कान्फ्रेंस' के रूप म तत्काल विद्युत् प्रवाह की तरह फैल गई अथवा यह भी कहा जा सकता है कि अमरीका की इस महाविनाशकारी करतूत के खिलाफ़ उस्मानी द्वारा किया गया लेखकीय प्रत्याक्रमण था। यह मर्मभेदी चोट थी। ध्वस के खिलाफ रचना का, शाति का व्यापक सदेश था—विश्व मानव की सुरक्षा के लिए आह्वान। इससे बढ़ कर कोई क्या कर सकता था। सबने उस्मानी का आभार माना।

व्यजना की एक झलक मे अमेरिका के नैतिक मूल्यों पर इस प्रकार चोट की जाती है— *हिटलर, उसके कब्जे म तो सारी परमाणु ऊर्जा थी, लेकिन उसने* परमाणु बम के प्रहार के 'घृणित काम' को अमरीका के लिए छाड़ दिया ताकि वह हिरोशिमा और नागासाकी पर इसे करक पूरा करे।'

एक जगह कुत्ता विन्सटन चर्चिल क चेहरे की तुलना करते हुए कहता है— वास्तव में यह तो सर्वमान्य सत्य है कि यह चेहरा तो हमारे गोत्र के 'बुलडॉग' की वशावली के चेहरे स हूबहू मेल खा रहा है।'

इसका परिचय देते समय जो कुछ कहा गया है उसका एक अश इस प्रकार है

प्रस्तुत रचना के सरचनात्मक सगठन का अध्ययन करने से शौकत उस्मानी

के गहरे अनुभवों का परिचय मिलता है। 'मैनजुइन रिपब्लिक्स' की प्राक्कल्पना, 'एनिमल कान्फ्रेंस' में चुनाव पद्धति का होना, एजेन्डे पर बहस का सचालन, फ़िर प्रस्ताव—बीमारी के लक्षण, निदान और उपचार तथा उपचार के बाद निगरानी का प्रबंध। प्रस्तावों को नीचे की जड़ों तक पहुँचा कर उन्हें सार्वजनिक बनाने हेतु 'वाटर ऐनिमल कान्फ्रेंस' और 'बर्ड कान्फ्रेंस' के रूप में विभागीय सगठनों के सम्मेलनों के आयोजन, जिनमें केन्द्रीय पर्यवेक्षक द्वारा रिपोर्टिंग करना, अत में एक सविधान को स्वीकृत और अगीकृत करना और फिर 'सामूहिक नृत्यगान' के साथ सुखांतिका की भारतीय साहित्य परपरा का निर्वाह करते हुए 'एनिमल कान्फ्रेंस' की परिसमाप्ति की घोषणा। तत्पश्चात् उत्तरार्द्ध में सब विभागों सहित एक 'प्लेनम' के रूप में 'जग कान्फ्रेंस' को सयोजित कर उसे सैद्धांतिक रग देना। इतने लघुकाय ढाचे का इतना सुव्यवस्थित, इतना सुन्दर स्वरूप! बहुत कम, बहुत ही कम देखने को मिला करता है।

'ऐनिमल कान्फ्रेंस' में मानवेतर जीव-जगत के विविध प्राणियों और मानवों के स्वय के हावभाव, स्वभाव और आवेग, आवेश, सहजता और रहस्यमयता, कुटिलता क्रूरता, चतुरता एव तस्करी, चाकरी व चाटुकारिता आदि का समेकीकरण करके उसको जीवत लेखांकन का उदाहरण बना दिया गया है। यों तो चित्रमयता सर्वत्र व्याप्त है, किन्तु दो-तीन नमूने पेश करना ही पर्याप्त हागा—

शेर ने अपना विशाल भाल ऊपर उठाया मानो उत्सुक हो, हाथी ने उसके इशारे को दोस्ताना अदाज़ में समझ लिया। शेर मुस्कराया और उसने भरपूर आत्मविश्वास के साथ कहा । 'हाथी ने अपनी सघन सूड को प्रशसा की मुद्रा में ऊचा उठाया, हँसा और कहा—'हे, भद्र, भद्र। लेकिन तुम्हारी (शेर की) सदैव की सलाहकार मिस लोमड़ी के बारे में क्या कहना है क्या तुमने उस माननीया स सलाह करना बद कर दिया है?'

गाय ने अपने चदीले सींगा को हिलाया, ऊट ने अपनी लबी गर्दन को, कुत्ते ने अपनी पूछ हिलाई और बदर न अपने नथने कपकपा कर सहमति व्यक्त की।'

जगह-जगह लोकोक्तियो और मुहावरों की बहार है, जैसे—'जो इन्दा पाबिन्दा (पर्शियन) अर्थात् 'जिन खोजा तिन पाइया', चट मगनी पट ब्याह' (राजस्थानी), 'काजी जी दुबले क्यों? शहर के अदेशे में।' (उर्दू) और 'केम छे, सारो छे' (गुजराती) अर्थात् कैसे हो—सब ठीक।

यहाँ बिल्ली शेर की मौसी है तो लोमड़ी उसकी सलाहकार। सबोधन के रूप म फ्रेंड्स एड कॉमरेड्स' का प्रयोग मिलेगा।

इस अमूल्य धरोहर की प्रासगिकता तब तक बनी रहेगी जब तक कि परमाणविक हथियारो से इस धरती को मुक्त नहीं कर दिया जायगा।

और उस्मानी की अतिम रचना है जनवरी सन् 1978 में लिखित एक लघु निबध, जिसका शीर्षक है—(The Forgotten Ones) द फोर्गोटन वन्स (वे, जिन्हें

भुला दिया गया)। इस टाइपशुदा रचना के भी केवल प्रारभिक दो पृष्ठ ही उपलब्ध हो सके है जिनका अनुवादित अश पीछे क पृष्ठा म दे दिया गया है। इसको प्रामाणिक बनाने के लिए ही प्रथम पृष्ठ के हासिये में उस्मानी ने अपने साकेतिक हस्ताक्षर कर दिए हैं। यह अतिम रचना इस अर्थ में है कि इसे स्वय टाइप करने के एक माह बाद अर्थात् 26 फरवरी सन् 1978 को तो उनका निधन ही हो गया था।

इसमें उस्मानी 31 साल पहले के उस दिन का स्मरण कराते है जब भारत से विदेशी सत्ता को पदच्युत होकर यहाँ से विदा होना पड़ा था और अब देश 29वें गणतत्र दिवस को मनाने जा रहा है। किन्तु साल-दर-साल इन राष्ट्रीय पर्वों के आयोजन के बावजूद क्या हम वास्तव में उन शहीदा के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित कर पाते है जिन्होंने आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी।

यहाँ लेखक के अन्तरतम की वेदना झलकती है। उन्होंने न केवल अपनी बल्कि सारे स्वतत्रता सेनानियों की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी है। उस्मानी ने यहाँ भारत के प्रत्येक क्षेत्र के शहीदों और सघर्परत जुझारुओं को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए देश में व्याप्त शोषण और उत्पीड़न की आर इगित किया है। उन्होंने कम्युनिस्ट आन्दोलन के सदर्भ में कानपुर और मेरठ पड्यत्र केसों म (जिनमें वे अग्रिमपक्ति में गिरफ्तार किए गए थे) जेल-यातनाएँ भोगने वाले बहादुरा का उल्लेख करते हुए एक ओर उनके साहस का अभिनदन किया है तो दूसरी ओर उनके प्रति उपेक्षा दिखाए जाने की कृतघ्नता को भी उजागर किया गया है।

इसके आगे के पृष्ठों के अनुपलब्ध होने के कारण इसके निष्कर्षों को तो बता पाना सभव नहीं है। पर उन्होंने शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरनेवालो का यही बाकी निशा हागा।' जैसी पक्तिया दोहरा कर उस युग के प्रवाह को फिर से ताज़गी दे दी।

* * * *

शौकत उस्मानी की अधिकतर रचनाएँ अग्रेजी मे लिखी गईं और बाद में उनके उर्दू, हिन्दी या अन्य भाषाओ मे अनुवाद हुए। सभवत अधिकतर अनुवाद उन्होंने खुद ने ही किए होंगे। 'अनमाल कहानियाँ' की रचना हिन्दी में की गई थी तो '*फ़ौजी सितारा*', '*मजदूर का लड़का*' और '*रूस यात्रा*' *अथवा एकाध कोई अन्य* रचना उर्दू में। भाषा के उपयोग के विषय में फर-बदल भी सभव है, लेकिन यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उस्मानी ने ज्यादातर अग्रेजी म ही लेखन-कार्य किया। वैसे उस्मानी मैट्रिक से आगे किसी शिक्षण सस्था मे नही पढ़े, लेकिन फिर भी उन्होंने अपने स्वाध्याय से अग्रेजी के धाराप्रवाह बोलने और लिखने की महारत हासिल कर ली थी।

भाषा के सबध में उल्लेखनीय है कि हिन्दी में जो प्रेस छापामारी के घेरे मे आ गए उनसे सीख लेकर अन्य प्रकाशक उस्मानी जैसे खतरनाक लेखक से घबराने लगे। लगभग यही हाल उर्दू प्रकाशकों का भी था और उर्दू साहित्य क साथ यह

दिक्कत भी थी कि उसका प्रसार क्षेत्र काफी सीमित था। सभवत ये कठिनाइयाँ अग्रेजी के सबध में उतनी मात्रा में नहीं थीं। प्रकाशकों की विश्वसनीयता भी प्रश्नो क घर में होती थी और उस्मानी कुछेक से भोग भी चुके थे—पैसा पाडुलिपियाँ गवाकर। शायद इसीलिए अपनी कई पुस्तकों के प्रकाशक व स्वय ही थे।

चाहे जिस भाषा में उन्होंने लिखा हो, प्रत्येक में अग्रजी, उर्दू, हिन्दी, राजस्थानी और पशियन आदि अन्य देशी-विदेशी भाषाओं का सुदर समन्वय मिलेगा। यह उनके बहुभाषी लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का परिचायक है। पता नहीं कितनी ही भाषाओं के शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, कहावतें, पद्यांश, लोकगीतों के प्रयोग उनकी किसी भी रचना म से छांटे जा सकत है। शब्दों के द्वारा बहुत सारी सस्कृतियों की झलक एक साथ देखने को मिल जायगी। अनेक देशों की सभ्यताओं का समायोजन उनकी रचना को अन्तर्राष्ट्रीयता के स्तर तक ले जाने में सक्षम है। उस्मानी क लिए भाषा के प्रवाह को सहज बनाए रखना आवश्यक प्रतीत हाता है, इसके लिए वे अग्रेजी को इन्द्रधनुही बना कर अपनी ही शैली का आविष्कार कर लेते है।

सरल सीधी-सादी भाषा में छाटे-छोटे वाक्य प्राकृतिक और मानवीय सौंदर्य को कितनी सहजता क साथ दर्शाते प्रतीत होते है —

'कार्तिक के दिन है, दरख्त मिट्टी से लदे हुए है, हवा भी बहुत कम चलती है इसलिए मिट्टी को भी पड़ की पत्तियों पर खूब जमने का अवसर मिला है, सामने नदी के किनारे एक नीम के तले चर्खा लिए हुए एक सत्रह-अठारह वर्ष की सुन्दर लड़की जिसका सीना उभरा हुआ है, रग गेहुआ है, भौंहें काली कमानों की तरह झुकी हुई है, आँखें ऐसी है जैसे लबालब प्याले, नदी पर आने वालों से बेख़बर, पत्तियों से झड़ने वाली धूल से अनजान सी बैठी चर्खा कात रही है। कभी-कभी वह अत्यत सुरीली लय मे गाना गाती है— साजन सोना ले गए, सूना कर गये देश।' गीत की एक-दो कडियाँ कह कर वह खतम हुई पूनी को उतारती है, कभी तकले को उतारती है, कभी सर से उतरी हुई धोती को सम्हालती है और गीत गाना शुरू कर देती है।'

('आज़ाद ख़याली की शिकार—राधा' से)

इसी तरह से अन्य उद्धरण उनकी अग्रेजी और उर्दू की रचनाओं में जगह-जगह देखने को मिल जायगे।

जगह-जगह प्रभावशाली सवाद है किन्तु बड़बोलापन कही नहीं। जिसने जैसा कहा उससे कम ज्यादा कहने की जरूरत ही नही दिखाई देती। उस्मानी की हिन्दी भी हिन्दुस्तानी है ता उर्दू भी हिन्दुस्तानी और यहाँ तक कि उनकी अग्रेजी भी एक प्रकार की हिन्दुस्तानी ही कही जा सकती है। किसी भाषा में शास्त्रीयता के आडबर का प्रवेश करन ही नहीं दिया गया लकिन इससे गहनता को कहीं क्षति नहीं पहुँची।

उस्मानी के पत्रों में किशोर और युवा पीढ़ी के मजदूर-मजदूरनियाँ, कम्युनिस्ट और क्रांतिकारी लोग और अन्य निहायत ग़रीब नर-नारी है। सब एक-दूसर की और

स्वय की आर्थिक और सामाजिक विषमताओं से पीड़ित है। सब समाज मे परिवर्तन के आकांक्षी भी है और सचेष्ट भी। वे पाडित्य और शास्त्रीयता की पाखडपूर्ण शब्दावली को नहीं चाहते। अपने जीवन में उन्होंने पुलिस की मार झेली है। लाठी, गोली, आगजनी का सामना किया है जिसमें उनके साथी चल बसे है। उन्होंने हडताल और भूख हड़तालें की है तो वे उच्च वर्ण के द्वारा मसले-कुचले भी गए है। इसलिए भीतर का एक कोना टीसता-सिसकता है तो दूसरा गुस्से से सुर्ख कर देता है। उस्मानी अपने पात्रों के साथ एकमेक होकर भोगता है, इसलिए जितना वह यथार्थ है उतना ही उसका कृतित्व भी यथार्थ है। केवल नाम ही काल्पनिक है और यदि उनको हटा कर देखें तो वे सुपरिचित से प्रतीत होंगे। न कही चमत्कार है, न छिपान-दुराव और न ही अतिरजना।

ऐनिमल कान्फ्रेंस तो मानवेतर प्राणियो की ही दुनिया है जहाँ 'म्याऊँ-म्याऊँ', 'भौं-भौ' की ध्वनियाँ निकाल कर या गजर्न-तर्जन करके या फिर सिर ऊँचा करके अथवा पूछ हिला कर ही सारे प्रस्ताव रखने पड़ते है और बहस होती है, सशोधन पेश किए जाते है और फिर उन्हें पारित करने के लिए राय मागी जाती है। उस्मानी को इन प्राणियों को भाषा देने में विशेष मेहनत करनी पड़ी होगी।

आत्मकथा में भाषागत विविधता का होना स्वाभाविक ही है तो 'न्यूट्रिटिव वैल्यूज़' की विषयवस्तु ही शोधपरक है। अन्य कृतियाँ विवरण और विश्लेषण प्रधान होंगी जो अधिकतर अनुपलब्ध है। औपन्यासिक रचनाओं अथवा कहानी सकलना में चुस्ती की अधिकता का होना स्वाभाविक ही लगता है।

* * * *

उस्मानी अपने युग के राजनीतिक साहित्यकारों की प्रथम श्रेणी के रचनाकार थे। उन पर अपने पूर्वकालिक और समकालीन प्रगतिशील साहित्य उस युग के अपने अनुभवों तथा साथ ही अपने साथियों के अनुभवों और उस दौर के घात-प्रतिघात से उभरी छवियों और छायाओ का प्रभाव रहा है जिसे उन्होने अपनी रचनाओं मे ढाला है।

प्रत्येक लेखक की आत्मकथा उसकी अपनी होती है जिसकी तुलना किसी और की आत्मकथा से नही की जा सकती, फिर भी उसकी राजनैतिक विश्लेषण-शैली से इतिहास की रचना की जा सकती है। इस दृष्टि से उस्मानी की आत्मकथा को भी बड़े गर्व के साथ सारे स्वतत्रता सेनानियों की आत्मकथाओ की श्रेणी म रख कर देखा जा सकता है।

उनके कथानकों का विकसित स्वरूप यशपाल, कृशनचदर, और अब्बास मे देखा जा सकता है तो व्यग्य हरिशकर परसाई, राजेन्द्र माथुर और शरद जोशी में। ऐतिहासिक विश्लेषणों में व प्राय इस देश में भी रहत रहे है तो उसके आर-पार की दृष्टि भी प्रतिष्ठित करते है।

* * * *

प्रकाशकों ने उस्मानी की कई कृतियों को तो गुम किया ही, इसके अलावा कुछेक को फेर-बदल के साथ किसी के नाम से भी छपवा कर बेच दिया। उनकी खुद की छापी पुस्तकों का भी मामूली-सा पैसा देकर हिसाब चुकता कर दिया जबकि उन प्रकाशकों ने उससे काफ़ी पैसा कमाया।

* * * *

शौकत उस्मानी की रचनाओं में पुनरुक्तियों ने प्रवाह और प्रभाव में व्यवधान ही उपस्थित किया है। केवल व्यजना इसका अपवाद है। कथानकों की अतर्वस्तु में अनेक समानताएँ है।

उनके जीवन की अस्तव्यस्तता ने एक प्रकार की अस्थिरता को ही पैदा किया है जिसका असर उनके शारीरिक और मानसिक वातावरण को प्रभावित करता रहा है। राजनैतिक दृष्टि से भी वे कई परिवर्तनो में से गुजरने को विवश हुए दिखाई देते है। इसकी वजह से उनकी प्रहारशक्ति में शिथिलता का प्रवेश हाना स्वाभाविक ही था। वे विभिन्न दलों के आतरिक सघर्ष मे जूझन क बजाय उन से किनारा करते गए। इसका नतीजा यह हुआ कि उनको अपनी कई दिशाओ के माड़ तलाशने पड़े। इन विविध मोड़ो की झलक अभिव्यक्ति के बिखराव क रूप म परिलक्षित होती है। कुछ हद तक इसे आत्मकेन्द्रीयता म भी शुमार किया जा सकता है।

उनका आधे से अधिक साहित्य आज तक उपलब्ध नहीं हा सका है, इसलिए ऐसे उच्चस्तरीय रचनाकार की समग्र रूप स समीक्षा करना सभव नही दिखाई देता और न ही उसका औचित्य प्रमाणित किया जा सकता है। अच्छा यही हो कि इसके लिए और अधिक प्रयास किए जाएँ और उनके इस क्षेत्र के कृतित्व का सही मूल्याकन किया जाकर उनका उपयुक्त स्थान निर्धारित किया जाय।

साहित्य की सबसे बड़ी पकड़, उसकी प्रभावोत्पादकता और उसकी प्राप्ति इस बात पर निर्भर करती है कि उसके रचयिता ने अपनी और अपने साथ सबकी अन्तर्वेदना को कितनी गहनता के साथ अभिव्यक्ति दी है और वह किस वर्ग के हितों का प्रतिबिम्बित करती है। इस अर्थ में यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शौकत उस्मानी एक महान् साहित्यसर्जक थ। मानवीय भावना और चेतना के अनुपम शिल्पी थे। स्वतत्रता सग्राम के विविध आयामा क एकमात्र निरपेक्ष चितेरे थे। ऐनिमल कान्फ्रेंस की उलटबासिया की तुलना म ता कोई ठहरता ही नहीं। उनक कथानकों में जिन सामाजिक मूल्या को प्रस्थापित किया गया है वैसा अन्यत्र कहाँ मिलेगा।

जा कुछ भी हमें प्राप्त हा उसको उसी रूप में 'शौकत उस्मानी रचनावली' के नाम स प्रकाशित किया जाना न केवल अपेक्षित ही है अपितु उसकी अनिवार्यता भी है ताकि आगे क समीक्षकों का शोधसामग्री उपलब्ध हा सक और भावी पीढ़ियाँ आगामी सघर्षों के लिए प्ररित की जा सकें।

इस रचनावली के सपादन—प्रकाशन से पूर्व उनकी विशेष उपलब्ध रचनाओं

'ऐनिमल कान्फ्रेंस', 'जगल कान्फ्रेंस', 'नाइट ऑफ द एक्लिप्स', 'फोर ट्रेवलर्स'
'न्यूट्रिटिव वैल्यूज़' को हिन्दी-उर्दू अनुवाद सहित पुनर्मुद्रित करवाया जाय और
ाशित रचना 'औटोबायोग्राफी' को सपादित करके उसे शीघ्र प्रकाशित किया
और फिर उसके भी हिन्दी-उर्दू सस्करण निकाले जाएँ। क्या काई सस्था या
ार एक सुदृढ, क्रातिकारी स्वतत्रता सनानी के प्रति इतनी-सी श्रद्धाजलि नहीं
कती जबकि पता नहीं कितने कलमघिस्सुओं को आज पुरस्कारों से लादा जा
है।

वस्तुत शौकत उस्मानी ने अपनी रचनाओं से समूचे रचना ससार को गौरवान्वित
है। इस अतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रातिकारी कलाकार के प्रति जितनी अधिक
ता प्रकट की जाय वह भी कम ही होगी।

उपलब्ध रचनाएँ : एक परिचय

अनमोल कहानियाँ–(हिन्दी)–लेखक–शौकत उस्मानी, प्रकाशक–श्रमजीवी साहित्य सदन, साजन्स बिल्डिंग, केसरगज, अजमेर (राजपूताना) मार्च–1939, पृष्ठ—100, मुद्रक—प खूबचन्द शर्मा, देहली कमर्शियल प्रेस, देहली।

व्यवस्थापक द्वारा पाठकों से—' इन कहानियों का मरहठी, गुजराती, उर्दू व गुरुमुखी सस्करण शीघ्र ही निकालन की व्यवस्था की जा रही है। शौकत उस्मानी लिखित 'चार मुसाफिर' और जनरल स्ट्राइक' (General Strike) नामक दो महत्वपूर्ण राजनैतिक क्रान्तिकारी कहानियों की पुस्तकें शीघ्र ही इसी सस्था से प्रकाशित होने वाली है।'

कहानियाँ—(1) रुक्मिणी, (2) डाह, (3) बद्री का शौक, (4) भग्न हृदय, (5) नरेन्द्र—दोस्त था मगर रफीक (Comrade) नहीं था, (6) कम्युनिस्ट शैला (Love is a Bourgeois Prejudice) (7) शफातुल्लाह, (8) फन्दा, (9) आज़ाद ख्याली की शिकार—राधा, (10) पुराना खर्राट—रूसी लेखक मिखायल जसचन की रूसी कहानी का उस्मानी द्वारा उर्दू अनुवाद और उसका हिन्दी रूपान्तरण और (11) बाप का बदला।

उपर्युक्त सभी कहानियाँ जीवन की यथार्थ भूमि पर आधारित है और प्रगतिवादी साहित्यधारा का प्रतिनिधित्व करती है। सामाजिक और राजनैतिक परिवेश में रचित कथानकों में लेखक की सवेदनशील अनुभूतियाँ मुखरित हुई हैं।

उन्नीस-बीस रुपये मासिक आय के सगतराश की लडकी रुक्मिणी की शादी मजबूरन उससे काफी कम उम्र के लडके से कर दी जाती है और घटनाक्रम का विकास एक दफे रुक्मिणी को उसके पूर्व प्रेमी रतन से छिपे तौर पर मिला देता है, किन्तु मुलाकात का भेद खुल जाता है। रुक्मिणी का बुरी तरह पीटा जाकर अधमरा कर दिया जाता है। वह पाबन्द कर दी जाती है। फिर मानसिक तनाव और शारीरिक रुग्णता की शिकार होकर मर जाती है। इस गरीब लडकी की मौत पर सिवाय रतन के कोई रजीदा नहीं होता और वह भी होता है भीतर ही भीतर। एक त्रासदी।

एक ही पार्टी के दो मेम्बर है हसन और कमर तथा आपस म दोस्त भी। हसन सही मायने मे क्रांतिकारी था। वह जान जोखिम में डालकर काम करता था। देश-विदेश में प्रसिद्ध होने लगा और उसकी बढ़ती हुई मशहूरी ने उसके दोस्त कमर में राजनीतिक डाह पैदा कर दी। वह उसके खिलाफ ऊल-जलूल प्रचार करने लगा। आखिर उसन जाल रचकर हसन को पार्टी से निकलवा दिया। हसन इस सदमे को सहन न कर सका और 30 साल की उम्र में ही उसने खुदकशी कर ली। उभरते

राजनैतिक जीवन की आत्महत्या।

'बद्री का शौक' कहानी का नायक एल्जिन मिल का बुनकर मजदूर है। उस 'मजदूर राज' आने पर अटल विश्वास है और साथ ही यह भी कि उसके आने पर ही हर प्रकार के शोषण और अत्याचार का अत तो हागा ही साथ ही सारी मुसीबतें खतम हो जायेंगी। इस आस्था को लेकर वह 'मज़दूर राज का प्रचारक' बन जाता है और हर जगह भाषण देने लगता है। सहज सरल अभिव्यक्ति दूसरो पर असर करने लगती है। इस बढ़ते प्रभाव को दखकर सरकारी तत्र बौखला जाता है और एक सभा में भाषण देने के अपराध में बद्री को जेल की सजा काटनी पड़ती है और पाठक सोच सकता है कि बद्री के परिवार का क्या हाल हुआ होगा और खास कर उसकी जवान बहिन का जिसकी वह शादी करना तय कर रहा था।

आत्मकथा शैली में लिखी गई है कहानी—'भग्नहृदय।' वैहलरिया नायक की प्रेमिका है, लेकिन वह ठहरा एक ग़रीब मजदूर—मोटर फैक्टरी में पुर्जे बनाने वाला और वह थी चार गाव के मालिक फौजी पेशनर जनरल सवाडो की लड़की। नायक (सीरियो) जनरल के यहाँ उसके पाइप की सफाई करने रोज जाता है और वह वैलेरिया को और किसी और से मगनी का तय होते हुए भी वैलेरिया उसको चुराई नज़र से देखते है—भीतर ही भीतर एक दूसरे पर फिदा होते है। हालात मोड़ लेते हैं—नायिका के माँ-बाप एक सप्ताह के लिए बाहर जाते है और वैलेरिया सीरियो को पत्र लिखकर बुलाती है। दोनो खूब मिलते है। जर्मनी भागने की योजना बनती है। सारी तैयारी हो जाती है, लेकिन ऐन मौके पर भागते समय पकड़ लिए जाते है। सीरियो की खूब पिटाई होती है और उसे पुलिस के हवाले कर दिया जाता है। वैलेरिया अदालत में सीरियो के साथ अपनी मौहब्बत को कबूल करती है और बाप को आरोपित करती है कि वह उसे किसी और के साथ शादी करने को मजबूर कर रहा है इसलिए उन दोनो को भागने को विवश होना पड़ा। लेकिन मजिस्ट्रेट का फैसला उल्टा होता है और सीरियो को एक साल की सजा हो जाती है और वैलेरियो अगले दिन से ही हमेशा के लिए घर से भाग जाती है। भग्नहृदय' एक दु खातिका बन कर रह जाती है।

19 साल का एक नौजवान कम्युनिस्ट 'नरेन्द्र' कॉलेज छोड़ मजदूरों में साहित्य बाट कर आन्दोलन में कूद पड़ता है। वह एक प्रखर वक्ता भी है। पुलिस उसके पीछे पड़ती है मगर वह वेप बदलकर काम करता रहता है और पकड में नहीं आता। उसकी गिरफ्तारी के लिए दो हज़ार रुपए की घापणा भी कर दी जाती है। छिपते भागते वह अपने मित्र विनोदी के पास चला जाता है। विनोदी ने दगा करके अपने भाई सुरेश के हाथों पत्र देकर पुलिस को सूचित करना चाहा, पर सुरेश ने पत्र पढ़ लिया और उसने पत्र पहुँचाने की झूठमूठ खबर अपने भाई को दी और मौका पाकर नरेन्द्र को उस चगुल से निकाल दिया। काश, विनादी भी कॉमरेड' होता।

'कम्युनिस्ट शैला' गोआ से भागकर भारत आती है और बबई के मज़दूरों

में काम करने लगती है। पहले तो पार्टी में उसकी गतिविधियों को परखा जाता है और बाद मे उसे मजदूर औरतों का पार्टी की शिक्षा देने के काम में नियुक्त किया जाता है। ईसाई लडकी होने क कारण पुलिस भी उसको नजरअदाज करती है। वह देश के अनेक हिस्सों म काम करती घूमती है। इसी दौरान उसकी जिन्दगी में आर्थर नाम का नौजवान आता है जो होम मेम्बर के सैक्रिटेरियट म क्लर्क है और गैर राजनीतिक है। शैला की असावधानी का फ़ायदा उठाकर आर्थर उसका एक लिफाफाबद पार्टी संदेश होम मेम्बर का पहुँचा देता है। पार्टी को खबर लगती है और वह इस पर गभीरता से विचार करती है। बहस होती है और शैला अपनी गलती स्वीकार कर लेती है। उसे समझ आ जाता है कि सिद्धातहीन व्यक्ति से मोहब्बत करना पार्टी के लिए कितना घातक होता है। शैला को पजाब में सावधानी के साथ काम करने को भेज दिया जाता है। खोखली इश्कबाजी के चापलपन पर पटाक्षेप।

हज्जाम शफातुल्लाह गिरहकटों मे शामिल होकर पकड़ा जाता है और तीन माह की सजा काटने के बाद 'ठाकर सी मोरार जी मिल' में काम करने लगता है। जबान का तेज तर्रार वह अपनी और अपने खानदान की डीग हाँकता फिरता है। मजदूरों की बस्ती के लोग सुनते-सुनते तग आ जाते है। एक दिन किसी मजदूर ने जवाबी हमला बोलते हुए खानदानी नवाबी या नवाबी रिश्तेदारी के शोषण और गरीबा की मेहनत पर जीने की शैतानियत का एसा खुलासा किया और साथ ही कामगारों और किसानों पर ऐसा फख्र जताया कि शफातुल्लाह आहत और परेशान हो गया और बदला लने की सोचने लगा। लेकिन जब वह अपनी बीवी को लाता है और एक दिन बातों ही बातों में किसी पड़ोसिन के सामने शफात के खानदानी हज्जाम हान का राज खुल जाता है तो हवाई किला काफूर हो जाता है।

खुफिया विभाग के अधिकारी परेशान है कि क्रातिकारी अशरफ पाच साल की सजा भुगतने के बाद चुप क्यों है और व उसके बारे में क्या रिपोर्ट भेजें जबकि अशरफ़ का बाप एक ओर उसके जेल की यातना से अस्वस्थ होकर उसका इलाज करवाने में लगा होता है और साथ ही घर की गरीबी से जूझने के लिए उसे नौकरी करने को और शादी करके घर बसाने को राजी कर लेता है। सी आई डी वाले जाल (फदा) रचते है और किसी हसन अली को माध्यम बनाकर एक सभा का आयोजन करवा देते है जिसका विषय हाता है— क्राति और देश क युवक'। सभा जुड़ती है और अशरफ़ सदारत करते हुए आखिर में बहुत जोशीला भाषण दे मारता है। पाचवें रोज पुलिस वाले उस गिरफ्तार कर लेते है। अशरफ के पिता क मसूबे बिखर जाते है।

'आज़ाद ख़याली की शिकार—राधा' के पति कल्याणसिह का टैक्स न देने और जमींदार के आदमी पर हमला करने के जुर्म में पाच साल की कैद हो जाती है। राधा से उसकी शादी दो महीने पहले हुई थी गौना भी नहीं हुआ था जिसकी तैयारी चल रही थी कि यह घटना हो गई। राधा दिन भर चर्खा चलाती और वियोग

का गीत गाती अपना समय बिताती है। एक दिन उसका बचपन का साथी लछमन उसके यहाँ आ जाता है और उसको राधा की शादी और उसके तुरत बाद की घटना की जानकारी मिलती है। लछमन सगठन और सघर्ष की बात समझता है और तकरीर करके मजदूर-किसान एकता की बात इस तरह पेश करता है कि राधा उसे गाठ बाध लेती है। रूस मे औरतों की क्रातिकारिता की दलील तो उस पर बेहद असर करती है। उसमें जागृति पैदा हो जाती है। वह जगह-जगह जाकर लोगों को सगठित होने का आह्वान करने लगती है। कुछ उसे राधे पगली' कहते है पर वह प्रचार करती जाती है। लछमन भी गाव में प्रचार करता घूमता है। इनके काम से किसान सगठित होते हैं। इधर कल्याणसिह सज़ा काट कर घर आता है। वह सगठन देखकर खुश होता है। वह राधा को घर ले आता है। उसने पर्दा हटा दिया। सास ने उसे घर में बन्द करके बहुत पीटा और उसके घर से बाहर जाने पर पाबदी लगा दी। कल्याण मा के सामने चुप था। आखिर राधा घुटती-पिटती एक दिन दम तोड देती है। यों होती है नारी के स्वतत्र विचारों की निर्मम हत्या।

रूसी लेखक मिखायल ज्ञसचेन की लघुकथा का शौकत उस्मानी ने अनुवाद किया है 'पुराना खर्राट' शीर्षक से। इसमे पाई-पाई का हिसाब मागनेवाले एक पुरान हिसाब-क्लर्क की मन स्थिति का चित्रण है।

सी आई डी इस्पेक्टर हिदायतुल्ला के बेटे लतीफ का खून खौलने लगता है जब उसे यह मालूम होने लगता है कि उसका बाप 'आज़ाद खयाली युवकों व क्रातिकारियों को' गिरफ्तार करवा जेल भिजवाता है क्योंकि वह बढ़ती उम्र के साथ खुद स्वतत्र विचारो का होता जा रहा है। वह मन ही मन बाप से नफरत करने लगता है।

हिदायतुल्ला एक 'साम्यवादी षड्यत्र' का पता लगाने में कामयाब हो जाता है—गुप्त छापाखाना, क्रातिकारी साहित्य और बीस मजदूर व विद्यार्थियों के ठिकाने। वह सरकारी तत्र में मशहूर होकर तरक्की का दावेदार हो जाता है। लतीफ मन में बाप से बदला लेने की सोचता है। जब बाप दौरे पर गया तो उसने खोजते-बीनते उसकी जेब से नोट-बुक निकाल कर पढ़ी जिसमें उसी की कॉलेज के एम ए के विद्यार्थी विपिन बिहारी के मकान पर रविवार को साम्यवादियों की एक गुप्त बैठक होने की सूचना थी। लतीफ शुक्रवार को ही पूछताछ कर कॉलेज में विपिन से सपर्क करता है और आगाह कर देता है और यह भी बता देता है कि वह भी पार्टी सदस्य न होते हुए भी साम्यवादी है।

सबके मना कर दिए जाने के कारण मीटिग नहीं हुई। पुलिस आई और विपिन के घर की तलाशी हुई, पर मिला कुछ नही। हिदायतुल्ला का मुँह की खानी पड़ी। गद्दारी करने वाले खबरनवीस पार्टीमैन रहमत अली को लताड़ा गया।

घर आकर हिदायतुल्ला ने नोटबुक सभाली तो उस सूचना वाले पेज पर निशानदेही के रूप में एक छोटा चिट मिल गया। उसने लतीफ़ को जा पकड़ा और उसे खूब

तकले को उतारती है, कभी सर से उतरी हुई धोती को सम्हालती है और फिर गीत गाना शुरू कर देती है।' (आज़ाद खयाली की शिकार—राधा)

प्रस्तुत रचना के पुनर्मुद्रण की आवश्यकता है और उसको समीक्षा की कसौटी पर कसकर उसका उच्चस्तरीय मूल्याकन करने की भी।

'चार यात्री' का प्रकाशन हिन्दी में और 'चार मुसाफ़िर' का प्रकाशन उर्दू में सन् 1939 ई में हुआ। Four Travellers' का अग्रेजी मे प्रकाशन USTA Publication Corp द्वारा सन् 1950 में किया गया जिसका मुद्रण CRESCET Printing Press A.M 25 FRERE Road Karachi द्वारा किया गया। शौकत उस्मानी से उस समय सपर्क करने का पता उन्हीं की कलम से अकित किया हुआ मिलता है—Shaukat Usmani P O Box No 1768 Saddar Karachi 3 (Pakistan) इस अग्रेजी सस्करण के भीतर बाए पृष्ठ पर लेखक के सिर पर टोप पहना हुआ चित्र है और दाहिने पृष्ठ के शीर्ष पर लिखा है Four Travellers by Shaukat Usmani Alias Sikandar Sur

Four Travellers रचना को लेखक द्वारा समर्पित किया गया है 'खुदीराम बोस और उन अन्य शहीदों की स्मृति को, जिन्होंने अपने प्राणों का बलिदान भारत में अथवा उससे बाहर कहीं पर इस विशाल उपमहाद्वीप की आज़ादी के लिए किया।' कराची सस्करण म दिनाक 27 जून, 1950 ई को अपने उपनाम के विषय में उस्मानी द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण भी छपा हुआ है।

'भूमिका' के अनुसार इसकी रचना सन् 1930 मे हुई थी, किन्तु इसका प्रकाशन नौ साल बाद होने के कारणों में से एक यह भी था कि 'उर्दू प्रकाशक मेरे (उस्मानी के) स्तर के राजनैतिक लेखकों को पसद नही करते थे।' इसलिए उसके बाद मैंने उर्दू मे लिखना छोड़ दिया, वजह यह कि उर्दू मेरी मातृभाषा नहीं है—मैंने अग्रेजी और उर्दू एक ही साल पढ़ना शुरू किया था। मै राजस्थानी हूँ और स्वभावत मेरी भाषा राजस्थानी है।'

उस्मानी की अनेक पाडुलिपिया पुलिस छापामार कर ले गई और नष्ट कर दीं। उन्हीं के शब्दों में, कहाँ है मेरी 'जनरल स्ट्राइक', कहाँ है मजदूर का लटका', कहाँ गया 'Industrial Survey of Persia और कहाँ है A Page From the Russian Revolution जिसे मेरठ में किसी उर्दू लेखक द्वारा अनूदित करके अपने ही नाम से छाप दिया गया। मेरे साहित्य के विकास में सबसे बड़ा राड़ा था अग्रेजी साम्राज्यवाद का शैतानी पजा जिसने मुझ कभी तसल्ली स नही बैठने दिया और यौवन के सोलह साल सीखचों में हड़प लिए अर्थात् कानपुर षड्यत्र केस 9 मई, 1923 से 26 अगस्त, 1927, मेरठ षड्यत्र केस 20 मार्च, 1929 से 1 जुलाई, 1935 और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 16 जुलाई, 1940 से जनवरी, 1945 तक। यह कीमत मुझे स्वतत्रता सग्राम में अपनी भूमिका की एवज म चुकानी पडी।'

'चार यात्री' के विषय में लखक ने खुलासा कर दिया है कि यह एक सच्चाई

से भरा उपन्यास है। कुछ नाम काल्पनिक हैं, कुछ सही। शदीवा एक यथार्थ महिला है, रूसी नेता और गणराज्य का वर्णन भी यथार्थ है। चौथराम और उसके साथियों के नाम काल्पनिक है किन्तु ये व्यक्ति हिन्दुस्तान में ही पैदा हो चुके थे।

157 पृष्ठ के इस लघु उपन्यास को 'फ़रार होना' से लेकर 'स्कूल' तक पद्रह परिच्छेदों में विभाजित किया गया है। बहुनायकीय इस कृति का केन्द्र किशोरावस्था है। चारों बालक श्रमिक वर्ग के है। आयु 14-15 साल की है। अग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ भारतवासियों ने जग छेड़ रखा है जिसके कई रूप है। हड़तालें, लाठी, गोली, आगजनी, तोड़-फोड़, हत्या आदि सब कुछ चल रहे है। अनेक केन्द्रों में से बबई भी एक केन्द्र है। अशरफ, मनीराम, बाबू और चौथराम जैकब सर्किल क ब्रिटिश पुलिस थाने को आग लगाकर भाग जाते है। इनके पास नाचने-गाने की कला है। वेश बदले हुए ये चारों बासुरी, खजरी और ढोलक लिए सेरे बाजार और गली-कूचों में नाच-गाकर पैसा कमा कर चलते रहते है और छ महीने के बाद पशावर पहुँच जाते है। वे तय करते है कि ब्रिटिश पुलिस के पर्जो से बचने के लिए काबुल के रास्ते से सावियत सघ में प्रवेश कर जाएगे और तब वहाँ मजदूरों की सरकार उन्हें हर प्रकार की मदद कर देगी। यहाँ से यात्रा शुरू होती है और अपने नाम बदल लेते है—बाबू 'अकबर', मनीराम 'हमीद' और चौथराम 'हैदर' हो जाता है और अशरफ़ का अपना इस्लामी नाम बदलने की आवश्यकता नहीं दिखाई पड़ती।

खैबर दर्रे को दिसबर की असह्य ठड में पार करते हुए, ठहर कर कहीं अपनी कलाबाजी से पैसे बटोर कर आगे बढ़ते हुए काबुल पहुँच जाते है। वहाँ उन्हें गर्म कोट-पेंट खरीदने पड़ते है जो सस्ते भाव मिल जाते है। इस प्रकार वे तीन-चार महीने गुज़ार कर वसत ऋतु के आरभ में पुन काफिलों के साथ आग बढ जाते है। तीन दिन बाद जाबुल-अस-सिराज़ (प्रकाश पर्वत) पहुँचते है। पहाड़, नदी, झरनों के अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द उठाते हुए और कारवासराय म विश्राम करते हुए वे गुलबहार छोड़कर उन पहाड़ों की उस चढ़ाई के लिए अपने आपको तैयार करने लग जिसे पार करना कुशलतर पर्वतारोहियों के लिए भी अत्यत कष्टसाध्य कार्य है।

जब तुम इन बीहड़ वन-जगला के नज़दीक आओगे तो कुछ हद तक भारत में हिमालय और अरावली के घने जगलों को भूल जाओगे। पर्वतों पर चढ़ते हुए इन दोस्तों ने इतने भयानक दृश्य देखे जिनकी कभी कल्पना तक नहीं की गई थी। रास्ते के सीधे ऊपर से उन्हें लटकते हुए ऊँचे शिलाखडों का सामना करना पड़ा जो सिर्फ मनुष्यों को ही नहीं बल्कि सैकड़ों हाथियों को भी बड़ी आसानी से धकेल कर कुचल सकते थे।'

'कुछ ऐसे स्थान और ठहराव थे जहाँ रास्ता इतना सकड़ा और ख़तरनाक था कि उस पर मुश्किल से एक ही समय में एक खच्चर अथवा एक आदमी ही चल सकता था। यदि दुर्भाग्यवश किसी का पाव फिसल गया तो वह लुढ़कता हुआ

नीचे अगड़ाई लेते हुए दर्रों में पहुँच जाता। ऐसा लगता है कि बहुत से स्थानों पर रास्ते पहाड़ी ढलानों से काटे गए है और ये पहाड़ लगभग या तो घाटियों की तलहटियों में या भयानक तेजी से बहती हुई नदियों और तज नालों म जाकर समाप्त होते है।'

काफिला ताश्करधान पहुँचा और चैन से विश्राम किया। चारों यात्रियों को हिन्दुस्तानी दूकानदार मिला जिसने उनका खूब आदर-सत्कार किया। यात्रियों ने अपने नाच-गाने के शानदार कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उन्होंने धीमी गति स बहती खुल्लम नदी की भव्यता को मुग्ध होकर देखा। इसम बच्चे पशुओ के फूले हुए चमड़ों पर तैर रह थ। 'ये बच्चे छोटी उम्र के थे और ऐसे लग रहे थ मानो छोटी मछलिया तैर रही हा।' यहाँ के वातावरण में किसी खूबसूरत किशोरी को देखकर मोहित हो जाना कितना स्वाभाविक है। यदि इस पर भी कोई मोहित न हो तो वह पत्थर के सिवा और कुछ नही हा सकता।

दूकानदार निशनचन्द क घर मे तरह साल की सुन्दर लडकी ने उसके घर आए आगन्तुको पर एक आकर्षक प्रभाव डाला। लडकी के जादुई चेहरे ने चारो लड़कों को स्तब्ध कर दिया। वे मूर्तियों की तरह हो गए। वे मौन हा खड़े रह गए। उनकी आँखें पथरा गईं और लडकी के चेहर को घूरती रह गईं। किन्तु लज्जा और गरिमा की भावना न शीघ्र ही बीच में दखल दे दिया। उन्होंन उसके भाई की उपस्थिति को भापत हुए उसक चेहरे स आँखे फेर ली और यह इसलिए भी कि उनका यहाँ इस घर में अपने अतिथि होने का एहसास भी हो गया। लड़के किशोरावस्था में थे और अभी तक यौवन से परे थे। फिर भी मानव प्राणी के लिए किसी सुन्दर वस्तु को देखने की सहज प्रवृत्ति होती है जो आनन्द देती है चाह वह उसे प्राप्त न भी हो। इसी मानव स्वभाव क वशीभूत वे निश्छल, पवित्र बालहृदय भी थे।

एक माह तक य चारों साथी भारतीय दूकानदारों के यहाँ बारी-बारी से मेहमान रहे और उन्होंने हर रात को अपन सगीतमय कार्यक्रम सफलतापूर्वक तथा ससम्मान प्रस्तुत किए। उनकी प्रसिद्धि सारे शहर में फैल गई। उन्होंने सबको अपने कौशल से चमत्कृत कर दिया।

काबुल की सर्दी और ताश्करघान क सुन्दर वसन्त मोसम का अनुभव प्राप्त करके अब अपन काफिले के साथ मिलकर मजार शरीफ की ओर चल पड। रास्ते में हँसते, मजाक करते और दूसरों स जतियात हुए वे एक गाव म पहुँचे और रात भर कारवा सराय में विश्राम किया ताकि अगले सुबह से शुरू होने वाली कठिन यात्रा के लिए तैयार हो जाएँ।

दा-तीन बार इसी तरह रुकते-रुकते व तीन दिन बाद मज़ार शरीफ के करीब पहुँच जाते है। जब वे शहर में घुसते है तो उन्हें मज़ार शरीफ ताश्करघान के समान ही लगा, अलबत्ता वह उससे कुछ बड़ा अवश्य था, क्योंकि वहाँ रूसियों और यूरोप के अन्य देशवासियों के आवागमन से चहल-पहल कुछ अधिक ही रहती थी। यह जगह वैसे भी उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान का सैनिक केन्द्र था। प्राय सेना के अधिकारी

और अन्य पर्यटक बाज़ार में घूमते देखे जा सकते थे। तुर्कमानी और यहूदी भी आते जाते मिलते थे।

यहाँ एक हाजी ताज मौहम्मद पेशावरी नाम के धनी व्यापारी के घर पर इन चारों की महफिल रखी गई। हाजी की आयु 60 वर्ष के करीब थी। वह सब बच्चों का समान रूप से प्यार करता था। उसके पाच लड़किया थीं और दो लड़के हुए थे लेकिन छोटी उम्र म गुज़र चुक थे। सब लड़कों को अपना समझकर उनसे पितातुल्य व्यवहार करता था। भारतीयों के प्रति उसका सहज स्नेह हाने के कारण उसने इन बालकों को विशप आग्रह से अपना अतिथि बना लिया। उन्होंने यहाँ भी बहुत उम्दा कायक्रम पश किया। खूब प्रशसा फैलने लगी।

अगले दिन मज़ार शरीफ के प्रातीय गवर्नर के आदेश पर अपना सगीत कार्यक्रम उनके निवास पर प्रस्तुत करना था। हाजी उन्हें वहाँ ले गया। जब वे वहाँ पहुँचे तो उन्होंने एक अनोखा दृश्य देखा। दो पुलिस के दरिन्दे एक ताजिक को एक तिकोने पर बाधकर बेरहमी से कोड़े मार रहे थे और उनका शिकार वह लाचार बेचारा दर्दनाक आवाज़ म कराह रहा था। उसकी पीठ, जाघों और पुट्ठों से खून बह रहा था। गवर्नर और उसके दोस्त तथा अधिकारी इस दृश्य का आनद उठा रहे थे।

चारों दोस्तों के लिए यह सब असहनीय हो गया। व गुस्से से लाल हा गए। उन्होंने हाजी से इस पिटाई का कारण पूछा ता हाजी ने औरों से पूछकर बताया कि अकाल के कारण यह किसान कर नही चुका सका। इस पर उसे गवर्नर ने सौ कोड़ों की सजा दी है। इन यात्रियों ने कार्यक्रम पेश करने से इन्कार कर दिया और हाजी ने गवनर से यह कहकर छुट्टी ले ली कि एक लड़के के अचानक पट में दर्द हो गया है। 'इसलिए कायक्रम अगले दिन किया जायेगा।' गवर्नर ने जाने की इजाजत दे दी।

अगले सुबह व वहाँ से रवाना हो गए और इस तरह उन्होंने अफगानिस्तान स विदा ली। लगभग एक घटे बाद नाव नदी पार करके वे आक्सस नदी के दूसरे किनारे पहुँच गए जहाँ सोवियत सघ का क्षत्र शुरू हो गया।

सोवियत सघ के अधिकारियों ने उन चारों की छानबीन की और जब उन्हें तसल्ली हो गई कि ये चारो भारतीय लड़के श्रमिक वर्ग क है और ब्रिटिश सरकार क खिलाफ चलने वाले स्वतत्रता सग्राम में हिस्सेदार हाने की वजह से (फ़रार) बागी है, ता अधिकारियों ने बड़ी हिफाज़त क साथ रखा। टिरमिज़ शहर इन लड़कों को बहुत व्यवस्थित और सुन्दर लगा। चौड़ी सड़कों पर किशोरावस्था के लड़के-लड़कियों की एक-सी पोशाक वाली कतार बैठ क साथ मार्च करती हुई दिखाई दीं। यों बाज़ार में घूमते हुए उन्हें कुछ लड़के-लड़किया मिल गए और आपसी परिचय करते-कराते इन चारों दोस्तों का यह मालूम हा गया कि ये सोवियत लड़के-लड़कियाँ अपने 'कोम्सोमोल' सगठन के प्रतिनिधि है जा सस्था क द्वारा उनका स्वागत करने के लिए उनकी तलाश में ही भज गए है। दुभाषिए के माध्यम स आपस में मेल-मिलाप

करके जब वे कारवा सराय पहुँचे तो जोशीले नारा के साथ 'कोम्सोमोल' के प्रतीक्षारत अन्य सदस्यों ने उनका भव्य स्वागत किया।

'कोम्सोमोल' सोवियत सघ में 'कम्युनिस्ट यूथ लीग' का एक स्तरीय सागठनिक विभाग है। 'कम्युनिस्ट यूथ लीग' के छोटी उम्र के बच्चों के सगठन को 'पायोनियर', किशोरावस्था के सगठन को 'कोम्सोमोल' और बड़े लोगो के सगठन को 'पार्टी' के रूप म जाना जाता है।

नदी के किनारे पर कोम्सोमोल की शानदार इमारत स्थापित है जिसकी ऊपरी मजिल पर स्कूल है, बीच की मजिल पर छात्रावास और नीचे की सतह पर कोम्सोमोल का कार्यालय और फिर खेलकूद का खुला मैदान। स्कूल में सहशिक्षा का प्रबध है। लड़के और लड़कियाँ अलग-अलग कमरों में रहते है किन्तु अन्य प्रबध जैसे भोजन, खेलकूद, अध्ययन तथा सास्कृतिक कार्यक्रम एक साथ एव एक समान ही है। वे एक साथ बागवानी तथा कृषि-कार्य करते है। महिलाए और पुरुष शिक्षक भी एक साथ शिक्षण-प्रशिक्षण का कार्य करते है। यहाँ शिक्षा अनिवार्य है, उन्हें सगीत भी सिखाया जाता है। बच्चों क अपने रगमच है और अपने ही सिनेमाघर। लड़कियाँ सैनिक परेड, खेलकूद और शूटिंग अभ्यास में लड़कों से किसी बात में पीछे नहीं रहतीं।

अब अशरफ, मनीराम, चौथराम और बाबू अपने असली नामों में रहने लगे। बड़े रेड हॉल में उनका स्वागत किया गया जहाँ लेनिन का बड़ा चित्र लगा हुआ था। 'कोम्सोमोल जिन्दाबाद' का सुन्दर बैनर था। सारा भवन ललाई लिए हुए था।

चारों को नई पोशाकें दी गईं और भरपूर आवासीय सुविधाएँ।

एक सप्ताह बाद कोम्सोमोल के समरकद सम्मेलन म भाग लेने के लिए उनको प्रतिनिधि के रूप मे शामिल कर दिया गया। सभी प्रतिनिधि ट्रेन पर सवार हुए।

रास्ते म बतियाते हुए वे बोखारा गणराज्य म प्रविष्ट हुए जहाँ वहाँ की कोम्सोमोल शाखा ने उनका शानदार स्वागत किया। बोखारा से रवाना होकर वे समरकन्द चल आए। आपस में अपन-अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते गए।

समरकन्द सम्मलन में सपूर्ण साक्षरता, पर्दा प्रथा का पूरी तरह उन्मूलन, कृषि विकास, विभिन्न भाषाओं का समुचित विकास, अफगानिस्तान और भारतीय बालक-बालिकाओं के साथ कोम्सोमोल के सबध, हर जगह किंडरगार्टनों का फैलाव और वैज्ञानिक आधार पर स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार पर कार्यक्रम निर्धारित करने पर विचार विमर्श किया गया।

इसके बाद यूरोपीय क्षेत्र से होत हुए ये चारों मॉस्को पहुँच और वहाँ व स्कूल में दाखिल हुए और उन्होंने अध्ययन करना शुरू किया। यहाँ उपन्यास 'चार यात्री' का कथानक समाप्त होता है।

'चार यात्री' उपन्यास के रूप में लेखक के जीवन की सच्चाई है, एक यथार्थ अनुभूति है। देश को पराधीनता से मुक्त कराने के दुस्साहसिक क्रान्तिकारी प्रयासों

में चार किशोरा का सलग्न होना, फरार होकर रास्तों की असह्य मुसीबतों का सामना करना और सोवियत सघ में जाकर वहाँ क क्रातिकारी अनुभवों का अध्ययन करना आदि कार्यकलापा के पीछे रचनाकार शौकत उस्मानी के अपनेपन की छाया है। इसीलिए यह एक प्रामाणिक कहानी है। यह किशोरावस्था का पहला उपन्यास है जिसमें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास का एक अत्यत महत्त्वपूर्ण पृष्ठ सन्निहित है। इसे समझने के लिए सन् 1930 की यहाँ-वहाँ की राजनीतिक घटनाओं का पुनरावलोकन आवश्यक होगा।

इन दिनों प्रचलित छोटी-मोटी मामूली स्तर की रचनाओं के 'लोकार्पण' नाम क विज्ञापनी समारोह कितन छिछले लगते हैं, क्रातिकारी शौकत उस्मानी द्वारा दिया गया खुदीराम बोस और अन्य शहीदा की स्मृति के इस 'समर्पण' के सामने।

कैशोर के भावावेग, स्वतत्र होने की सायास आकाक्षा, मुसीबतों को आमत्रित करने की आदत, कलात्मक सुरुचि, प्राकृतिक और मानवीय सौंदर्य के प्रति सहज आकर्षण, अन्याय और उत्पीड़न के विरुद्ध विद्रोह और रहस्यों के भीतर झाकने की प्रवृत्ति के अन्तर्तम म पैठना 'चार यात्री' की अन्यतम सार्थकता है। दश, काल और पात्र के समायोजन के फलक पर अकित ये रेखाए अनुपमता का आभास देती है।

अपनी मातृभाषा 'राजस्थानी' के इस कृतिकार का हिन्दी, उर्दू और अग्रेजी पर समान अधिकार हान क कारण ही इसका उसने 'चार यात्री' का हिन्दी, 'चार मुसाफिर' का उर्दू और 'फोर ट्रेवलर्स' का अग्रजी कलेवर देकर 'एक में दो' का अर्थात् लेखक और अनुवादक दोना का एक साथ निर्वाह कर दिया। इसके अलावा कई अन्य विदेशी भाषाआ और बालियों क शब्दा, मुहावरा कहावतों और काव्याशों ने अभिव्यक्ति को नये आयाम देकर सुसमृद्ध बना दिया। दशाचार और लोकाचार जगह-जगह सहायक सिद्ध हो रहे है। इसी प्रकार वेशभूषा आत्मीयतापूर्ण व्यवहार और आशकायुक्त सतर्कता दिखान म उस्मानी की उस्तादगी साफ तौर पर प्रकट हो सकी है।

चार यात्री' उस्मानी का एक किशार मनोवैज्ञानिक अपितु क्रातिकारी उपन्यास है और अपनी किस्म की पहली साहित्यिक सरचना। वह नितात मौलिक है तथा अत्यत मूल्यवान भी। विचार और सवेदना का उच्च और गहन सश्लेषण लिए हुए। सवादा में प्राणवान नाट्यतत्त्व है। सर्वग्राह्य अर्थवत्ता इसकी अपनी विशषता है। शौर्य, साहस, उल्लास करुणा, पवित्र शृगार रौद्र वीभत्स एव कौशल ने कृति का सरलता, सफलता और सार्थकता से अभिषिक्त कर दिया है।

उपनिवेशवादी तत्र क अत्याचारों क खिलाफ उस्मानी की यह खुली लखकीय बगावत है तो अधविश्वासों के विरुद्ध एक उत्तप्त विद्रोह। अनेक सभ्यताओं और सस्कृतियों का समायाजन है तो उभरती हुई नयी सभ्यता और सस्कृति का नवोन्मेष। स्काउटिंग और कोम्सोमोल का अन्तर स्पष्ट है। एक घिसी-पिटी शिक्षा-व्यवस्था और विज्ञान कला समन्वित शिक्षा योजना का बुनियादी फर्क और अधिक विश्लेषण

की गुंजायश नहीं छोड़ता।

अंतिम छोर पर आकर पात्रों की अनेक संभावनाओं की ओर इंगित किया गया है और साथ ही एक जिज्ञासा को भी उद्भूत किया गया है कि इसकी अगली कड़ी की प्रतीक्षा बनी रहे। यहाँ यह कहना अनुचित न होगा कि यह उपन्यास अपने आप में पूरा भी है और अधूरा भी। समकालिक भी है और अग्रगामी भी। विप्लवकारी पृष्ठभूमि पर टिका हुआ होते हुए भी वह रचनात्मक संलग्नता का प्रतीक है।

सारत 'चार यात्री' शौकत उस्मानी की जीवन शैली की अभिव्यंजना है।

* * * *

कवर के अंतिम पृष्ठ पर

ADVERTISEMENT

1	Peshawar to Moscow	(In 6 Languages)
2	Anmole Kahanian	(Urdu & Hindi)
3	Char Musafir	(Urdu & Hindi)
4	Fauji Sitara	(Urdu)
5	Animal Conference	(English)

Published by Usta Publications Corp

•

1 Fauji Sitara–(In Urdu) Alias Shatir Shamim

An Urdu Novel by Shaukat Usmani author of Peshawar to Moscow

If you want to read adventures

If you want to read romance

If you want to read a detective novel

Then please read Fauji Sitara Alias Shatir Shamim and enjoy the adventures of a young man in Europe and Asia through the pages of this novel. Available at every wellknown book shop in Karachi and in Hyderabad (Sind) Price 1/8/0

All rights reserved by the author

2 Fauji Sitara (In Urdu) (By Shaukat Usmani)

Read this novel if you have not done already

It will carry you deep in Europe during the last war It will give you plenty of detective feats If you love romance read it if you love action read it if you want to know what a lad can do in the world read this novel.

It is adventures

It is romance

It is a description of the feats of Shamim

Available at all well known Book Company

Price originally 2/0/0 now reduced to Rs 1/8/0

Other works of the author 'Char Musafir & 'Anmole Kahanian in Urdu and Hindi available at-

Bharat Publishing House Civil Lines Agra (U.P)

Rus Yatra' in Hindi Available from-Pratap Press, Kanpur (U.P)

I Animal Conference-(A Satire and allegory on Atom and H. Bombs) by Shaukat Usmani Alias Sikander Sur-1st Edition-May 1950 (Karachi) 2nd Edition March 1952 Karachi and 3rd Revised and enlarged Edition July 1954 Bombay Pages 50 Price 2 8 0 dedicated to the memory of Animal Victims of the Bikini Atom Bomb Experiment Published by ILA Trading Corporation 121 22 St Xavier s Street Parel Bombay 12 & Printed at Mohamadi Fine Art Litho Works Mazagon Bombay 10 Preface dated 6th May 1950 And together with II Jungle Conference Dedicated to the memory of the martyrs of Hiroshima and Nagasaki in the year of grace one thousand nine hundred and forty five Foreword dated 15 11 1953 and Introduction dated 21 12 1953 pages From 51 to 111

I Animal Conference के आवरण पृष्ठ पर आकाश, हिमगिरि, पेड़, मैदान और नदी की पीठिका दिखाई गई है और उसम नभचर, थलचर और जलचर पशु-पक्षी दिखाए गए है। हरेक प्राणी का आम तौर पर जैसा रग हुआ करता है उसी रग में उसे चित्रित किया गया है, जैसे—हाथी भूरा है तो गाय सफेद आदि। प्रकाशकीय और लेखकीय प्राक्कथना के छ शीर्षक और तीन अतिरिक्त (Appendixe) हैं। इसी तरह 'जगल कॉन्फ्रस' म दस शीर्षक है और एक पूरक (Supplement)।

सभी जानवर सम्मेलन के मूड म बैठे दिखाए गए है। सबक मन मे कहने-सुनने की आतुरता दिखाई दे रही है। लोमड़ी को अध्यक्षीय आसन पर बैठाया गया है। चित्र में मानव-प्राणी का अभाव है क्योकि उसके विरोध में तो एनीमल कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया ही जा रहा है।

जब अगस्त 1947 में भारतीय उपमहाद्वीप का रूपातरण हुआ तो मनुष्यों के दिमागों में भी बहुत बड़े परिवर्तन हो गए। मनुष्य पशु बन गए और पशु मानवोचित में बदल गए। एक अपूर्व युग का सूत्रपात हुआ। भारत माँ की स्वतत्रता के सघर्ष में ईमानदारी से बलिदान देने वाले क्रातिकारियों को पीछे धकेल कर व्यवसाय शिकारी

और पदलोलुप नई दिल्ली प्रशासन की ओर लपक पडे। अवसरवादियो ने स्वार्थ-सिद्धि के लिए बुनियादी बदलाव के रास्ते को जाम कर दिया और नई सत्ता से चिपकने लगे।

मनुष्य की पाशविक प्रवृत्ति की चरम सीमा अमरीका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी में आणविक बम विस्फोटो के करने पर जाहिर हा चुकी थी जिसमें मनुष्य ने लाखों मनुष्यों को क्षण भर मे राख बना दिया और साथ ही थलचर, जलचर सभी काल के ग्रास बन गए। मानव पहले से ता अनेक प्रकार के जानवरा के शोषण उत्पीड़न का कारण हो ही रहा था, अब वह पूरी तरह उसका हत्यारा भी साबित हो गया। इसीलिए जानवरों ने अपने ही नही अपितु अपन आप के दुश्मन मानव के खिलाफ मोर्चाबन्दी करने के लिए 'जानवर सम्मेलन' का आयोजन किया। उद्देश्य था जल, थल और नभ को आणविक बमों के विनाशकारी प्रभाव से मुक्त करना।

शेर ने हाथी को समझाया कि आणविक युद्ध हाने वाला है और ऐसा होत ही यह पृथ्वी मानवरहित होगी और तब इस पर हमारा ही आधिपत्य होगा। इसलिए भावी सभावनाओं पर विचार करने के लिए एकजुट होने की जरूरत है। इसलिए हमें 'जानवर सम्मेलन' बुलाकर उसमें निर्णय लेने की पहल करनी चाहिए। हाथी को बात जच गयी और सबको बुलाया गया।

सम्मलन मे जलचर, थलचर और नभचर सभी इकट्ठे हुए। वादविवाद के बाद शेर के प्रस्ताव और हाथी के अनुमोदन पर शेर की सलाहकार 'मिस फौक्स' (कुमारी लोमड़ी) को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिया गया। अध्यक्ष के सुझाव पर एक नए गणतत्र की स्थापना का प्रस्ताव आया जिसका नाम Mangum Republics रखा गया।

इसी दौरान शेर को एक अखबार मिलता है जिसका शीर्षक है 'आणविक युद्ध में ग्रेट ब्रिटेन की सुरक्षा असभव।' ब्रिटेन क साथ चर्चिल की चर्चा हुई जिसका चेहरा 'बुलडॉग' के समान बताया गया। कुत्ते ने उससे अपना जातीय रिश्ता बताया।

इस सम्मेलन में काफी बहस के बाद शर ने सात प्रस्ताव रखे—

(1) जानवरा का उस झरने पर पूर्ण नियत्रण हा जिससे जीवन जल प्रवाहित होता है और जब वह ज्वलत होता है तो वह ऐसी गैसें, कोहरा, बादल और भाप पैदा कर देता है जो सभी राडार प्रणाली का प्रतिरोधी, विद्युतिकीयता का विध्वसक होता है और चारों तरफ फैल जाता है।

(2) एक केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी का गठन किया जाय जिसमें सर्व श्री हाथी, भेड़िया, चमगादड़, कछुआ, घड़ियाल, लोमड़ी, खरगोश, शतुरमुर्ग, बदर, जिराफ़, गधा और रीछ शामिल हों।

(3) वार्षिक सम्मेलन हर साल की निश्चित तारीख पर आयोजित किया जाय और हो सके तो विशेष अधिवेशन भी साल के बीच में रखे जाएँ।

(4) हिमालय की तराइयों में और आर्कटिक रीजन्स में जो वास्तव में हमारे

बुजुर्गों के मूल निवास स्थान रहे है उनमें मानव जाति के आगमन को रोका जाय। हमारा प्रस्ताव है कि इन स्थानों को 'एटम और हाइड्रोजन बम निष्प्रभ' क्षत्र बनाया जाय। इसके लिए इन तमाम घाटियों और मैदानों मे गैसीय कोहरो के बादलों से उस चमत्कारी झरने के पानी का फैला दिया जाय। कतिपय पर्वतों, घाटियों और गुफाओं में मनुष्य का प्रवेश निषिद्ध कर दिया जाय, ताकि आणविक युद्ध स उसकी जाति सुरक्षा का स्थान न प्राप्त कर सके।

(5) जैस ही परमाणु या हाइड्रोजन बम के प्रयोग की सूचना हो हमें तुरत पहले से ही अपनी सुरक्षा हेतु सार क्षेत्र पर भाप के बादल फैला देने चाहिए। हमें अपन आवासीय स्थानों को मानवी हथियारा का प्रतिरोधी बनाना होगा।

(6) परमाणु युद्ध के फलस्वरूप जैसे ही मानवजाति अपने आप को नष्ट कर द, वैस ही सारी पृथ्वी का पुनर्वितरण करना होगा।

(7) और अतत हमारी शासन प्रणाली को हमें लोकतात्रिक नियमों और सिद्धातो पर सचालित करना होगा और हमें अधिक आत्म-बलिदान करके मासाहार छाड़ना होगा।

मासाहार छाडन पर थोड़ी हलचल पैदा हा गई, अत इसे बाद मे विचार के लिए छाड़ दिया गया। बाद मे साता प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित घोषित कर दिए गए।

दूसरे सत्र में उपर्युक्त प्रस्तावों को जल, वायु, पृथ्वी और भूमिगत क्षेत्रों के अलग क्षत्रीय सम्मलना मे पारित करवाने का निर्णय लिया गया। अत म समूह गान क साथ सम्मेलन के सत्र की समाप्ति की घोषणा कर दी गई।

जलचर सम्मेलन बर्मा में इरविद्दी नदी के मुहान पर रखा गया जिसमें सब प्रकार की मछलियाँ एव अन्य जलजीव इकट्ठे हुए। मिस्टर शार्क का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। मिस स्वान ने जानवर सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट पश की और प्रस्ताव भी रख। यह भी बताया गया कि सन् 1946 मे जब अमरीका द्वारा बिकिनी में भयकर परमाणु बम का प्रयोग किया तो जलचरों को कितना ज्यादा नुकसान झलना पड़ा। सपत्ति और प्राणियों का कितना विनाश हुआ। अमरीका के पूजीपति मछली उत्पादों की कीमतें बढ़ान के लिए हर मौसम में एसा ही करते है। पूजीवादी कानून और अर्थव्यवस्था क लिए माग को सप्लाई से ऊपर रखने के उद्देश्य से हर साल बहुत ज्यादा तादाद में बरबाद करना परमपवित्र कर्तव्य माना जाता है। मानव मृत्यु व्यवसायी प्राणी है। प्लेटा के अनुसार मनुष्य शैतानी काम में व्यस्त रहता है।

अत में सर्वसम्मति से उपर्युक्त सात प्रस्तावों को स्वीकृति दते हुए यह प्रस्ताव पारित किया गया कि समूहों, महासागरों नदियों, तालाबा, झीलों और झरनों के समस्त पानी का उन खनिजों और रसायनों के फाहरों और भापों के जरिए प्रतिरोधी बनाया जाकर सुरक्षित किया जाय और आज स जल क भीतर और ऊपर मनुष्य

के आगमन पर रोक लगाई जाय।

इसी प्रकार नभचर प्राणियों का सम्मलन हुआ। यह नेपाल क निचले मैदानो म हिमालय क चरण स्थल पर सयोजित किया गया। सब प्रकार के पक्षी इसमे इकट्ठे हुए। इनमें बटेर, चकोर, पैट्रिज, वैक्स विग, कौआ, चील, बाज, गिद्ध, उल्लू, बुलबुल, तोता आदि अन्य कई प्रकार के प्राणी शामिल थे। इसमें पहले सम्मेलन में पारित प्रस्तावो की छानबीन और बहस का मुख्य मुद्दा था। कुछ नए प्रस्ताव भी सामने आए।

अध्यक्षता के लिए कई नाम आए, आखिर सर्वसम्मति स मिस चकोर को सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए चुन लिया गया। बाज ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा– कॉमरेड अध्यक्षा, मै दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि मानवप्राणी स्वय में परमाणु बम का भडार है। उसकी खापडी में शैतान की खुराफात है, वह विनाश का खजाना है। वह अपने आपको और अपने आस-पास प्रत्येक को नष्ट ही करता है।' इसी प्रकार बहस चलती रही।

अत मे प्रस्ताव पास किया गया कि शैतान की शाखा और बकरे की दाढी हमारी कमेटी के नियत्रण में रह और उन्हे वहाँ रखा जाय जहाँ आदमी का प्रवेश सभव न हो। गोंद, शाखाओ और पत्तियो को हमारे गुप्त हथियारों क रूप म माना जाय और हम सकल्प लें कि इस रहस्य का किसी के सामने प्रकट नहीं करगे। बाकी सातों प्रस्ताव भी पारित किए गए।

उपर्युक्त क्षेत्रीय सम्मेलनों क समकित प्रस्ताव 'ऐनिमल कॉन्फ्रेस' की कन्द्रीय समिति के पास आए और उसने सब पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी। दूसरे दिन 'मैनगुइन रिपब्लिक्स' का सविधान पास किया गया जिसम किसी भावी सशाधन की गुजाइश नही रखी गई। निगरानी समिति का नेतृत्व सयुक्त रूप से कौए कुत्ते और बिल्ली को सौपा गया।

अत म कन्द्रीय समिति ने अपन सहायतार्थ अमरीका का उसक आधुनिक उपनिवश ब्रिटेन सहित धन्यवाद का प्रस्ताव भेजा क्योंकि वहीं मानव जाति का विनाश करने के विश्वसनीय उपकरण है। इसक पश्चात् कॉन्फ्रेस समाप्त हा गई।

II Jungle Conference—'एनिमल कान्फ्रस सबसे पहले जनवरी 1949 ई में समाचार पत्रों में सीरियल के रूप म प्रकाशित हुई थी। मित्रों क लगातार दबाव के कारण शौक्त उस्मानी न दूसरी कौन्फ्रेंस का जगल कॉन्फ्रेंस' क शीर्षक स लिखा। इससे पूर्व दुनिया भर क और खास तौर से भारत, पाकिस्तान, लका और बर्मा क पत्रों ने और व्यक्तिगत रूप से पूर्व और पश्चिम दानों क सुप्रसिद्ध विद्वाना ने अपन पत्राचार क माध्यम से उस्मानी द्वारा शान्तिकामी मानवता के प्रति अर्पित उस लाकार्पण की मुक्त कठ स सराहना की थी। इसी से प्ररित हाकर इस जगल कॉन्फ्रेंस' की रचना सभव हुई। यह कृति पूनीवादी सिद्धान्तों और शासनतत्र क विरुद्ध एक विद्रोहाभिव्यक्ति है।

हिन्दूकुश की गोद में पजशीर नदी के पास तग घाटी में यह कौन्फ्रेंस आयोजित की गई। इसम समस्त वनजीव-जगत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रस्ताव और प्रतिप्रस्ताव के बाद 'मिस अबाबील' को सर्वसम्मति से अध्यक्ष के रूप में चुना गया।

अचानक गुफा में से निकल हुए एक गुहामानव ने सभा में प्रवेश किया और धरती को छू कर तीन बार सलाम किया। उसने निवदन किया कि उसे सम्मेलन में भाग लेने दिया जाय क्योंकि वह भी अन्य वन्य जीवों की तरह मानव द्वारा प्रताड़ित है। इस पर शेर न अपत्ति उठाते हुए कहा कि यह सही होते हुए कि वह भी उन्हीं की तरह मानव प्रताड़ित है, फिर भी मनुष्य होने के नाते वह भी एक कल्पनाशक्ति वाला प्राणी है, इसलिए सम्मेलन म भाग लेने का अधिकार उसे नहीं दिया जा सकता। इस आपत्ति के बाद उसे दडित करने का प्रस्ताव आया जिस पर काफी बहस हुई और आखिर शेर के इस प्रस्ताव को मान लिया गया कि उसे विदेशमत्री बनाकर अर्जुनिस्तान की राजधानी भेज दिया जाय। सिमुर्ग (काल्पनिक पक्षी) को उसके साथ भेज दिया गया। अर्जुनिस्तान में उसे पहुँचाए जाने की सूचना सिमुर्ग न वापस आकर दी। सिमुर्ग को धन्यवाद दिया गया, इसके बाद सम्मलन शुरू किया गया। सर्वप्रथम सर्पिल पखदैत्य ने स्वागत भाषण दिया। जिसका निष्कर्ष यह निकाला गया कि भविष्य म राडार युद्ध करने की मानव योजना दिखाई दे रही है। राडार युद्ध के साथ परमाणु ए और एच बम तो अपनी भूमिका अदा करेगे ही।

लामडी ने पहले सम्मेलन म तय की गई योजना का हवाला देते हुए बताया कि राडार युद्ध हो चाह नाभिकीय शस्त्रों का युद्ध—हमार वाष्पमय प्रतिरोधी उपाय मनुष्य द्वारा निर्मित सारे विद्युतीय और गैर विद्युतीय हथियारों को नष्ट कर देंगे अब तब वे सारी मिसाइलें निष्प्रभावकारी बन कर धरी रह जायेंगी।

शेर ने वादा, मान्ट बटल और केन्द्रीय उताह के सेवियर ब्रिजरिजर्वोयर क जलातर्गत मे किए गए नाभिकीय हथियारों के प्रयोगो का हवाला दिया जो एक समाचार पत्र में (साल्टलेक सिटी, 13 नवबर सन् 1953) में छपे थे। इन सब जलचरों न बिकिनी प्रयोग को फिर स याद किया और अनुमान व्यक्त किया कि यह उससे भी अधिक विनाशकारी होगा।

अध्यक्षा न यह स्पष्ट किया कि मनुष्य ये प्रयोग यूरोप मे क्या नहीं करता और फ्रास कई बार विरोध का स्वर क्यो निकालता रहता है वैसे यदि फ्रास चाहता तो हिरोशिमा और नागासाकी की विध्वसक घटनाओं के घटित होने स पहले ही जर्मनी पर एटम बमों का प्रयोग करने में सक्षम था, किन्तु वह अधिक लोकतत्रवादी होने की वजह से ऐसा न कर सका। 'स्वतत्रता समानता और सहअस्तित्व' के नारों के कारण वहाँ के सैन्य प्रमुखों की इच्छा दबी रह गई। सब प्रकार के प्रतिरोधी उपायों क बावजूद हम निरतर चौकसी बरतनी होगी और इसके लिए कौए, बिल्ली और कुत्ते का यह कर्तव्य है कि मनुष्य की हर विनाशकारी योजना के बारे में समस्त

वनजीव जगत को इसकी पूर्व सूचना दें।

शेर ने मिस लोमड़ी से अनुरोध किया कि वह अपनी उस अवधारणा को सम्मेलन के सामने रखें जिसे 'अवचेतन सिद्धात' कहा गया है। लोमडी ने इस पर एक व्याख्या प्रस्तुत की जिसका आशय यह था कि इस अवधारणा के पीछे यह अनुमान था कि तृतीय विश्वयुद्ध हुआ, जिसमें सब कुछ बरबाद हो गया। लगभग सारी पृथ्वी पानी में डूब गई। हिमालय भी गायब हो गया। यूरोप और अमरीका भी कहीं नहीं रहे। केवल कुछ भाग लदन का और उसके मित्र देश समाजवादी सोवियत सघ का बचा क्योंकि मानव का मानव के द्वारा शोपण समाप्त कर दिया गया था। न अब कालाबाजारी थी और न ही लड़ाइयाँ। पूजीवादी साम्राज्यवाद क मिटने पर सबको सब चीजें समान रूप से मिलने लगी थीं, यहाँ तक कि ऑक्सीजन भी कट्रोल से। धनी हवाई कार में उड गए। बस्तियाँ रही नहीं। सन् 1999 तक आते-आते सारा जीवन समाप्त हो गया।

फिर गुफा के आदमी का हालचाल जानने के लिए प्रस्ताव आया और सिमुर्ग को यह जिम्मा सौंपा गया कि वह कौए, लोमड़ी और उल्लू को अर्जुनिस्तान ले जाए ताकि पता लगाया जा सके।

इनके वापिस आने पर बताया जाता है कि वह गुफा वाला आदमी वहाँ का शासक चुन लिया गया क्योंकि पहले का शासक मर गया था। फिर सबके सामने अर्जुनिस्तान का वर्णन किया जाता है। अत में फिर विध्वस का कल्पना चित्र प्रस्तुत किया जाता है।

परमाणविक प्रयोगों और नई बीमारियों के प्रभावों को दर्शाते हुए मई 1953 में वियना में हुए चिकित्सा वैज्ञानिकों के विश्व सम्मेलन के निष्कर्षों का हवाला देकर कौए ने बताया कि जापान में छोडे गए एटम बमों के दुष्परिणामो के फलस्वरूप उत्पन्न बीमारिया से मुक्ति दिलाने का सामर्थ्य चिकित्सा विज्ञान म नही है। सूक्ष्म कीटाणु शरीर की सैला मे इस तरह प्रवेश कर जाते है और ऐसी बीमारियाँ पैदा कर देत है कि न तो उनका निदान सभव हो सका है और न ही उनकी चिकित्सा। इस पर अध्यक्षा ने बताया कि इन बीमारियो का इलाज 'गुणबाद-ई-शार' (Dome of Mischief) नामक जड़ी-बूटी से किया जा सकता है। इसे कूट-पीस कर पानी में मिलाने से 'मेटल जर्म' (Metal Germ) का असर हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। हमें इसे मनुष्य से इतना छिपा कर रखना चाहिए जैसे मनुष्य अपने व्यापारी रहस्यों और आणविक हथियारों को छिपाकर रखता है।

इसके पश्चात् सर्वसम्मति से एक त्रिसूत्री प्रस्ताव पारित किया जाता है—(a) 'गुणबाद-ई-शार' जड़ी-बूटी (Dome of Mischief) के रहस्य को सुरक्षित रखा जाय और केवल आवश्यकता पडने पर इसका उपयोग किया जाय। (b) उपर्युक्त फफूदीवाली जड़ी-बूटी को अधिकाधिक इकट्ठा करके जमा करने-कराने की जिम्मेवारी कौए, कबूतर, अबाबील और बतख की होगी। (c) अपने रहस्यों को सुरक्षित रखने

और मनुष्य के रहस्यों का पता लगाने के लिए एक समिति का गठन किया जाता है जिसमे पुराने सदस्य अर्थात् बिल्ली, कुत्ता और चूहा और इनके साथ कौआ सम्मिलित किए गए। इसके साथ पुरानी निगरानी समिति को भी कायम रखा गया। फिर 'गम्बा' सामूहिक नृत्य हुआ, खाना-पीना और मनोरंजन रात भर चलता रहा। अगले दिन छुट्टी की घोषणा के साथ सम्मलेन स्थगित कर दिया गया।

सर्व सम्मेलन की पूरक रिपोर्ट अंतिम सत्र में पेश की गई। मिस्टर कोबरा ने यह रिपोर्ट रखते हुए आणविक हथियारों के भूमिगत प्रयागों की विभाषिका की ओर ध्यान आकृष्ट किया। इसके साथ ही उसने विध्वस के दुष्प्रभाव से निपटने के लिए कैक्टर परिवार के 'जलमाहिनी' पखुड़िया आदि की एक रसायन औषधि को बताया।

इस रिपोर्ट को पारित करने के साथ 'जगल कॉंफ्रेस' समाप्त हो गई।

Animal Conterence क विषय में सम्मतियाँ (पुस्तक क अतिम कवर पेज पर अकित)

'Bharat Jyoti' (Bombay)– *Satire on humanity at large the presentation of facts in metaphorical language makes the book interesting reading*

'Sunday Standard' (Bombay)– *Brightest ever book telling us all about a conference of all the animals*

'Bombay Chronicle Weekly' (Bombay)– *The animals of the Jungle gather together and examine the present world situation the chances of human survival and of the world falling into their hands*

"The Times of Ceylon" (Colombo)– *The author creates a situation where the animals assemble in the Himalayas to decide how best they should rule the earth when man is no more Shaukat Usmani believes that USA and Great Britain will use the Atom Bomb to finish up the human race*

'Inquilab' (Bombay)– *Slices of humour and jest depicts the paucity of human brain*

'Jamhouriet' (Bombay)– *A well balanced slap on the face of war mongers*

'Civil & Military Gazette' (Karachi)–*'There are no divisions in the animal ranks they promise for all teen agers to appreciate Grown ups too would find it a refreshing reading*

'Kultura' (Cultural Organisation-Budapest Hungry)– *Read with great interest*

Kaka D R. Harkare (Bombay)– *Peace Message of the East*

Choudhary Akbar Khan (London)- The author has expressed in beautiful language the militant politics of the day

Mr Montegue Slater (London)- I ve read Animal Conference and find it fascinating

Mr Harry Pollitt (London)- Enjoyed reading

Mr A Raab (Italy)- Animal Conference is actually very good co ngratulate you on this marvellous book

Dr B V Mehta, Ph D (Bonn Germany)- Animal Satire on human race

Revered Fatter W J Ringer (England)- Most interesting

Mr Jogesh Chandra Chatterjee (Lucknow)-Interesting and fasci nating

Mr Fenner Brockway (M P London)- I have read Animal Conference and think it relfects in a simple and picturesque born the agreement between human beings to live together in peace and co operation It is a parable which will appeal specially to the East

Mr S H Raza (Karachi) Read with great interest

From the cover back of the book Nutritive Values by Shaukat Usmani—

Dr Sampurnanand (Lucknow)- I congratulate you (Publisher) on bringing out Sri Shaukat Usmani s book Animal Conference

Alec Harrison, Editorial & Literary Agent London— The function of a good book Animal Conference is that it should comfort the afflicted and afflict the comfortable These writings (Animal Conference Night of Eclipse and Four Travellers) certainly come within that high category and they are obviously books that have been written with a high sense of vocation

'National Herald' (Lucknow)— The Book a satire on nuclear weapons reflects the author s strong condemnation of war mongers

'Inquilab' (Bombay)- It is a full throated satire on all those who have estranged away from the moral values and especially on those who are engaged in playing with the lives of others and on those who are bent upon spreading destruction

'Indian Express' (Bombay)- The fact that within the short period of four years the book has gone into the 3rd edition shows the popularity

with Lovers of Satire The press and the public have acclaimed the book as a Peace Message Besides conveying a very important message to humanity at large the book provides a delightful reading

'Bharat Jyoti' (Bombay)– Those who watch with alarm the present trend of newer and newer war weapons will appreciate this small volume with gratitude

'ऐनिमल कौन्फ्रेंस' का उत्तरार्द्ध लिख जाने स पहले ही यह सारे शिक्षित जगत मे इतनी बहुचर्चित हो चुकी थी कि वह बिना 'जगल-कौन्फ्रेंस के भी अपने आप में पूर्णता प्राप्त करने म सक्षम हो सकी। शायद कइयों को 'जगल कौन्फ्रेंस' देखने की आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई। ऐसा बहुत कम रचनाओं क साथ होता है। हिरोशिमा और नागासाकी पर अमरीका द्वारा परमाणु बम छाड़कर सपूर्ण मानव जाति की आत्मघाती साजिश का सकेत दिए जाने पर वह शौकत उस्मानी ही दुनिया का पहला व्यग्यकार था जिसने तत्काल 'ऐनिमल कौन्फ्रेंस' का प्रभावशाली प्रत्याक्रमण करके शातिकामी विश्व को अपनी क्रातिकारी विश्व चेतना का परिचय प्रदान किया। कबीर की साध्य फिर भी साफ दो टूक सीधी वाणी की यह एक ऐसी चोट थी जो मर्म को चटका देती थी। मानवता की सुरक्षा म उसके दुश्मन साम्राज्यवाद पर जो हथियार उस्मानी के पास था उसे उसने अत्यत कुशलता के साथ चला दिया 'ऐनिमल कौन्फ्रेंस' ने एटम बम के धमाके के व्यापक प्रभाव के व्यापकत्व को चुनौती द डाली।

मनीषियों ने कृति को विश्व के लिए शाति संदेश' के रूप में अभिव्यक्त करक उसका उपयुक्त मूल्याकन किया है।

मैनज्युइन रिपब्लिक' के आरभ में आजादी की प्राप्ति के तत्काल बाद क अवसरवादियों पर चोट करते हुए कहा गया है कि किस प्रकार महान् स्वतत्रता के वफादार सघर्ष सेनानियों का पीछ धकेल कर वे प्रशासन से चिपक गए और अपनी स्वार्थसिद्धि हेतु आगे बढ़ कर घुसपैठ करन में कामयाब हो गय।

विन्सटन चर्चिल क चहर की समानता कुत्ते क शब्दों में व्यक्त की गई As a matter of proved universally accept fact the face resembles with that of our clan in the line of Bull dog

अमरिका की नैतिकता का नमूना– Hitler it is said had full control over all Atomic energy but this Unholy task was left to USA to use the Atom Bombs in Hiroshima and Nagasaki

एसे और इनस भी तीख व्यग्य प्रहार सारी एनिमल कौन्फ्रेंस में हर कहीं उपलब्ध हा जायेंगे। विस्तारभिय स बचने क लिए इतना ही काफी हागा।

प्रस्तुत रचना क सरचनात्मक सगठन या अध्ययन करन म शौकत उस्मानी

के गहरे अनुभवों का परिचय मिलता है। 'मैंनजुइन रिपब्लिक्स' की प्राक्कल्पना, 'ऐनिमल कॉन्फ्रेंस' म चुनाव पद्धति का होना, एजेन्डे पर बहस, फिर प्रस्ताव-बीमारी के लक्षण, निदान और उपचार तथा उपचार के बाद निगरानी का प्रबध। फिर प्रस्तावों को नीचे की जड़ों तक सार्वजनिक बनाने हेतु Water Animal Conference' और Bird Conference के रूप म विभागीय सगठनो के सम्मेलनों का आयोजन, जिनमें केन्द्रीय पर्यवेक्षक द्वारा रिपोर्टिंग करना, अत में एक 'सविधान' को स्वीकृत और अगीकृत करना और फिर 'सामूहिक नृत्यगान' के साथ 'सुखातिकता' की भारतीय साहित्य परम्परा का निर्वाह करते हुए 'एनिमल कॉन्फ्रेस' की परिसमाप्ति की घोषणा। पुन उत्तरार्द्ध में सब विभागों सहित एक 'प्लेनम' के रूप में 'जगल कॉन्फ्रेंस' को सयोजित कर उसे सैद्धातिक रग देना। इतने लघुकाय ढाचे का इतना सुव्यवस्थित इतना सुन्दर स्वरूप। बहुत कम, बहुत ही कम देखने को मिला।

'ऐनिमल कॉन्फ्रेंस' में मानवेतर जीव-जगत के विविध प्राणियो और मानव के स्वय के भी हावभाव, स्वभाव और आवेग, आवेश, सहजता और रहस्यमयता, कुटिलता, क्रूरता, चतुरता एव तस्करी, चाकरी व चाटुकारिता का समेकीकरण करके उसको जीवन्त लेखाकन का उदाहरण बना दिया गया है। यों तो चित्रमयता की उपलब्धि सर्वत्र है, किन्तु इतना कुछ ही देख लेना अपनी याददाश्त को ताजा करने के लिए सुविधाजनक रहेगा— The lion raised his head, as if wishing and the elephant caught the gesture in quite a friendly manner The lion smiled and with great earnestness and confidence said (etc) The elephant raised high his massive trunk in appreciation laughed and said- Hey! well well! But what about your (lion's) eaternal adviser, Miss Fox since when have you stopped consulting her good self? Cow shook her moon like horns, camel his long neck dog wagged his tail and the monkey quivered his nostrils in assent

उल्लू की विनाशक क्षमता का नमूना उल्लू की वाणी में ही निम्नाकित पद्याश (लबी कविता का अतिम भाग) देखने योग्य है जो तेहरान के समाचार पत्र 'खल्क' में उल्लू के चित्र सहित प्रकाशित हुआ –

Sadha Yateem O La Maken (Hundreds of orphans and homeless)

Aanan Ke and Be Khaniman (Those who have no homes of their own)

Dar Kunj Har Veeren Dookan (In the corners of every desolate shop)

Beeni ham Agosh i Sagn (You will find them by the side of dogs)
Aan ast Choonan I enast chuneen (That is like that this is like this)
Iran Nagar Veeran Ba Been (See Iran and find desolate)

शौकत उस्मानी ने भारत की आजादी के लिए क्रातिकारी भूमिका निभाने हेतु यायावरी की। वे दुनियाभर के क्रातिचेता व्यक्तियों के सर्वाधिक प्रिय व्यक्ति बने। अनेक सभ्यताओ और सस्कृतियों को आत्मसात् किया। अनेक भाषाओं पर आधिपत्य किया। फिर भी धरती से जुड़े रहने के कारण शास्त्रीयता का अपने पर कभी हावी नहीं होने दिया। बड़ी-बड़ी गहरी सैद्धांतिकताओं का आम लोगों की सरल भाषा में सहजता से कह जाना उस्मानी की अपनी खूबी थी। लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग हर जगह मिल जाएँगे। जैसे— Joinda Yabinda (Persian)-(One who seeks finds) या 'जिन खोजा तिन पाइया', 'चट मगनी पट ब्याह', काजी जी दुबले क्यों ? शहर की फ्रिक में (या देश की चिता से), केम छे, सारा छ (गुजराती) या कैसे हो–सब ठीक।

फिर भोज पत्र', 'पारस पत्थर, बिल्ली को शेर की मौसी लोमड़ी शेर की सलाहकार, म्याऊ-म्याऊ, जानवरों की अलग-अलग प्रवृत्तियों के सकेत, मिया मिट्ठू' बोलो, Shakh I AAHOO (हरिण के सीगों पर प्रेमियों द्वारा आवास निर्माण) तथा आदमी के पख लगाना आदि।

इस अभूतपूर्व साहित्यिक व्यग रचना में उस्मानी ने अपनी उस कल्पना का उजागर किया है जिसका आधार विश्व की वह यथार्थ दुर्घटना है जिसने मानव द्वारा मानवता के अस्तित्व को ही समाप्त करने की सभावना व्यक्त कर दी। ऐनिमल कॉन्फ्रेंस, नाभिकीय हथियार रूपी मृत्यु के महापुज से जूझनवाली शाति शक्तिया का सवेदनात्मक सबल बन कर सामने आई। इसीलिए विश्वभर में इसका इतना सम्मान किया जाना उसका प्राप्य ही कहा जायगा।

जब मनुष्य मानव जाति का ही समाप्त करने की तैयारी कर चुका तो सारी इन्सानियत के 'कॉमरेड' शब्द की सार्थकता ही कहाँ रही। साथ सघर्ष करके जीने मरने का अभिव्यक्त करने के लिए सर्वाधिक इस शब्द का उपयोग दुनियाभर के कम्युनिस्टों और अन्य वामपथियों ने किया। जवाहर लाल नेहरू भी Friends and Comrades का प्रयोग अपने सबोधना में किया करते थे (जैसा कि 'ऐनिमल कॉन्फ्रेंस' म जगह जगह किया गया है)। शौकत उस्मानी द्वारा दुनिया की एक ऐसी भयानक परिस्थिति सामने पेश किया जाना जिसम मौत का भय है, और यह भय ही है जिसने नभचर, थलचर और जलचर सभी का अपन पारस्परिक वैमनस्य का छोड़ने को विवश किया और अब सभी एक होकर अपने एकमात्र दुश्मन मनुष्य के खिलाफ मार्चेबन्दी में 'कॉमरेड' बन गए। 'कॉमरेड' का प्रयोग जब शेर के द्वारा अपने से कमजोर या अपने ही शिकार के लिए किया जाता है तो साफ तौर पर उसमें उद्देश्य की एकरूपता दिखाई देती है। एकता के लिए ही हिंसक अपनी हिंसक प्रवृत्ति को छोड़कर मासाहार तक छोड़ने को तैयार हो जाते है। कॉन्फ्रेंस के वातावरण की तुलना वामपथियों की काग्रेसों से की जा सकती है।

एक ध्यान देने योग्य पहलू यह भी है कि ऐनिमल कॉन्फ्रेंस की अध्यक्षता

'शेर की सलाहकार' मिस फॉक्स (Miss Fox) करती है। अब मिस फॉक्स अबला नारी नहीं (जैसा कि पुरुष प्रधान समाज ने उसे कर दिया) और न ही नारी जाति की होने के कारण उपेक्षित है, बल्कि शौकत उस्मानी ने कॉन्फ्रेस के माध्यम से सर्वोच्च सम्मान का स्थान देकर पुरुष प्रधानता के फलस्वरूप पैदा हुई सारी विकृतियों को चुनौती दे डाली है। उस्मानी ने इस गद्य काव्यमयी लेखाकनी के माध्यम से अपने उच्चतम मूल्यों को अत्यत चतुरता के साथ अभिव्यक्त किया है।

ऊँचे दर्जे के समीक्षक की समीक्षा यदि उस्मानी के साहित्य को मिल पाती तो निस्सदेह भारतीय साहित्य के इतिहास मे यह लेखक अनेकों से अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता। अब भी उस्मानी साहित्य का गहराई से अध्ययन किया जाय और उसकी उपलब्धियो को कसौटी पर उतारा जाय तो वह क्रातिकारी व्यक्ति साहित्य की भी एक अमूल्य धरोहर साबित हा सकता है।

'ऐनिमल कॉन्फ्रेस' एक असाधारण कलाकृति है 'सतसैय्या' के तीर की तरह मार करने वाले 'दोहों' की तरह। आवश्यकता है आज भी इसके हिन्दी-उर्दू-अनुवाद घर-घर पहुँचाए जाने की। साम्राज्यवादी साजिशों क विरुद्ध सघर्ष आज भी उतना ही प्रासगिक है।

* * * *

Night of the Eclipse-(A collection of 8 short stories) by Shaukat Usmani Published by Usta Publications Corp Kitab Mahal Elphinstone Street Saddar Karachi Copyright with the author 2nd Edition June 1951 Dedicated to Chekhov who inspired me

प्रस्तावना के अनुसार शौकत उस्मानी ने ये कहानियाँ अपनी जेलयात्रा के तीसरे दौर अर्थात् सन् 1940 से 1945 के मध्य में जेल जीवन भोगते समय लिखीं। सामान्यतया वे प्रेमकथाओं को तब तक नहीं उठाते जब तक कि उनका आधार सामाजिक-राजनीतिक न हो। सन् 1945 के बाद लेखक के पास करीब ऐसी 60 कहानियाँ थीं जिनका प्रकाशन नहीं हो सका था। इसी प्रस्तावना मे लेखक ने बबई की अपनी घनिष्ठ मित्र डॉ (कौंटेस) वेरा क्रासी के प्रति आभार व्यक्त किया है जिन्होंने कतिपय कहानियों और उस्मानी की अन्य रचनाओं में मूल्यवान सशोधन देने का कर्त्तव्य वहन किया।

नाइट ऑफ द एक्लिप्स' में निम्नाकित आठ कहानियों में सकलित किया गया है—

(1) Sweeper Girl	(भगिन लड़की)
(2) Night of Eclipse	(ग्रहण की रात)
(3) I was absent Alas	(खेद, मै अनुपस्थित था!)
(4) At her house	(उसके घर पर)

शौकत उस्मानी ने भारत की आजादी के लिए क्रातिकारी भूमिका निभाने हेतु यायावरी की। वे दुनियाभर के क्रातिचेता व्यक्तिया के सर्वाधिक प्रिय व्यक्ति बने। अनेक सभ्यताआ और सस्कृतियों को आत्मसात् किया। अनेक भाषाओं पर आधिपत्य किया। फिर भी धरती से जुडे रहने के कारण शास्त्रीयता को अपने पर कभी हावी नहीं होने दिया। बड़ी-बड़ी गहरी सैद्धातिकताआ को आम लागो की सरल भाषा में सहजता से कह जाना उस्मानी की अपनी खूबी थी। लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग हर जगह मिल जाएँगे। जैसे— Joinda Yabinda (Persian)-(One who seeks finds) या 'जिन खोजा तिन पाइया', 'चट मगनी पट ब्याह', काजी जी दुबले क्यो ? शहर की फ्रिक में (या देश की चिता से), केम छे, सारो छे (गुजराती) या कैसे हो—सब ठीक।

फिर 'भोज पत्र', 'पारस पत्थर', बिल्ली को शेर की मौसी, लोमड़ी शर की सलाहकार, 'म्याऊ-म्याऊ, जानवरों की अलग-अलग प्रवृत्तिया के सकत, मिया मिट्ठू' बोलो, *Shakh I AAHOO (हरिण के सीगा पर प्रेमिया द्वारा आवास निर्माण)* तथा आदमी के पख लगाना आदि।

इस अभूतपूर्व साहित्यिक व्यग रचना मे उस्मानी ने अपनी उस कल्पना को उजागर किया है जिसका आधार विश्व की वह यथार्थ दुर्घटना है जिसन मानव द्वारा मानवता के अस्तित्व को ही समाप्त करने की सभावना व्यक्त कर दी। ऐनिमल कॉन्फ्रेंस, नाभिकीय हथियार रूपी मृत्यु के महापुज से जूझनेवाली शाति शक्तियों का सवेदनात्मक सबल बन कर सामने आई। इसीलिए विश्वभर म इसका इतना सम्मान किया जाना उसका प्राप्य ही कहा जायगा।

जब मनुष्य मानव जाति को ही समाप्त करने की तैयारी कर चुका तो सारी इन्सानियत के 'कॉमरेड' शब्द की सार्थकता ही कहाँ रही। साथ सघर्ष करके जीने मरने को अभिव्यक्त करने के लिए सर्वाधिक इस शब्द का उपयोग दुनियाभर के कम्युनिस्टो और अन्य वामपथियों ने किया। जवाहर लाल नहरू भी Friends and Comrades का प्रयोग अपने सबोधनो में किया करते थे (जैसा कि 'ऐनिमल कॉन्फ्रेंस' मे जगह जगह किया गया है)। शौकत उस्मानी द्वारा दुनिया की एक ऐसी भयानक परिस्थिति सामने पेश किया जाना जिसमें मौत का भय है, और यह भय ही है जिसने नभचर, थलचर और जलचर सभी को अपने पारस्परिक वैमनस्य को छोड़ने का विवश किया और अब सभी एक होकर अपने एकमात्र दुश्मन मनुष्य के खिलाफ मोर्चेबन्दी में 'कॉमरेड' बन गए। 'कॉमरेड' का प्रयोग जब शेर के द्वारा अपने से कमज़ोर या अपने ही शिकार के लिए किया जाता है तो साफ तौर पर उसमें उद्देश्य की एकरूपता दिखाई देती है। एकता के लिए ही हिंसक अपनी हिंसक प्रवृत्ति को छोड़कर मासाहार तक छोड़ने को तैयार हो जाते है। कॉन्फ्रेंस' के वातावरण की तुलना वामपथियों की काग्रेसों से की जा सकती है।

एक ध्यान देने योग्य पहलू यह भी है कि ऐनिमल कॉन्फ्रेंस' की अध्यक्षता

'शेर की सलाहकार' मिस फॉक्स (Miss Fox) करती है। अब मिस फॉक्स अबला नारी नहीं (जैसा कि पुरुष प्रधान समाज ने उसे कर दिया) और न ही नारी जाति की होने के कारण उपेक्षित है, बल्कि शौकत उस्मानी ने कॉन्फ्रेंस के माध्यम से सर्वोच्च सम्मान का स्थान देकर पुरुष प्रधानता के फलस्वरूप पैदा हुई सारी विकृतियो को चुनौती दे डाली है। उस्मानी ने इस गद्य काव्यमयी लेखाकनी के माध्यम से अपने उच्चतम मूल्यों को अत्यत चतुरता के साथ अभिव्यक्त किया है।

ऊँच दर्जे क समीक्षक की समीक्षा यदि उस्मानी के साहित्य को मिल पाती तो निस्सदेह भारतीय साहित्य के इतिहास में यह लेखक अनेकों से अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता। अब भी उस्मानी साहित्य का गहराई स अध्ययन किया जाय और उसकी उपलब्धियो को कसौटी पर उतारा जाय तो वह क्रातिकारी व्यक्ति साहित्य की भी एक अमूल्य धरोहर साबित हा सकता है।

'ऐनिमल कॉन्फ्रेंस' एक असाधारण कलाकृति है 'सतसैय्या' क तीर की तरह मार करने वाले 'दाहों' की तरह। आवश्यकता है आज भी इसक हिन्दी-उर्दू-अनुवाद घर-घर पहुँचाए जाने की। साम्राज्यवादी साजिशों के विरुद्ध सघर्ष आज भी उतना ही प्रासगिक है।

* * * *

Night of the Eclipse-(A collection of 8 short stories) by Shaukat Usmani Published by Usta Publications Corp Kitab Mahal Elphinstone Street Saddar Karachi Copyright with the author 2nd Edition June 1951 Dedicated to Chekhov who inspired me

प्रस्तावना के अनुसार शौकत उस्मानी ने ये कहानियाँ अपनी जेलयात्रा के तीसरे दौर अर्थात् सन् 1940 से 1945 के मध्य में जेल जीवन भोगते समय लिखीं। सामान्यतया वे प्रेमकथाओं को तब तक नहीं उठाते जब तक कि उनका आधार सामाजिक-राजनीतिक न हो। सन् 1945 के बाद लेखक के पास करीब ऐसी 60 कहानियाँ थीं जिनका प्रकाशन नहीं हा सका था। इसी प्रस्तावना में लेखक ने बबई की अपनी घनिष्ठ मित्र डॉ (कौंटेस) वेरा क्रासी के प्रति आभार व्यक्त किया है जिन्होंने कतिपय कहानियों और उस्मानी की अन्य रचनाओं मे मूल्यवान सशोधन देने का कर्त्तव्य वहन किया।

नाइट ऑफ द एक्लिप्स' में निम्नाकित आठ कहानियों में सकलित किया गया है—

(1) Sweeper Girl	(भगिन लड़की)
(2) Night of Eclipse	(ग्रहण की रात)
(3) I was absent Alas	(खेद, मै अनुपस्थित था!)
(4) At her house	(उसके घर पर)

(5) Native Bracelets (देशी कगन)
(6) Frigidity (बेरुखी)
(7) Love Villa (प्रेमनगर)
(8) Rukmini (रुक्मिणी)

हरिजन या भगिन लड़की के लिए यह समझ पाना मुश्किल है कि उसे मैला क्यों ढोना पड़ता है जबकि ब्राह्मण' या अन्य उच्च वर्ण के लोगों को वही काम क्यों नहीं करना पड़ता। दादी केवल 'भगवान की देन' और 'पिछल जन्म के पापों का फल' कह कर उसका निरुत्तर कर देती है।

उपक्षित, अपमानित और प्रताड़ित रूपा जवान और खूबसूरत औरत बन जाती है। सब उसकी ओर ललचायी नजर से घूरते है और मनचले फबतिया कसते है। पर वह सारा ज़हर पी कर चुप रहती है।

आखिर इसी तिरस्कृत जिन्दगी के बोझ को ढोते-ढोते वह क्षय राग से ग्रस्त होकर दु खातिका को वरण कर लेती है। आज भी उस जैसी रूपाएँ खिलते ही मुझा जाती है और पता नहीं कब तक देश के इस तबके का यही हाल बरकरार रहेगा।

अगली कहानी का शीर्षक है 'नाइट ऑफ द एक्लिप्स' (ग्रहण की रात) यही शीर्षक उस्मानी के इस कहानी सकलन का भी है।

ग्रहण क कारण घर मे सभी गगास्नान को चले जाते है तो चित्रकार बच्चन को मौका मिल जाता है और वह अपनी प्रेमिका माधुरी से मिलने उसके घर चला जाता है। सयोगवश वह भी उस घर म अकेली मिल जाती है। ग्रहण की उस रात को उनका मिलन होता है। एक दूसरे के बीच वायदे हा जाते है लकिन जातिगत सकीर्णता के कारण शादी नही होती और अत में उनके पुनर्मिलन की सभावनाए समाप्त कर दी जाती है और उन दोनों की जिन्दगी में वैसी ग्रहणरात्रि कभी नहीं लौटती। इस तरह घुल-घुल कर मरते-मरते जीने की दास्तान बन जाती है।

लतीफ़ और सीता प्यार करते है और एक दूसरे के लिए सब कुछ करने की सोचते है तो साप्रदायिक सकीर्णता बीच में मोटी दीवार बन कर उन दोना के विवाह की सभावनाओं का ध्वस्त कर देती है। कथानक रेलयात्रा में वर्णित किया जा रहा है अर्थात् लतीफ अपने बीते दिनों की कहानी अपन दोस्तों का सुना रहा है और अनजानी पहचानी कृशकाय सीता पास म बैठी सुन रही है। ट्रेन जब रुकती है तो सीता अपने बच्चे का लतीफ को दे कर चौकाती हुई कहती है—'अपने भानजे को प्यार करो लतीफ!' और कहानी का पटाक्षेप हो जाता है।

At Her House (उसके घर पर) का नायक एक गरीब सुथार है। प्रेमसिह सुशिक्षित और सभ्य है। वह सरकारी कारखाने में नियुक्त है, किन्तु सुपरिन्टेन्डेन्ट कालीपदा उसे अपने घर में फर्नीचर की मरम्मत का काम करवाता है। वहाँ कालीपदा की लड़की नलिनी लता प्रमसिह से प्रेम करने लगती है। बात बढ़ती जाती है किन्तु लता का पिता प्रेमसिह से अपनी लड़की की शादी करने से इसलिए इन्कार कर

देता है कि वह गरीब है। किन्तु कथानक मे उस समय मोड़ आ जाता है जब एक रेल दुर्घटना मे कालीपदा की मौत हो जाती है। प्रेमसिह सुपरिन्टेन्डेन्ट बना दिया जाता है। नलिनी और प्रेमसिह का रास्ता साफ हो जाता है और कहानी दु खातिका बनने के स्थान पर सुखान्तिका बन जाती है।

'देशी कगन' (नेटिव ब्रेसलेट्स) का ब्रिगेडियर जनरल लार्किंग पठान कैदियों के साथ निर्मम अत्याचार करता है, किन्तु उसकी पत्नी उसके इस प्रकार के व्यवहार से घृणा करती है। वह जवान भी है और खूबसूरत भी। ब्रिगेडियर बूढा, क्रूर और रूखे स्वभाव का है। पत्नी दयालु भी है और स्पष्टवादिनी भी।

ब्रिगेडियर एक खूबसूरत जवान अफगानी गडरिये को मय उसकी भेडों के पकड कर बदी बना लेता है और उसे घर ल आता है। एक दिन अमीर हसन ब्रिगेडियर के घोड़े की काठी साफ कर रहा था तो लार्किंग की पत्नी ने उसके पास एक चमकीली चीज़ देखी और पूछा–'यह क्या है ?' 'नकली सोने के कगन।' उस लडके ने कहा

'तुम उनका क्या करोगे ?'

माँ ने मगाए है मेरी हाने वाली बीबी के लिए।'

'क्या तुम मुझे दे सकते हो, मै तुम्हारी बीबी बन जाऊँ।'

'तुम्ह लार्किंग को छोड़ना होगा।'

सौदा पट जाता है। साजिश होती है। श्रीमती लार्किंग अपने पति को शराब में ज़हर मिलाकर लड़के के साथ सुदूर भाग जाती है और अत में कगन पहन कर अमीर हसन से शादी कर लेती है।

राधारामी 'बेरुखी' (Figidity) का अर्थ नहीं समझ पाती कि इस शब्द का प्रयोग राधेमोहन ने उसे ही लक्ष्य करके क्यों किया। राधेमोहन धनवान है। उसने राधारामी क लिए गहने खरीद कर दिए और इतना खर्च किया फिर भी बेरुखी बनी रही।

राधारामी अपनी दास्तान सुनाती है कि वह कैसे रामकली वश्या के जाल में फसी जो उसके लिए ग्राहकों से दौलत बटोरती है। वह दौलत और गहने नहीं चाहती—वे सब कुछ रामकली के पास है और राधेमोहन से उसने अपनी पिछली मोहब्बत की कहानी कह सुनाई। राधेमोहन को अब पता चलता है कि यह लड़की उसके दोस्त की बेटी है और उसका असली नाम 'पार्वती' है।

दूसरे सुबह राधेमोहन पुलिस को बुलाकर पार्वती उर्फ राधारामी को रामकली के पजे से छुड़ा लेता है और उसे सकुशल अपने दोस्त अर्थात् पार्वती के पिता को सौप देता है।

लव विल्ला' (प्रेमनगर) सुनसान में स्थित भव्य, किंतु, खडहर इमारत है जिसकी रखवाली एक चौकीदार करता है और हर वृहस्पतिवार को एक महिला आ कर अपने दिवगत पुत्र की कब्र पर शमाओं को जलाती है और मिठाई बाटती है। कब्र मुस्तफा कासिम नामक धनी व्यापारी की है। एक बरसाती रात को दो राहगीर

लड़के आते है और चौकीदार उन्ह ठहरने की स्वीकृति दे देता है।

लड़का के दिल में जिज्ञासा पैदा होती है उस पुरानी इमारत के बारे में जानने की, और यहीं स कहानी शुरू होती है।

मुस्तफा कासिम एक ईसाई लड़की से प्यार करता है। उसकी माँ इसे मजूर नही करती। वह ईसाई लडकी को अपनी पुत्रवधू नहीं बनाना चाहती। माँ और बेटे म विवाद गहराता जाता है।

मुस्तफा कासिम की माँ उस ईसाई लडकी मैरी के पिता डी क्रिस्टो को जो उसी के कारखाने में मैनेजर है—रिटायर कर देती है और सपरिवार अपने देश वापिस जाने को विवश कर देती है। एक दिन कासिम को सूचना मिलती है कि मैरी को काले साप ने काट लिया और उसकी मृत्यु हा गई। इसी सदमें मे मुस्तफा कासिम ने ज़हर पी कर आत्महत्या कर ली। उसी की यादगार म उस इमारत को 'लव विल्ला' (प्रेमनगर) की सज्ञा दी जाती है।

इस सकलन की अतिम कहानी 'रुक्मिणी' है जो शौकत उस्मानी के ही अन्य कहानी सकलन 'अनमोल कहानियाँ' के हिन्दी सस्करण में सन्निहित है। यहाँ यह रचना उसी का अग्रेजी अनुवाद है। इससे यह तो साबित हो ही जाता है कि रुक्मिणी' उस्मानी की सबसे अधिक प्रिय रचनाआ में स एक है। इसका अग्रेजी अनुवाद भी उनके खुद के द्वारा ही किया हुआ है।

'रुक्मिणी मर गई के पहले वाक्य ने ही पाठक की जिज्ञासा का उभार दिया है साथ ही उसकी सवेदना का भी झकझोर दिया है। उसकी मौत पर रोने वाला कोई नही–सिर्फ उसका प्रमी रतन अलग-थलग बैठा रो रहा है।

रुक्मिणी' का बड़ी आसानी से नाट्यरूपातरण या फिल्माकन किया जा सकता है। रुक्मिणी की पीडा पता नही कितनी ही रुक्मिणियो की पीडाआ को समेट हुए है। 'राम नाम सत्' से शुरू होने वाली त्रासदी निम्नाकित दर्द में डूब कर समाप्त हो जाती है

ता सहर वो भी न छोड़ी तूने ए बाद-ए-सदा,
यादगार-ए-रा उनक महफिल थी *परवाने की ख़ाक*।

इस सकलन की लगभग सभी कहानिया में मुफलिसी और मौहब्बत दानों की पीड़ाए एक साथ अत प्रवाहमान है। रोटी और कामना की अनिवार्यता एक सार्वजनीन दबाव है।

उस्मानी ने सौ से ऊपर कहानियाँ लिखीं जिनमें आधी ही प्रकाशित हो सकी। बाकी कहाँ किस जगह रखी है इसका कोई पता नहीं और अब वे प्रकाशित हा भी सकेगी कि नहीं—इस विषय म कुछ भी नहीं कहा जा सकता। हाँ, यह अनुमान तो लगाया ही जा सकता है कि उनमें सामाजिक उत्पीड़न का उभार कर रखा गया होगा और उनकी पृष्ठभूमि में उस्मानी की अपनी चितनधारा और सवेदना रही हागी।

सरल भाषा में गहरी बात कहने क उदाहरण उपर्युक्त सकलन में यत्र तत्र सर्वत्र

मिल जायेंगे। सवाद इतने सार्थक है कि पात्र अपने परिवेश को सजीवता स सराबोर तो करते ही है साथ ही कथानक को अभिनय रूपातरण मे ढल सकने की क्षमता प्रदान करते हुए भी दिखाई देते है। अनेक स्थल गद्यकाव्यमय हाकर एक विशेष आनद की अनुभूति के शिखर का छूते हुए प्रतीत होते है।

उस्मानी की यह रचना हमारी एक और अमूल्य धरोहर है जिसकी सुरक्षा का उत्तरदायित्व हमें बखूबी वहन करना चाहिए। इसक लिए उस्मानी साहित्य सरक्षण सस्थान' का गठन भी किया जा सकता है या कोई सुव्यवस्थित और सुस्थापित सस्था भी इसकी जिम्मेवारी ओट सकती है।

* * * *

I Met Stalin Twice (मै स्टालिन से दो बार मिला)–लेखक-शौकत उस्मानी, प्रकाशक-के कुरियन, 25, बोड हाउस राड, बबई-1, मुद्रण-डी एन महल, कनाडा प्रेस, पोदार चैम्बर्स, 109, पारसी बाज़ार स्ट्रीट, फोर्ट, बबई-1, प्रथम सस्करण-1953 सर्वाधिकार प्रकाशक द्वारा आरक्षित। प्रकरण-VI पृष्ठ स 29, मूल्य-रु 1 मात्र।

पहली मुलाकात–मॉस्को में कॉमिन्टर्न कार्यालय के कमर में अगस्त, सन् 1921 ई

स्टालिन चुपचाप बैठ लोहे क पैन से लिख रहे थे। उनके होठ का लबी मूछ ने ढक रखा था, उनका चेहरा झुर्रीदार था और उस पर भागी हुई यातना झाक रही थी। कमरा साफ-सुथरा एव सामान्य सज्जावाला था। वातावरण गभीर था। चमत्कृत करने वाली असाधारणता का नाम-निशान नहीं था। यह ठीक दूसरे किसी कमरे के समान ही था। कार्ल मार्क्स, फ्रडरिक एगेल्स, रोज़ा लक्ष्मबर्ग और कार्ल लीब्रमीख्त के चित्र दीवारों की शोभा बढा रहे थे।

नौजवान शौकत उस्मानी ने कमरे में प्रवेश किया। स्टालिन न गभीर और दृढमुद्रा में देखा। उन्हाने आगन्तुक को कुर्सी पर बैठने का सकत दिया, किन्तु युवक नही बैठा। वह जल्दी में था। उस्मानी ने रूसी भाषा म कहा–'मै वापिस हिन्दुस्तान जाना चाहता हूँ, कृपया मेर जाने की व्यवस्था कर।''

पुस्तिका मे इस मुलाकात के पीछे की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि शौकत उस्मानी किन प्ररणाओं एव परिस्थितियों के कारण अपना घर छोड़कर रवाना हुए, ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन को समाप्त करने के लिए हथियारो की मदद की तलाश मे अभियान चालू किया, मुहाज़िर के रूप में अफगानिस्तान मे प्रवेश किया, अनेक असह्य कष्टो को झेलत हुए आखिर सावियत सघ की सीमा में चले गए। सोवियत सघ में अक्टूबर क्राति की रक्षा के लिए प्रतिक्रातिकारिया के विरुद्ध अर्थात् क्रातिकारी सेना के पक्ष मे युद्ध में सशस्त्र भाग लिया। केरकी की रक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करने की वजह से सावियत सरकार न भारतीय क्रातिकारियों का उच्च मूल्याकन किया। उन्ह 'होटल लक्स में ठहराया गया था।

सन् 1921 की ग्रीष्म में मास्का में कम्युनिस्ट इटरनशनल की तीसरी कॉन्फ्रेंस

हुई। इसमें भाग लेने के लिए अनक देशों के कम्युनिस्ट नेताओं स मिलन का अवसर मिला। वैसे शौकत उस्मानी पहली बार 7 फरवरी, 1921 को प्रिंस क्रोपाट्किन के अतिम सस्कार म भाग लेने के लिए आए लेनिन से मिल चुके थे और दूसरी बार उन्ह 'नई आर्थिक नीति' के पक्ष म बोलते हुए देखा था।

जब कॉमिन्टर्न ने भारतीय क्रातिकारिया को ब्रिटिश सरकार क खिलाफ हथियार देने की माग को अस्वीकार कर दिया तो उन्होंने भारत वापिस लौटकर स्वाधीनता सघर्ष में भाग लेने का निश्चय किया। इसी उद्दश्य से शौकत उस्मानी की स्टालिन के साथ उपर्युक्त पहली मुलाकात हुई थी। स्टालिन उस समय कम्युनिस्ट पार्टी के शीर्षस्थ नेता और जातीयताओं के लिए पीपुल्स कमीसार थे। उस्मानी स्टालिन से अपने लिए स्पष्ट उत्तर लेने के लिए दृढ़ निश्चय किए हुआ था।

स्टालिन कठोर दिखाई दे रहे थे। उस्मानी से बात करते समय उनका चेहरा *भावाभिव्यक्ति-रहित था। उस्मानी द्वारा भारत लौटने का कहन पर स्टालिन ने उसकी* ओर आँखें गढाते हुए पूछा— तुम् यहाँ किसलिए आए थे। क्या तुम यहाँ से पढाई किए बिना वापिस जाना चाहते हो ? उस्मानी न सोवियत सघ से हथियार दने की अपनी माग दोहराते हुए बताया कि कामिन्टर्न ने इसे स्वीकार नही किया है। स्टालिन ने जवाब दिया 'बात यह नहीं है, हम तुम्हारी मदद करना चाहते है, पर तुम्हारे खुद के लोग ही आपस म लड़ पडे है और उन्हाने ही तमाम मदद का ठुकरा दिया है।' इस बात को उन्हाने सावियत सघ म आए भारतीया में सोवियत मदद के बारे म हुए विभाजन और भारत मे काग्रेसियो द्वारा इसका प्रबल विरोध करने के सदर्भ में कहा था। जब उस्मानी ने कहा– वह उनम से किसी म शामिल नही है।' तो स्टालिन ने कहा– यह अच्छी बात है कि तुम्हारा उन विचारो से कोई वास्ता नहीं। यदि तुम जाना ही चाहत हो तो वास्तव म तुम्हारी योजना क्या है ?'

मेरी योजना पर्सिया से होते हुए जाने की है। मै पर्सियन भाषा अच्छी तरह जानता हूँ और मुझे कॉमिन्टर्न से किसी प्रकार की आर्थिक सहायता की ज़रूरत नही है।'

इस पर स्टालिन मुस्कराए और यह इस साक्षात्कार में पहली बार हुआ। उन्होंने पूछा– बिना पैसे क तुम क्या करोगे ?'

'मै दरवेश का भेस बदल कर आसानी से जा सकता हूँ।'

'इसकी जरूरत नही है। सारी दुनिया में कॉमिन्टर्न के लोग मौजूद है और वे तुम्हारी मदद करेंगे। क्या तुम मुझसे वायदा करते हा कि तुम हमार साथ सपर्क बनाए रखोगे ?

'निश्चय ही बशर्ते आप हमें हथियारा से लैस साजोसामान से मदद करे।

'याद रखो, भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस ऐसी किसी प्रकार की साहसिकता के विरुद्ध है। वे हमेशा एसी सहायता के विरुद्ध अखबारों म बयानबाजी करत है। और लेख लिखते है। उनका आशय गाधीजी द्वारा यग इण्डिया में लिखे गए इस सबध के

लेखो से था। उन्होने फिर कहा 'हम तुम्हें जाने की स्वीकृति देते है, लेकिन मै तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि तुम जब भारत पहुँचोगे तो वहाँ के हालात दखकर निराशा से घिर जाओगे, क्योंकि वहाँ एक प्रकार का अहिंसात्मक सघर्ष चल रहा है। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो वापिस यहाँ लौट आना और यहाँ हमेशा तुम्हारा स्वागत होगा।'

इतना कहकर स्टालिन ने हाथ मिलाया, कुछ मुस्कराए और इसी के साथ यह पहली मुलाकात समाप्त हो गई।

शौकत उस्मानी के अनुसार स्टालिन अपनी बात का धनी था—यह बात उसकी उपर्युक्त वार्ता के बाद में घटित होने वाली घटनाओ से साबित हो जाती है। लेकिन उस समय मै मॉस्को वापिस नहीं जाना चाहता था। मै अपने ही देश जाने का पक्का इरादा कर चुका था।'

दूसरी मुलाकात—जून, सन् 1928 में शौकत उस्मानी की दूसरी सोवियत सघ की यात्रा में सपन्न हुई। वह पर्सिया होते हुए मॉस्को पहुँचा। वहाँ उसने महसूस किया कि स्टालिन के द्वारा उसका हमेशा स्वागत किए जाने का वायदा कारा वायदा ही नहीं था, बल्कि उसमें निहित सच्चाई भी थी। जो सम्मान वहाँ उसे मिला उसकी उसे न तो आशा थी और न ही उसने इसकी कल्पना ही की थी। उस्मानी का कॉमिन्टर्न की काग्रेस के अध्यक्ष मडल में शामिल करके वहाँ बिठाया गया जहाँ एक सीट के बाद स्टालिन की खुद की सीट थी।

कॉमिन्टर्न की यह छठी काग्रेस जिस समय हो रही थी, वह विश्व इतिहास का सबसे अधिक आलोच्यकाल था। यह काग्रेस युद्ध के साये के अतर्गत हो रही थी।

मच पर स्टालिन और अन्य अध्यक्ष मडल के सोवियत साथी तो थे ही साथ ही माननीया जर्मन कम्युनिस्ट साथी क्लारा जेट्किन और साथी एल्बर्ट, इटली के एर्कोली, अमरीकी राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार लवस्टोन आदि थे। कॉमिन्टर्न के अध्यक्ष की हैसियत से कॉ बुखारिन ने चेयरपर्सन की कुर्सी ग्रहण की।

इस काग्रेस में अध्यक्ष का पद हटा दिया गया था और कॉमिन्टर्न के सबसे महत्त्वपूर्ण सदस्य को महासचिव के रूप में निर्धारित किया गया। इस पद पर सुप्रसिद्ध कॉ प्याट्निट्स्की को निर्वाचित किया गया जो छोटे कद के होते हुए दृढ़, चतुर और पूर्ण उत्साही थे और जिन्हाने कॉमिन्टर्न को मजबूत आधार प्रदान किया था।

काग्रेस का उद्घाटन करते हुए बुखारिन ने अतर्राष्ट्रीय स्थिति पर अपनी थीसिस का प्रारूप पेश किया और स्वीकृति हेतु पहला प्रस्ताव वर्ग युद्ध के शहीद कैदियों के बलिदानों के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करने से सबधित था। बुखारिन की थीसिस पर उसके पक्ष और विपक्ष में प्रतिनिधियों द्वारा विचार-विमर्श किया गया। बहुत से प्रतिनिधियों ने ट्रॉट्स्की के समर्थन में तीखी टिप्पणिया की, जा यद्यपि अप्रासगिक थीं और जिनमें स्टालिन पर यह दोषारापण किया गया था कि इससे ट्रॉट्स्की का यातना का शिकार होना पड़ा। अपने ऊपर की गई व्यग्यपूर्ण उक्तियों से स्टालिन

उत्तेजित नहीं हुए जैसा कि प्राय ट्रॉट्स्की हो जाया करता था।

उस्मानी ने निकट से स्टालिन का देखा कि वे शान्तिपूर्वक नोट लेते जा रहे थे। वे प्रत्येक आलाचक वक्ता क भाषण को अन्तिम शब्द तक धीरज के साथ सुनते रहे। उनके चेहरे पर कहीं किसी प्रकार की असहज भावमुद्रा का सकेत नहीं था जैसा कि काग्रेस के अन्य बहुत से वक्ताओं में परिलक्षित हो रहा था।

स्टालिन ने जब बोलना शुरू किया, वे इतने सहज और शान्त थे कि कोई भी श्रोता बिना गभीर हुए नहीं रह सका। उन्होंने अपना बाया हाथ पीछे किया हुआ था और दाहिना अपने सीने पर। उन्हाने सभा के सामने स्पष्ट किया कि मार्क्सवाद म दुस्साहसवाद का कोई स्थान नहीं है। फिर उन्हाने अपने तर्कों को घटनाओं के उदाहरण देकर प्रमाणित किया। उन्होंने प्रतिनिधियों का ध्यान सन् 1926 की ओर आकृष्ट किया जब ट्रोट्स्की ने सोवियत सघ की सशस्त्र शक्ति के द्वारा जर्मनी में दखल देने की इच्छा की।

स्टालिन न व्यक्तिगत दोषारोपण को दरकिनार किया और अपने कामों का सही मूल्याकन करने का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि ट्रोट्स्की क बारे में जो भी निर्णय लिए गए वे उनके व्यक्तिगत निर्णय नहीं थे, बल्कि सावियत कम्युनिस्ट पार्टी के सोलह सचिवा के सामूहिक निर्णय थे। बाद मे इस छठी काग्रेस के प्रमुख प्रतिनिधियो के सामने उन्होंने बहुत विस्तार के साथ वे स्पष्टीकरण प्रस्तुत किए जिनके आधार पर ट्रॉट्स्की के बारे म फैसले लेने पड़े थे। इस सबके बाद प्रतिनिधियों ने स्टालिन की तर्क और अभिव्यक्ति-कुशलता को तहेदिल से मान्यता प्रदान की। उन्होंने बहुत से ट्रॉट्स्की समर्थकों को सोवियत सघ और मार्क्सवाद विरोधी कार्यवाहिया के कारण दोषी साबित करके उन्हे ट्रॉट्स्की विरोधिया के रूप म बदल दिया।

इस काग्रेस के कई महीना के बाद 7 नवम्बर, 1928 को रूसी क्राति की ग्याहरवी वर्षगाठ मनाई गई। बालशोई थिएटर की सज्जा देखने लायक थी। इसम तालिया की गड़गड़ाहट के साथ मीटिंग शुरू हुई। बुखारिन और अन्य कई नेताओं के भाषण हुए। स्टालिन चुपचाप बैठे रहे और बाद म वहाँ से बिना कहे-सुने चल दिए। वे हमेशा प्रचार और दिखावे से परहेज किया करत थ। व घंटे तक भीड के बीच म बैठे उसके साथ तालियाँ बजाने में साथ देते रहे थे, मगर अत में ज्योंही खडे होकर जाने लगे, एकाएक लोगों का ध्यान उनकी ओर गया। जनसमूह ने एक स्वर से चिल्लाना शुरू किया–कॉमरेड स्टालिन, हम स्टालिन को सुनना चाहते है। स्टालिन ने कहा नहीं, कॉमरेड, मुझे बहुत जरूरी काम है, अभी आप मुझे जाने की इजाजत दें। बुखारिन आपके पास है।' ऐसा कहकर वे तालियो की गूज के बीच बाहर निकल गए।

इसी दिन की एक और घटना। सेना के जवानों और मेहनतकशों का बहुत बड़ा जुलूस, सोवियत नायकों के चित्रमय पोस्टरों के साथ नारे लगाते हुए चल रहा था। लेनिन क चित्र के पास खड़े होकर बोलते समय स्टालिन ने कहा– हमारे कॉमरड

लेनिन कभी इतने मोटे शरीर के नही थे।' माइक पर आवाज ज्यों ही दूर तक गूजी कि सब अट्टहास करने लगे।

नवम्बर 1928 में जब शौकत उस्मानी और स्टालिन की मुलाकात के दौरान बातचीत हुई तो उन्होंने कहा था कि उसे फिलहाल भारत में गुरिल्ला लड़ाई चलाने के विचार को तिलाजलि दे देनी चाहिए, क्योंकि वह व्यावहारिक नहीं है। इसके साथ ही यह आश्वासन भी दिया कि उपयुक्त अवसर आने पर वे हरसभव हर प्रकार की सहायता देंगे। तब तक इतजार करना चाहिए। उनकी इस बात से यह सकेत मिलता था कि बुखारिन को हटाया जाना प्रस्तावित है। उस्मानी को इससे बड़ी निराशा हुई।

स्टालिन ने इसके साथ यह भी चेतावनी दी कि फिर भी यदि भारत लौटकर उसने ऐसा दु साहसिक कदम उठाया तो उसे कम से कम दस वर्ष की जेल की सज़ा दी जा सकती है। गुरिल्ला लडाई छड़ने से पहले उसे उसका प्रारभिक ज्ञान और अनुभव तो हासिल करना ही होगा। इस काम के लिए उन्होंने एक चीनी कॉमरेड को नियुक्त करने का प्रस्ताव किया था जो इस तरह का प्रशिक्षण दे देगा।

उस्मानी जैसे ही भारत लौटे उन्हे मार्च, 1929 म फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। इसी पुस्तिका म उस्मानी ने लिखा—' मै ईमानदारी के साथ इस बात पर जोर देकर कहना चाहता हूँ कि मेरी विदाई तक स्टालिन मेरे प्रति बहुत सहानुभूत थे। वे हमेशा ठेठ यथार्थवादी थ और उन्हाने मरे काल्पनिक सपनों की विशृखलता की ओर इगित किया था। बाद में मैंने स्वीकार किया कि मै कल्पना की उड़ान भर रहा था, लेकिन यह सब मेरे बचपन से पड़े भावप्रधान सस्कार का प्रतिफल था। यह दुर्भाग्य की बात थी कि भारतीय समस्या के विषय मे स्टालिन की जो वस्तुपरक पकड़ थी वह न तो मेरे में और न ही मरे दोस्तो म थी। इतिहास ने साबित कर दिया कि स्टालिन सही थे।''

स्टालिन ऊपर से प्रभावशाली दिखाई नहीं देते थे जैसे कि नेपोलियन, मुसोलिनी और ट्रॉट्स्की आदि किन्तु, 'मेरी उनसे बातचीत के बाद मैंने बहसूस किया कि वे ऊपर से अल्पभाषी और भीतर से इस्पाती थे। उनमें भाववाद का लेशमात्र भी नहीं था। वे कभी-कभी ही मुस्कराते थे, बल्कि हमेशा गभीर और भावाभिव्यक्ति शून्य दिखाई देते थे। मेरा सबसे अधिक ध्यान उनके उस गहन चेहरे ने आकर्षित किया जिसमें पहले भोग गए असह्य कष्टा की खराच विद्यमान थीं।'

'स्टालिन अब इस दुनिया में नहीं है। वे इतिहास म समा गए और विश्व के दीर्घकालीन क्रातिकारी इतिहास के समुज्ज्वल पृष्ठों में अकित हो चुके। उनका नाम और साथ ही कष्टकारक रेखाओं से जर्जरित उनका चेहरा हमशा याद किया जाता रहेगा।'

I Met Stalin Twice अपनी विषय-वस्तु के अनुरूप एक विवरण प्रधान पुस्तिका है, किन्तु इसमें एक ऐसे व्यक्ति के चरित्र को उद्‌घाटित किया गया है जो एक ओर

सर्वहारा अधिनायकत्व कायम करने वाला दुनिया के रगमच का अनुपम नायक था तो दूसरी ओर अल्पसख्यक शापक वर्ग की नजरो म काटे की तरह खटकने वाला अवाछनीय खलनायक। स्टालिन के विषय में यह द्वन्द्वात्मक धारणा बनी रहेगी न केवल गैर कम्युनिस्टों के मस्तिष्क में, बल्कि कम्युनिस्टों के मस्तिष्क में भी। उस्मानी की इस रचना मे भी इस द्वन्द्व की आर इगित किया गया है, किन्तु लेखक स्वय निर्द्वन्द्व होकर स्टालिन क वैशिष्ट्य को आत्मसात् किए हुए उसकी महानता को पूरी स्पष्टता के साथ प्रमाणित करन का विवश हो जाता है।

शौकत उस्मानी न इसमें स्टालिन के साथ अपनी दोनो मुलाकातों की पृष्ठभूमि मे उन कारणो को अकित किया है जिनक हान स यह सब कुछ सभव हो सका। अपनी अन्य रचनाओं की तरह इसमें भी पहल उन कष्टों का उल्लेख है जो रास्ते की विषमताओं और भीषणताओं क फलस्वरूप भोगने पड़े। इस पुनरुक्ति ने यद्यपि प्रभावोत्पादकता को आघात लगाया है, लकिन भोगी हुई यातनाओं की स्मृति आमरण साथ रहती है।

सवादा की सहजता, निष्कपटता एव सक्षिप्तता ने यत्र-तत्र उस्मानी के नाट्य शैली कौशल को भली प्रकार दर्शा दिया है। क्रम और सार्थक बात करना स्टालिन का स्वभाव था, लेकिन उसमें निहित अनुभव और अध्ययन की गहराई सामने वाले व्यक्ति पर एक अमिट प्रभाव पैदा करती थी। स्टालिन प्राय उस नायक की भूमिका अदा करता दिखाई देता है जो प्रहारक की सारी क्षमता को चुकता कर उस पर आखिर में अपना मरणातक आघात करता है।

उस्मानी ने स्टालिन को खूब गौर से दखा, सुना और स्पष्टता के साथ बातचीत की थी। इसीलिए वे स्टालिन की वेशभूषा, कार्यालय म कार्यरत शात और सुस्थिर शीर्ष व्यक्ति की भगिमाओ तथा सभा-स्थल पर आलोचकों के कटाक्षों का धैर्य के साथ नोट लेते हुए की गभीरता और फिर बाया हाथ पीछे किए हुए और दाया हाथ सीने पर रख हुए' अपने पर प्रहार करने वालों की व्यग्योक्तियों को तर्कपूर्ण प्रत्याक्रामक उदाहरणों से काटते हुए वक्ता की विविध प्रकार की मुद्राओं को अकित करने मे सफल हा सक।

उस्मानी के लिए इस निबध को लिखना एक अनिवार्यता बन चुकी थी। उनके खुद क जीवन की घटनाएँ ही ऐसी थीं कि जिन्होंने पत्रकारों, साथिया, दोस्तों और अन्य अनेक नेताओ मे एक जिज्ञासा पैदा कर दी थी क्या तुमने स्टालिन को देखा, क्या तुम उससे मिले, तुम्हारी स्टालिन से क्या बातचीत हुई? उस समय उस्मानी ही एकमात्र ऐसे प्रामाणिक व्यक्ति थे जो स्टालिन के विषय में अधिकारपूर्ण शब्दों में कुछ कह सकते थे। यही कारण था कि उस्मानी को इन उपर्युक्त मुलाकातों का सटीक वर्णन करके सबके प्रश्नों को उत्तरित करना पड़ा। स्टालिन जीते जी और मरने के बाद आज तक और इससे आगे पता नहीं कब तक विश्वपटल पर चर्चित होते रहे या होते रहेंगे। स्टालिन बहुत से बहुत बढ़िया मानवीय कार्य कर गए—वीरता

और बुद्धिमत्तापूर्ण और बाद के चद वर्षों म 'पूजित' की श्रेणी में पहुँच कर 'साधारणत्व' को तिलाजलि दे गए।

उस्मानी का यह लेख पुस्तिका के शीर्षक के अनुरूप है अत इसकी अपनी सीमाएँ है। इसे स्तालिन को सपूर्णता से समेट सकने वाले विश्लेषण के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। यह अपने आप में पूर्ण और महत्त्वपूर्ण है।

Nutritive Values of Fruits, Vegetables Nuts and Food Cures—By Shaukat Usmani Published by Shaukat Usmani Y M C.A Wood House Road Bombay and printed by Dhirubhai K Desai at States People Press Janambhoomi Bhavan Fort Bombay 1/ Ist Edition 1962 Sole Distributors Current Book House Maruti Lane Raghunath Dadaji Street Bombay (1) Pages 192 Price Rs 6/50 in India Abroad Sh 12/6

Dedicated To the Memory of Hakim Ajmal Khan a valient fighter for freedom and well known national physician

About this Book – (on the cover flap I)

Dr Sampurnanand (Lucknow)– It is my opinion that the book should prove useful

Jogesh Chandra Chatterjee (M P New Delhi)– I hope our conutrymen will derive much benefit out of the contents of this book therefore I want its wide circulation

Sri Prakasa (Governor of Maharashtra)– It is an important subject which we in India have grossly neglected and it would be good to get proper directive in the matter so that we might be able to eat food which will be both health giving and within our means

Prof O P Molchanove (the Institute of Nutrition)–The Academy of Medical Sciences Moscow – Your book is rather original and interesting as it contains the detailed medicinal characteristics of different Fruits and Vegetables on the one hand and of different diseases on the other

About the author (on the cover Flap II)

Shaukat Usmani was born on 21/12/1901 in Bikaner was educated at Dungar Memorial College Bikaner and left home for Afghanistan and the Soviet Union during 1920 Movement

Coming back to India he was involved in political cases like the

Cawnpore conspiracy case Meerut conspiracy case and World War II detention He was passed altogether 15 years of prison life as (1) 9 5 1923 to 26 8 1927 (2) 20 3 1929 to 1 7 1935 and finally (3) 14 7-1940 to 8 1 1945 While the Meerut conspiracy case was in the court he was twice selected as workers candidate for the British Parliament once against Sir John Simon

Was the editor of Payam e Mazdoor and has written many books in Urdu and English the most known are Peshawar to Moscow Anmole Kahanian and the Animal Conference

Has travelled widely in Asia and Europe Spent 6 years in U K carrying on various researches As a journalist and contributes off and on

Fought for the great October Revolution
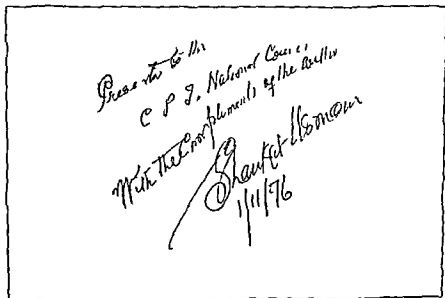
शौकत उस्मानी के हस्ताक्षर

Nutritive Values of Fruits Vegetables & Nuts and Foods Cures —शौकत उस्मानी की एक अप्रत्याशित रचना होते हुए भी इस अर्थ में स्वाभाविक लगती है कि वे तब तक अपनी अर्द्धशताब्दी की आयु पार कर चुके थे। इसकी एक विशेपता यह भी रही कि लेखक स्वय ही इसके प्रकाशक भी है और इसका

प्रकाशन वर्ष 1962 भारत-चीन सैनिक टकराहट का सबसे उलझन भरा समय रहा है जिसमें उन्हें स्वय भी जीना पड़ा है। उधर सी पी आई के अन्तर्विराध पार्टी-विभाजन की ओर तेज़ी स बढ़ रहे थे।

पृष्ठभूमि में उस्मानी इस चिकित्सकीय अवधारणा को दोहराते है कि मनुष्य में अथवा जीवन प्रणाली मे बीमारी हमेशा तब पैदा होती है जब उसम बाहरी पदार्थ इकट्ठा हो जाता है। एक उपाय तो यह होता है कि इस बाहरी पदार्थ को शरीर में घुसने और इकट्ठा होने ही न दिया जाय अथवा उसे प्रतिकूल प्रभाव पैदा करने से पूर्व ही शीघ्रतिशीघ्र बाहर निकाल दिया जाय। प्राक्कथन में प्रस्तुत रचना के प्रेरणास्रोत के विषय में बताया गया है कि लेखक को सन् 1946 में बादाम खरीदते समय किसी पुस्तक का फटा पुर्जा देखने को मिला जिसकी शीर्ष रेखा थी 'भोजन चिकित्साएँ।' दूसरे दिन उसी ठेले वाले से उसके और पन्नों के बारे म पूछा, लेकिन नही मिला। फिर उस पुस्तक को अनेक पुस्तकालयों म ढूढ़ा, किन्तु कही नही मिली। तब से लेखक इस विषय के अनुसधान म लग गया और इसके परिणाम-स्वरूप यह रचना उस्मानी की षष्ठीपूर्ति के पश्चात् उन्हीं के द्वारा प्रकाशित की जा सकी।

एक कारण यह भी बताया गया कि 'भोजन चिकित्सा' के अधिकृत विद्वाना, जैसे यू एस ए क स्व डॉ सी एस कार, एम डी , कलकत्ता विश्वविद्यालय के फलो स्व प्रो चुन्नीलाल बोस, मध्ययुग के बड़े शोधक डॉ विलियम टी फेर्नी, एम डी , विलियम कोरस औ फ्लोरेंस डेनियल, द्वारा रचित भारी-भरकम ग्रथों का अध्ययन कर सकना सवसाधारण की पहुँच में नहीं होता, अत इस उपयोगी विषय को सरल भाषा में समझाकर सर्वसुलभ कराने के कर्त्तव्य का निर्वाह किया गया है।

सुविधा के अनुसार इन भाज्य पदार्थों का विभाजन फल-सब्जियाँ, मेवे, मसाले, जड़ी-बूटियाँ और इनसे बने हुए विविध रस अथवा सारतत्व आदि के रूप म किया गया है। चिकित्सा में दो प्रकार की प्रणालियाँ होती है जिन्हें रोधात्मक (Preventive) एव समाघातिक (Combative) के शीर्षकों में रखना बेहतर होता है। चिकित्सा विज्ञान की अनेक दकियानूसी धाराएँ दमनात्मक विधि पर निर्भर भी करती है और उसे अपनाने की पूरी वकालत भी करती है, जबकि प्रगतिशील अवधारणा सारा जोर प्रतिरोधात्मक पद्धति पर देती है। यहाँ इस प्रकार बहस में न पडकर बीमारियो को आने से रोकने के उपायों को मुद्दा बनाया जा रहा है।

विविध फलों के स्वास्थ्यपरक मूल्यो, तत्त्वों और सही तरीके से उनके उपयोग को बताते हुए यह सिद्ध किया गया है कि वे शरीर में किन कमियों की पूर्त्ति करते है और किन रोगो को रोकने में उपयोगी हो सकत है। फलों मे सेव, खूबानी, केला, काली अची, किशमिश, खजूर, बड़ा बेर, अजीर गूजबेर, सतालू, अगूर, चकोतरा, नींबू, आम, शहतूत, नारगी, नाशपती, अनन्नास आलू बुखारा, अनार, सूखा आलूचा रसभरी और हिसालू प्रमुख है।

फल भूख को पैदा करने वाले तो होते ही है, पाचन क्रिया में सहायक भी

होते है। वे शरीर को रोगों से बचाते है, उसे स्वस्थ रखते हैं और साथ ही सुन्दरता भी बढ़ाते है। वे एसिडिटी को नियत्रित करते है। कच्चे फल और कच्ची सब्जियाँ एन्टीसैप्टिक होते है।

फला के उपयोग में लान से पहले यह अत्यत आवश्यक है कि उन्हें बहुत अच्छी तरह धो लिया जाय, क्योंकि उनके किसी काने में लगी रेत अथवा चिपका हुआ अन्य कोई पदार्थ अस्वास्थ्यकर हो सकते है जो इनकी रोघात्मक क्षमता को कम कर सकते है।

सब्जियों में भी अनेक शारीरिक और स्नायविक बीमारियों को रोकने के तत्त्व होते है। बहुत से लोगों को मालूम नहीं कि अपच, अनिद्रा, गुर्दे की तकलीफ, निष्क्रिय यकृत, टी बी , स्कर्वी, कैसर, सर्दी, खासी, स्नायविक खराबी तथा कई अन्य रोगों में वे बचावी कारण सिद्ध होती है। सब्जियों में सेम और मटर चुकन्दर, बदगोभी, पहाड़ी मिर्च, गाजर, अजमोदा, चसुर, लहसुन, कद्दू, करेला, मोठ, गदना, सलाद, पुदीना, खुमी, राई, अजमोदे, खसखस, आलू, मूली, रेवतचीनी, सेज, पालक, अजवायन, टमाटर और शलजम का सम्मिलित किया गया है और इनके खाद्य तत्त्वों और गुणों को दर्शाते हुए इनकी प्रतिरोधी विशेषताओं का उल्लेख किया गया है।

काष्ठफलों की दो श्रेणिया हाती है —जलपूर्ण और सूख फल जिनकी तीन उपश्रेणिया हो सकती है, जैसे–(a) चेस्टनट, नारियल (b) बादाम, कड़वा बादाम, ब्राजील काष्ठफल, पहाड़ी बादाम, पिस्ता और (c) मटर बादाम, देवदार फल आदि। ये सब प्राकृतिक चिकित्सा में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

भोजन की पाचन क्रिया क लिए मसालों, चटनी या मुरब्बे आदि का सतुलित उपयोग भी बहुत फायदेमद होता है। इनमें हींग, जयपत्र और बेरी, जीरा, इलायची, दालचीनी, मिर्च, लौग (सामान्य उपयोग फायदेमन्द जरूरत से अधिक उपयोग अनुचित), धनिया के बीज, सफेद जीरा के बीज, जायफल, काली मिर्च, हल्दी और पीपरामूल इनमे कई एटीसैप्टिक हैं।

इसके बाद मजेदार प्रसग आता है जडी-बूटियों और अन्य अनेक प्रकार के मसालो का। मनुष्य की तरह या उससे भी ज्यादा जड़ी-बूटियों का व्यावहारिक ज्ञान जानवरो को होता है। जैसे बदर को यदि साप या अन्य कोई काट लेता है तो उसका छोटा बच्चा भी किसी जड़ी-बूटी का प्रयोग कर लेता है। दात का दर्द होने पर मनुष्य किसी दवाईवाले की तरफ भागता है और उससे टिक्चर कार्डामॉक्स खरीदता है लेकिन वह इलायची, दालचीनी, लहसुन या हींग जैसी प्राकृतिक जड़ी-बूटी की आर तवज्जोह नहीं देता जो अधिक असरदार होती है।

इस पुस्तक का मूल उद्देश्य जड़ी-बूटियों और अन्य प्राकृतिक उत्पादों के रहस्यों का उद्घाटन करना है। इनमें सौंफ, सौफसन या शण, खुरासानी अजवायन के लक्षणा और गुणों की छानबीन की गई है। अनाजों के अन्तर्गत जौ, मक्का, जई या जुई, चावल, गेहूँ, सार या अर्क के अन्तर्गत तेल, खोपरे का तेल, राई का तेल और

जैतून का तेल, विविध में चॉकलेट, कॉफी, शहद एव मूग तथा मसूर, दूध और दुग्ध उत्पादों में मक्खन, पनीर, मलाई, दही तथा दूध मिश्रण से बनाई जाने वाली चीज़ों में केसर, इमली, चाय को सम्मिलित किया गया है। सबके सदुपयोग के महत्त्वपूर्ण परिणाम बताए गए है और दुरुपयोग से आगाह भी किया गया है।

पुस्तक के अतिम तीन अध्यायों में 'स्वास्थ्यरक्षण' 'कैसर और दाह चिकित्सा' तथा 'स्वास्थ्य के लिए क्या खाया जाना चाहिए' के शीर्षकों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी गई है।

भारतीय कहावत है 'स्वास्थ्य ही धन है, 'दुनिया के हर कोने से आवाज आती है 'स्वास्थ्य एक महान् वरदान है' और ईरानी कहते है–'तन्दुरुस्ती हज़ार नियामत है।' ये सब सही है लेकिन हमें स्वास्थ्यरक्षण के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पह्लुओ को भली प्रकार जान लेना चाहिए।

बाह्य विषों के प्रवेश और उनके शरीरान्तर्गत घनीभूत होने देने से बचाव के लिए (1) सकारात्मक विचार, (2) प्राकृतिक वातावरण में गहरे सास लेने की आदत बनाना, (3) सलाद का नियमित उपयोग, (4) अति भोजन से परहेज, (5) अधिकाधिक शुद्ध हवा में रहना और (6) अत्यधिक थकान से भी बचना आदि उपायों का अपनाना जरूरी है।

कुछ बीमारिया की सूची उनसे बचाव के उपाय सहित दी गई है जिसमें अम्लरक्तता, अम्लीय अजीर्ण, आयु अवधि, शीतज्वर, रक्ताल्पता, अस्थमा, कमर का दर्द, पेट का दर्द, रक्तचाप, रक्तशोधन, आत रोग, मस्तिष्क रोग, ब्रोंकाइटिस, कैंसर, कारबकल, नजला, मोतिया-बिन्द, शीतशोथ, छाती के दर्द, हैजा, सर्दी, जुकाम, उदरशूल, कब्ज, क्षयरोग, ऐंठन, घट्टा, मरोड़े, कमजोरी, मधुमेह, दस्त, डिपृथीरिया, अपच, कान के दर्द, दाद, हाथीपाव, मिरगी, नेत्रराग मूर्च्छा, स्वास्थ्य के लिए उपवास, थकान, मोटापा कम करना, भय, बुखार, बादी या उदर वायु, दुर्गन्धयुक्त सास, चकत्ते, हृदयरोग, हिचकी, स्वरभग, हिस्टीरिया, इफ्लुएजा, बच्चो का उन्माद, आतों के रोग, खुजली, पीलिया, किडनी और पेट के रोग, मृदु विरेचक भोजन या कब्ज प्रतिरोध, कोढ़, लीवर, चर्मयक्ष्मा, मलेरिया, खसरा, स्मृति, माइ्रस, औरतों के मासिक धर्म, चिन्तातुरता, स्नायुरोग, गर्दनराग, तत्रिक्राति, नाक से खून बहना, अधिक भोजन, लकवा, बवासीर, गठिया, सूखारोग, साइटिका, स्कर्वा, निद्राभग, प्राणहीनता सर्पदश, तिल्ली, पथरी, टेपवर्म, दातदर्द, पायरिया, मूत्र रोग, यौन रोग, उल्टी, वजन बढना, कृमि आदि सम्मिलित है।

कैसर और क्षय मशीनीयुग की अस्वास्थ्यकर हालाता में लोगों को रहने को विवश कर दिए जाने की वजह से तेजी स फैल रहे है। व्यावसायिकता स्वास्थ्यकर वातावरण देने में असमर्थ साबित हुई है इसलिये दोष मशीनो का नहीं व्यावसायिक मनोवृत्ति और व्यवस्था का है। कैसर और क्षय से बचने के लिये (1) विषाक्तता को कभी बढ़ने न दिया जाय, (2) कीटाणु को हानिप्रद हाने से पहले खत्म किया

जाय और (3) सही खाद्य पदार्थ प्राप्त करके उनका सदुपयोग किया जाय। कीटाणु मारने के लिए गाजर, नींबू, लहसुन, दालचीनी, केसर और इलाइची आदि उपयोगी होते है। कैसर के रोगियों को गर्म भोजन नही करना चाहिए। ताजा सब्जियों और फलो के रस का सेवन करना चाहिए और नमक मास अथवा मास पर आधारित खाद्य से परहेज करना चाहिए।

अतिम अध्याय में बताया गया है कि नाश्ते म दूध, पनीर, अडे और चाय अथवा काफी ले सकते है, दोपहर के भोजन में सब्जियों के शोरबे, रोटी और कुछ मिष्टान्न आदि। भोजन से पहले फलो का सेवन करे। रात के भोजन में गाजर, बदगोभी और फूलगोभी लना गठिया को रोकने के लिए फायदेमद है और सलाद अवश्य लें। कभी-कभी शहद भी नाश्ते के समय लें।

शौकत उस्मानी द्वारा रचित और प्रकाशित यह कृति Nutritive Values विषय और प्रकाशन दोनों दृष्टियों से लीक स हटकर है। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन को स्वतत्रता सघर्ष में समर्पित कर दिया हो, उसने अपने स्वास्थ्य की कब पर्वाह की। दूसरे वे स्वय इस पुस्तक के अलावा अपनी किसी भी रचना के प्रकाशक नहीं बने। क्या आयु का बढना और मौकापरस्तों द्वारा क्रातिकारियो को पीछे धकेल दिए जाने से उत्पन्न हताशा का होना ही उनके इस कल्याणकारी मोड को सभव बना सका? क्या आजाद दश की तत्कालीन बिगड़ी दशा पर वे और कोई व्यग्य बाण नही चला सकत थे?

उस्मानी ने अपने आपको यहाँ एक 'अनुसधानकर्त्ता' के रूप में अभिव्यक्त किया है और पुस्तक को ऐसे व्यक्ति को समर्पित किया है जो सुप्रसिद्ध चिकित्सक भी थे और एक बहादुर स्वतत्रता सेनानी भी। इस प्रकार इस शोधकर्त्ता ने 'समर्पण' के माध्यम से अपनी मूल भावना का परिचय दे दिया।

इस शोध के लिए जो अथक परिश्रम किया गया वह विरल है। इतने विशाल विषय को अत्यत सरल भाषा में समेट पाना उस्मानी की गहन तत्त्वज्ञता के बलबूते की बात थी। इसके लिए रात-दिन एक करके इस विषय के विश्वसाहित्य म डुबकी लगाना और फिर व्यवहारगत प्रयोगजन्य अनुभवों के साथ उनका समन्वय बैठा पाना किसी अटूट लगन की ओर लक्षित करता है। दशो दिशाओं के फल, सब्जियाँ, मेवे, मसाले और जड़ीबूटियों के लक्षण, गुण और उनके सदुपयोग से होने वाले विविध रोगों के बचाव को बहुत ही सटीक, अपितु सार रूप में पेश किया गया है कि सामान्य स सामान्य पाठक भी इससे प्रचुर लाभ प्राप्त कर सकता है। यहाँ तुलसीदास की इस उक्ति का स्मरण हो आता है कि 'अरथ अमित अरु आखर थोर।'

शौकत उस्मानी की यह रचना आगे की अनेक पीढ़ियों तक के लिए उपयोगी साबित होगी, क्योकि यह दीर्घकालजीवी है। आज पर्यावरण प्रदूषण ने आम आदमी को स्वास्थ्य प्रदूषण में धकेल कर उसे जल्दी मरन का माहौल दे दिया है, इसलिए

भी ऐसी पुस्तक की प्रासगिकता तो सिद्ध होती ही है, अपितु इसकी अपनी आवश्यकता को भी विस्तार प्राप्त होता है।

यह एक क्रातिकारी की उस आकाक्षा का प्रतीक है जो चाहता है कि राजनीतिक और सामाजिक बुराइयो और मूलत शोषण उत्पीड़न की व्यवस्था के फलस्वरूप उत्पन्न विकृतियों, विपमताओं और विनाशकर्त्ताओं के विरुद्ध अनवरत सघर्पशील इसान तन और मन से स्वस्थ रहें ताकि अतत वे इसमें अपनी कामयाबी की मजिल पा सकें। इसे हम क्रातिकारी की सौगात भी कह सकते है और आशीर्वाद भी।

लोकोक्तियों और मुहावरों से जुड़ी हुई भाषा की सुघड़ता जगह-जगह विषय को रोचकता प्रदान करती जाती है। इधर इसे सदर्भ ग्रथ के रूप में भी आसानी से उपयोग में लाया जा सकता है। वर्णक्रमानुसार सूची-बद्धता पुस्तक की तर्क-सगति को प्रमाणित कर देती है। यह उस्मानी के वैज्ञानिक दृष्टिकोण की परिणति भी है।

अपनी अन्तर्वस्तु की यह बहुमूल्य धरोहर है।

Historic Trips of a Revolutionary (Sojourn in the Soviet Union Shaukat Usmani Published by S K Ghai Managing Director Sterling Publishers Private Limited AB/9 Safdarjang Enclave New Delhi 110016 Printed at Sterling Printers L II Green Park Extn New Delhi 110016 Page 148 Price Rs 10/= Cover Back Introduction of the book and the author

प्राक्कथन (नई दिल्ली–1 दिसम्बर, 1976 ई)—सन् 1917 की महान् अक्टूबर क्राति का गहरा प्रभाव दुनिया के लगभग सभी पराधीन उपनिवेशों के स्वतत्रता सग्रामा और उनकी नियति पर पड़ा। मजदूर किसानों की सेना की शानदार ऐतिहासिक विजयो से रोमाचित होकर शौकत उस्मानी ने मई 1920 में घर छोड़ा और सोवियत भूमि में प्रवेश किया। वहाँ लालसना में सम्मिलित होकर तुर्कमेनिया में केरकी के अमूदरिया मोर्चे पर प्रतिक्रातिकारियों के विरुद्ध क्राति की रक्षा में भाग लिया। सोवियत सघ मे ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शिक्षा ग्रहण की। तब से सोवियत सघ उस्मानी का प्रेरणास्रोत रहा। इसी वजह स विभिन्न कालावधि में (1) पेशावर से मॉस्को, (2) कराची स मॉस्को और फिर (3) देहली से मॉस्को की तीन यात्राएँ की। प्रस्तुत पुस्तक में इन तीना ऐतिहासिक यात्राओं के वर्णन को समेकित किया गया है।

पेशावर से मॉस्को–(पहली यात्रा) भारत मे सन् 1920 की हिजरत-लहर ने पजाब के असतुष्ट भूमिहीन किसानों और छोट दुकानदारों को तो दश की आज़ादी के लिए सुदूर विदश जाने को प्रेरित किया ही, साथ ही बुद्धिजीवियों का भी उपनिवेशवादी गुलामी से मुक्त होने के लिए सकल्पबद्धता के साथ लबी यात्रा के लिए तैयार कर दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन के मध्यमवर्ग में बहुत से व्यक्ति वामपक्षी विचारधारा के थे जिन्हें सघर्ष का अहिंसात्मक स्वरूप मान्य नही था और वे हथियार और हथियारा का प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते थे। 'हिजरत' ने उन्हें प्रवास करने का अवसर प्रदान

कर दिया और इधर ख़िलाफत आन्दोलन के दोहरे (धार्मिक/राष्ट्रीय) चरित्र ने भी एक नया मोड़ ले लिया था। इस प्रकार 36000 से अधिक लोग अफ़गानिस्तान की ओर उमड़ पड़े। पहले काफिलों में 20 से 30 प्रति काफिला गए ता बाद में काफिल की सख्या बढ़ गई। इन काफिलों के वामपथी रुझानवालों का इरादा था कि सोवियत सघ से हथियार प्राप्त किए जाएँ और उन्हें लेकर और वहाँ से और अफगानिस्तान से भी सैन्य सहयोग लेकर भारत के स्वतत्रता सग्राम को सशस्त्रक्राति का रूप दे दिया जाय। ऐसे ही साहसी क्रातिकारी नौजवानों में शौकत उस्मानी अग्रिम पक्ति में थे।

तोर खान पर भारतीय सीमा पार करने पर अफगान सिपाहियों ने काफिले का स्वागत किया। पेशावर से सीमा पार का पहला महत्त्वपूर्ण शहर जलालाबाद था। वहाँ से टर्की पासपोर्ट के लिए जबल-उस-सिराज क लिए रवाना हुए और 40 मील की पैदल यात्रा करक चौथे दिन वहाँ पहुँचे। कुछ क्षेत्र में बसा हुआ यह पाँच सौ परिवारों का छोटा गाँव है। इसे तीन तरफ से पहाड़ियों ने घेर रखा है और चौथी तरफ फैला हुआ प्राकृतिक हरा-भरा विशाल मैदान है। जलवायु बहुत स्वास्थ्यप्रद है।

यहाँ काफिले ने प्रवासी समिति का गठन किया और उसकी कार्यकारिणी के पदाधिकारियों और एक अध्यक्ष का चुनाव किया। मौहम्मद अकबर खा कुरेशी को अध्यक्ष बनाया गया। काफिले म कुछ सैनिक भी थे जिनसे सैनिक प्रशिक्षण चालू किया। बजाय पासपार्ट दने के वहाँ से काफिले को आदेश देकर निर्वासित कर दिया गया क्योंकि अफगान सरकार और ब्रिटेन में सधिवार्ता चल रही थी।

काफिले के हरेक व्यक्ति ने प्रवासी समिति को 5 अफगानी रुपए जमा कराए और कध पर नकली राइफलें लेकर सब लाग चल पडे। कुछ घटों की यात्रा करके काफिले गुलबहार नामक गाँव पहुँचे।

ऊबड़-खाबड़, पहाडियाँ, विस्तृत घाटियाँ, तज प्रवाह वाली बर्फ-सी ठडी नदियाँ और कष्टप्रद रेगिस्तान के दुर्गम अफगानी हिस्से, मुँह बाये सार्पो के समान दर्रे और गुफाएँ और ढलान में जाने वाले तग पहाड़ी मार्ग, किसी का एकाकी गुजरना असभव हो—आदि का सामना करना था।

12 मीलों की पहाड़ी चढाई के बाद काफिला नीचे उतरा और बर्फ के समान ठडे पानी की पजशीर नदी के किनारे पहुँचे। इस नदी के दोनों तरफ बड़े-बड़े पहाड़ थे जैसे दो झुके हुए दैत्य हाथ मिला रहे हों। इस विकट नदी को पार करना मौत का खतरा मोल लना था। गाइडों ने आग चलने से मना कर दिया। लेकिन काफिले ने निश्चय किया कि अब पीछे हटना कायरता होगी।

काफिले के अनेक लागों के सिर पर पगड़ी थी उन्होंने पगड़ियों को उतारा और खोलकर एक दूसर की कमर में बाँधकर एक लबी जीवनपक्ति बना दी। बड़ा कठिन सघर्ष था। अत्यत ठडा पानी और बहाव इतना तेज कि [illegible] मुश्किल।

य ऐसा लगा कि नदी अपने साथ बहा ले जायगी। किन्तु बडी सावधानी और
ाक्कत के बाद वे नदी पार करने मे सफल हुए और सूखे में पहुँच कर अपने
पड़े सुखाए।

दूसरे दिन कारवा सराय से रवाना होकर कई मीलो तक चलने के बाद काफिला
ॠ पहुँचा। यह बहुत सुदर स्थान था। सफेद पहाडियो से बहते हुए झरने का कलकल
ीत सुनाई देता था। रात को लोग वहाँ सोए ही थे कि आधी रात होने से पहले
काफिले के पहरेदारों ने सीटी बजाकर खतरे की चेतावनी दे डाली। अब एक
ोर सुदरता थी तो दूसरी ओर आतकपूर्ण भयानकता। सारे लाग खड़े हो गए और
पने नकली हथियार साधे आशकित हमले का इतजार करने लगे। वे एक साथ
ल्लाए कि वे हथियारबद है किन्तु हमला करने की पहल इसलिए नहीं करेगे कि
यहाँ अफगानियों के मेहमान है। यह चालाकी सफल हा गई और खतरा टल
या।

काफिला बाबरी गुबज को पहुँचा और रात भर वही विश्राम किया। अगले
न फिर कष्टप्रद यात्रा शुरू हुई। देहसालान, हैबाक और घोर और अन्य स्थानो
गुजरते हुए सहारा क विस्तृत रेगिस्तान मे प्रवेश किया। यहाँ से गुजरते हुए लोग
कान के मारे चूर-चूर हो गए। फिर मजार-ए-शरीफ होते हुए, भीषण गर्मी झेलते
ए रातों को चलने का क्रम जारी रहा, बाल्ख के खडहरा को पार करके वे पाटकेसर
हुँचे जो अमूदरिया के किनारे बसा है।

सोवियत सघ के तिर्मिज़ मे पहुँचने पर काफिले का अभूतपूर्व स्वागत किया
या। 'भारतीय क्राति जिन्दाबाद' और 'विश्वक्राति जिन्दाबाद' के गगनभेदी नारे
ज़ने लगे। मानवता का विशाल सागर उमड़ पडा। रूसी, तुर्कमानी, उज़बेक और
ाज़िकों ने रास्ते को पक्तिबद्ध कर दिया था। सैनिक बैड 'इटरनेशनल' बजा रहा
ा और चारा तरफ लालझडे दिखाई दे रहे थे। मुहाजिरीनों की शोभायात्रा देखते
ी बनती थी। यह कबलवाले फकीरा का जुलूस लग रहा था। जिदगी म पहली
ार ये उस प्रदेश को देख रहे थे जिसमें एशिया और यूरोप के लोग इतने घुल-मिल
र रह रहे थे। कम्युनिस्ट कमीटी के नेता और साधारण सदस्यों में कोई अतर नहीं
ा। हरेक हर प्रकार का काम कर रहा था, हर प्रकार का कष्ट उठा रहा था। उन्हें
ाति की रक्षा और देश का निर्माण दोनो एक साथ करना था।

किंतु इस काफिले के अन्य लोगों के एक समूह ने तिर्मिज़ से आगे बढ़न
ी जल्दबाजी की और नावे किनारे करके ज्यों ही आगे चले, प्रतिक्रातिकारियों के
ाल म फस गये। नाव में बोखारा के अमीर के दलाल घुस गए और उनके इशार
र नावों को गलत दिशा में मोड़ दिया गया।

नावें उतार कर काफिले को कतार मे खड़ा कर दिया गया और कुन्दों से
ीटने लगे। क्रूरता से पीट लेने के बाद इन लोगों को गुलामों की तरह तेजी से
ौड़ाया गया। इन्ह बाँध दिया गया और घुड़सवार इन्हें घसीटते हुए दौड़ाए ले जा

रहे थ। न पीने को पानी और न कोई सहारा। कई बेहोश हो गए थे और कई अधमरे। ये दूसरे जिन्दा साथियो के लिए भी बोझ बन गए। कोड़ा की मार से लोगो को हाका जा रहा था। कधों पर बेहोश साथी थे। दो साथी एक को आग-पीछे उठाए चल रहे थे। घोड़ो और गधों के खुरा की धूल मुँह, आँख और नाक में घुस रही थी। उनके लिए एक दूसरे को पहचान सकना मुश्किल हो गया था। रेत फेफड़ों में भर चुकी थी। पता नहीं कितने मील घिसटने की यह दर्दनाक यात्रा थी। आखिर कारवा सराय में जाकर रुके। भूख और प्यासा से टूटे हुए सोते समय जजीर बाधे पाव को हिलाया नहीं जा सकता था। कारवा सराय मे 'काफिर' कह कर बच्चों ने पत्थर मारन शुरू किए। इन्ह पशुशाला में बद कर दिया गया। फिर एक हल्ला हुआ तो उन्ह पास के 'कस्टम्स हाउस' में बद कर दिया गया जो कलकत्ते की 'ब्लैकहोल' की कल्पना से भी अधिक भयावह था। एक छोटा सा कमरा था। उसमें फसा कर ताला बद कर दिया गया था। हवा आने की कोई गुजाइश नहीं थी। न कहीं पानी था। कैदियो के चेहरे पीले पड गए और शरीर शक्तिहीन हो गये थे। मुस्लिम नमाज के समय उन्ह ऐसे स्थान पर लाया गया जहाँ पशुआ और मनुष्यो की हड्डियाँ बिखरी पडी थी। उन्हें लगा कि अब उन्हें वहीं पर कत्ल कर दिया जायगा।

कत्ल करने के लिए तीन बार आदेश को दोहराने का रिवाज था। सब मौत का इतजार करने लगे थे। बुजुर्गों ने पहला आदेश दिया। सबके पीछे बदूकधारी खड़े थे। हिलने-डुलने का सवाल ही नही था। कुछ मिनटो के बाद दूसरा हुकम हुआ जिसने पहले की पुष्टि की। कैदियो क सिर झुके हुए थे। अब आखिरी हुक्म आन ही वाला था और व श्मशान घाट पहुँचने ही वाले थ। उन्ह और कोई आशा नही थी सिवा इस एहसास के कि वे आजादी की तलाश म कुर्बान होने को है।

आखिरी हुकुम से कुछ क्षण पहले एकाएक धमाका हुआ। क्रातिकारियों के हमले की आशका से मौत का हुकुम 'गुलाम बनाकर' रखने म बदल गया और गुलामो का बटवारा होने लगा और मालिक उन्ह जजीरा में बाध-बाध कर अपने घर ले गए। वहाँ रात-दिन उनसे काम लिया जाने लगा, अधभूखा-अधप्यासा रखकर जीते रहने को मजबूर किया जान लगा।

दो सप्ताहों तक जानलेवा गुलामी भोगी कि एक रात को आग उगलते बम आ गिर और सुबह होते ही मुल्ला आया और आजाद! कहकर जजीरे खोल दीं और बाहर निकाल दिया। इसी तरह दूसरे साथी भी छूटकर आ गए। यह इसलिए हुआ कि मुल्लाआ को सपरिवार भागने की जल्दी थी और गुलामा पर भी उनका भरोसा नहीं था या उनको खिलान का बोझ नहीं उठा पा रहे थे। जा भी हो क्रातिकारिया के आक्रमण ने हमारी जान बचा दी।

सत्तावन साथियों का काफिला चला और शीघ्र ही केरकी पहुँचा जहाँ उनका सपर्क रूसी क्रातिकारिया के साथ हुआ। इनका उन्हांने अच्छा खिलाया-पिलाया और भूमिगत मार्ग पर प्रवेश करा दिया। लेकिन इसी दौरान काफिले के दा दला

में आगे बढ़ने या पीछे लौटन को लेकर दरार पड गई।

जब केरकी को प्रतिक्रातिकारियो ने घेर लिया, तो मुहाजिरिनो के काफिले के 36 साथियों ने उनके खिलाफ हथियार उठाने का निर्णय लिया। क्रातिकारी कमेटी ने इसकी स्वीकृति दे दी। उन्हें नदी का मोर्चा सौपा गया। उन्हें राइफलें और रिवॉल्वर दिए गए। उन्होंने 18-18 के दो दल बनाए। इन्होंने रात-दिन एक करके करकी की सुरक्षा की और गोलियों के आदान-प्रदान के दौरान अनेक प्रतिक्रातिकारिया को पकड़ लिया और उनसे बहुमूल्य जानकारी के दस्तावेज बरामद करके अधिकारिया के हवाले किए। इस पर उनके लिए 'केरकी के रखवाले जिन्दाबाद' और 'भारतीय क्रातिक्रारी जिन्दाबाद' के नारे लगाए गए और उनका अभिनदन किया गया। इस सारे अभियान में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका शौकत उस्मानी की थी जो अपनी जान की परवाह किए बिना एक भयकर प्रतिक्रातिकारी जासूस की घातक साजिश को पकड़ने म कामयाब हुए।

इधर से क्रातिकारियों की लाल फौज ने दक्षिणी तुर्किस्तान पर जोरदार आक्रमण कर दिया। दोनों ओर के आक्रमण से प्रतिक्रातिकारियों की हिम्मत टूट गई और उनकी तीन हजार की टुकड़ी ने हथियार डाल कर आत्मसमर्पण कर दिया। इसका एक मुख्य कारण यह भी था कि आम सैनिक सामती जकडन से मुक्त होना चाहता था।

एक माह तक फ्रट पर रहने क बाद केरकी के रक्षक इन भारतीय क्रातिकारिया का दल बोखारा पहुँचा। बोखारा काफी बदलने लगा था। शौकत उस्मानी के अनुसार पहले 'बोखारा जारशाही का उसी तरह सैटेलाइट था जैस कि बीकानेर या जोधपुर, जयपुर या रामपुर, ग्वालियर या उदयपुर ब्रिटिश साम्राज्यशाही के सैटलाइट थे।'

ताशकद में आकर उन्हें इन्डिस्की दोम (इडियन हाउस) म ठहराया गया। यहीं बोखारा हाउस में एम एन राय, अबनी मुखर्जी, शफीक और मौहम्मद अली और कुछ सोवियत कामरेड रह रहे थे। मौलाना अब्दुल रब, एम पी टी आचार्य, अमीन सिद्दीकी और कोई फारुकी इडियन हाउस म ही थे। यहीं पर शौकत उस्मानी और साथी आपस म इनके साथ मीटिंग करके भारत की आजादी के विषय में विचार विमर्श करते थे। यहीं पर सर्वप्रथम 7 नवम्बर, 1920 को प्रवासी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की गई थी। मौहम्मद शफीक का इसका जनरल सैक्रेटरी चुना गया। शौकत उस्मानी न लगभग छ माह तक इस पार्टी को ग्रहण नही किया। क्योकि उस समय तक उन्हें मार्क्सवाद का ज्ञान नही था, और व केवल भारत की आजादी के सैनिक के रूप म ही अपना लक्ष्य निर्धारित किए हुए थे। एम एन राय की राय मानकर उस्मानी न पर्शियन और अग्रेजी की किताबे क्रातिकारी कमेटी के कार्यालय से लीं और उन्हें पढा। रात-दिन गभीर अध्ययन के बाद मार्क्सवाद समझन पर वे उसके कुशल प्रचारक बन गए। इसी दौरान पार्टी नतृत्व मे मतभेद उभरने लगे। अनेक मुद्दा पर बहस होती रहती थी।

अदीजान पहुँचने पर उस्मानी एम पी टी आचार्य से मिले जो एक अच्छे स्वभाव के क्रातिकारी थे। उन्हें हथियारों का चार्ज सौपा गया जिनमें हथगोल भी थे। लेकिन अदीजान में और कुछ नहीं किया जा सका। वहाँ से उस्मानी ताशकद चले आए। वहाँ सैनिक स्कूल में प्रशिक्षण लिया।

ताशकद से उस्मानी मॉस्को पहुँचे। वहाँ उन्हें होटल डल्वोई डोवर में ठहराया गया और भोजन व्यवस्था होटल डीलक्स में थी जहाँ देश-विदेश के बड़े-बड़ कम्युनिस्ट नेताओं स सपर्क हुआ। यहीं पर उनका अध्ययन स्थल था। मजदूर सगठन का प्रशिक्षण भी यही हुआ। यही पर अर्थशास्त्र और राजनीति का भी ज्ञान करवाया गया।

जब प्रिंस क्रोपाटकिन का निधन हुआ तो अनेक नेता श्रद्धाजलि अर्पित करने इकट्ठे हुए। वहाँ और बाद म उस्मानी एक बार और लेनिन से मिले, यद्यपि उनसे बात करने का मौका नहीं मिला। हाथ मिलाकर लेनिन ने प्रतिनिधियों के बीच उस्मानी का अभिवादन किया। लेनिन की सादगी और शीर्ष आत्मीयता का उस्मानी पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

भारतीय क्रातिकारिया की शीर्ष बैठक में आपसी मतभेदों ने प्रखर रूप धारण कर लिया। इसका असर सगठन पर व्यापक तौर पर परिलक्षित हुआ। कॉमिन्टर्न के तीसरे महासम्मेलन के समय भारतीय तीन दलों म विभाजित हो चुके थे–राय ग्रुप, आचार्य-रब ग्रुप और दास पिल्लई ग्रुप। तत्कालीन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के विकसित न हो सकने का यह प्रमुख कारण था। कॉमिन्टर्न म राय की असफलता ने इस खाई को और चौड़ा कर दिया। राय की सबस बड़ी गलती नलिनी कुमार दास गुप्ता को भारत भेजना था। उस्मानी और साथियों ने राय के खिलाफ बगावत कर दी। मॉस्को विश्वविद्यालय म उस्मानी सहित सत्रह मुहाजिरिनों ने शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शौकत उस्मानी तीसरे कॉमिन्टर्न अधिवेशन के फैसले को जानने के बाद स्टालिन से मिले और वहाँ से ईरानी वेश में 22 जनवरी, 1922 को भारत लौट आए। (स्टालिन से मुलाकात का विवरण I Met Stalin Twice म दिया जा चुका है।)

पेशावर से मॉस्को' शौकत उस्मानी की प्रथम और अपन समय की सर्वाधिक चर्चित रचना रही है। इसका प्रकाशन सन् 1927 में हुआ था। पत्र-पत्रिकाओं में इस पर काफी कुछ लिखा गया। ब्रिटिश सरकार ने इसका प्रतिकूल दिशा में इस्तेमाल किया। भारत की विभिन्न धाराओं के स्वतत्रता सेनानिया ने इस पुस्तिका से उत्साहजनक प्रेरणा ग्रहण की। काफी लोग इसकी माग करन लग।

क्रातिकारी के इस यात्रा विवरण म असह्य कठिनाइयों, अवरोधों और उत्पीड़न के विरुद्ध साहस भरे सघर्ष का यथार्थ अथ च विश्वसनीय चित्रण है। यह भोगी हुई जिन्दगी की एक ऐतिहासिक दास्तान है जो काल्पनिक कहानियों की उडान को भी फीका साबित कर देती है। इसमें आजादी के लिए मर मिटन का सकल्प है। एक उच्चतम बलिदान की तमन्ना है। क्राति की सुरक्षा के लिए समर्पण की ललक

है। बहादुरी की मिसाल भी है तो कौशल का उपयोग भी। हजारों भाड़े के प्रतिक्रातिकारियों को चद मुहाजिरीनों द्वारा भगा दिए जाने का एक अद्भुत करिश्मा है।

दूसरी ओर गहन अध्ययन की प्रक्रिया है। दुनियाभर के क्रातिकारियों के बीच गौरव के साथ खड होने की क्षमता है तो गुत्थियों में से रास्ता तलाशने की जिज्ञासा भी। उस्मानी की यह पुस्तिका अपने ढग की पहली रचना तो है ही इसका राजनैतिक विश्लेषण भी बेजोड़ है। इस सस्करण में मूल पुस्तिका का सशोधित स्वरूप प्रस्तुत किया गया है और इसके साथ दा आगे की मॉस्का यात्राओं के विवरण सयुक्त कर लेखक ने एक नई रचना का लोकार्पण किया है।

उस्मानी ने इसमें लेनिन, स्टालिन और बहुत स देशों के प्रमुख कम्युनिस्ट क्रातिकारियों और भारत के एम एन राय सहित अनेक प्रवासी भारतीय कम्युनिस्ट क्रातिकारिया का जो चरित्र चित्राकन और अपना आकलन प्रस्तुत किया है वह तत्कालीन राजनीतिक घटनाक्रमों और परिस्थितिया को सही परिप्रेक्ष्य में समझने में अत्यत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है। प्रकृति चित्रण में लेखक की शाब्दिक फोटोग्राफी देखते ही बनती है।

यह अवश्य है कहीं-कहीं सिलसिला आगे का पीछे और पीछे का आगे हो गया है और कहीं-कही अनावश्यक जोड़ भी दिखाई दे जाते है। किन्तु इनसे कृति की विपयवस्तु के मूल प्रवाह में विशेप अतर नही आया है। यह उस्मानी की जिदगी के पहले अहम कदम का इकलाबी दस्तावेज़ है। वह भी ऐसा जिसके मुकाबले मे दूसरा कोई टिक नही सकता।

'पेशावर से मॉस्को' शौकत उस्मानी का पर्याय और इसे विपर्यय करके भी कहा जा सकता है, यह बात इसके अतर्थ्य में भी, इसकी सरचना में भी तलाशी जा सकती है। इसे क्रातिकारियों के इतिहास की भूमिका के रूप में ही अकित किया जायगा।

कराची से मॉस्को (दूसरी यात्रा)—सन् 1928 के नवम्बर के तीसरे सप्ताह में ताशकद में प्रवासी 'भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना की खबर ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को ऊक-चूक कर दिया। यूरोप और अमरीका तो अक्टूबर क्राति की घटना होते ही आतकित हो गए थे। अब अपने उपनिवेशों म उन्हें 'बोल्शेविज्म' का खतरा महसूस हाने लगा। यही वजह थी कि ब्रिटिश सरकार ने भारत की आजादी के आदोलन को दबाने के लिए 'बोल्शेविक पड्यत्र केस' के नाम पर दमनचक्र चलाया। पहल 'मॉस्को-ताशकद पड्यत्र केस' में अकबर खा कुरेशी (10 साल कठोर कारावास), गौहर रहमान (2 साल कठोर कारावास), मिया अकबर शाह खट्टक (2 साल कठोर कारावास) और अब्दुल मजीद, रफ़ीक अहमद, सुल्तान खा, फिरोज़ीदीन मसूर और हबीब अहमद (कसीम) (सभी को 1 साल के कठोर कारावास) की सजाए दी गई। बाद में दो नाम और जोड़ दिए गए—मौहम्मद शफ़ीक (3 साल का कठोर कारावास) और फज़ल इलाही कुरबान (5 साल का कठोर कारावास)। सन् 1923-24 में भारत

में 'बोल्शेविक दलाल' करार देकर 'कानपुर बोल्शेविक षड्यंत्र केस' का सनसनीखेज मुकदमा दायर किया गया। जिसके चार प्रमुख अभियुक्त थे–एस ए डागे, नलिनी भूषन दास गुप्ता, शौकत उस्मानी और मुज़फ्फर अहमद। सभी को चार साल के कठोर कारावास की सज़ा सुनाई गई थी, लेकिन इनमें नलिनी भूषण दास गुप्ता और मुज़फ्फर अहमद को एक साल बाद छोड़ दिया गया जबकि डांगे और उस्मानी को क्रमश मई और अगस्त 1927 में पूरी सज़ा भुगतने के बाद छोड़ा गया।

इस दूसरी मॉस्को यात्रा के पीछे दो प्रमुख कारण थे। एक तो उस्मानी की इच्छा थी कि वे अपनी सैद्धांतिक विचारधारा को और अधिक सुदृढ़ करें और दूसरे बहुत से प्रमुख वामपंथियों का दबाव था कि वे भारत की आजादी के संघर्ष में सोवियत संघ और कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल से सहयोग प्राप्त करें। उस्मानी ने दिसम्बर 1927 में अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में खान अब्दुल गफ्फार खा से सपर्क किया। उनके साथ जोगलेकर, निंबकर, सोहनसिंह जोश, मुज़फ्फर अहमद और अन्य नेता भी थे। बादशाह खान न चार सदा स निकाल सकने में मदद करने की हामी भरी। इसी दौरान उस्मानी का सपर्क विजय कुमार सिन्हा, सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, बटुकेश्वरदत्त आदि क्रातिकारिया के साथ हुआ और इससे पहले कैद से छूटते ही गणेश शकर विद्यार्थी ने उनका कानपुर में रहने का प्रबंध कर दिया था। किन्तु कुछ समय बाद उन्हें दिल्ली में रहना पड़ा। उपर्युक्त सभी का दबाव था उस्मानी को प्रतिनिधित्व करने हेतु मॉस्को भेजने का, जहाँ कॉमिन्टर्न की छठी काग्रेस होने को थी।

जून 1928 में कराची से मालवाही स्टीमर द्वारा ईरान के रास्ते से उस्मानी मॉस्का पहुँचे। वहाँ उनका स्वागत-सत्कार हुआ और उन्हें कॉमिन्टर्न की छठी काग्रेस के अध्यक्ष मडल में शामिल कर लिया गया जहाँ उन्होंने सिकन्दर सूर' छद्म नाम से प्रतिनिधित्व किया। इस प्रकार नाम बदलने की रणनीति अपनाना क्रातिकारियों की परपरा रही है ताकि जहाँ तक हो सके अपने और दूसरे साथियो के लिए अनावश्यक मुसीबत स बचा जा सके, यद्यपि बच तो वे फिर भी नहीं सके थ। उस्मानी की तरह प्रतिनिधित्व करने वाला मे सौम्येन्द्रनाथ टैगोर का छद्म नाम 'नारायण' शफीक का 'रेज़ा' और सैय्यद हबीब अहमद नसीम का महमूद गुलाम अपिका खान लुहानी था।

इस यात्रा का अधिकाश विवरण शौकत उस्मानी की पुस्तक I Met Stalin Twice म दिया जा चुका है। छठी काग्रेस के सामने और कॉमिन्टर्न के नेताओं से व्यक्तिश मिलकर शौकत उस्मानी ने भारतीय क्रातिकारियों की इस आकाक्षा को प्रस्तुत कर दिया कि उनके पास सोवियत सघ से हथियार पहुँचाए जाए ताकि इस आज़ादी की लड़ाई को जुझारू रूप दिया जा सके, लेकिन कॉमिन्टर्न ने व्यक्तिगत हथियारबदी की याजना को मजूर नहीं किया। उस्मानी ने विजयबाबू और गणेश शकर विद्यार्थी को कोडभापा में दो पत्र दिए जो बीच में ही गायब कर दिए गए।

सोवियत यूनियन की प्रथम पचवर्षीय योजना ने सबमें एक अभूतपूर्व उत्साह पैदा कर दिया था। नई आर्थिक नीति ने देश में चहुमुखी विकास के रास्ते खोल दिए थे। सबको रोजगार और शिक्षा दी जा रही थी। सब जगह बिजली पहुँचा दी गई थी और कृषि और उद्योगों का तीव्रता से विकास हो रहा था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर और नेहरू ने मुक्तकठ से इन परिवर्तनों की प्रशसा की। कुछ महीनों के बाद कॉमिन्टर्न काग्रेस ने महान् अक्टूबर क्राति की ग्यारहवीं वर्षगाठ बड़े धूमधाम से समारोहित की। इन सब बातों का भारत में स्वागत किया गया और यहाँ ट्रेड यूनियन आन्दालन मे एक जबरदस्त उभार पैदा हो गया।

12 दिसम्बर, 1928 को भारत आने पर उस्मानी ने मजदूरों म काम चालू किया और 'पयाम-ए-मजदूर' पत्र का सपादन किया। उधर बबई से डागे और अधिकारी 'क्राति' निकाल ही रहे थे। 87 दिन तक खुली जिन्दगी बिताने के बाद 20 मार्च, 1929 को 'मेरठ षड्यत्र केस' चला और शौकत उस्मानी एव अन्य गिरफ्तार कर लिए गए। दूसरी तरफ एक ब्रिटिश पुलिस अधिकारी के कत्ल के परिणामस्वरूप एच एस आर ए के क्रातिकारियों पर 'लाहौर षड्यत्र केस' चला। काकोरी और लाहौर षड्यत्र सबधी मुकदमा में मार्क्सवादी साहित्य की बोरियाँ भरी हुई पकडी गईं।

प्रस्तुत यात्रा का वर्णन शौकत उस्मानी की खुद की अनेक रचनाआ और दूसरे लेखकों की कृतिया और पत्र-पत्रिकाओ में छपे लेखों और टिप्पणिया में प्रकाशित हो चुका है, किन्तु इसमे कई बिन्दुओं का तर्कसगत स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया गया है। कॉमिन्टर्न की छठी काग्रेस, कानपुर-मेरठ-लाहौर काकोरी' के षड्यत्र केस', सोवियत सघ की पचवर्षीय योजना की पृष्ठभूमि मे मार्क्सवाद और मार्क्सवाद-विरोध क द्वन्द्व को उजागर किया गया है। इसक साथ ही यह दिखान की कोशिश भी की गई है कि भारतीय स्वतत्रता सग्राम की इन घटनाओं का क्या महत्त्व था। उस्मानी की विशेषता यह है कि वे अपने खुद क व्यक्तित्व को प्रधानता न देकर उन मूल्यों को प्रमुख स्थान दते हैं जिनके लिए यह सब होता रहा।

शौकत उस्मानी की इस यात्रा मे वह तीक्ष्णता नहीं है जो पेशावर से मॉस्को तक' की प्रथम यात्रा के अनुभवों मं रही है। इसका विश्लेषण सवेदना को स्पर्श करन की बजाय मस्तिष्क पर अधिक असर पैदा करता है। यहाँ भी क्रम का आगे-पीछे होते रहन का सिलसिला चलता रहता है।

क्रातिकारी भावना के ज्वलत प्रतीक शौकत उस्मानी लौह पुरुष जासेफ स्टालिन के समक्ष अपने गरिमापूर्ण व्यक्तित्व का उदाहरण स्थापित कर सके—यह अपने आप में एक महान उपलब्धि थी। उनकी प्रत्येक यात्रा उस इतिहास की घटनाओं का साक्षात्कार करती है जो किसी भी युग में भुलाई नहीं जा सकती। इस वर्तमान यात्रा में भी उस्मानी को जो अमूल्य अनुभव प्राप्त हुए उनको अपनी सहज सरल भाषा में व्यक्त करके हम एक ऐसा दस्तावेज प्रदान किया है जो अनेक शोधकर्त्ताओं के लिए स्रोत का काम करता रहेगा। निस्सदेह पहली यात्रा की तुलना म इस यात्रा के दौरान उस्मानी

की राजनीतिक समझ का अधिक विकसित रूप सामने आया है। इसमें केवल दो छोटे से परिच्छेदों में ही इतने विशाल कलेवर को समेट कर पाठक को बहुत कुछ सोचने को प्रेरित कर दिया गया है। जगह-जगह मुहावरे, लोकोक्तिया, उद्धरण और प्रभाव प्रस्तुतीकरण ने उस्मानी के लेखक, पत्रकार और समीक्षक तीनों रूपों का एक भव्य परिचय प्रस्तुत किया है।

जीवन के अतिम पड़ाव के सकलन की यह कड़ी सबके लिए मनन करने योग्य है।

दिल्ली से मॉस्को (तीसरी यात्रा)—नवम्बर 1964 से अक्टूबर 1974 तक शौकत उस्मानी मिस्र मे रहे, जहाँ उन्होने पी एल ओ की क्रातिकारी इकाई 'अलफतह' के साथ काम किया और इजिप्शियन गजट' के सपादक मडल म पत्रकारिता की। वहाँ एफ्रो-एशियन पीपुल्स सोलिडैरिटी ऑर्गेनाइजेशन' तथा एफ्रो-एशियन लेखक ब्यूरो' के सगठनात्मक कार्य और चतुर्मासिक 'लोटस' को निकालने में भी सहभागी रहे। जब भारत वापिस आए तो उनकी प्रबल इच्छा थी कि मरने स पहले एक बार सोवियत यूनियन की यात्रा और की जाय। कुछ दोस्तों की कोशिशो क परिणामस्वरूप APN (Novosty Press Agencies) से निमत्रण प्राप्त हुआ कि सन् 1975 की पतझड़ के मध्य में मॉस्को आए।

8 नवम्बर, 1975 को एयराफ़्लाट वायुयान से रवाना होकर उस्मानी थोड़ी देर ताशकद म रुके और फिर मॉस्को पहुँच गए।

मॉस्को प्रवास म उस्मानी ने लेनिन का कब्रस्थल क्रेमलिन, कॉ लेनिन का फ्लैट और क्रेमलिन पुस्तकालय तथा अन्य अनेक रुचिपूर्ण स्थान देखे। उनकी इच्छा थी कि यात्रा को मॉस्को से आरभ करके फिर लेनिनग्राद अजरबेजान, तुर्कमानिया, ताजिकिस्तान और उजबेकिस्तान जाया जाय और फिर वहाँ से वापिस आकर यात्रा मॉस्को पर ही समाप्त करके वापिस भारत लौटा जाय।

मॉस्को के बदले हुए स्वरूप को देखकर उन्हे साश्चर्य प्रसन्नता प्राप्त हुई। स्वच्छ चौड़ी सड़क, आधुनिक शिल्प प्रणाली से बनी बहुमजिली इमारतें, भव्य सिनेमाघर और ओपेराहाउस, रेस्तरा और सुप्रसिद्ध मैट्रो तो विश्व के पूजीवादी देशों के टक्कर के थे अथवा कुछेक तो उनसे भी अधिक बढ़िया थे। सबका जीवन-स्तर ऊपर उठ रहा था। दूकानों पर बहुत से लोग टी वी , कैमरे पोशाकें बूट और अन्य वस्तुए खरीद रहे थे। उन्होने देखा कि पूजीवादी बाजारों में वसूल की जाने वाली कीमतों से कहीं सस्ती चीजें उपलब्ध हो रही है। हर प्रकार की व्यवस्था में सुघड़ता भी है और तत्परता भी।

12 नवम्बर, 1975 को उस्मानी लेनिनग्राद पहुँचे जहाँ APN के कॉ एलोइज ए. फिलिपेन्को ने उनकी अगवानी की। वहाँ सबसे पहले उन्होंने अरोरा को देखा जिसके नाविक सैनिकों ने सदा क्रातिकारियों की भूमिका अदा की थी। यहीं से लेनिन ने रूस की जनता क नाम घोषणा प्रसारित की थी कि 'अस्थायी सरकार को पदच्युत

कर दिया गया है' और अरोरा की महत्त्वपूर्ण भूमिका के कारण सोवियत यूनियन की केन्द्रीय कार्यकारिणी ने इसे लाल झड से सम्मानित किया था। द्वितीय विश्वयुद्ध में भी लेनिनग्राद की रक्षा म इसकी अहम भूमिका रही थी। सन् 1948 मे अरोरा को स्थायी रूप से सग्रहालय की ऐतिहासिक वस्तु का रूप प्रदान कर दिया गया।

इसके ठीक दूसरी तरफ सामने लेनिन होटल है जिसकी इमारत दस-मजिला है।

द्वितीय विश्वयुद्ध में लेनिनग्राद की रक्षा के लिए 2,504,400 जनसख्या में से 6,32,000 लोग शहीद हो गए थे। असह्य कष्टों को सहन करते हुए लेनिनग्राद की जनता ने उसे दुश्मनों के हाथों नहीं जाने दिया। 'अवशेषीय सग्रहालय' में उस्मानी को तानिया नाम की लड़की की वह डायरी दिखाई गई जिसम अन्य बाता के साथ उसके माता-पिता और रिश्तेदारों की नाज़ी बमबारी में मौत का उल्लेख था और एक मौत जिसको वह दर्ज नहीं कर सकी थी वह उसकी खुद की थी। इसके पास ही वह सदैव प्रज्वलित ज्वाला लिए शहीद स्मारक था जिसे दूर-दूर देशा के यात्री आकर श्रद्धाजलि अर्पित करत है। सग्रहालय के दाहिनी तरफ़ कुछ कदम चलने के बाद शहीदों का दफनगाह है। अतिम दिन 14 नवम्बर को उस्मानी को लेनिन का फ्लैट दिखाया गया। द्वारपाल ने जब इस विशाल इमारत के एक कमरे को खोल कर कहा–'यह कभी किसी स्कूल के अध्यापक का कमरा था, जिस कॉमरेड लेनिन ने अपने रहने का स्थान चुना था।' द्वारपाल ने लेनिन का पुस्तकालय और वे कमरे भी दिखाए जहाँ पार्टी मीटिंगें हुआ करती थीं।

लेनिनग्राड से 15 नवम्बर, 1975 को रवाना होकर शौकत उस्मानी बाकू हवाई अड्डे पर उतरे जहाँ से उन्हें होटल अज़रबेजान लाया गया। बाकू काफी बदल गया था। अब बाकू आधुनिक तेल उद्योग वाला स्थान था। बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी हो चुकी थी। इस समय अज़रबजान की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य सख्या तीन लाख हो चुकी थी। उस्मानी के सम्मान में वहाँ अक्टूबर क्राति के बुजुर्ग और समादरणीय क्रातिकारियों की एक बैठक रखी गई। इसमें अनेक विषयों पर विचार विमर्श किया गया। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि ये सभी बुजुर्ग साथी युवा पीढ़ी के सगठन कोम्सोमोल के नए कॉमरड्स के सैद्धातिक उन्नयन हतु सतत क्रियाशील थे। ग्यारह व्यक्तियों की एक समिति शैक्षिक गतिविधियों का सचालन कर रही थी। बैठक के उपसहार के रूप में उस्मानी से भारत के सबध में अनेक समस्याओं और उनके सोवियत सघ के प्रवासकाल के पुराने अनुभवों के सबध में प्रश्न किए गए जिनके उत्तर उन्होंने विस्तार के साथ दिए। फिर कोम्सोमोल के युवा साथिया के साथ इसी प्रकार की बैठक हुई। एलाबास्कुलीवा नामकी पत्रकार ने भारत में महिलाओं की स्थिति के विषय में अनेक प्रश्न पूछे। अज़रबेज़ान की चहुँमुखी तरक्की की जानकारी हासिल कर उस्मानी को बहुत प्रसन्नता हुई।

अज़रबेज़ान से वे ताज़िकिस्तान पहुँचे। दुशाम्बे ताजिकिस्तान की राजधानी

है, जिसके मनोरम दृश्यों ने उन्हें आह्लादित कर दिया। नए डिज़ाइन से बना शहर था यह। यहाँ विज्ञान अकादमी, विश्वविद्यालय और पाच प्रमुख सस्थाओ का निरीक्षण किया। यह भी एक महत्त्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र है और यहाँ की यातायात प्रणाली विकसित प्रणालियों म से है। दुशाम्बे से बीस किलोमीटर की दूरी पर सुप्रसिद्ध प्रकाश नगर न्यूरेक है। यहाँ 300 मीटर ऊँचे न्यूरेक बाघ के पीछे एक खूबसूरत कृतिम झील है।

यहाँ से उस्मानी तुर्कमेनिया पहुँचे जो पिछले पचास साल मे हर दृष्टि से एकदम बदल चुका था। इस समय 4300 वैज्ञानिकों मे से 1605 विज्ञान में डॉक्टरेट उपाधिधारी थे। 1185 पुस्तकालय, 785 क्लब, 6 थियेटर और 620 फिल्म उत्पादक इकाइया थीं। इसम 35 पत्रिकाओ के 425,000 और 27 समाचार पत्रों के 721,000 ग्राहक थे। यहाँ के पार्टी सैक्रेटरी ने उस घटना का हवाला दिया जब केरकी की रक्षा में उस्मानी और उनक साथी लडे थे। उस्मानी के लिए यह प्रसन्नता का विषय था, उन्होंने सैक्रटरी का आभार व्यक्त किया।

केरकी की सुन्दर हवाईपट्टी पर उतरने पर वहाँ के काम्सोमाल और पायोनियर्स साथियों न उस्मानी का अभिनदन किया। वहाँ फूलों और गुलदस्तों से स्वागत समारोह हुआ और केरकी के पार्टी सचिव के पास एक जुलूस की शक्ल में उन्हें ले जाया गया। आम जनता उमड पड़ी। उस्मानी उस प्रेम को अनिवर्चनीय मानते है। वहाँ उन्हे एक खास बगले में ठहराया गया। वहाँ कॉ अना-एफ अल्लाह वर्दी ने उन्हें पहचानते हुए कहा– हाँ, ये उनम से है जिनको प्रतिक्रातिकारियों ने किलिफ और केरकी के बीच गिरफ्तार कर लिया था।'

केरकी से अरखाबाद आए, वहाँ से वापिस ताशकद। ताशकद में उन्होने उस मिलिटरी स्कूल को देखने की उत्सुकता बताई जहाँ पहले प्रशिक्षण प्राप्त किया था। किन्तु अब वहाँ कुछ और ही था क्योकि उस इमारत को भूकप ने नष्ट कर दिया था। वहाँ की खेती, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाए, धार्मिक सहिष्णुता आदि के विषय मे बहुत कुछ ज्ञात कर उन्हे अत्यधिक सतोप प्राप्त हुआ।

वहाँ से वे वापिस मॉस्को आए जहाँ पार्टी की 25वी काग्रेस की तैयारी चल रही थी। मॉस्को के अनेक स्थाना और पार्टी के वरिष्ठ साथियों से मिलने के बाद नवम्बर 1975 के अत में शौकत उस्मानी वापिस भारत आए।

प्रत्यक क्रातिकारी में मुख्य रूप से उच्च चारित्रिकता, गहन चितन प्रतिभा, सकल्प समन्वित भाव-प्रधानता और आमरण सक्रियता का समावेश हुआ करता है। शौकत उस्मानी में ये सब विशेपताए जीवन के उषाकाल से ही विकसित हाती रही है। दिल्ली से मॉस्को की यात्रा को भावप्रधान कहा जाय तो अनुपयुक्त न होगा। मरने से पहले एक बार फिर समाजवाद' के विकसित स्वरूप को देखने और जिस क्राति की रक्षा के लिए उन्होंने अपनी जान की बाजी लगा दी थी और उसमें सफल हुए थे–अर्द्ध शताब्दी बाद के उस समाजोद्यान का सौंदर्य अपनी आखों के माध्यम

से अन्तर्पटल पर अकित कर फिर सब कुछ को निश्शप कर देने की आकाक्षा लिए प्रस्तुत यात्रा का आयोजन था। इस महत्त्वपूर्ण अवसर की प्राप्ति के फलस्वरूप उन्होंने जिस आखों देखे बदलाव का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत किया है वह विश्व इतिहास के लिए एक प्रामाणिक दस्तावेज है।

प्रस्तुतीकरण ने रचना का एक ऐसा स्वरूप धारण कर लिया है जिसमें उस कालावधि के पचास सालों क विश्व इतिहास की झलक, उसके स्मृतिचित्र, तथ्यात्मक विश्लेषण तथा विवेचन, काव्यात्मक भावमयता तथा दो व्यवस्थाओं की तुलनात्मक समीक्षा का सुगठित समन्वय है। यह कागद की लेखी' नहीं, बल्कि आखिन देखी' हकीकत और भोगा हुआ सत्य है। ऐसा सयोग अन्यत्र उपलब्ध नहीं। चौहत्तर साल की उम्र के शौकत उस्मानी जब ईरान के कवि हाफिज की कविता का निम्नाकित अश न्यूरेक मे छोटी सी सिलाई शिक्षण सस्था की प्रशिक्षार्थी लडकियों के सामने गा कर सुनाते है—

Dukhtara Tajık boodıe Khana dar Kabul boode
ba mullah Mohammed Jan

अर्थात् 'तुम ताजिक पुत्रिया थी, तुम्हारा घर काबुल में था और तुम मुल्लाह मौहम्मद जान के साथ थीं।' तो लडकिया खुशी से झूमती हुई दोहराने लगती है। जब तुर्कमेनिया की कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव 50वीं वर्षगाठ के उपलक्ष म उस्मानी को दो एलबम, एक Medallıon और एक सोने का तमगा भेट करत हुए उस्मानी को केरकी की रक्षापक्ति के योद्धा क रूप में प्रस्तुत करते है तो वे भावविह्लिल हो उठते है।

यात्रा के निष्कर्ष के रूप में शौकत उस्मानी कहते है कि–'मै सिर्फ यही कह सकता हूँ कि आज सोवियत सघ मे मानवीय उपलब्धियों की जो भी आश्चर्यचकित अभिव्यक्ति है वह लेनिन की पार्टी 'सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी' के द्वारा प्रेरित और निदेशित जनसाधारण के सकल्पित-समर्पित सामूहिक अथक परिश्रम की बदौलत है।'

छोटे-छोटे चार अध्यायो में सब कुछ समेट लिया गया है। भाषा म शास्त्रीयता से बचने की उनकी अपनी आदत है। लाकायतिकता उनका शैली वैशिष्ट्य है। मार्मिक स्थलों को छूने का अच्छा अभ्यास है। प्रवाह की सहजता में व्याघात न हो इसका सर्वत्र ध्यान रखा गया है। यह यहाँ भी है कि आज की बात कहते-कहते वे पीछे देख सकने की विवशता स छूट नहीं पाते और इसी प्रकार एक जगह कही बात दुबारा आ जाती है।

तीनों यात्राओं म आवेग का उतार सस्मरणों के रूप में निखर कर सामने आया है। यह शौकत उस्मानी के चरम विकास का एक छोर था और भौतिक जीवन की आखिरी मजिल पर पहुँच कर यह सब कुछ का उपसहार था। शरीरिक और मानसिक रूप से एक परिपूर्ण जीवन जीने वाले इस क्रातिकारी के व्यक्तित्व और कृतित्व का

वस्तुपरक मूल्याकन अभी भी अपेक्षित है।

Autobiography (आत्मकथा)—शौकत उस्मानी, (अप्रकाशित) अग्रेजी में लिखी गई इस आत्मकथा की टाइपशुदा पाडुलिपि में फुलस्केप के 464 पृष्ठ है। एक जगह अपनी किसी दूसरी रचना म उस्मानी ने लिखा है कि 'आत्मकथा' की एक प्रति किसी पूर्व समाजवादी देश में किसी शोध सस्था को भेजी गई है जो तथ्य प्रमाणीकरण की प्रक्रिया करके उसकी प्रकाश्य व्यवस्था करेगी।

'आत्मकथा' सोलह भागों में लिखी गई है जिसमें बचपन से लेकर रचनाकाल तक की खुद की जिन्दगी की प्रमुख घटनाए, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक-राजनैतिक गतिविधिया और विशप रूप से क्रान्तिकारियों और क्रान्तिकारी दलों या समुदायों द्वारा भूमिगत या खुले रूप से किये गय जुझारू क्रिया-कलापों का विश्लेषण है।

प्रथम भाग के पहले 6 अध्यायों मे बचपन, परिवार, प्रारभिक प्रभाव, मकतब और मकतब छाड़कर जैन उपासरे म स्थानातरण, उपासरे क स्कूल की पढ़ाई के बाद 'अग्रेजी की स्कूल' में पढ़ना और वहाँ से 'डूगर मैमोरियल कॉलेज' में शिक्षा ग्रहण करके मैट्रिक म पहुँचना और वैयक्तिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर घटनाआ के प्रभावो के फलस्वरूप विचारा और भावनाओ में उथल-पुथल पैदा हाना आदि दर्शाया गया है।

छ माह की आयु मे पिता चल बसे और एक साल की उम्र म माँ। यह एक साल का शौकत उस्मानी दादी और चाचियों क शब्दो म एक हृट-पुष्ट, स्वस्थ, सानुपातिक तन और सुन्दर बच्चा' था। उसन पिता को पूरी तरह नहीं पहचाना और माँ को भी। दादी को 'माँ' माना और वह भी सालों तक। जब दादी को 'माँ' से अलग करके दादी बताया गया तो बच्चे का पहली बार मोह भग हुआ। फिर भी दादी ही 1857 के स्वतन्त्रता सग्राम की कहानी कहने वाली प्रथम प्रेरणास्रोत थी। उसका वश वृक्ष उससे कहता है कि तू मिश्रित शाखा से आने के कारण साप्रदायिक कट्टरता के जहर से मुक्त है। परिवार कला क उस्ताद' से उस्ता' या उस्मानी' बना।

शुरू से गणित और उर्दू में हर साल अव्वल पुरस्कार पाने वाला बालक किशोरावस्था म 'देश स फिरगी' को भगा देन की क्रातिकारी भावना का पालता जाता है। आगे की कक्षाओं में तिवारीजी के बाद आने वाले प्रधानाध्यापक डॉ सपूर्णानन्द प्रेरित करते है। सज्जनालय पुस्तकालय (बीकानेर) म अग्रेजी के अखबार 'बोम्बे क्रानिकल' और बाद मे मोतीलाल नेहरू द्वारा सचालित इन्डिपन्डेंट' के माध्यम से सन् 1917 की अक्टूबर क्रान्ति और भारत में अग्रजी शासन की भयकर दमनकारी घटनाओं से आज़ादी के लिए जूझ पड़ने का भावावेग जोर पकड़ने लगता है।

बीकानेर में साप्रदायिकता का प्रवेश उस समय दिखाई देता है जब नागरी भडार वाचनालय में (जिसका उद्घाटन पडित मदन माहन मालवीय ने किया था) गैर हिन्दू छात्रों को अखबार पढ़न की रोक लगा दी जाती है। उस्मानी के साथ

छात्र अपना विरोध जताते हैं। इसी प्रकार के अनेक विरोध अवसर छात्र जीवन मे ही प्राप्त होते रहे। फिर प्लेग आई, भगदड हुई।

दादी की मौत ने शौकत को वीरान-सा कर दिया। पर वह अपने लक्ष्य को तय करने में लगा रहा। जलियावाला बाग की खबरों ने आग में घी डालने का काम किया। 1919 की घटनाओ ने उसमें बेहद खलबली मचा दी।

अजमेर में हुए पहले राजनीतिक सम्मेलन में उस्मानी ने भाग लिया जो राजनीति में प्रवेश द्वार सिद्ध हुआ। वैसे उस्मानी मैट्रिक परीक्षा देने ही अजमेर गया था लेकिन सयोगवश उसी समय यह सम्मेलन हुआ। इसमें तिलक ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर भाषण दिया। इसी में अर्जुनलाल सेठी भी उपस्थित थे जो राजस्थान के लिए प्रेरणास्रोत थे। 1919 की घटनाओ से उत्पन्न क्रातिकारी लहर का विशेष उल्लेख इस 'आत्मकथा' में किया गया है। भगतसिह, आज़ाद, अश्फाकुल्ला, लाहिरी, राजगुरु और अन्य अपनी कार्यवाहिया कर रहे थे और दूसरी ओर काग्रेस के नेता अहिंसक आन्दोलन।

दूसरे भाग म चार अध्याय है जिनको 'पेशावर से मॉस्को 1920' क अन्तर्गत सन्निहित किया गया है। यात्रा के लिए बीकानेर से वेश बदल कर रवाना होना, लाहौर जाना, जाबलअससिराज़ (प्रकाशगिरि) और 'सामान्य टिप्पणिया' जैसे उपविभागो में विभाजित है।

'आत्मकथा' म 1920 को सर्वतोमुखी आवेगात्मक वर्ष कहा गया है। काग्रेस के नेतृत्व में सचालित राष्ट्रव्यापी आदोलन से खिलाफत आन्दोलन जुड चुका था। हिज़रत की लहर भी जोरों पर थी। इसी हलचल भर वातावरण न शौकत उस्मानी को अनिश्चित काल के लिए घर छोड़ने को विवश किया। घर म एक चिट लिख छोड़ा कि 'एक सम्मेलन में भाग लेने दिल्ली जा रहा हूँ' और 9 मई, 1920 को वेश बदलकर रवाना—यह पहला परिस्थितिजन्य 'असत्य' था। इसके बाद एक और बहाना ढूढ़ना पडा उस समय जब लाहौर का टिकट लेने के लिए यह कहना पडा कि 'पिताजी सख्त बीमार है, वहाँ पहुँचना जरूरी है जबकि उनके पिता का निधन 18 वर्ष पहले ही हो चुका था।'

लाहौर से पेशावर पहुँचे। पेशावर से मॉस्को तक की यात्रा के वर्णन में काफी कुछ वही बातें है जो उनकी रचना 'पेशावर से मॉस्को' में कही जा चुकी है। इसके अलावा यहाँ कई अन्य प्रसगों को भी जोड़ दिया गया है। फिर भी मूल रूप से विषय-वस्तु वही है। यही नहीं पेशावर से मॉस्को तक की यात्रा क अत्यन्त कष्टप्रद और कटु अनुभवा' का यही वर्णन उस्मानी की अन्य रचनाओ में भी विविध रूपों में मुखरित हुआ है। इस 'आत्मकथा' में भी उस्मानी न स्वीकार किया है कि 'अफगानिस्तान' और सोवियत सघ की यात्रा का समस्त विवरण सन् 1927 में प्रकाशित मेरी पुस्तकें 'पेशावर से मॉस्को' और 'लाहौर के मेहनतकश' तथा सन् 1953 में प्रकाशित 'मै स्टालिन से दो बार मिला' में दर्ज किया जा चुका है। अलबत्ता कतिपय घटनाओं का विश्लेषण और विवेचन इस कृति में विशष रूप से अकित है।

वस्तुपरक मूल्याकन अभी भी अपेक्षि

Autobiography (आत्मकथा
लिखी गई इस आत्मकथा की टाइपशु
जगह अपनी किसी दूसरी रचना में उ
प्रति किसी पूर्व समाजवादी देश मे f
प्रमाणीकरण की प्रक्रिया करके उसकी प्र

'आत्मकथा' सोलह भागों मे लि
तक की खुद की जिन्दगी की प्रमुख घट
गतिविधिया और विशेष रूप स क्रान्ति
द्वारा भूमिगत या खुले रूप से किये गय

प्रथम भाग के पहले 6 अध्याया
और मकतब छोड़कर जैन उपासरे म
बाद 'अग्रेजी की स्कूल' में पढ़ना औ
ग्रहण करके मैट्रिक मे पहुँचना और वैर्या
के प्रभावा के फलस्वरूप विचारा औ
दर्शाया गया है।

छ माह की आयु में पिता
एक साल का शौकत उस्मानी दादी
सानुपातिक तन और सुन्दर बच्चा' थ
माँ को भी। दादी को 'माँ' माना
से अलग करके दादी बताया गया
भी दादी ही 1857 के स्वतन्त्रता सग्रा
उसका वश वृक्ष उससे कहता है कि
कट्टरता के जहर से मुक्त है। परिव
बना।

शुरू से गणित और उर्दू
किशोरावस्था में 'देश से फिरगी'
जाता है। आगे की कक्षाओं में
डॉ सपूर्णानन्द प्रेरित करते है। सज्ज
बोम्बे क्रानिकल' और बाद में मार्ता
से सन् 1917 की अक्टूबर क्रान्ति
घटनाओं से आजादी के लिए

बीकानेर में साप्रदायिकता
भडार वाचनालय में (जिसका
गैर हिन्दू छात्रों का अखबार पढ़ने

में यात्रा करने की सुविधा दी गई थी। जो दिक्कत चारजुई तक हुई थी, अब उसकी भरपाई हो चुकी थी। तुर्किस्तान मे रूसी कॉमरेड्स ने शानदार मेहमान नवाजी की जिस से दल बहुत सतुष्ट हुआ और दल के प्रत्येक व्यक्ति ने उनके प्रति अपना आभार व्यक्त किया। सब लोग अपने पुराने कष्ट से मुक्ति का अनुभव कर रह थे और नई व्यवस्था के निर्माण की सराहना कर रहे थे।

पाच परिच्छेदा में विभक्त चौथे खड में ताश्कद के प्रवासी भारतीय कम्युनिस्ट ग्रुपों का विश्लेषण है। रेलवे स्टेशन पर कुछ पेशेवर क्रातिकारी' पहुँच जिन्होंने काफिल की अगवानी की। इन ग्रुपों में से एक का नतृत्व एम एन राय, अबनी मुकर्जी और मौहम्मद अली कर रहे थे तो दूसरे का मौलाना अब्दुल रब, एम पी टी आचार्य और खलील बे।

उस्मानी और साथियो को 'इडिया हाउस' नामक बडी इमारत में ठहराया गया। दानों दल अपनी-अपनी बात समझाने की कोशिश करने लगे। उस्मानी स्वय किसी दल का पक्ष नहीं ले रहे थे जबकि उनके ही कई साथी राय के तर्कों से प्रभावित होकर उनके साथ होने लगे। आचार्य उस समय अन्दीजान में थे जिनका काम काश्गर क्रातिकारियो से सम्पर्क करना था।

नवम्बर 1920 के आरभ मे आचार्य ताशकद आ पहुँचे। इसी दौरान वहाँ ताशकद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की गई। मौहम्मद शफीक को उसका जनरल सैक्रेटरी बनाया गया जो कभी ओबेदुल्ला-राजा महेन्द्र प्रताप की अस्थायी सरकार का पूर्व सदस्य था। उस्मानी ने पार्टी की सदस्यता इसलिए नही ली कि उन्हें उस समय तक मार्क्सवादी सिद्धान्तो की शिक्षा नही मिल सकी थी।

राय की प्रेरणा से उस्मानी बार-बार अध्ययन मे व्यस्त होने लगे। फिर भी वे केवल सैद्धातिकता तक ही अपने को सीमित नहीं रखना चाहते थे, अत उन्होंने ताशकद के आम लागों से मिलकर व्यावहारिक अनुभवों को प्राप्त करने का निश्चय लिया।

क्राति क सिद्धातों और उन्हें व्यवहार म उतारने पर ताशकद के इन प्रवासी साथियों मे रात-दिन अच्छी-खासी बहसें चलती थीं। उस्मानी भी इसमें हिस्सा लेते थे।

दिसम्बर माह में उस्मानी को अन्दीजान मे भेजा गया जहाँ आचार्य हथियारों का चार्ज सभाल रहे थे। उन्हाने उस्मानी को चार्ज सौपा। हथियारों में 'बोतल बम' भी थे। वहाँ कुछ रूसी और सर्द छात्रों से सम्पर्क कायम किय जाने के अलावा विशेष कुछ नहीं किया जा सका।

फिर उस्मानी को वापिस ताशकद बुला लिया गया। वहाँ उस समय एक सैन्य स्कूल शुरू हो गया था जिसमें काफी साथी भर्ती हो गए थे। भारतीय कॉमरड्स ने यह निर्णय कर लिया था कि उस्मानी को मॉस्को भेजा जाये जहाँ वे शिक्षा प्राप्त कर सकें। उस्मानी ने इस निर्णय को स्वीकार कर लिया। बाद में उस्मानी को यह

सामान्य टिप्पणियों में से एक महत्त्वपूर्ण यह भी है कि कुलक वर्ग का सबध शासक वर्ग से और सामतवाद का अतत ब्रिटिश साम्राज्यवाद से घनिष्ठता के साथ सलग्न था।

मजार-इ-शरीफ के बाद उस्मानी वाला काफिला सोवियत प्रशासन की अनुमति लेकर सोवियत सघ की सीमा में प्रवेश कर गया। वहाँ उनकी अगवानी की गई और उनका आग का कार्यक्रम तय किया गया।

तीसर भाग के दो अध्याय–'सोवियत तुर्किस्तान' और गुलामी से आजाद किये गये सोवियत यूनियन में प्रवेश क बाद क उस क्रम में है जा पेशावर स मॉस्को' में शुरू हुआ था। जिस भारतीय एलो-इडियन प्रेस ने 'बोल्शेविकों' का इतना भयावह चित्र प्रस्तुत किया था कि वे अश्लील, कामुक, क्रूर और हत्यारे होत है उस्मानी के काफिले को उन्हें देखने की उत्सुकता थी और यहाँ आने पर जब य बोल्शेविक काफिल का स्वागत करते मिल ता इन्होंने महसूस किया कि वे ऊँचे मानवीय आदर्शों वाले लोग है जो स्वय गोरे यूरोपीय हात हुए भी उन काले भारतीयों को 'कॉमरेड' पुकार कर गले मिलते है।

बलाख क खडहरा स हाकर पटकश्वर और फिर वहाँ स तिर्मिज में ज्यों ही प्रवेश किया, इस काफिले का जोरदार स्वागत किया गया। 'भारतीय क्राति जिन्दाबाद' क नारे दूर-दूर तक गूजने लग। मानवता का एक विशाल सागर उमड़ पड़ा था जिसमें रूसी, तुर्कमान, सर्द, उज्बेक और ताजिक शामिल थे। सब तरफ लाल झडे लहरा रहे थे और सैनिक बैड से 'इटरनशनल की ध्वनि बजती हुई सुनाई दे रही थी।

लेकिन भारत को आजाद करवाने के लिए सोवियत सघ से हथियार प्राप्त करने के इरादे वाले प्रवासियों और खिलाफत के कट्टरवादियों के बीच मतभेद उभर जाने से काफिले में दरार पड़ गई। कट्टरवादियों ने टर्की जाने का अनुरोध किया। तिर्मिज से दो नावों में दोनों ग्रुप रवाना हो गय। आग चलकर भवर में फसकर डूबन की दुर्घटना को टालने के लिए दोनों नावों को एक साथ सलग्न कर दिया गया।

आगे चलकर ये प्रतिक्रातिकारी तुर्की के चगुल में फस गये। आगे का मौत क साक्षात्कार की कष्टदायक घटना का विवरण पेशावर से मास्को' और 'क्रातिकारी की तीन ऐतिहासिक यात्राए' शीर्षक रचनाओ के अनुसार है।

मौत के टलने के बाद क्रातिकारियों का दल फिर केरकी पहुँचकर क्राति के तुर्किमानी दुश्मनो के विरुद्ध सघर्ष में लग जाता है और उन्हे पराजित करके केरकी की रक्षा करने में अहम भूमिका अदा करता है। तुर्किमानी सख्या में अधिक होते हुए भी आत्मसमर्पण करने को विवश हो जाते है। बाद में इन तुर्कमानों को यह समझ में आ जाता है कि य क्रातिकारी ही उन्हें अमीर और कुलकों के दमन से मुक्ति दिलाने वाले है।

फिर यह दल बोखारा पहुचा जहाँ परिवर्तन की लहर चल रही थीं। वहाँ से रवाना होकर वह फिर कालघान पहुँचे जिसके लिए उन्हें प्रथम दर्जे के डिब्बे

में यात्रा करने की सुविधा दी गई थी। जो दिक्कत चारजुई तक हुई थी, अब उसकी भरपाई हो चुकी थी। तुर्किस्तान में रूसी कॉमरेड्स ने शानदार मेहमान नवाजी की जिस से दल बहुत सतुष्ट हुआ और दल के प्रत्येक व्यक्ति ने उनके प्रति अपना आभार व्यक्त किया। सब लोग अपने पुरान कष्ट से मुक्ति का अनुभव कर रहे थे और नई व्यवस्था के निर्माण की सराहना कर रहे थे।

पाच परिच्छेदो मे विभक्त चौथ खड मे ताश्कद के प्रवासी भारतीय कम्युनिस्ट ग्रुपों का विश्लेषण है। रेलवे स्टेशन पर कुछ 'पेशवर क्रातिकारी' पहुँच जिन्हाने काफिले की अगवानी की। इन ग्रुपा में से एक का नेतृत्व एम एन राय, अबनी मुकर्जी और मौहम्मद अली कर रहे थे तो दूसरे का मौलाना अब्दुल रब, एम पी टी आचार्य और खलील बे।

उस्मानी और साथिया को 'इडिया हाउस' नामक बडी इमारत में ठहराया गया। दोनों दल अपनी-अपनी बात समझाने की कोशिश करने लगे। उस्मानी स्वय किसी दल का पक्ष नहीं ले रहे थे जबकि उनके ही कई साथी राय के तर्कों से प्रभावित होकर उनक साथ होने लगे। आचार्य उस समय अन्दीजान में थे जिनका काम काश्गर क्रातिकारियो से सम्पर्क करना था।

नवम्बर 1920 के आरभ में आचार्य ताशकद आ पहुँचे। इसी दौरान वहाँ ताशकद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की गई। मौहम्मद शफीक को उसका जनरल सैक्रेटरी बनाया गया जो कभी ओबेदुल्ला-राजा महेन्द्र प्रताप की अस्थायी सरकार का पूर्व सदस्य था। उस्मानी ने पार्टी की सदस्यता इसलिए नहीं ली कि उन्हें उस समय तक मार्क्सवादी सिद्धान्ता की शिक्षा नही मिल सकी थी।

राय की प्रेरणा से उस्मानी बार-बार अध्ययन म व्यस्त होने लगे। फिर भी वे केवल सैद्धातिकता तक ही अपने को सीमित नहीं रखना चाहते थे, अत उन्होंने ताशकद के आम लोगो से मिलकर व्यावहारिक अनुभवों को प्राप्त करने का निश्चय लिया।

क्राति के सिद्धातों और उन्हें व्यवहार में उतारने पर ताशकद के इन प्रवासी साथियों मे रात-दिन अच्छी-खासी बहस चलती थीं। उस्मानी भी इसमें हिस्सा लेते थे।

दिसम्बर माह में उस्मानी को अन्दीजान में भेजा गया जहाँ आचार्य हथियारों का चार्ज सभाल रहे थे। उन्होने उस्मानी का चार्ज सौपा। हथियारों में बोतल बम' भी थे। वहाँ कुछ रूसी और सर्द छात्रों से सम्पर्क कायम किये जाने के अलावा विशेष कुछ नहीं किया जा सका।

फिर उस्मानी को वापिस ताशकद बुला लिया गया। वहाँ उस समय एक सैन्य स्कूल शुरू हो गया था जिसमे काफी साथी भर्ती हो गए थे। भारतीय कॉमरड्स ने यह निर्णय कर लिया था कि उस्मानी को मॉस्को भेजा जाये जहाँ व शिक्षा प्राप्त कर सकें। उस्मानी ने इस निर्णय को स्वीकार कर लिया। बाद में उस्मानी को यह

बात भी ज्ञात हुई कि ताशकंद में जो कम्युनिस्ट बने थे वे कम्युनिस्टों के नाम पर कलंक साबित हुए।

उस्मानी ने सोवियत रूस के उत्तर की ओर से अपनी यात्रा शुरू की जिसका उद्देश्य था मॉस्को पहुँच कर अपनी सैद्धांतिक और व्यावहारिक शिक्षा का सर्वतोभावेन विकास करना।

पाचवें भाग में दो अध्याय हैं। जनवरी 1921 के आरंभ में शौकत उस्मानी सहित तीन छात्र मॉस्को पहुँचे जिन्हें होटल डेलोवोई डेर में ठहराया गया तथा सपत्नी एम एन राय, अबनी मुकर्जी और मौम्मद अली डीलक्स में ठहरे। लक्स में जापान, ब्रिटेन और फिनलैण्ड के प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता भी ठहरे हुए थे। लक्स में ही शिक्षक माइकेल बौन्डिन, फाइनबर्ग और प्रसिद्ध रूसी ट्रेड यूनियन नेता रीन स्टीन थे। जर्मनी के युवा कम्युनिस्ट नेता विली मुजेन्बर्ग भी उस्मानी के सहशिक्षार्थी थे।

छात्रों को अर्थशास्त्र, राजनीति और ट्रेड यूनियनवाद की सैद्धांतिक शिक्षा के अलावा कुछ सैन्य प्रशिक्षण भी दिया जाता था, लेकिन अधिकतर व्यावहारिक पक्ष पर अधिक जोर दिया जाता था। घूम-फिर कर देखना, दलों में बटकर संपर्क करना और कृषि और उद्योग संस्थानों का निरीक्षण करना उसका महत्त्वपूर्ण हिस्सा था।

उस्मानी ने अपने लेखन का उद्देश्य सब प्रकार के भ्रमपूर्ण प्रचार के जाल को तोड़कर सच्चाई को प्रकट करना बताया है। क्रांतिकारी सत्य को निश्चित रूप से उद्घाटित करना चाहिये।

ताशकंद हो या मॉस्को उस्मानी जैसे क्रांतिकारियों के लिए सबसे प्रमुख लक्ष्य अपने देश की आज़ादी के लिए संघर्ष को तेज और तीखा करना था।

7 फरवरी, 1921 को प्रिंस क्रोपाट्किन की मृत्यु हो गई। यद्यपि क्रोपाट्किन एक अराजकतावादी थे किन्तु वे रूसी क्रान्ति के समर्थक थे। सारे कम्युनिस्ट उनका बड़ा सम्मान करते थे। उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए सभी नेता ट्रेड यूनियन हॉल में इकट्ठे हुए। वहाँ क्रांति के नायक लेनिन भी उपस्थित हुए। उस्मानी ने सर्वप्रथम वहीं लेनिन का साक्षात्कार किया। दूसरी बार फिर क्रेमलिन में विदेशी प्रतिनिधियों के साथ, जिनमें उस्मानी भी सम्मिलित हुए थे—उनसे लेनिन की मुलाकात हुई। उस्मानी को यद्यपि लेनिन का चेहरा उतना प्रभावशाली नही लगा, किन्तु उनकी नजरें बेहद मर्मभेदी थीं। छोटी किन्तु तेज आखें थीं वे जिनमें भोगी हुई पूर्व वेदनाओं और भविष्य की उज्जवल आशाओं की गहरी छाप दिखाई दे रही थीं। वे वहाँ नई आर्थिक नीति के बारे में बोल थे। इससे पूर्व उन्होंने सब प्रतिनिधियों से स्नेहपूर्वक हाथ मिलाया था।

मॉस्को में उस्मानी अनवर पाशा से भी मिले।

क्रांतिकारियों के चरित्रांकन में उस्मानी ने तीन घटनाओं का उल्लेख किया है—पहली सन् 1921 के अकाल के समय की घटना जब लेनिन ने स्वयं अपने ही दैनिक भोजन में कटौती कर दी और जब यह बात मालूम हुई और किसान

उनके घर बहुत तादाद में खाद्य पदार्थ लाए, तो लेनिन ने अपनी एक दिन की खुराक रख ली और बाकी कारखानो के मजदूरों के पास भेज दी। दूसरी घटना यह थी कि होटल डी-लक्स की एक मीटिंग में भाग लेने के लिए जब ट्रॉट्स्की गेट के अदर प्रवेश करने लगा तो दरवाजे पर खड़े व्यक्ति ने 'कार्ड' दिखाने को कहा। 'मै ट्रॉट्स्की हूँ' कहकर ट्रॉट्स्की ने उसको धमकाया, लेकिन उसे प्रवेश नहीं मिला। आखिर ट्रॉट्स्की को वापिस जाकर अपना कार्ड लाना पड़ा। तब प्रवेश करने दिया गया। तीसरी घटना स्टालिन द्वारा लाल सेना की परेड का निरीक्षण करते समय की है। जब स्टालिन ने सैनिकों से पूछा कि कोई दिक्कत है किसी को।' एक ने कहा— आपके चमकत बूट और मेरे पुराने फटे बूट को देखिये।' स्टालिन ने फौरन अपने बूट उतारकर उसे पहना दिये और खुद उसके पहन लिए।

अप्रैल के माह में अध्ययन समाप्त हुआ और दुर्योगवश उस्मानी बीमार हो गये। डाक्टरो की टीम ने जाच करके बताया कि उनके दिल मे बढ़ोतरी हो गई है। अब उन्हें मॉस्को छोड़ने को विवश होना पड़ा। उन्ह इलाज के लिए सेवास्तोपोल भेज दिया गया।

भाग VI अध्याय 5—अकाल की स्थिति होते हुए भी जिस हॉस्पीटल रेलगाड़ी में अस्वस्थ उस्मानी को ले जाया गया उसमें दवाइयो और दूध तथा अन्य प्रकार की सारी सुविधाए प्राप्त थीं। बहुत उत्तम खाद्य पदार्थ थे। रोगियो को ऐसी सुविधा समाजवादी व्यवस्था ही दे सकती थी।

इसी समय कॉमिन्टर्न का तीसरा अधिवेशन भी मॉस्को में हो रहा था। उस्मानी रुग्ण होने की वजह से इसमें भाग लेने से वंचित हा गये थे। सभी देशों से प्रतिनिधि भाग लेने पहुँच चुके थे। इधर भारतीय कम्युनिस्टों के व्यक्तिगत मतभेद भी उभर कर सामने आ चुके थे। यद्यपि हॉस्पीटल ट्रेन से रवाना होने से पहले उस्मानी ताशकद में स्थापित कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन चुके थे, लेकिन इस पार्टी के नीति निर्धारण में दूसरों की ही अधिक भूमिका थी। राय कॉमिन्टर्न मे प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

इस अधिवेशन मे लेनिन ने भारतीय आजादी की रणनीति का भी विवेचन किया था और बताया था कि यदि वहाँ के क्रातिकारी एकताबद्ध पार्टी का वहीं निर्माण करें और कार्यक्रम तय करें तो कॉमिन्टर्न उसे हर सभव सहायता दे सकता है।

आखिर भारतीय कम्यनिस्टा की दलबन्दी ने कॉमिन्टर्न को सहयोग के किसी सर्वसम्मत निर्णय तक नहीं पहुँचने दिया। फिर भारत का मामला कॉमिन्टर्न के सैक्रेटरी कार्ल राडक को सुपुर्द कर दिया गया।

एक माह तक इलाज कराने के बाद उस्मानी स्वस्थ हो गये और फिर से मॉस्को पहुँचने की तैयारी करने लग।

मॉस्को पहुँचकर उस्मानी ने सारी परिस्थितियों की जानकारी की। सबसे पहले वे एम पी टी आचार्य से मिले। वहाँ चट्टोपाध्याय भी मिले जिन्होंने बताया कि प्रसगवश

लेनिन ने उस्मानी का भी हवाला दिया था। फिर आचार्य और चट्टोपाध्याय ने कॉमिन्टर्न से असफल वार्ता की कहानी भी सुनाई।

उस्मानी ने राय के सामने भारत वापिस लौटने का इरादा रखा। लेकिन बाद म उस्मानी और राय में मतभेद स्पष्ट हो गये। फिर वे कॉमिन्टर्न के जनरल सैक्रेटरी रैकोशी से मिले। उन्होंने राडेक से मिलने को कहा और राडेक ने स्टालिन से।

स्टालिन से मिलने की पूरी घटना का विवरण 'मै स्टालिन से दो बार मिला' नामक पुस्तक से दोहराया गया है।

भाग VII के तीन अध्याय है। बाकू को जाने वाली गाड़ी में विदा देने के लिए मॉस्का में C P I क सैक्रेटरी आये थे।

बाकू पहुँचने पर उस्मानी वहाँ दो दिन रुके। वहाँ के किसान लबे, काले और लाल थे और लबे बालों वाली काकेशस की सुन्दर औरत थीं।

यह वह समय था जब टर्की फ्रेंको-ब्रिटिश सचालित युद्ध में उनके विरुद्ध लड रहा था। उस्मानी मूसा जफरुल्लाह और दूसरा से मिले जो बाकू से टर्की को मदद पहुँचाने की व्यवस्था कर रह थ। मूसा उस समय मध्य-एशिया और अरब देशों की आजादी के लिए कार्य करने वाले नेताओं में प्रमुख थे। वैसे मूसा बहुत मिलनसार थे, लेकिन उस्मानी को उनका इस्लामिक समाजवाद समझने में दिक्कत पैदा हो रही थी। इसके बाद दोना की मुलाकात कभी नहीं हुई।

सोवियत सेनाओं ने ब्रिटिश सैनिको को परास्त कर दिया और पर्शियन कम्युनिस्टो ने मौका देखकर घिलान गणतन्त्र की स्थापना कर दी जिसकी राजधानी रेश्ट रखी। जब उस्मानी रात को रेश्ट पहुँचे तो उसके चारा ओर भयानक स्थिति थी। एक ओर कोचक खान के सैनिक थे तो दूसरी तरफ इम्पीरियल ईरानी फौज। फिर भी घिलान के क्रातिकारियो में से एक ने उनको सुरक्षित कर दिया।

इसके साथ ही उस्मानी ने उन मुजाहिरो की दशा का भी वर्णन किया है जो टर्की के लिए लड़ने आये थे। टर्की की सरकार ने उनको साफ कह दिया था कि वे पहले भारत से तो ब्रिटिश शासका को मार भगाए।

रेश्ट में ही उस्मानी को यह सूचित कर दिया गया कि घिलान गणतत्र का विलीन होना निश्चित सा है। इसके बाद जल्दी की कम्युनिस्ट वहाँ से चल दिय और बाकू के लिए रवाना हो गये तथा उस्मानी को भी यह सलाह दी गई कि वे भी बाकू चले जाएँ। लेकिन उस्मानी वापिस बाकू जाना उचित नहीं समझते थे और वे ईरान के रास्ते से भारत पहुँचने का विचार कर चुके थे। दा दिन के बाद रेश्ट म रेजा खान की सेना घुस गई थी और उसने रेश्ट पर कब्जा कर लिया था। रेजा शाह पहलवी ने प्रशासन सभाल लिया था।

उस्मानी को एक तरह से हाटल म नजरबन्द-सा होना पड़ा। जब रेजा शाह को यह मालूम हुआ कि उस्मानी भारत का निवासी है। वहीं मेजर अगार और सुल्तान मौहम्मद मिल गये जा आचार्य क जानकार थे। उस्मानी न उन्हें आचार्य का पत्र

दिखाया। तब उन्हें फौजी एरिया से निकलने की अनुमति दी गई।

तेहरान में उस्मानी अस्वस्थ हो गय। पर्शियन जानने क कारण पर्शियन पासपोर्ट मिलने में दिक्कत नहीं हुई और दिनाक 22 जनवरी, 1922 ई को वे बबई आ पहुचे।

आठव भाग के एकमात्र अध्याय में विश्लेपणात्मक स्पष्टीकरण अधिक है। जब मुहाजिरीनों के काफिले सोवियत यूनियन रवाना हुए थे, कुछ लोग सपने ले रहे थे जनरल या कर्नल बनने के और कुछ भारतीय क्राति के नेता बनने के। लेकिन ज्यों ही ताशकद पहुँचे और वहाँ रहने वाले स्वयभू 'भारतीय-क्रातिकारियों' को सोवियत सघ की आरामदेह ऐय्याशियों को भोगते हुए तथा आपस में झगड़ते हुए देखा तो सपने टूट गए। इसके फलस्वरूप हाथ लगी घार निराशा या हताशा।

ताशकद में 'हिन्दुस्तानी सैन्य स्कूल' में बहुसख्यक मुहाजिरीन भर्ती हा चुके थे, जहाँ से बाद में अच्छा कैडर निकला। उसी की देन थी कि अब्दुल रहीम और सिद्दिकी जैसे प्रतिभाशाली शहीद तैयार हुए। तीन ने मॉस्को में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शिक्षा ग्रहण की थी। लेकिन अधिकतर प्रवासी शिक्षा तक सीमित नही रहना चाहते थे और न ही सावियत यूनियन में टिके रहना। व, जिनम उस्मानी भी शामिल थे चाहते थे कि प्रशिक्षण के अलावा उन्हें हथियार दिये जाएँ ताकि हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई को नई दिशा दी जाय। व हथियार मिलन का इतजाम करके जल्दी से जल्दी भारत पहुँचकर अग्रेजी साम्राज्यवाद से भिडना चाहत थे।

शौकत उस्मानी पारसी के वश म बबई पहुँच थे। वहाँ उन्होंन भूमिगत रहकर काम करना शुरू किया। किसी दिन मोची तो कभी पजाबी काग्रेसी की बोतल सफाई करने वाले के रूप में तथा इसी प्रकार अन्य प्रकार स दो माह तक काम करते रहे। फिर उत्तरप्रदेश म एक अध्यापक बने। इस दौरान देश में चलने वाले आजादी के आन्दोलन की स्थिति के सम्बन्ध म मॉस्को के साथिया को सूचित करते रहे। राय ने इन सूचनाओ की बड़ी सराहना की। उस्मानी की रिपोर्ट के अश उन्हान Masses Advance Guards तथा Vanguard आदि मे प्रकाशित किए। काग्रेस के गया अधिवेशन को उस्मानी न ही 'गया म श्राद्ध समारोह' की सज्ञा दी थी। उस्मानी का मुख्य उद्देश्य कम्युनिस्ट साहित्य का वितरण करना था। वे बिना किसी सगठन का नेतृत्व सभाले मिशनरी के रूप में यह कार्य कर रहे थे। यह साहित्य ज्यादातर हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यापको व छात्रों तथा कानपुर क मजदूरा को पहुँचाया करत थे। कानपुर मे उन्ह गणेश शकर विद्यार्थी का सहयाग मिला जिनसे पहला परिचय उस्मानी के ही अध्यापक डॉ सम्पूर्णानन्द न करवाया था।

चार माह बाद उस्मानी एक साधारण मजदूर के रूप मे पर्सिया में शिराज पहुँचे। वहाँ वे एक पर्सियन कॉमरेड के यहाँ रसोई करन वाले नौकर के रूप में रहने लगे। वहाँ से कम्युनिस्ट साहित्य भेजने का प्रबध करक सितबर म उस्मानी फिर बबई आ गये और यहाँ स सीधे बनारस पहुँचे और फिर छात्रा म काम करने लगे।

इस आठवें भाग के फुटनोट में एक ऐसी बगाली पुस्तक जिसे ताशकद की

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास के रूप मे पेश किया गया था और जिसमें प्रत्येक के विषय में विकृति से भरपूर विवरण प्रस्तुत किये गये थे—के विषय में विस्तार से स्पष्टीकरण दिये गये है और अनेक झूठी बातों का खडन किया गया है।

अब उस्मानी का प्रमुख कार्यक्षेत्र कानपुर, बनारस और फिर रोहतक जिला हो गया था। डॉ सम्पूर्णानन्द ने अपनी पुस्तक 'Memones and Reflections' मे उस्मानी की कार्यप्रणाली का जिक्र किया है। 'सबसे महत्त्वपूण यह बात थी कि मुझे (उस्मानी के माध्यम से) नवीनतम साहित्य मिलता रहता था जो रूस में प्रकाशित होता था। यह सिलसिला कभी समाप्त नहीं हुआ। हम में से बहुत से प्रतिबधित साहित्य को एक हाथ से दूसरे हाथ पहुँचाते रहते थे। उस्मानी कुछ समय बनारस मे रहे और मैंने उसे गणेश शकर विद्यार्थी के पास कानपुर भेजा।'

गणेश शकर विद्यार्थी ने उस्मानी को कानपुर के राष्ट्रीय मुस्लिम हाई स्कूल म द्वितीय अध्यापक बनाया। रात को उस्मानी मजदूरों की क्लास लेते थे और दिन मे छात्रों मे विचारधारा समझान और साहित्य वितरित करवाने का काम करते थे। छुट्टियो के दिन सैनिको से सम्पर्क करते थे।

9 मई, 1923 को उपर्युक्त स्कूल को सेना के द्वारा घेर कर उस्मानी को गिरफ्तार कर लिया गया। फिर 12 या 13 मई को कैंट सैल स बाहर निकालकर पेशावर भेजने के लिए बन्द गाड़ी म रवाना कर दिया गया। इस खबर के फैलते ही अपार भीड़ इस 'बाल्शेविक' को देखने उमड़ पड़ी।

पेशावर पहुँचने पर सदर थाना पुलिस स्टेशन ले जाए गये जहाँ पूछताछ की गई लेकिन उस्मानी टस से मस नही हुए, उन्होंने किसी सवाल का जवाब नहीं दिया। बेड़ियों और हथकड़ियों से उन्हें जकड़कर बुर्ज हरिसिह पुलिस थाने में डाल दिया गया। यहाँ से हर सुबह पूछताछ के लिए सदर थाना ले जाया जाता। दो हथियारबद कास्टेबल साथ होते। पूछताछ करने वाला को आए दिन नाकामयाबी ही हाथ लगती।

इस नौव भाग के तीन अध्यायों में जेल यत्रणाओ का वर्णन है। खुली टागों के बीच के हिस्से में बेड़ियों से जकड़ने से खून टपक रहा था लेकिन बचाव के लिए पट्टी नहीं थी। दूरी तक पैदल चलकर पेशावर से अमरूद के बीच लाया ले जाया जाता था। अत्यधिक पीड़ा होती थी। खून रोकने की प्राथमिक चिकित्सा नहीं थी। मजिस्ट्रेट एक ही वाक्य कह देता—'कस्टडी में रिमाड पर।' सात अन्य अभियुक्तों को भी आरोपित करके सजा दी गई थी। दस नामों में से आठवा नाम उस गद्दार अब्दुल कादिर का भी है जिसने आगे चलकर भगतसिह, राजगुरु और सुखदेव को फासी का आदेश दिया था।

वहाँ से उस्मानी को अब्बोत्ताबाद ले जाया गया जहाँ उन्हें जिले की मुख्य जेलों में रखा गया जो एक सीधा खड़ा जुओं का कारखाना था। जुए सारे शरीर पर रेंगती थीं और निहायत गदी कबल को ओढ़ना ठड से बचने के लिए अनिवार्य

था। वहाँ तीन अंग्रेज अधिकारियों के द्वारा हर तरह से पूछताछ की गई यद्यपि उस्मानी ने अपना नाम तक नहीं बताया। अंतिम उत्तर था 'कुछ नहीं बताऊँगा, चाहे फांसी लगा दो।'

एक पुलिस अधिकारी ने व्यंग्य कसते हुए पूछा—'तुम्हारा सोवियत हिन्दुस्तान पर कब हमला कर रहा है?' और फिर बेड़ी-हथकड़ी लगे उस्मानी को बेरहमी से बंगले के लॉन पर घसीटने-पटकने लगे। अंग्रेज अधिकारी उस्मानी पर किये जा रहे पाशविक अत्याचार को देखकर मनोरंजक आनंद अथवा मजा ले रहे थे। इस दमन के बाद फिर सड़ियल अंधेरी कोठरी में फेंक दिया जाता था। उस्मानी के पैरों पर बेड़ियों के निशान जिन्दगी भर रहे और यंत्रणाओं की स्मृति कभी नहीं धुंधलाई। अकबर खां कुरेशी के पांवों में बेड़ियां और हथकड़ियां पेशावर जेल में दस साल तक यों ही कष्ट देती रहीं, यद्यपि कानून की दृष्टि से मजबूरन मशक्कत कराना मना था, लेकिन उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रदेश जिसे आमतौर पर 'अराजक देश' कहा जाता था—यह सब करवाया जा रहा था। इन अपराधियों को दो लोहे के गंदे बर्तन दिये जाते थे—एक पानी के लिए और दूसरा दाल के पानी के लिए। उन्हीं में शौच के बाद की सफाई के लिए पानी दिया जाता था। सब कुछ घृणित—घृणास्पद।

ढाई महीनों से अधिक बीत जाने के बाद सरकार ने यह निर्णय लिया कि सीमांत प्रांत में उस्मानी को सज़ा नहीं दी जा सकती। अब उन्हें सन् 1918 के रेगुलेशन III के अन्तर्गत 'स्टेट अभियुक्त' के रूप में स्थानांतरित कर दिया था। तब से उस्मानी को ट्राइल वार्ड से बदलकर मुख्य जेल में एक कोठरी में डाल दिया गया जो कहीं ज्यादा सुविधाजनक थी। दस माह तक पेशावर जेल में रहे जहाँ वे उन कांग्रेसी नेताओं के आप-पास रहे जिन्हें दो या तीन साल की कठोर सज़ा दी गई थी। उनमें हकीम अब्दुल जलील और सरदार रामसिंह जैसे वफादार राष्ट्रीय चेतना के व्यक्ति थे। जेल के कुछ सहानुभूत कर्मचारियों के कारण उनसे और कुछ अपने ही साथियों से मुलाकात हो जाती थी। इनमें एक उभरता हुआ पत्रकार मीर आलम खान भी था।

इस प्रकार की जीवन प्रक्रिया का भी शीघ्र अंत हो गया। फिर से उन्हें बेड़ियां और हथकड़ियां डालकर वहाँ से 10 मार्च, 1924 की सुबह रवाना कर दिया गया। जेल के दूसरे नंबर के हैड वार्डर की आंखों से उस्मानी को ले जाते देख कर आंसू टपकने लगे। वह इन राजनैतिक कैदियों के प्रति विशेष सहानुभूति रखता था जबकि उसका उच्च अधिकारी उतना ही ज्यादा क्रूर था।

कानपुर पहुँचने पर पूछताछ के बाद उस्मानी को सिविल वार्ड में भेज दिया गया जहाँ एस ए डांगे थे। उस्मानी को इस छोटे कद वाले उच्चकोटि के प्रतिभा-संपन्न व्यक्ति (डांगे) को देखकर चकित होना पड़ा। डिप्टी जेलर ने दोनों का पारस्परिक परिचय कराया था। डांगे ने अपनी पुस्तक Hell Found में इस पहली मुलाकात का हवाला दिया है और साथ ही सन् 1924 से सन् 1927 के जेल के अनुभवों का भी।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास के रूप में पेश किया गया था और जिसमें प्रत्येक के विषय में विकृति से भरपूर विवरण प्रस्तुत किये गये थे—के विषय मे विस्तार से स्पष्टीकरण दिये गये है और अनेक झूठी बातों का खडन किया गया है।

अब उस्मानी का प्रमुख कार्यक्षेत्र कानपुर, बनारस और फिर रोहतक जिला हो गया था। डॉ सम्पूर्णानन्द ने अपनी पुस्तक Memories and Reflections में उस्मानी की कार्यप्रणाली का जिक्र किया है। 'सबसे महत्त्वपूर्ण यह बात थी कि मुझे (उस्मानी के माध्यम से) नवीनतम साहित्य मिलता रहता था जो रूस म प्रकाशित होता था। यह सिलसिला कभी समाप्त नही हुआ। हम में से बहुत से प्रतिबधित साहित्य को एक हाथ से दूसरे हाथ पहुँचाते रहते थे। उस्मानी कुछ समय बनारस में रह और मैने उस गणेश शकर विद्यार्थी क पास कानपुर भेजा।'

गणेश शकर विद्यार्थी ने उस्मानी को कानपुर के राष्ट्रीय मुस्लिम हाई स्कूल म द्वितीय अध्यापक बनाया। रात को उस्मानी मजदूरों की क्लास लेते थे और दिन में छात्रा म विचारधारा समझाने और साहित्य वितरित करवाने का काम करत थे। छुट्टियो के दिन सैनिकों से सम्पर्क करते थे।

9 मई, 1923 को उपर्युक्त स्कूल को सेना के द्वारा घेर कर उस्मानी को गिरफ्तार कर लिया गया। फिर 12 या 13 मई को कैट सैल से बाहर निकालकर पेशावर भेजने के लिए बन्द गाड़ी में रवाना कर दिया गया। इस खबर के फैलते ही अपार भीड़ *इस 'बोल्शेविक' को देखने उमड़ पड़ी।*

पेशावर पहुँचने पर सदर थाना पुलिस स्टेशन ले जाए गये जहाँ पूछताछ की गई लेकिन उस्मानी टस से मस नहीं हुए उन्होंने किसी सवाल का जवाब नहीं दिया। बेड़ियों और हथकड़ियों से उन्हें जकड़कर बुर्ज हरिसिह पुलिस थाने में डाल दिया गया। यहाँ से हर सुबह पूछताछ के लिए सदर थाना ले जाया जाता। दो हथियारबद कास्टेबल साथ होते। पूछताछ करने वालों को आए दिन नाकामयाबी *ही हाथ लगती।*

इस नौवें भाग के तीन अध्यायों में जेल यत्रणाओं का वर्णन है। खुली टागों के बीच के हिस्से में बेड़ियों से जकड़ने से खून टपक रहा था लेकिन बचाव के लिए पट्टी नहीं थी। दूरी तक पैदल चलकर पेशावर से जमरूद क बीच लाया ले जाया जाता था। अत्यधिक पीड़ा होती *थी। खून रोकने की प्राथमिक चिकित्सा नहीं* थी। मजिस्ट्रेट एक ही वाक्य कह देता—'कस्टडी में रिमाड पर।' सात अन्य अभियुक्तों को भी आरोपित करके सजा दी गई थी। दस नामों में से आठवा नाम उस गद्दार अब्दुल कादिर का भी है जिसने आगे चलकर भगतसिह, राजगुरु और सुखदेव को फासी का आदेश दिया था।

वहाँ से उस्मानी को अब्बात्ताबाद ले जाया गया जहाँ उन्हें जिले की मुख्य जेलों में रखा गया जो एक सीधा खड़ा जुओं का कारखाना था। जुए सारे शरीर पर रेंगती थीं और निहायत गदी कबल को ओढ़ना ठड से बचने के लिए अनिवार्य

था। वहाँ तीन अग्रेज अधिकारियों के द्वारा हर तरह से पूछताछ की गई यद्यपि उस्मानी ने अपना नाम तक नहीं बताया। अतिम उत्तर था 'कुछ नहीं बताऊँगा, चाहे फासी लगा दो।'

एक पुलिस अधिकारी ने व्यग्य कसते हुए पूछा—'तुम्हारा सोवियत हिन्दुस्तान पर कब हमला कर रहा है?' और फिर बेड़ी-हथकडी लगे उस्मानी को बेरहमी से बगले के लॉन पर घसीटने-पटकने लगे। अग्रेज अधिकारी उस्मानी पर किये जा रहे पाशविक अत्याचार को देखकर मनोरजक आनद अथवा मजा ले रहे थे। इस दमन के बाद फिर सड़ियल अधेरी कोठरी में फेंक दिया जाता था। उस्मानी के पैरों पर बेड़ियों के निशान जिन्दगी भर रहे और यत्रणाआ की स्मृति कभी नहीं धुधलाई। अकबर खा कुरेशी के पावों में बेड़िया और हथकड़िया पेशावर जेल म दस साल तक यों ही कष्ट देती रहीं, यद्यपि कानून की दृष्टि से मजबूरन मशक्कत कराना मना था, लेकिन उत्तर-पश्चिम सीमात प्रदेश जिसे आमतौर पर 'अराजक देश' कहा जाता था—यह सब करवाया जा रहा था। इन अपराधियों को दो लाहे के गदे बर्तन दिय जाते थे—एक पानी के लिए और दूसरा दाल के पानी के लिए। उन्हीं म शौच के बाद की सफाई के लिए पानी दिया जाता था। सब कुछ घृणित—घृणास्पद।

ढाई महीनों से अधिक बीत जाने के बाद सरकार ने यह निर्णय लिया कि सीमात प्रात में उस्मानी को सज़ा नहीं दी जा सकती। अब उन्हें सन् 1918 के रेगूलेशन III के अन्तर्गत 'स्टेट अभियुक्त' के रूप म स्थानातरित कर दिया था। तब से उस्मानी को ट्राइल वार्ड से बदलकर मुख्य जेल में एक कोटरी मे डाल दिया गया जो कहीं ज्यादा सुविधाजनक थी। दस माह तक पेशावर जेल म रहे जहाँ वे उन काग्रेसी नेताओं के आप-पास रहे जिन्हें दो या तीन साल की कठोर सज़ा दी गई थी। उनमें हकीम अब्दुल जलील और सरदार रामसिह जैसे वफादार राष्ट्रीय चेतना क व्यक्ति थे। जल के कुछ सहानुभूत कर्मचारियों के कारण उनसे और कुछ अपने ही साथियों से मुलाकात हो जाती थीं। इनमें एक उभरता हुआ पत्रकार मीर आलम खान भी था।

इस प्रकार की जीवन प्रक्रिया का भी शीघ्र अत हो गया। फिर से उन्हें बेड़िया और हथकड़िया डालकर वहाँ से 10 मार्च, 1924 की सुबह रवाना कर दिया गया। जेल के दूसरे नबर के हैड वार्डर की आखों से उस्मानी को ले जाते देख कर आसू टपकने लगे। वह इन राजनैतिक कैदियों के प्रति विशेष सहानुभूति रखता था जबकि उसका उच्च अधिकारी उतना ही ज्यादा क्रूर था।

कानपुर पहुँचने पर पूछताछ के बाद उस्मानी को सिविल वार्ड में भेज दिया गया जहाँ एस ए डागे थे। उस्मानी को इस छोटे कद वाले उच्चकोटि के प्रतिभा-सपन्न व्यक्ति (डागे) को देखकर चकित होना पड़ा। डिप्टी जेलर ने दोनों का पारस्परिक परिचय कराया था। डागे ने अपनी पुस्तक Hell Found में इस पहली मुलाकात का हवाला दिया है और साथ ही सन् 1924 से सन् 1927 के जेल के अनुभवा का भी।

दो दिनो के बाद बगाल से मुज़फ्फर अहमद और नलिनी दास गुप्ता भी वहाँ लाए गये। अब वे चार हो गये थे।

दसव भाग क बारह अध्यायों म 'बाल्शेविक षड्यत्र केस' (कानपुर) के विषय में विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। 16 मार्च, 1924 को सयुक्त न्यायाधीश क्रिस्टी की अदालत म मुकदमा चालू हुआ जिसमें I P C के सैक्शन 121A क तहत एस ए डागे, नलिनीदास गुप्ता, मुज़फ्फर अहमद और शौकत उस्मानी को हाजिर किया गया। धारा 121A का अर्थ था कि अभियुक्त भारत की सर्वोच्च सत्ता (ब्रिटिश सम्राट) का हटान का षड्यत्र कर रह थे। यद्यपि मुकदमे को गढ़न म अनेक झूठों का शामिल किया गया था, लेकिन उसम आधारभूत सत्य भी निहित था कि अभियुक्त भारत को आजाद करने के उद्देश्य स ही काम कर रह थे।

अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये गये। इधर कानपुर के सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ताओं ने बचाव कमेटी का गठन किया जिसके अध्यक्ष गणेश शकर विद्यार्थी थे। अभियुक्तों मे सबसे प्रमुख 'खतरनाक अपराधी' शौकत उस्मानी को निर्धारित किया गया क्योंकि वह हथियारा के जरिए सघर्ष करके अग्रेजी शासन को हटाना मिटाना चाहता था। चारों को चार साल की कठोर सजा सुनाई गई। मुज़फ्फर अहमद और नलिनीदास गुप्ता अगले साल अपनी चतुराई, बीमारी अथवा कमजोरी की वजह से छूट गए जबकि डागे को मई 1927 म और शौकत उस्मानी को अगस्त 1927 का छोड़ा गया।

जेल जीवन की दुखद स्मृति की घटना का उल्लेख करते हुए उस्मानी ने बताया है कि ट्रायल के दौरान कानपुर जेल में उनके चाचा उमराउद्दीन उनसे मिलन आए। उन्होंने बताया कि उनके तीन परिवारों को जिनम उस्मानी क खुद का परिवार और दादी के दा भाइयों के परिवारों के सभी सदस्यो को 9 मई, 1923 को उनकी गिरफ्तारी के तत्काल बाद पुलिस कस्टडी म ले लिया गया और उनकी जायदाद को यू पी और स्थानीय पुलिस ने रेड करते समय लूट लिया। इसमें औरतों क गहने और नगद राशि भी थी। यह कभी नहीं लौटाई गई। एक सप्ताह बाद महाराजा के हस्तक्षेप से इन परिवारा को छोड़ा गया। चाचा की आखा म आसू थे जब व यह सब बता रहे थे।

जुलाई म जब दमन किया गया तो उस्मानी को भूख हडताल करनी पड़ी जो 27 दिन तक चली। उन्ह बरेली की जिला जेल में भेजा गया। जबरदस्ती हडताल तुड़वाने के अमानुषिक तरीके अपनाए गए। लगातार दमन चलता रहा। लेकिन आखिर नतीजा यह हुआ कि आम कैदी का भी कुछ सुविधाए दी जाने लगीं। उस्मानी को फिर भी 'बोल्शेविक होने के नाते जल यातनाओं का ही सामना करना पड़ा। इससे उस्मानी का स्वास्थ्य काफी गिर गया और उनकी 'बड़ी आत में टी बी ' दर्ज की गई। इससे पहले उन्हें बुखार रहने लगा था।

दूसरी बार उन्हें दो सप्ताह तक फिर भूख हड़ताल करनी पड़ी। फिर उन्हें देहरादून

की जेल में बदल दिया गया। वहाँ कर्नल बार्बर जेल सुपरिन्टेन्डेंट था, जो अग्रेज होते हुए भी हिन्दुस्तानी अधिकारियो की अपेक्षा काफी बेहतर था। मूज बटना, चक्का चलाने का काम करवाया जाता था। फिर बार्बर ने भोजन म सुधार किया और वे काम भी बद करवा दिये। लदन से प्रकाशित 'टाइम्स' अखबार भी पढ़ने को दिया गया। वहाँ उन्होने बागवानी का काम भी किया।

दमन और प्रलोभन और कइयों की सलाह भी उस्मानी को खेद प्रकट करने' 'माफी मागने' या 'समझौता करने' के लिए नहीं झुका सकी। फिर उन्हे अस्पताल भेजा गया। जेल और अस्पताल मे उनसे कई लोग मिलने आते।

तत्पश्चात् उन्हे झासी जेल मे बदल दिया गया। वहाँ उन्हें किसी से नहीं मिलने दिया गया, लेकिन एक सप्ताह बाद 26 अगस्त, 1927 को सुबह 10 बजे उन्हें जल से रिहा कर दिया गया।

कानपुर में उस्मानी का भव्य स्वागत किया गया। बाद मे गणेश शकर विद्यार्थी की प्रेरणा से उन्होंने पेशावर से मॉस्को' पुस्तिका लिखी जिसका शीघ्र ही प्रकाशन हो गया। बबई में भी उनका भव्य अभिनदन किया गया। जहाँ वहाँ के कम्युनिस्ट दल की विशेष भूमिका थी। वहाँ उस्मानी ने भाषण देते हुए कहा—'व पूर्ववत् ही कम्युनिस्ट है और अपनी जिन्दगी कम्युनिज्म के लिए ही समर्पित करते रहग।' वे डागे, घाट आदि अनेक नेताओ स मिले।

ट्रेड यूनियन काग्रेस का अधिवेशन करवाने में स्वागत समिति के उपाध्यक्ष होने के नाते उन्हाने अथक परिश्रम किया। विद्यार्थी समिति के अध्यक्ष थे। दीवान चमन लाल ए आई टी यू सी के प्रेसीडेंट थे।

ए आई सी सी म उन्हाने राजस्थान क प्रतिनिधि के रूप म भाग लिया था, क्योकि उन दिना उसम कम्युनिस्ट भी आमत्रित किये जाते थे। राजस्थान में वे अर्जुनलाल सेठी के सहयोगी थे। A I C C म मालूम हुआ कि जवाहर लाल नेहरू ने पेशावर से मॉस्को' पुस्तक स्वय खरीदी। फिर कृष्णदत्त पाण्डे के कहने पर कि पडितजी मिलना चाहते है। वे जा ही रहे थे कि नेहरू विषय समिति की बैठक से मच छाडकर स्वय उस्मानी से मिलने आ गए। बाद में जवाहर लाल नेहरू ने उस्मानी की पुस्तक रूसी क्राति का एक पृष्ठ' की प्रस्तावना भी लिखी। लकिन 1929 में फिर गिरफ्तार होने के कारण यद्यपि वह प्रस्तावना ता सुरक्षित रही, लेकिन किसी अन्य ने अपने नाम से उसे छपवा दिया।

अमरावती जेल में दस साल की सख्त कैद भुगत रहे अकबर खा कुरेशी के लिए उस्मानी पहले से बहुत चिंतित थे। उनके लिए उन्होंने अनेक व्यक्तियो स दिन रात सपर्क किया, लेकिन काई नतीजा नहीं निकला।

फिर अनेक साथियों के आग्रह से उस्मानी वापिस सावियत सघ जाने का तैयार हो गए। वे जब रवाना होकर मॉस्को गए वहाँ कॉमिन्टर्न का छठा अधिवशन होन वाला था। उन्होंने उसमे कैसे भाग लिया इसका आगे का पूरा विवरण I Met

Stalin Twice में अंकित है जिसे 'आत्मकथा' के इस भाग में भी उद्धृत किया गया है।

खड-XI अध्याय दो-अक्टूबर के अत में क्रीमिया से वापिस लौटने की तैयारी की जाने लगी। एक सोवियत साथी की सलाह मानकर उस्मानी ने किसी प्रकार के कागज पत्र अपने साथ नहीं लिए ताकि तलाशी के समय अनावश्यक दिक्कत से बचा जा सके। उस्मानी अत्यन्त अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे।

वहाँ स स्विट्जरलैंड पहुँच और वह उन्हें बहुत पसद आया। जब तक वहाँ रहे रोज जिनेवा झील को देखने जाते। जब इटली पहुँचे तो उनके सारे सामान की उलट-पलट कर तलाशी ली गई। लेकिन कहीं कुछ नही मिला। नेपल्स के होटल में एक अल्बानी राजकुमारी जो उनके पास के कमरे में ठहरी थी और जो फासिस्ट सरकार के खिलाफ बोलती थी—उस्मानी की परिचित हो गई। वह इटली से बाहर उस्मानी के साथ जाना चाहती थी, लेकिन उस्मानी इसके लिए तैयार नहीं थे। उसे मालूम नहीं था कि उस्मानी भारतीय हैं और उन्हे वापिस पहुँच कर राजनीतिक सघर्ष में हिस्सा लेना है। दूसरे उस्मानी का पासपोर्ट भी झूठा था, इसलिए वे उसे साथ लेकर इटली से बाहर नही जा सकते थे।

4 दिसम्बर को नाव पूर्व की ओर रवाना हुई। उसमें सवार किसी महिला ने उस्मानी को अपने साथ डास करने को कहा, लेकिन उन्होंने यह कहकर इकार कर दिया कि नाव या जहाज में वे नहीं नाचते। अग्रेज कर्मचारी देख ही रहे थे। इस तरह अनेक आशकाओ से उन्हें अपने आप को बचाना पड़ा। कहीं यूरोपीय तो कहीं पर्सियन का वेप बनाते हुए। उन्हें कई जगह अपने भारतीय होने की पहचान से भी बचना पड़ा। वैसे उस्मानी पजाबी, राजस्थानी, गुजराती और मराठी आसानी से बोल सकते थे फिर भी वे यह बहाना बना रहे थे कि वे अग्रेजी और पर्सियन के अलावा किसी भाषा को नही जानते।

समुद्री यात्रा क दौरान उन्हें यह खबर पढने का मिली कि लाहौर मे लालाजी की मौत के लिए जिम्मेवार व्यक्ति की भारतीय क्रातिकारियों ने हत्या कर दी है और उसका बदला चुका दिया है।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में उस्मानी बबई पहुँचे। व मैजेस्टिक होटल में ठहरे और अपना सामान पहुँचने का इतजार करने लगे। घटे डेढ घटे क भीतर सामान आ पहुँचा। नहा-धोकर वे पार्टी ऑफिस पहुँच जहाँ उन्हें मालूम हुआ कि कलकत्ता में आल इडिया वर्कर्स एड पीजेट्स कार्फ्रेस होने जा रही है और सारे साथी वहाँ पहुँच गये है।

वहाँ से नागपुर होते हुए वे 'डॉ जॉनसन बनकर कलकत्ता के लिए रवाना हो गए। लेकिन जब वे कलकत्ता पहुँचे तब तक उपर्युक्त कार्फ्रेस समाप्त हो चुकी थी। उन्होंने दो दिन बाद अपना पासपोर्ट मुजफ्फर अहमद को दिया और पुन एक साधारण आदमी के रूप में हो गए।

बारहवें भाग के पचपन पृष्ठों में विभाजित बारह अध्याया मे 'मेरठ षड्यत्र केस' का विस्तृत विवरण है। जिसका आधार अधिकाशत तत्कालीन समाचार पत्रों में अकित खबरें तथा टिप्पणिया है। पहले मेरठ केस की पृष्ठभूमि को दर्शाया गया है। कलकत्ता से पजाब में लाहौर पहुँचने पर उस्मानी को अब्दुल मजीद मिले और उन्होंने जोर देकर कहा कि उन्हे लाहौर केस म फसा लिया जाएगा क्याकि उस समय लाहौर में सॉन्डर्स की हत्या के कारण क्रातिकारियों की धरपकड चल रही थी। यद्यपि सोहनसिह जोश की कीर्ति के साथी उस्मानी को वहीं रखना चाहते थे लेकिन मजीद अड़ गए और उस्मानी को तत्काल बबई रवाना होना पडा। बबई में पहुँचकर पयाम-ए-मज़दूर' का सपादन सभाला। इधर डागे मराठी के 'क्राति' का सपादन सभाले हुए थे।

पब्लिक सेफ्टी बिल' और ट्रेड डिस्प्यूट बिल' जैसे विधेयकों का लक्ष्य कम्युनिस्ट गतिविधियों पर पाबदी लगाना, मजदूरों के सघर्षों पर कुठाराघात करना और जनता को आतकित करना था। मजदूर सगठनों के नेता अपन सगठनों के काम चला रहे थे और प्रचार कार्य जोरों पर था। डागे गिरनी कामगार यूनियन के जनरल सैक्रेटरी, निम्बकर प्रातीय काग्रेस कमेटी के जनरल सैक्रेटरी, जोगलेकर जी आई पी रेलवे मैन यूनियन के जनरल सैक्रेटरी, घाटे कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सैक्रेटरी, अधिकारी 'क्राति' निकालने मे डागे के सहायक और शौकत उस्मानी 'पयाम-ए-मजदूर के सपादक और मजदूर नेता के रूप में काम कर रहे थे। बबई में 17 से 19 मार्च, 1929 को कम्युनिस्ट पार्टी की मीटिग हुई जिसमें उस्मानी भी थे, उसमें विचार विमर्श के बाद कार्यक्रम की योजना बनाई गई थी।

जब सरकार ने नेताओं के घर पर छापे मारे तो उक्त मीटिग के कागजात घाटे के यहाँ से मिले। इसम टी यू , किसान सगठन, प्रचार-प्रसार कार्य, सगठनात्मक कार्य और राजनैतिक कार्यकलाप हेतु विस्तृत रूपरेखा तैयार करने के लिए एक कमेटी बनाई गई थी जिसमे अधिकारी, खान, उस्मानी और घाटे का नाम शामिल था। सरकारी निर्णय के अनुसार मेरठ के जिला मजिस्ट्रेट द्वारा जारी वारट के अनुसार देश के हर कोने म तलाशिया और गिरफ्तारिया की जाने लगीं। 20 मार्च, 1929 को बबई में 10 नेताओं की गिरफ्तारी हुई जिनमें शौकत उस्मानी भी थे। 22 मार्च को उन्हें मेरठ बुलाया गया।

मेरठ केस के अभियुक्तों म वर्ण क्रमानुसार निम्नाकित व्यक्ति थे—

वर्णक्रमानुसार नाम	गिरफ्तारी का स्थान या प्रदेश
1 अब्दुल मजीद	पजाब
2 अयाध्या प्रसाद	कलकत्ता (बगाल)
3 अमीर हैदरखा	फरार
4 ए ए आल्वे	बबई
5 डॉ बी एन बनर्जी	यू पी

6	बी एफ ब्रैडले	बबई
7	धर्मवीर सिह (एम एल सी)	यू पी
8	डी आर थेंगड़ी	पूना
9	धरणी गोस्वामी	कलकत्ता
10	गोपेन चक्रवर्ती	कलकत्ता
11	जी अधिकारी	बबई
12	गौरीशकर	यू पी
13	गोपाल चन्द्र बासक	कलकत्ता
14	जी आर कास्ले	बबई
15	एच एल हचिन्सन	बबई
16	क एन जागलेकर	बबई
17	के एन सहगल	पजाब
18	किशोरी लाल घोष	कलकत्ता
19	एम जी देसाई	बबई
20	लक्ष्मण राव कदम	झासी
21	मुजफ्फर अहमद	कलकत्ता
22	फिलिप स्प्रैट	कलकत्ता
23	पी सी जोशी	इलाहाबाद
24	आर आर मित्रा	कलकत्ता
25	आर एस निम्बकर	अजमेर
26	एस एच झाबवाला	बबई
27	शमशुल हुदा	कलकत्ता
28	सोहनसिह जोश	अमृतसर
29	एस एस मिराजकर	बबई
30	एस वी घाटे	बबई
31	शिवनाथ बनर्जी	कलकत्ता
32	एस ए डागे	बबई
33	शौकत उस्मानी	बबइ

जेल की कोठरिया का यातनापूर्ण जीवन, हड़ताल अभियुक्तों के इन्कलाबी बयान देश के कोने-कोने में मेरठ पड्यत्र कस की व्यापक अनुगूज और आजादी की जग में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका, बचाव पक्ष में असारी, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू आदि का प्रभावशाली प्रयास, दुनिया के सभी देशा में इसकी प्रतिक्रिया, आइस्टीन जैसे वैज्ञानिकों का अभियुक्तों का पक्ष लेना, ब्रिटिश पार्लियामट में इसकी गूज, उस्मानी की साइमन के खिलाफ ब्रिटिश चुनाव में उम्मीदवारी आदि घटनाओं का ब्यौरेवार वर्णन किया गया है।

शौकत उस्मानी को इस केस में 6 साल 3 महीने और 12 दिन (12 मार्च, 1929 से 1 जुलाई, 1935) की सज़ा भुगतनी पड़ी। कानपुर और मेरठ केस को मिला दें तो उस्मानी 10 साल 6 माह और 27 दिन की और इसमे युद्ध के समय की सज़ा, 4 साल, 4 माह और 24 दिन (14 7 1940 से 6 1 1945) और जोड़ दें तो कुल 14 साल 11 माह और 21 दिन लगभग 15 साल सीखचों में घुटन और कष्ट झेलने पड़े। इसके अलावा पेशावर से मॉस्को तक की यात्रा में उन्हें पाशविक अत्याचार भी सहन करने पड़े। लेकिन हर तकलीफ म 'इकलाब जिन्दाबाद' ही उनका नारा था।

तेरहवें भाग के चालीस पेज वाले छ अध्यायों में मेरठ षड्यत्र केस के वर्णन का सिलसिला है। सयुक्त प्रदेश के एम एल सी धर्मवीर को छोडकर और एक फरार के अलावा 32 अभियुक्तों में से 31 के खिलाफ कस चलाया गया। इसमे खास जोर इस बात पर था कि यूरोप म केन्द्रीय कार्यालय स्थित कम्युनिस्ट इटरनेशनल के माध्यम से ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का षड्यत्र रचा गया है।

सन् 1931 की 7 फरवरी को मोतीलाल नेहरू के निधन से बचाव पक्ष को क्षति हुई। इधर कुछ अदरूनी कारणों से बचाव पक्ष का सारा दायित्व अभियुक्तो ने स्वय सभाल लिया, अत बाहर से बचाव समिति की सार्थकता जाती रही।

जेल में अभियुक्तों ने मार्च म सरदार भगतसिह, सुखदेव और राजगुरु को फासी लगाने की घटना पर मातम मनाया। अदालत में घुसते ही अभियुक्तों ने नारे लगाए–'भगतसिह जिन्दाबाद', 'सुखदेव जिन्दाबाद', 'राजगुरु जिन्दाबाद', 'गोरों का आतक मुर्दाबाद' और इन्कलाब जिन्दाबाद'।

आगे इस भाग मे विस्तार के साथ अभियुक्तों के राजनीतिक बयानों का उल्लेख किया गया है जो उन्होंने कटघरे में खड़े होकर दिये। इनमे राधारमण मित्रा, शमशुल हुदा, गोपाल बासक, धरणी गोस्वामी, शिवनाथ बनर्जी, गोपेन चक्रवर्ती, विश्वनाथ मुकर्जी, पी सी जोशी, गौरीशकर, एम ए मज़ीद, केदारनाथ सहगल, सोहनसिह जोश, फिलिप स्प्रैट, मुजफ्फर अहमद, किशोरी लाल घोष, बी एफ ब्रैडले, अयोध्याप्रसाद, एच एल हचिन्सन, एस एच झाबवाला, डी आर थेंगड़ी, शौकत उस्मानी, जी आर कास्ले, के एन जोगलेकर और जी अधिकारी सम्मिलित है।

शौकत उस्मानी ने अपने बयान मे कहा–'मैं मार्क्सवादी लेनिनवादी अर्थ मे कम्युनिस्ट हूँ। कम्युनिज्म ही एकमात्र ऐसा सिद्धान्त है जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विषमताओं की समस्याओं का हल कर सकता है। एकमात्र वही मानव द्वारा मानव के शोषण को समाप्त कर सकता है और साम्राज्यवादी औपनिवेशिक गुलामी से आजादी दिला सकता है। उसने जोर देकर कहा कि वह कम्युनिस्ट था, है और आगे भी कम्युनिज्म के लिए अपन जीवन को समर्पित करता रहेगा। उस्मानी ने पूजीवादी साम्राज्यवाद को जगखोर सिद्ध किया, साप्रदायिकता को जड़ से उखाड़ फेंकने पर जोर दिया और पूजीवाद के विनाश की अवधारणा व्यक्त की।

उन्होंने 'पेशावर से मॉस्को' पुस्तक का लेखक होने को स्वीकारा, जिसे प्रतिबधित कर दिया गया था। उन्होने सोवियत यूनियन और उसके कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा की।

चौदहवें भाग म बारह अध्याय हैं जिनमें यू के के आम चुनाव में अभियुक्त शौकत उस्मानी की उम्मीदवारी, मेरठ षड्यत्र केस मे सरकारी व्यय, शफ़ीक की गिरावट, शफीक के पत्र की प्रतिक्रिया, कानूनी दलीलें, केस का एकत्रीकरण, उस्मानी के विरुद्ध दलील, अलमोड़ा, अन्तर्विरोध, अलमोड़ा से स्थानातरण, सामान्य अभिरुचि और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के विषय मे स्पष्टीकरण आदि पर चर्चा है।

ब्रिटेन के चुनाव में जौन साइमन के विरुद्ध कम्युनिस्ट प्रत्याशी के रूप में अभियुक्त शौकत उस्मानी को सन् 1924 में स्पेनवेली निर्वाचन क्षेत्र से खड़ा किया गया था। यह उम्मीदवारी राष्ट्रव्यापी फासिस्ट तानाशाही, सुधारवादी लेबर चालबाजी और साम्राज्यवादी राउन्ड टेबल धूर्तता के विरुद्ध कम्युनिस्ट विकल्प के रूप में थी। अदालत ने अभियुक्त की चुनाव लड़ने की जमानती अर्जी रद्द कर दी। उसने चुनाव में अभियुक्त उस्मानी की उम्मीदवारी को भी षड्यत्र का एक हिस्सा करार दिया।

सरकार की ओर से मेरठ षड्यत्र केस म जनता से वसूल किय गये उस समय के मूल्य के 12,18,000 (बारह लाख अठारह हजार) रुपये खर्च किये गए। अघोषित या अनौपचारिक खर्चा इसके अलावा था।

शौकत उस्मानी को उस समय गहरा आघात लगा जब शफीक ने उन्हें जकात विभाग के लैटर हैड वाले कागज पर पत्र भेजा, जिसकी उन्हें बिल्कुल आशा नहीं थी। जो व्यक्ति उनका सहयात्री था और ताशकद में स्थापित कम्युनिस्ट पार्टी का पूर्व सचिव था उसने सरकारी लैटर हैड पर पत्र कैसे भेजा, यह उसका पतन तो था ही–उस्मानी जैसे क्रातिकारी का भी अपमान था।

सरकारी सुविधाओं का उपभोग करने या न करने को लेकर अभियुक्तों में अन्तर्विरोध पैदा हो गया था। उस्मानी उपभोग करने के विराधी थे। लेकिन इसमें वे अल्पमत में पड़ गए। उनकी भूख हड़ताल में भी किसी ने सहयोग नहीं किया। इससे क्षुब्ध होकर वे जेल की कम्युनिस्ट कमेटी को छाड़ने को विवश हो गए। सोवियत यूनियन में बनी कम्युनिस्ट पार्टी के राय-आचार्य अन्तर्विरोधों में भी वे इसी तरह तटस्थ हो चुके थे। लेकिन उस्मानी ने कभी भारत की कम्युनिस्य पार्टी को आरोपित नहीं किया जिसे वे अपनी मा मानते थे। वे गुटबाजी और कम्युनिस्ट आचरण में कमजोरी दिखाने वाले साथियों के खिलाफ थे।

भाग सख्या पद्रह में भी बारह परिच्छेद है। इसमें मेरठ केस के उपसहार से लेकर द्वितीय विश्वयुद्ध तक की राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण है। मेरठ केस के निर्णय में 31 अभियुक्तों में घेंगड़ी का तो निघन हा गया था। बाकी अभियुक्तों को निम्नाकित सजाए सुनाई गईं –

मुजफ्फर अहमद को आजीवन, जोगलेकर, डागे, घाटे, स्प्रैट और निम्बकर को 12 साल, बैडले, मिराजकर और उस्मानी को 10 साल, सोहन सिह जोश, अब्दुल मजीद और गोस्वामी को 7 साल, देसाई, अधिकारी, अयोध्याप्रसाद, पी सी जोशी को 5 साल, चक्रवर्ती, बासक, हचिन्सन, मित्रा, झाबवाला और सहगल को 4 साल, शमशुल हुदा, आल्वे, कासली, गौरी शकर और कदम को 3 साल की सजा और के घोष, वी मुखर्जी और एस बनर्जी को छोड दिया गया। क्योंकि उपर्युक्त सजाएँ दिए जाने वाले अभियुक्तो ने मेरठ में मजदूरों और किसानों की पार्टी बनाकर सरकार को उलटने के लिए सम्मेलन किया था। अत इसे 'मेरठ षड्यत्र केस' का नाम दिया गया।

आगरा जेल में शौकत उस्मानी और काकोरी षड्यत्र केस के अभियुक्त जोगेश चटर्जी, राजू बाबू और सचीन्द्र नाथ बक्शी एक साथ हो गए। जोगेश चटर्जी वह व्यक्ति थे जिन्होंने 105 दिन भूख हड़ताल करके विश्व रिकार्ड बनाया था।

अपीलें दायर हुईं और बाद में सजाओं को घटा कर कइयो का पहले छोड दिया गया। जबकि शौकत उस्मानी और डागे को सबस लम्बी अवधि तक सज़ा भोगने के बाद मुक्ति मिली। डागे को मई 1935 में और उस्मानी का जुलाई 1935 में छोड़ा गया।

रिहाई से कुछ दिन पहले उस्मानी के चचेरे भाई ने बताया कि बीकानेर रियासत में उनके प्रवेश पर पाबदी अब भी जारी है जिसे सन् 1927 से लगा दिया गया था। इसलिए रिहाई के बाद खाली जब कहाँ जाए—यह समस्या सकट बनकर सामने खड़ी हो गई। आखिर उन्होंने आगरा से अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ अजमर जाने का निर्णय किया।

शौकत उस्मानी ने कोई जायदाद नहीं बनाई और न ही कोई तकनीकी डिग्री हासिल की थी, इसलिए पुनर्वास अपने आप में एक क्रूर समस्या थी। किशारावस्था के उत्तराश मे वे सोवियत यूनियन चले गये। वहाँ से आकर गिरफ्तार हो गए और तब से लगातार पुलिस वारट लिए उनका पीछा करती रही।

बचना चाहते हुए भी ब्यावर में काग्रेस के स्वर्ण जयती अवसर पर उन्ह मीटिंगा में भाग लेना पड़ा। वहाँ उन्हान राजस्थानी में भाषण दिए। इधर जयनारायण व्यास ने भी राजस्थानी मे एक साप्ताहिक पत्र निकालना आरभ कर दिया था। अजमेर म एक रेलवेमैन को किसी यूरोपीय अधिकारी ने ठोकर मार दी। इस पर फिर उन्हें सक्रिय होना पड़ा। वहाँ जब जवाहर लाल नेहरू आए और लोगों ने उनसे ट्रेड यूनियन आन्दोलन को गति देन की माग की तो नेहरूजी न कहा—आप इस विषय में उस्मानी से क्यों नही बात करते। तब लोग उस्मानी से मिले और उन्हाने उन्हें बी बी एड सी आई रेलवेमैन का जनरल सैक्रेटरी चुन लिया। फिर कुछ समय बाद उन्हें अध्यक्ष बनाया गया, लेकिन जिसे जनरल सैक्रेटरी बनाया वह गैर राजनैतिक व्यक्ति था, अत अधिक समय तक कोई कारगर कार्यक्रम नहीं किया जा सका।

वहाँ से उस्मानी फिर बबई आ गये। इधर दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया। नाजियों ने चैकोस्लोवाकिया का परास्त किया, पोलड पर हमला किया, ब्रिटेन और फ्रास ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। हिटलर ने पोलड को जीता और बढ़ते-बढ़ते वह कई छोटे देशा को रौदता हुआ आगे बढ़ता गया।

भारत म अग्रजी हुकूमत न वामपथियों पर फिर दमन-चक्र चला दिया। इसी सिलसिल मे 14 जुलाई, 1940 को उस्मानी को डिफेंस ऑफ इडिया रूल (DIR) म गिरफ्तार कर लिया गया। अब फिर उन्हें घुटन भरे वातावरण को भोगना पड़ा। इसके बाद अनेक नेता गिरफ्तार होकर आगरा जेल में पहुँचाए जाने लगे। आगरा के बाद उन्हें देवली जेल में स्थानातरित कर दिया गया। देवली में अभियुक्तों का दो दलों म विभाजित किया गया था। एक में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य और सहानुभूत थे तो दूसरे मे क्रातिकारी और राष्ट्रवादी। उस्मानी रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी स जुड़ गए। लेकिन जब जर्मनी ने सोवियत यूनियन पर आक्रमण किया तो अभियुक्तों में भी मतभेद उभर आए। सोवियत सघ क पक्षधर उस्मानी अल्पमत में हा गए और लगभग अलग-थलग पड़ गए। अब सरकार ने अभियुक्तों का दुबारा वर्गीकरण किया जिसमें एक ग्रुप में सोवियत विरोधी तथा ब्रिटिश विरोधी अभियुक्त रखे गय तो दूसर म ब्रिटिश विरोधी लेकिन सोवियत पक्षधर अभियुक्तों को। जेल से जब उस्मानी ने 'मोलोतोव' को पत्र भेजा और इसकी जानकारी साथी अभियुक्तों को मिली तो वे बहुत नाराज हुए।

इस कालावधि में दो बार उन्हें भूख हड़ताल भी करनी पड़ी जिसमें एक गाँधी जी के अनशन की सहानुभूति के उद्देश्य से की गई थी। 14 जुलाई, 1940 से जेल सजा भुगतने के बाद 8 जनवरी, 1945 को शौकत उस्मानी को रिहा किया गया।

आत्मकथा का अतिम अर्थात् सोलहवा भाग 94 पृष्ठों के पद्रह परिच्छेदों में है जा शौकत उस्मानी की 'यह है मेरी जिन्दगी' को चरम स्थिति तक पहुँचा दता है।

जब दवली से पजाब यू पी और बिहार की विभिन्न जेलों में उलटते-पलटते उस्मानी का तपाया जाता रहा था उस समय से देश में उथल-पुथल के कारण राष्ट्रीय धड़कन तीव्रगति पकड़ने लगी थी। ज्यों-ज्यों दमन बढ़ रहा था, जन-साधारण भी उबलता जा रहा था।

सन् 1946 के फरवरी के तीसरे सप्ताह में नाविक विद्रोह की घटना ने ब्रिटिश शासन का थर्रा दिया। सितम्बर 1946 में उस्मानी नेशनल सी अफेयर्स यूनियन बबई के जनरल सैक्रटरी बना दिय गय। आर एस पी क सोवियत विरोधी रुख के कारण उस्मानी की उनसे भी नहीं पटी।

इसके पश्चात् देश के विभाजन के साथ भारत की आजादी की शुरुआत हुई। उस्मानी विभाजन के खिलाफ थे और स्वतन्त्र भारत का राष्ट्रकुल में रखने के भी विरुद्ध थ। इसलिए अनेक नेताओं स उनकी वैचारिक टकराहट चलती रही।

पाकिस्तान बनने के बाद भी शौकत उस्मानी देश की एकता के लिए प्रयास करते हुए प्रचारक के रूप में पाकिस्तान पहुँचे जहाँ गुलाम मौहम्मद से उनकी मुलाकात हुई और उन्हें डिप्टी मिनिस्टर बनने के लिए कहा गया, लेकिन उस्मानी भारत की अपनी 'नेशनेलिटी' छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे अत प्रस्ताव ज्यों का त्यों धरा रह गया।

पाकिस्तान में अपने एकता मिशन को सार्थक न होते देखकर उस्मानी को हताशा का सामना करना पड़ा। इधर-उधर भटकते रहने के बाद वे किसी साथी का सहयोग लेकर 7 सितबर, 1952 को लदन पहुँच गए। वहाँ उन्हे भोज्य पदार्थों पर अनुसधान करने की प्रेरणा प्राप्त हुई जिसके लिए उन्होंने काम करना चालू किया। लदन की यह पहली यात्रा 78 दिनों की रही। इसके बाद फिर भारत लौट आए।

इसके बाद उस्मानी कुछ दुखद घटनाओं का वर्णन करत है जिनमें स्टालिन, एम एन राय और एम पी टी आचार्य आदि के निधन से सबधित है। इन तीनो के प्रति उनके हृदय में बहुत बड़े सम्मान और आत्मीयता की भावना थी। चाहे विचारों में मतभेद रह हों किन्तु इसे स्वाभाविक मानत हुए भी वे उनके व्यक्तित्वा से प्रभावित थे।

भारत मे अनुसधान के लिए काम करने लायक वातावरण नहीं बन सका। जीवनयापन और आवासीय सुविधा जुटाने के लिए आर्थिक स्थितियाँ भी नही बन पा रही थीं और न ही अध्ययन के लिए वाछित सामग्री। उधर लदन का 'ब्रिटिश म्यूजियम पुस्तकालय' के उपयोग का आकर्षण इतना तीव्र हो चुका था कि वे वापिस लदन पहुँचने को छटपटाने लगे।

उस्मानी जिस किसी प्रकार लदन पहुँच गये जहाँ डॉ के डी कामरिया न नाम मात्र के किराए पर उन्हें आवासीय कमरा दे दिया। कुछ दिनों तक पोस्ट ऑफिस में डाक छाटने का काम किया और कुछ पैसा बेराजगारी भत्ते क रूप मे मिलने लगा। इससे अब वे अपने शोध कार्य में जुट गये। जिसका परिणाम भोज्य पदार्थों के स्वास्थ्यपरक मूल्यों' शीर्षक पुस्तक क रूप में सामने आया।

लदन म रहते हुए वे गोवा मुक्ति आदोलन पर डिस्पेच भेजत रहे और इस प्रकार उसे आगे बढ़ाने में सार्थक प्रयास किया। लेबर पार्टी की सदस्यता ग्रहण करके उसके मच का भी भरपूर उपयोग करते रहे। जब 'एशियन फ्लू' ब्रिटेन म प्रवेश कर गया उस समय तक उस्मानी का शोध कार्य काफी विकसित हो चुका था जिसक आधार पर उन्होंने बहुतों को अपना चिकित्सा-पत्र देकर निमोनिया से बचा लिया।

इस प्रकार जीवन बिताते हुए उस्मानी 6 साल (1955 से 1961) तक लदन मे रहे। 'आत्मकथा' में 'ब्रिटिश म्यूजियम पुस्तकालय' के विषय म भी मार्मिक उल्लेख है।

लेखक के अनुसार 'ब्रिटेन की पहचान न तो ससद भवनों के क्रियाकलापो से होती है और न ही सरकारी कार्यालयों से। उसकी पहचान प्राप्त करने के लिए

आपको गलियों, मुहल्लों में जाना होगा और आम लोगा के विशाल प्रदर्शनों में शामिल होना पड़ेगा।'

अतिम अध्याय में शौकत उस्मानी ने अपनी जिन्दगी का सिहावलोकन किया है। यह स्वाभाविक ही है कि परिपक्व उम्र में और एकाकी वातावरण में शानदार जीवन की भोगी हुई घटनाओं का स्मृति में से निकलकर उन्हें फिर स जीना–आत्मीयता का आनदप्रद साक्षात्कार करना हाता है और वास्तव में उद्देश्यपरक जीने की तुलना ता किसी से की भी नहीं जा सकती।

इसके अलावा उस्मानी ने इसम एक आर आलोचका को आड हाथ लिया है तो दूसरी ओर अनेक भ्रातियों का निराकरण भी किया है। एक जगह कहा गया है कि हम अव्यावहारिक आदर्शवादी ता कहा जा सकता है किन्तु दुस्साहसी' (Adventurist) कहना भयकर गलती होगी, क्योंकि हमारे में न ता दुस्साहसिया में पायी जाने वाली महत्त्वाकाक्षाए थीं और न ही स्वार्थ भावना। वह ता दश को आजाद करवाने के लिए हथियारबद लड़ाई में अपने जीवन को सार्थक करने की अनुल्लघनीय तमन्ना थी।

लदन से वापिस भारत आन पर जब कम्युनिस्ट मित्रों ने शौकत उस्मानी को पार्टी में शामिल होने के लिए कहा तो उन्होंने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होना स्वीकार कर लिया क्योकि वे उसके सिद्धान्तों से सहमत थे।

इस देश का दुर्भाग्य था कि स्वतत्र भारत ने उस्मानी को उपेक्षा क गर्त में फेंक दिया। जब वे कहते हैं 'आधुनिक भारत में मै कुछ भी नहीं रह गया था केवल भूतपूर्व भारत की प्रतिमा मात्र था', तो निराला की यह पक्ति जबान पर आ जाती है

बाहर मैं कर दिया गया हूँ,
भीतर पर भर दिया गया हूँ।

* * * *

यह है एक अन्तर्राष्ट्रीय और विशेषत एक भारतीय क्रातिकारी की आत्मकथा का सार। निधन के 18 साल से भी अधिक बीत जाने के बाद आज तक इसका प्रकाशन नहीं हा पाया। इसकी रचना का तो 28 स भी ऊपर गुजर चुका है। शौकत उस्मानी की तरह उनकी इस 'क्रातिकथा का पता नही कब तक उपक्षित पडे रहना होगा। हो सकता है यह कभी लोकार्पित हो ही नहीं। यह ता लग ही रहा है कि इसे उस्मानी युग का कोई भी आज़ादी का दीवाना' पढन का बाकी न बचे।

इसमे रचनाकार के व्यक्तिगत जीवन, भारत के सर्वाधिक मार्मिक अवधि खड और तत्कालीन विश्वभर की बहुआयामी आबाहवा मे घटित वस्तुपरक घटनाआ का वर्णन, चहुँमुखी गतिविधियों का विश्लेपण जग-ए-आजादी के दौरान भोगी गई स्वय की, साथियों और जनसाधारण की यातनाआ का हृदयस्पर्शी उच्छ्वास, आलोचना और आत्मालोचना, आजादी के बाद क्रातिकारियो की उपेक्षा का हृदयविदारक चित्रण

और अनेक विषयों का सतुलित आकलन सन्निहित है। यह न केवल आत्मनिष्ठ है, अपितु वस्तुनिष्ठ भी है। इसे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय धरोहर कहा जा सकता है।

प्रत्येक आत्मकथा अधूरी होती है। इसकी खास वजह होती है कि लेखक रचना पूरी करने के बाद भी जीवित रहता है, किन्तु वह उसे पहले ही पूरी करके छोड़ देता है। शौकत उस्मानी भी कम से कम अतिम एक दशक की बात नहीं लिख पाए। कुछ बातें ऐसी भी होती है जिन्हें लेखक अपनी गरिमा के अनुकूल नहीं समझता, अत उन्ह भोगते हुए भी पचा जाता है। उस्मानी न न अपनी पत्नी का हवाला दिया और न ही अपन एकमात्र पुत्र का जिन्ह वे शुरू मे ही छोडकर चले गये थे। उन पर क्या बीती होगी अथवा उनकी क्या स्मृतियाँ रही हागी—कहीं उल्लेख नहीं किया। पत्नी कब चल बसी और (इस समय 75 साल का जीवित) पुत्र किन मुसीबतों में जीता रहा आदि बात लिखी जा सकती थीं। यहाँ उनके मनोवेगों की चर्चा करना समीचीन नही होगा, फिर भी जिन्दगी के एक पक्ष को बिल्कुल गायब कर देना भी ठीक नहीं प्रतीत होता।

आत्मकथा मे बहुत जगह पुनरावृत्तियाँ हुई है और कालक्रम का चक्र कई बार पीछे घूमता दिखाई देता है। पाठक की परेशानी बढ़ जाना स्वाभाविक है। लेखक का दर्द भी बिखर कर इतना फैल गया है कि उसकी टीस मर्मस्थल पर अपेक्षित अथवा केन्द्रीभूत प्रहार करन से वचित रह गई है।

किसी स्थान पर उस्मानी ने यह सकेत दिया है कि इस रचना क तथ्यो की जाच क लिए इसकी प्रति कहीं भेजी गई है, किन्तु उसके बाद उसका क्या हुआ इसका पता नही चला। यहाँ यह कहा जा सकता है कि इसमें वर्णित सारे वाकयात अपने आप में स्वय सत्य प्रमाणित है जिनकी जाँच की कोई आवश्यकता ही नहीं मालूम होती।

आज़ादी के बाद उस्मानी पर से बीकानेर मे प्रवेश करने का प्रतिबध हटा लिया, तब भी वे बीकानेर म स्वेच्छा से क्या नहीं आए इसका उन्हाने कहीं उल्लेख नहीं किया।

निस्सदह आत्मकथा उसके नायक के अनवरत सघर्षशील व्यक्तित्व, उसकी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापकता, उसकी सुदृढ़ सकल्प शक्ति, उसकी अद्भुत साहित्यिक प्रतिभा एव उसकी अनुपम सहन क्षमता को उजागर करने में सफल हुई है। यहाँ उनकी पत्रकारिता की कुशलता ने उनका भरा-पूरा साथ दिया है।

प्रस्तुत रचना अपनी अभिव्यक्ति में जहाँ सवादमय है वहाँ नाटकीय आभास भी देती है तो कहीं काव्य भाव वाले गद्य में सौंदर्य बोध की झलक भी अग्रेजी भाषा में उस्मानी उर्दू, फारसी, पजाबी और राजस्थानी का पुट देकर उस इद्रधनुषी आकर्षण दे रहे है तो तरह-तरह की कहावता और मुहावरों में चुटकी भरे व्यग्य से धार को पैना कर रहे होते है। उद्धरणों, अदालती फैसले, पत्राचार और सत्यापित सामग्री ने इसमें अकित तथ्या को प्रमाणित करके यह सिद्ध कर दिया है कि इसके

विपरीत जो कोई जहाँ कहीं कुछ कहता लिखता है वह उसका पूर्वाग्रह ही हो सकता है, यथार्थ नही।

आत्मकथा में लेखक ने अनेक बातों के स्पष्टीकरण दिये है जो सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में उस्मानी यह सब कुछ नहीं लिखते तो अनेक भ्रातियों का बना रहना स्वाभाविक हो जाता और उस हालत में अनक गलत नतीजे निकाले जाने की गुजाइश कायम रह जाती। भ्रातिया पैदा करने वालों का मकसद ही होता है किसी समुज्ज्वल प्रतिभा को विकृत कर देना। नायक के जीवन के प्रासगिक विरोधाभासों को समझना तभी सभव होता है जब सारे सदर्भों के भीतर गहराई से झाककर देखा परखा जाय।

आत्मकथाओं का साहित्य भडार भी कम समृद्ध नहीं है और वह भी हरक भाषा म। प्रत्येक नेता, कलाकार अथवा सामाजिक कार्यकर्त्ता कभी खुद अपनी आत्मकथा *लिखता है तो कभी दूसरे से लिखवाता है। आत्मकथा* आत्मकथ्य के रूप में भी होती है, उपन्यास की शक्ल में भी (जिस पहचान पाने में कुछ दिक्कत भी होती है) और अन्य विधाओं जैस 'स्मृति अकन या व्यग्य अथवा मचीय नाटक आदि के रूप में भी। इस आत्मकथा भडार में उस्मानी की यह कृति 'जलती हुई मशाल की तरह अपना परिचय स्वय दे देगी।

यह इतिहास की एक एसी कड़ी है जिस न ता हटाया जा सकता है और न ही अनदेखा किया जा सकता है। इसका अध्ययन किया जा सकता है और अवश्य *ही किया जाना चाहिये ताकि हम विकास की शृखला में एक कड़ी और बनकर* उस आगे बढ़ा सके। किसी की आत्मकथा को दुबारा तो नहीं जिया जा सकता। जैस इतिहास कभी दुहराया नही जा सकता किन्तु इससे आगे की कडी बन सकने की समझ हासिल की जा सकती है। उस्मानी की इस कृति से यह प्रेरणा उभरती ही है कि सर्वोच्च सार्थकता को पहचानकर उसे जीना ही समाज का अगला कदम है।

शौकत उस्मानी की इस आत्मकथा का प्रकाशन होगा कि नही—कहा नहीं जा सकता। यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका प्रकाशन किया ही जाना चाहिये ताकि अनेक गुत्थियों को सुलझाया जा सके। शीघ्रतिशीघ्र इस अग्रेजी रचना *का इसी रूप म प्रकाशन हो, फिर हिन्दी और उर्दू अनुवाद करवाए जाकर उन्हे प्रकाशित* करवाया जाना चाहिए ताकि एक जीवित क्रातिकारी की उपेक्षा करने का जा गुनाह हो चुका है उसकी आत्मकथा की पाडुलिपि को दीमक के द्वारा खा लिए जान का अवसर देन के गुनाह को दोहराने की नौबत का सामना न करना पड़े।

* * * *

उपलब्ध पत्रों के अश

यहाँ शौकत उस्मानी के द्वारा लिखे गये कुछ पत्रों के प्रासगिक अश दिए जा रहे हैं। मूल उर्दू और अग्रेजी में है, जिन्हें प्रस्तुत रचना की भाषा मे अतरित किया गया है। सभी पत्र आगौज़ा होटल, 3 एम डी तत्लातपाशा स्ट्रीट, आगौज़ा—काहिरा यू ए आर से भेजे गए है, सिर्फ दो ही ऐसे है जो डॉ जी अधिकारी (चेयरमैन कट्रोल कमीशन), सी पी आई केन्द्रीय कार्यालय, अजय भवन, कोटला मार्ग, नई दिल्ली से प्राप्त हुए हैं। वैसे उस्मानी ने सैकड़ो ही पत्र लिखे होंगे, लेकिन इनके अलावा और कोई पत्र कहीं से प्राप्त नहीं हो सका। इनमे से पाँच अपने भतीजे इफ्तिखार अहमद को सबोधित, सात अपने भाई इलाहीबक्श को, दो अपने पुत्र उस्मान ग़नी को, एक भाई रियाजुद्दीन को (सभी मौहल्ला उस्तान, बीकानेर के पते पर), एक श्री एल देवानी, मार्फत—क्वार्टर न 34 वाई, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली, एक श्री रतनलाल बसल को, मार्फत 'धर्मयुग' 'टाइम्स ऑफ इडिया' बिल्डिग, बबई-1 और एक मैनेजिग डाइरेक्टर 'प्रताप प्रस' कानपुर, यू पी को सबोधित है। कुछ पत्रा में अपने पुत्र उस्मान गनी स पत्राचार का उल्लेख है, लकिन उनसे सपर्क करने पर केवल दा पत्र ही प्राप्त हो सके। जो पत्र मिल उनके अश नीचे दिए जा रहे है—

1 आगौज़ा होटल, काहिरा से दिनाक 26 11 1966 को अपने भतीजे इफ्तिखार अहमद का सबोधित—(मूल भाषा—उर्दू)

' यहाँ काहिरा मे मेरे पास अपनी किसी रचना की कोई प्रति शप नहीं है, कुछ रचनाओ की तो एक भी प्रति नहीं रख सका। भारत मे मेरे किसी दोस्त क पास होगी तो मै तुम्हारे लिए उपलब्ध कराने का भरसक प्रयत्न करूँगा। मरी कुछ पुस्तकें मेरे प्रिय भाई और तुम्हारे पिताजी के पास थी, सभवत तुमने उन्हें देखा होगा ?

'यहाँ मै बबई के 'फ्री प्रेस जर्नल' के प्रतिनिधि के रूप में पत्रकारिता का काम कर रहा हूँ। इस पत्र म यदा-कदा मर द्वारा प्रेपित पत्र प्रकाशित होत रहते है।'

2 आगौज़ा होटल, काहिरा से दिनाक 26 11 1966 को अपने भाई इलाहीबक्श को सबाधित—(मूल भाषा—उर्दू)

' खत आपका मिला। यह सुन कर कि आपको अपनी (बाबत तन्दुरुस्ती) शिकायत है, अफसास हुआ।

—

'इलायची का इस्तेमाल रखें और अजवायन उबाल कर पीठ पर मलें। सेब दस्तयाब हो सके तो उसका इस्तेमाल जरूरी है।'

'और सबसे जरूरी चीज बदन की हड्डिया के लिए करमकल्ला पका हुआ या कच्चा निहायत मुफीद है।'

मुझे अपने भतीजे इफ्तिखार अहमद की अग्रेजी बहुत पसद आयी और आपको तीसरे फर्जंद के बारे म मुबारकबाद है। मुझे अपने होनहार भतीजे पर फख्र है।'

' उस्मान गनी की माँ और उस्मान ग़नी को सलामोदुआ।'

3 आगौज़ा होटल काहिरा से (तारीख अकित नहीं) मैनेजिग डाइरेक्टर 'प्रताप प्रेस', कानपुर, उत्तरप्रदेश को सबोधित—(मूल भाषा—अग्रेजी)

प्रिय महोदय,

गणेश शकर विद्यार्थी बालकृष्ण शर्मा और हरिशकर विद्यार्थी—ये तीन नाम उन व्यक्तियों के हैं जिन्हें कानपुर कभी नहीं भूल सकता।

और गणेश शकर विद्यार्थी तो ऐसे पहले व्यक्ति थे जो साप्रदायिकता से बहुत ऊपर उठे हुए और किसी भी जाति के विरुद्ध पूर्वाग्रहा से ग्रस्त कतई नहीं थे जबकि सारा देश साप्रदायिकता की आग में सुलग रहा था। वे हर उस व्यक्ति को शरण देते थे जो भारत की आजादी के लिए समर्पित था। मै उनसे सन् 1922 की बसत म मिला था और उन्होंने मुझे फरार सेनानी की सर्वोत्तम सुविधा दी थी और जब मै (9 5 1923 से 26 8 1927) चार साल से अधिक की जेल सजा काट कर वापिस आया, तब भी मैंने पाया कि खतरनाक क्रातिकारियो की सहायता करने की वजह से अत्यत सकटो का शिकार हाते हुए भी देश के क्रातिकारियों के लिए सुरक्षित ठहरने का मुख्य स्थान उन्ही के यहाँ होता था। विदेशी शासकों के हाथा उनका अमानुषिक मारपीट मिलती रही और देशवासिया न भी उपक्षा ही की, लेकिन व नहीं झुके।

व गणेश शकर विद्यार्थी ही थे जिन्होंने मेरी रिहाई के बाद मुझे मेरी सोवियत सघ की यात्राओं का इतिहास लिखने का कहा था जिसमें उन भारतीय मुहाजिरीना के पहले दल का विवरण हो, जिसने सोवियत सघ में प्रवेश करके सन् 1920 में लाल फौज के साथ मिल कर लड़ाई लड़ी थी।

और उन्होंने मेरे द्वारा लिखित उस विवरण को 'रूस यात्रा' शीर्षक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया था। खेद है कि हमारे देशवासियों ने रूसी क्राति पर तत्कालीन चर्चा करत समय इस पुस्तक का उपयोग नहीं किया और निर्ममता स तथ्यों को झुठलाते रहे है। इसका सबसे ताज़ा उदाहरण बबई से निकलने वाला 'धर्मयुग' है जिसने तुर्कमानियों के खिलाफ लड़नेवाले मुहाजिरीनों की भूमिका के बारे में पूरी

तरह झूठी तस्वीर पेश की है। श्री रतनलाल बसल ने उसमें जो कुछ लिखा है-वैसा तो हमारे स्वतत्रता सग्राम के प्रारभिक इतिहास की थोड़ी सी जानकारी रखनेवाला भी नहीं लिखता। मै यहाँ 'धर्मयुग' के दिनाक 12 11 1967 के अक मे प्रकाशित उसके निबध के बारे में चर्चा कर रहा हूँ।

'रूस यात्रा' के प्रकाशक पर निर्भर करता है कि वह श्री बसल को उसकी गलतबयानी का एहसास करवाए। हमारे दल में कोई हिन्दू नहीं था-यदि कोई हाता तो हमारा वह प्रिय साथी होता। मुझे यह समझ म नही आता कि राय एस किस शहीद यात्री से कब मिला जिसने भारत से तुर्कमनिस्तान का सफर किया और जिसका उसने उसके लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अवसर प्रदान नही किया। हमें न तो ताशकद में और न ही मॉस्को म ऐसे किसी के बारे मे जानकारी मिली। यदि सन् 1922 के बाद की काई घटना है जब हम सब सोवियत सघ से बाहर थे—कुछ भारत की जर्लों में थे और दूसरे सन् 1923 के आरभ में ट्रायल का सामना करने की तैयारी कर रहे थे। इसलिए मेरा अनुरोध है कि आप 'रूस यात्रा' म वर्णित तुर्कमेनियों द्वारा हमे पकड़े जाने और उसक आगे की 'केरकी' फ्रट पर लड़ने की घटना की राशनी में अपने किसी 'कॉलम' में बसल को माकूल जवाब दे दें।

आखिर में मेरा निवेदन है कि 'रूस यात्रा' की एक प्रति मरे पुत्र मिस्टर उस्मान गनी, मौहल्ला उस्तान, इमामबाड़ा के सामने, बीकानेर (राजस्थान) को भेज कर अनुग्रहीत करें।

कानपुर में 'प्रताप प्रेस' के मरे सभी नये पुराने दोस्ता का अभिवादन।

सधन्यवाद।

आपका विश्वसनीय
शौकत उस्मानी

4 आगौज़ा होटल, काहिरा से दिनाक 1 12 1967 को श्री एल देवानी, क्वार्टर न 34, वाई, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली को अग्रेजी में लिखित पत्र—

प्रिय श्री एल देवानी

काफी अर्से से तुम्हारा काई पत्र नही मिला। मुझे उम्मीद है तुम्हारी तन्दुरुस्ती बिल्कुल बढ़िया होगी, और हर तरह से बखूबी अपना काम अजाम द रहे हागे।

यदि लदन में चौधरी को फ़ाइल नहीं भेजी हो ता मेरा निवेदन है कि अब हमें अपना वायदा पूरा कर लेना चाहिए। वह इसके लिए इतज़ार कर रहा होगा और निस्सदेह मुझसे नाराज़ हो रहा होगा।

यहाँ इस पत्र के साथ सलग्न एक और पत्र श्री रतनलाल बसल को सबोधित कर भेजा जा रहा है जिसने अपनी कल्पना क घोड सोवियत सघ तक दौड़ा दिए है। कृपया उसके निबध को 'धर्मयुग' के दिनाक 12 11 1967 के अक में पढ़ने का

श्रम करें और इस सबंध मे आवश्यक कदम उठाए क्योंकि आप हमारी यात्रा की पूरी जानकारी रखते है कि हमारे साथ क्या बीती। मुझे आशा है कि आप उसे माकूल जवाब दे देंगे।

धन्यवाद।

आपका विश्वसनीय
शौकत उस्मानी

5 उपर्युक्त पत्र के साथ अग्रेजी में लिखित सलग्न पत्र दिनाक 30 11 1967 को श्री रतनलाल बसल के नाम मार्फत 'धर्मयुग'— टाइम्स ऑफ इडिया' बिल्डिंग बबई-1

प्रिय महोदय,

मैने बबई से निकलने वाले सम्मानित पत्र 'धर्मयुग' के दिनाक 12 11 67 के अक में प्रकाशित आपक लख 'ताशकद में भारतीय क्रातिकारियों की छावनी और ब्रिटिश गुप्तचर' को पढ़ा

अगर आपने मुहाजिरा के खुद के द्वारा (दुर्भाग्यवश जिनमें बहुत से अब पाकिस्तान में है) लिखित विवरणों को और मेरी तीन पुस्तकों– रूस यात्रा' (प्रताप प्रेस, कानपुर से प्रकाशित), *'पेशावर से मॉस्को', या अभी सन् 1962 और 1964 में 'भारत ज्योति'* में प्रकाशित मेरे ताज़ा निबध या मेरी पुस्तिका आई मैट स्टालिन ट्वाइस' और अभी के हाल के 'मेनस्ट्रीम' (नई दिल्ली) में किश्तवार निकले लेखों—'रशियन रिवोल्यूशन एड इडिया' का पढ़ लिया होता तो मै निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि आप निराधार तथ्यों को लेकर नहीं लिखते। वस्तुत हमारे साथ कोई हिन्दू नहीं था, यदि सौभाग्यवश कोई एसा साथी हमारे बीच में होता तो हम उसको भरपूर सम्मान देते। दा साला तक हमार वहाँ रहने की अवधि में हमें कभी ऐसे शहीद के बारे म जानकारी नही मिली जा इसलिए मर गया हो कि जिसक साथ रॉय ने दुर्व्यवहार किया हा क्योंकि नह रूसी नेताआ से मिलकर उन्हें किसी भारतीय नेता *का सदेश देना चाहता था।*

आप जैसे महानुभाव को मेरी सलाह है कि आप बबई के किसी विक्रता या व्यक्ति स मेरी पुस्तिका आई मैट स्टालिन ट्वाइस (मै स्टालिन स दा बार मिला) प्राप्त करे अथवा 1 जुलाई से 5 अगस्त के नई दिल्ली से प्रकाशित 'मनस्टीम के अकों म प्रकाशित मेरी किश्तवार रचनाआ को पढ लें। इनस प्रतिक्रातिकारिया के विरुद्ध हमारी लड़ाई और हम सन् 1920 में सोवियत सीमा में दाखिल होते ही *तुर्कमानी* प्रतिक्रातिकारियो की गिरफ्त में कैस फसे के बारे में आपके सामने एक बिल्कुल *साफ तस्वीर दिखाई देन लगेगी। स्टालिन पर मरी उपर्युक्त पुस्तिका क प्रकाशक का* पता इस प्रकार है—

मिस्टर के के कूरियन,
वासवानी मैंशन,
दिनशा वाचा रोड, बबई-1
(यह पता उस जगह का है जो चर्चगेट रिक्लेमेशन एरिया में हैं और मिस्टर कूरियन वहाँ किसी विज्ञापन सेवा में कार्यरत हैं।)

ससम्मान और व्यापक चिंतन के साथ

भवदीय
शौकत उस्मानी

6 आगौजा, काहिरा से दिनाक 26 9 1971 को भतीजे इफ्तिखार अहमद को सबोधित-(भाषा-अग्रेजी)

यह जानकर बहुत खुशी हुई कि मेरी पौत्रि-भतीजियों (भतीजों अल्लादीन और अल्लाबक्श की पुत्रियों) की शादियाँ हो रही है।

मुझे ऐसे शुभ अवसर पर वहाँ उपस्थित होने पर अत्यत प्रसनता का अनुभव होता, किन्तु केवल दूरी का ही प्रश्न नहीं है, इसके अलावा कुछ ऐसी विषम परीस्थितियों में जी रहा हूँ जो मुझे रोक रही है अर्थात् मै युद्ध प्रखड क्षेत्र में रह रहा हूँ जहाँ से हिल सकना भी बहुत मुश्किल है।

मैं बच्चियों क लिए जीवन भर सुखसमृद्धि की कामना करता हूँ। मेरी ओर से दूल्हों को बधाई और उन्हें कहना कि मै उनके लिए और अपनी बच्चियों के लिए बहतर भविष्य की कामना करता रहूँगा ।

तुम्हारा प्रिय चाचा
शौकत उस्मानी

7 आगौजा, काहिरा स दिनाक 12 5 73 का अपने सुपुत्र उस्मान गनी को सबोधित--- (उर्दू में)

'बर्खुरदार उस्मान गनी, सलामत रहो!

मेरा पिछला ख़त कुछ सख्त था। ख़ैर मगर ये बातें गौर से पढ़ो। 1940 की क़ैद स पेशतर के वाकयात लिखूगा। उनके बारे में फकत रफ़ीक अहमद का एक फिकरा लिखूगा---' हिन्दुस्तान की तहरीक में जो अव्वल रोल तुमने प्ले किया और सब भाइयों ने जो तुम्हारी कद्र की इसस बख़ूबी वाकिफ हूँ।'' खत की तारीख 11-11-67। इससे ज्यादा नहीं लिखूगा।

अब 1940 के बाद क वाकयात सुनो। 1941 में जब सावियत यूनियन जग में दाखिल हुआ, और लागों न अपनी पालिसी तब्दील की ता मैं सोवियत का हामी होते हुए भी हिन्दुस्तान की तहरीके आजादी से न हटा और देवली कैम्प के कौम परस्त कैदियों में इज्जत बढ़ गई।

चन्द लोगों को मेरा इकतेदार पसन्द नहीं आया। मेरी बढती हुई इज्जत का

देखकर चन्द लोगों को मेरे पास भेजा और कहा कि तुम अब फला पार्टी में दाखिल हो जाओ तो हम सब तुम्हारी इज्जत करेंगे। मैंने इन्कार कर दिया, मगर जब चन्द दिनों बाद उस फला पार्टी के कुछ सिख मेंबर टूट गए तो बतलाया कि तुमने अच्छा किया के दरख्वास्त नही दी वर्ना दरख्वास्त रद्द करके तुमको अपने कौमपरस्त साथियों में बदनाम किया जाता। मैंने कहा क्या इनका खून इतना सफेद है तो जवाब दिया कि ऐसा ही है।

ख़ैर अब एकदम इग्लैड का जिक्र सुनो। हालाकि हिन्दुस्तान में और भी ऐसे मौके आए कि फला पार्टी ने न फकत मुझे गुमराने की बल्कि ज़हर देने की कोशिश भी की किस्मत अच्छी थी बच गया। यह 1954 का जिक्र है।

1955 के बाद इग्लैड में गोवा के बारे में आन्दोलन शुरू हुआ। इस तहरीक में पार्लियामेंट के मैम्बर भी शामिल थे, उन्होंने मेरा तआवुन हासिल किया। मेरे मजामिन इग्लैड के अखबारों में गोवा की हिमायत में निकले ।

मै 1961 में आ गया न रहने को जगह मिली न काम, लाहौर में एक नौकरी गन्दे मुहल्ले में मिली।

मिस्र के मेरे जो मजामिन हिन्दुस्तान के अखबारों में निकले अरब और मुस्सलिन इसतराकी मुल्कों मे इनकी बहुत कद्र हुई। 18 5 1960 का एक मजमून अरबों को और खासतौर से मिस्रियों को इतना पसन्द आया जिसका उनवान में 1969 से 1972 में आज ढूढ़े से नहीं मिलता ।

जब मै 1964 तक हिन्दुस्तान में फकीरी, गरीबी की जिन्दगी बसर कर रहा था तो सबको मालूम है कि किसी ने मेरी मदद न की।

उस्मान गनी, अगर तुम किसी के बहकाने मे, बरगलाने में खुद या अपनी मा को लेकर मुझे लेने के लिए मिस्र आ गए तो मै उस दिन लदन भाग जाऊँगा और किसी की न सुनूगा। तुम्हारी मुहब्बत की कसम मैं तुमसे इतना प्यार करता हूँ, इतना ही प्यार करता हूँ जितना एक बाप को अपने बेटे से करना चाहिए ।

तुम मेरी गाड़ी मत चलाओ मेरी बागडोर मेरे ऊपर रहने दो। किसी पार्टी के समझाने बुझाने पर मुझसे ख़तो किताबत न करो, मेरा पता गैरजरूरी ।

फर्ज करो उस वक्त किसी तरह भी मुझको सियासी पेंशन मिल जाय और मै लिख दू कि उस्मान गनी को दे दो तो बतलाओ तुम्हारा नुकसान है कि फायदा। अब इसके बाद जब तुम मुझको ख़त लिखो तो एक बात तो ये है कि तुम मुझको हिन्दी का दोहा न लिखो और साफ खत लिखो। सिवा दुआ सलाम और खैरियत के मै तुमसे और कुछ सुनना नहीं चाहता। मेरी तरफ से सियासी मैदान में तुम खुदमुखतारी सोच कर कदम नहीं रखोगे तो फिर तुम जानो तुम्हारा काम। मेरी दुआ शामिले हाल है। सलाम दुआ तुम्हारे साथी खुर्शीद अहमद को सलाम।

तुम्हारा दुआगो बाप
शौकत उस्मानी

8 आग़ौज़ा काहिरा दिनाक 9 6 1973 को चचेरे भाई इलाहीबक्श उस्ता, आर्टिस्ट को सबोधित–(भाषा-उर्दू)

' मेरे दूसरा काई भाई नहीं और मैने इलाहीबक्श को हमेशा ही अपना हकीकी भाई समझा। जी चाहता है कि मुफस्सल हाल सुनू। तबियत कैसी है तो सेहत कैसी है। बाल-बच्चे सब खुशी खुर्रम है–यही बातें है जो जानना चाहता हूँ।

'न जाने क्यू जब से 1920 में हिन्दुस्तान से हिज़रत की थी फिर मुल्क में मेरे पाव नहीं पड़े। वतन किसको प्यारा नहीं मगर रिज़क जहा का होता है वहीं इन्सान को ले जाता है। बाम्बे का नुमाइन्दा बनकर 1964 म आया था। यकायक 1967 के बाद अखबार की पालिसी खिलाफे अरब बदल गयी और मै बेकाम हो गया। पहले फिलिस्तीनी परचे की एडीटरी में शामिल हुआ अब जब वो बद हुआ तो मैं 'इज़िपशियन गजट' में 'सब एडिटर' हो गया। मगर काम चाढ़े चार या पाच बजे से शुरू हो कर रात को 2 बजे खतम होता था तो सेहत खराब हो गई। काम छोड दिया। अब मै दूसरे दफ्तर में अग्रेजी के मैगजीन म मै अरबी से तर्जुमा की हुई अग्रेजी को सुधारता हूँ। या ये कहिय कि असली अग्रेजी में ढालता हूँ।'

आपका ख़ैरन्देश भाई
शौकत उस्मानी

9 आग़ौज़ा, काहिरा से दिनाक 26 2 1974 को अग्रेजी में भतीजे इफ्तिखार अहमद को सबोधित—

' व्यक्तिगत रूप से इस बारे में मै कुछ भी नही कर सकूगा, कारण कि सिर्फ पिछले सप्ताह में ही मै अस्पताल से बाहर आ सका हूँ। मुझे आश्चर्य है कि तुम्हें यह भी नही मालूम कि 20 सितम्बर 1973 से मैं दो अस्पतालों में भर्ती चलता रहा था, क्योंकि अपने निवास के स्नानघर में दुर्घटनाग्रस्त होने से मेरे सर पर चोट लग गई थी। यद्यपि मैंने 'फूड रैमेडीज़' पर पुस्तक लिखी है, लेकिन उसमें किसी दुर्घटना के लिए काई नुस्खा नहीं है।'

'और इस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना की वजह से काफी खून बहा और मुझे अनेक शारीरिक कष्टा का शिकार होना पडा तथा मै इतना असहाय हो गया था कि बाज़ार तक जा कर उन चीजों का ला सकू जो मुझे स्वस्थ कर सकें।'

' जैसा कि मैंने तुम्हें ऊपर बताया कि मै अभी-अभी अस्पताल से छूट कर आया हूँ और फाटा खिचवाने में असमर्थ हूँ और यह भी कि मै इतना दुबला पतला हो गया हूँ कि आईने में खुद के चेहरे को भी नहीं पहचान पा रहा हूँ।

घनिष्ट स्नेह क साथ।

तुम्हारा प्रिय चाचा
शौकत उस्मानी

10 आगौज़ा, काहिरा से दिनाक 21 7 1973 को उर्दू मे अपने चचेरे भाई इलाहीबक्श उस्ता को सबोधित—

'आपका खत बामय बच्चों की तहरीरों के पढ कर अजहद खुशी हुई। इतनी साफ और सुथरी हिन्दी एक आर्टिस्ट खानदान ही लिख सकता है। पढने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं हुई, वरना हिन्दुस्तान से ऐसे खत भी आते है जिनकी हिन्दी पढ़ने से सर चकराता है। एक-एक लफ्ज पर ठहरना पड़ता है।

'ये सुनकर अजहद मस्सरत हुई कि आपका सब खानदान अच्छी तरह है। मेरी नेक तमन्नाए मेर भाई भतीजे भतीजियों और उन सबके बच्चों के साथ है।'

' और क्या लिखूँ—अफसोस कि मिस्र से कोई चीज दूसरे मुल्क की बनी हुई नहीं खरीदी जा सकती है और न ही भेजी जा सकती है।'

' अपनी सेहत का खास खयाल रखियेगा। जब भी मौका मिले सतरे नारगी का जरूर इस्तेमाल रखें और नीबू का भी बराबर इस्तैमाल करते रहें। जब भी वतन वापस आना होगा, आपको पहले इत्तला कर दूँगा।'

आपका दुआगो बिरादर
शौकत उस्मानी

11 आगौज़ा, काहिरा से दिनाक 30 3 74 को अपने भाई रियाजुद्दीन का सबोधित उर्दू में—

सवालात जो तुमने किये मौजू है। गो मैने अपनी सवानेहयात इन चीजों पर लिखना मुनासिब नहीं समझा, मगर चूकि तुम खुलूस से ये पूछ रहे हो तो मैं जवाब लिख रहा हूँ। जवाब सिलसिलेवार ये हैं—

'खिलाफत की तहरीर जोरों पर थी, मुसलमान अग्रेजों के लिए जिहाद के लिए उबल रहे थे। मै भी ता अखबार पढता था। बिला काग्रेस खिलाफत पोस्टर पैम्पलेट मगाकर फैलाता था कि जब अप्रैल 1920 में अहरार की वापसी वतन में हुई और ओलोमा ने बजरूरत का फतवा दिया ता 36000 के लगभग हिज़रत करने गए। खानदान की मुहब्बत को कुर्बान कर दिया।'

'दो बार बीकानर आना हुआ है। मरज एक बार छुप कर आया था दूसरी बार नागौर से।

'*मेरी सेहत अब सुधर रही है तुम्हारा शुक्रिया अभी तक काम ज्यादा करना* मुनासिब नहीं है ।'

तुम्हारा दुआगो भाई
शौकत उस्मानी

सोवियत यूनियन में मै तो वहाँ एक तालिब इल्म था। यहाँ कॉमरेड लेनिन को कई बार दखने का मौका हासिल हुआ। सब लन्दन के अखबारों में छप चुका है।

12 ले कर्नल सतानन्द (रिटायर्ड) प्रेमधाम आनन्द फार्म, पोस्ट पटपड़गज, दिल्ली से दिनाक 10 4 1975 को भाई इलाहीबक्श को सबोधित उर्दू में—

'सलामत रह। मै आपके रज में शरीक हूँ। मरहुमा हम दोनों की रिश्तेदार थीं। किस्मत से एक ओर रिश्ता भी बाधा था। इज़हार नामुमकिन है। वाकयाते जिन्दगी ऐसे रहे कि मै किसी भी हम जिन्स का साथ न दे सका। मरहुमा पर गुस्से की बजाय मुझे रहम आता था। एक ऐसे शख्स से उसने रिश्ता बाधा जो अपना जीवन त्याग चुका था।'

'मरनेवाली में बहुत सी खूबिया थीं। साबरा थी, शिकायत भूल कर भी लब पे न लाती थी।'

'हाँ, 1935 के बाद जिन्दगी का साथी तालीम दे कर बनाने की कोशिश की मगर पानी सर पर से फिर चुका था। वो पढ़ने लिखने के अहल न थी और मै सियासत से दरगुजर न कर सका। अपने दोस्तों और रिश्तेदारा को एक ही मशविरा दूगा कि शादी रजामन्दी बग़ैर न करें। तेरा बेटा मेरी बेटी कबूल है ये दोस्तों के दरम्यान की बातचीत—लड़क और लड़की दोनों क लिए हसर साबित होती है। मौहल्ले में मैंने देखा था जितने नाते हुए मिया बीबी दोनों ख़ुश रहते थे। मतलब यह कि लव मैरिज होती थी।'

'भाई इलाहीबक्श भाई क्या कहूँ मरहुमा की याद उसकी मजबूरिया मुद्दत तक याद रहेगी। आप और सब हमारे अजीजो अकारिब सब्र करें।

आपका वफासाआर भाई
शौकत अली

13 ले कर्नल सतानन्द (रिटायर्ड), प्रेमधाम आनन्द फार्म, पोस्ट-पटपड़गज, दिल्ली-110051 से दिनाक 24 4 1975 को भतीजे इफ्तिख़ार अहमद को सबोधित उर्दू में—

' जब तीसरी बार जेल काट मै रिहा हुआ ता बहुत सी क्रातिकारी पार्टियों ने मुझे अपने में मिलाने की कोशिश की। जिनमें आर एस पी और आर सी पी आई के अलावा और पुरानी बगाली पार्टी के मेम्बर भी थे। मैने उन सब पार्टियों से ताआवुन किया जो अग्रेजों के खिलाफ़ लड़ रही थीं। उस जमान के बगाल के बहुत से मशहूर इन्कलाबियों से मुलाक़ात हुई और उनके साथ काम करता रहा। मगर जब आर एस पी ने मुझे पाकिस्तान भेज दिया तो वापसी पर आर एस पी में शामिल हो गया और इस पार्टी का मेंबर था क्योंकि हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी जग के वक्त का नारा देकर अग्रेजों का साथ दे रही थी पर उनसे कोई समझौता नहीं हो सका। अब मेरा सब पार्टियों से दोस्ताना है। मगर अभी मै इस हालत में नहीं हूँ कि सरगर्म सियासी काम करूँ। सी पी आई के टॉप लीडर से भी अच्छे ताआल्लुकात है। मुझे देहली के एयरपोर्ट पर लेने आये थे। अच्छे लोग है। बगाल से मुझे दो मर्तबा मिलने आए

थे और अब फिर भी आयगे। सावन भादो में बीकानेर आने का प्रोग्राम बना रहा हूँ, जब तय करूँगा तो तुम्हारे भाई उस्मान ग़नी को लिख दूगा। वो सबको इत्तला कर देगा। सबको घर पै सलाम। तुमको बहुत-बहुत दुआ।

तुम्हारा अकल
शौकत अली

14 ले कर्नल सतानन्द (रिटायर्ड), प्रेमधाम, आनन्द फार्म, पोस्ट-पटपड़गज, दिल्ली-110057 से दिनाक 3 5 76 को इलाहीबख्श को उर्दू में—

' मुबारकबाद सदहज़ार मुबारकबाद। मुझे किस कदर खुशी होती कि मै अपने प्यारे भतीजे की शादी में आ सकता। मगर जो कुछ मैंने मेरे अजीज भतीजे इफ्तिखार को लिखा है हरुफ़ ब हरुफ सच है। मेरी तन्दुरुस्ती ठीक नहीं है व गर्मी बरदाश्त नहीं होती। मै माफी का तालिब हूँ और उम्मीद है कि सब खानदान खुश हो कर कह दगे कि कोई हर्ज नही है। अपनी सेहत को सुधारिये। मेरे दिमाग म बीकानेर का सफर बहुत अरसे से मडरा रहा है और मै जरूर आऊँगा। मगर अभी तो हर तरह से नामुमकिन है।

माफी का ख्वास्तगार भाई
शौकत अली उस्मानी

15 ले कर्नल सतानन्द (रिटायर्ड), प्रेमधाम-आनन्द फार्म, पोस्ट-पटपड़गज, दिल्ली-110051 से दिनाक 6 8 76 को अपने भाई इलाहीबक्श को उर्दू में सबोधित—

1 ' मै बीकानेर तीन रोज के लिए आना चाहता हूँ।'

2 ' मौहल्ले के मकान में रहना मुश्किल होगा।'

3 ' या तो मै निजी तौर पर किसी अच्छे होटल में आकर उतरूगा या '

4 'अगर कोई पोलिटिकल पार्टी बुलाती है तो उनको मेरे रहने का अच्छा बन्दोबस्त करना होगा।'

5 ' लच के बाद रिहायश पर आराम न कर लू तो मेरी तबियत ठीक नही रहती या लच बिल्कुल ही न करूँगा।'

6 'पैदल चलना फिरना ज्यादा से ज्यादा चौथाई किलोमीटर तक मुमकिन है वर्ना सवारी की जरूरत पडेगी। मै बीकानेर में आने का फैसला सितम्बर महीने का ही कर सकता हूँ।

क्या अब भी बीकानेर की सब पोलिटिकल पार्टिया मेरे वतन (बीकानेर) में आना अच्छा समझेंगी ? क्या वो यह बात मुझे ऊपर लिखे हुए पते पर लिख कर भेजगी। मै शुक्रिया अदा करूँगा। '

आपका फ़कत भाई
शौकत उस्मानी

इसी पत्र के पीछे के भाग में अंग्रेजी में जो कुछ लिखा है वह यह—

Dear Brother

After the January of 1922 it will be first time I will be visiting Bikaner My entry was also banned by the Bikaner Maharajas till they ruled Usman Ghani has asked me as to how I escaped with the ring of police and military surrounding my escape route on my secret visit to Bikaner in 1922 In simple words I escaped in the guise of a cobbler with a sack of old shoes on my shoulder and a frightfully dirty kurta short (upto knees) dhoti and a rag on head I escaped to Bhatinda Now please apprise the political friends there I I do not want any demonstration on my visit I will come as an ordinary citizen and meet them Either I can write to a hotel for my accommodation (suggestions are requested) or they should help me in finding out modern accommodation quite hygienic I propose to come home by September 2 As this Farm where I am living is going to be taken over by the Delhi Administration I can come to Bikaner only after I get some suitable accommodation in Delhi I hope it will be done before long I am once more with the C P I

With best regards and thanks Nameste to all friends

Yours fraternally

Shoukat Usmani

16 सी पी आई केन्द्रीय कार्यालय, अजय भवन, 15 कोटला मार्ग, नई दिल्ली से दिनाक 8 10 1976 को अपने पुत्र उस्मान ग़नी को उर्दू मे लिखे पत्र में मुख्यतया मेरठ केस के सबध मे नीच लिखे दो बिन्दुओ की तरफ सकेत किया है—

1 मेरठ षड्यत्र केस के तहत दी गई सजा के खिलाफ मैंने कोई अपील नहीं की।'

2 'हम क्रातिकारी यदि किसी से कुछ उधार लेते भी है तो हमेशा उसे वापिस चुकाते है।'

शौकत उस्मानी

To Dr. G. Adhikari
(Chairman Control Commission)
C P I Central Office
Ajoy Bhawan,
Kotla Marg,
New Delhi 1
7/10/76

Very Dear nephew Iftikhar,

18 कॉं आर सी शर्मा, एम एस सी , के डी 40-ए, अशोक विहार, दिल्ली-110052 से दिनाक 6 12 1976 को भाई इलाहीबक्श को उर्दू में—

'देहली छोड़ कर बबई में जा रहना गैर मुमकिन है, क्योंकि रिहायश का बन्दोबस्त होना ना मुमकिन है। जयपुर की कम्युनिस्ट ब्राच वहाँ बुलाना चाहती है मगर मै इस मजिल में हूँ कि मुझे इकराम की जरूरत है और जयपुर में दौड-धूप करनी पडेगी। वैसे सिवाय बीकानेर, अजमेर व ब्यावर के राजस्थान में बहुत कम लोग मेरे माझी से वाकिफ है। देहली मे खातिरख्वाह इन्तजाम हो गया है। फिक्र की जरूरत नहीं है।'

'मौहल्ले मे सबको यह बता दिया जाये कि मेरा मुल्की एम पी या राजस्थान के एम एल ए से दोस्ताना नहीं है। लिहाजा यह बात ज़हन मे रहे कि मै किसी के काम नहीं आ सकता। फकत इतना ही लिखना काफी है।'

'शायद मै फिर बीकानेर कभी आऊँ मगर मौहल्ले में कोई मीटिग न की जाये। वैसे मिलूँगा सबसे। यह जब होगा मे बीकानर आऊँ। मुझको भी पता नही है और क्या लिखूँ। मेरी किताब इस महीने में छप जायगी। मुझे फकत छ कापियाँ मिलेंगी और 10% रॉयल्टी मिलेगी जो क़िताब बिकने पर हर साल अप्रैल में हिसाब करने पर होगी ।'

आपका दुआगो भाई
शौकत उस्मानी

विशेष शौकत उस्मानी के बारे में उनके पुत्र उस्मान गनी—

"जब से मैंने होश सभाला और जहाँ जिस हालत मे अपने पिता शौकत उस्मानी से मिला तो मुझे महसूस हुआ कि वे अपनी घरेलू जिन्दगी को ताक़ मे रख कर दुनिया भर के मज़दूरों के सघर्षों को ही तरजीह देते थे।"

"मैंने उनका हर प्रकार से आदर किया है और जितना जिस तरह से भी बन पड़ा उस्मानी साहब की सहायता करता रहा हूँ। इसकी वजह से दूसरों के लिए मै एक मिसाल बन गया था। मैंने और किसी पार्टी में खुल कर काम नहीं किया। मेरे लिए वही पार्टी थे, वही सब कुछ।"

शहीद एव स्वतत्रतासेनानी स्मारक स्तभ

भारत की आजादी के 25 वर्ष पूरे होने पर (15 अगस्त, 1972 से 14 अगस्त, 1973 तक क रजत जयती वर्ष के उपलक्ष में) सरकार द्वारा स्थापित बीकानेर के स्वतत्रता सग्राम के शहीदों एव सनानियों के नामा को सूचित करने वाला स्मारक स्तभ

1 श्री रघुवर दयाल गोयल, वकील, बीकानेर
2 श्री रामनारायण शर्मा, जस्सूसर गेट, बीकानेर
3 श्री नानक सिह, मकान न 8, नगरपालिका के पास, बीकानेर
4 श्री किशन गोपाल 'महर महाराज', कन्दाई बाज़ार, बीकानेर
5 *श्री पहाडसिह, माजी सा का बास, बीकानेर*
6 श्री हीरालाल शर्मा पुत्र श्री - ीचन्द बीदासर चूरू
7 श्री गगादास कौशिक
8 श्री देवीदत्त पत
9 श्री शौकत उस्मानी
10 *श्री लक्ष्मीदास स्वामी अथक'*

नाट सूची अपूर्ण ही रह गई।

* * *